श्रीः

5·4

श्रीविद्यारत्नाकरः

श्रीमहागणपति-ललिता-श्यामला-वार्ताली-सपर्यासमन्वितः
पूर्णाभिषाकादिपरिशिष्टसहितश्च

श्रीकरपात्रस्वामिविरचितः



सम्पादकः
दत्तात्रेयानन्दनाथः (सीताराम-कविराजः)

श्रीविद्या साधना पीठ
वाराणसी

श्रीस्वामीकरपात्रीजी महाराज

श्रीस्वामीजी महाराज ने वेदान्त, भक्ति एवं अष्टाङ्गयोग आदि साधन पद्धतियों द्वारा परमतत्त्व का साक्षात्कार कर लेने पर भी केवल लोककल्याण की भावना से श्रीविद्यासाधना पद्धति का अवलम्बन किया एवं पूर्ण विधि-विधान से श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती राजराजेश्वरी ललितामहात्रिपुरसुन्दरी का उच्चतम उपासना-क्रम अनुष्ठित किया तथा उत्तर भारत में विलुप्तप्राय श्रीविद्यासम्प्रदाय को अपने तपोबल से पुनः प्रतिष्ठापित किया और श्रीविद्यारत्नाकर जैसे ग्रन्थरत्न द्वारा श्रीविद्यासाहित्यनिधि को अभिवृद्ध एवं सुशोभित किया। श्रीस्वामीजी द्वारा रचित श्रीविद्यामन्त्रभाष्य का अवलोकन करने पर उनका तन्त्र-शास्त्र का गहन अध्ययन, प्रौढ़पाण्डित्य, तत्त्वज्ञता तथा रहस्यज्ञता सुस्पष्ट परिलक्षित होती है।

श्रीविद्यारत्नाकर का वैशिष्ट्य

श्रीविद्या साधना का पूर्ण क्रम प्रवर्तित करने के लिए विभिन्न पुस्तकों की अपेक्षा रहती है, परन्तु यह एक ही पुस्तक दीक्षाकाल से पूर्णाभिषेक पर्यन्त और प्रारम्भिक साधन विधानों का साङ्गोपाङ्ग सम्पादन करने के लिए समपेक्षित पद्धति की जिज्ञासा को परिपूर्ण करने में अपनी विशिष्टता से समवेत है।

॥ श्रीः ॥

श्रीविद्यारत्नाकरः

श्रीमहागणपति–श्रीसुन्दरी–श्यामा–वार्ताली–परा–सपर्या–मन्त्रभाष्य–
वाञ्छाकल्पलता–लक्षार्चन–पूर्णाभिषेक–महायागक्रमादि–विविधविधिविलसितः

निगमागमादिसमस्तशास्त्रपारावारपारीणैः श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यैः
अनन्तश्रीविभूषितैः स्वामिश्रीहरिहरानन्दसरस्वतीषोडशानन्दनाथैः
(श्रीकरपात्रस्वामिभिः) विरचितः

सम्पादकः
दत्तात्रेयानन्दनाथः
(श्रीसीतारामकविराजः)



प्रकाशकः
श्रीविद्या–साधना–पीठ
वाराणसी

प्रकाशकः
श्रीविद्यासाधनापीठ
शिव सदन
नगवा (लङ्का) वाराणसी-२२१००५
दूरभाष : ०५४२-२३६६६२२

प्रथम संस्करण जुलाई १९७२
संशोधित व परिवर्धित अष्टम संस्करण -२०१२

ISBN : 13-978-81-923336-0-1

मूल्यम् - ४००/- रूप्यकाणि

संगणकटङ्कित : विशालकम्प्यूटर्स, जयपुरम्।

मुद्रकः स्टारलाईन
वाराणसी (उत्तरप्रदेशः)

ŚRĪVIDYĀ-RATNĀKARAḤ

With

ŚRĪMAHĀGAṆAPATI-ŚRĪSUNDARI-ŚYĀMĀ-
VĀRTĀLĪPARĀSAPARYĀ-MANTRABHĀṢYA-
VĀÑCHĀKALPALATĀLAKṢĀRCANA
AND ALLIED SUBJECTS

By

ṢOḌAŚĀNANDANĀTHA ŚRĪ KARAPĀTRA SWĀMĪ
SWĀMĪSRIHARIHARĀNANDASARASWATI

Editor
DATTĀTREYĀNANDANĀTHA
(ŚRĪ SĪTĀRĀMA KAVIRĀJA)



ŚRĪVIDYĀ SĀDHANĀ PĪṬHA
VĀRĀṆASĪ

Published by
ŚRĪVIDYĀ SĀDHANĀ PĪṬHA
Shiv Sadan, Nagawa, Varanasi-221005
Ph. 0542-2366622

First Edition, July 1972
Eighth New Edition, 2012

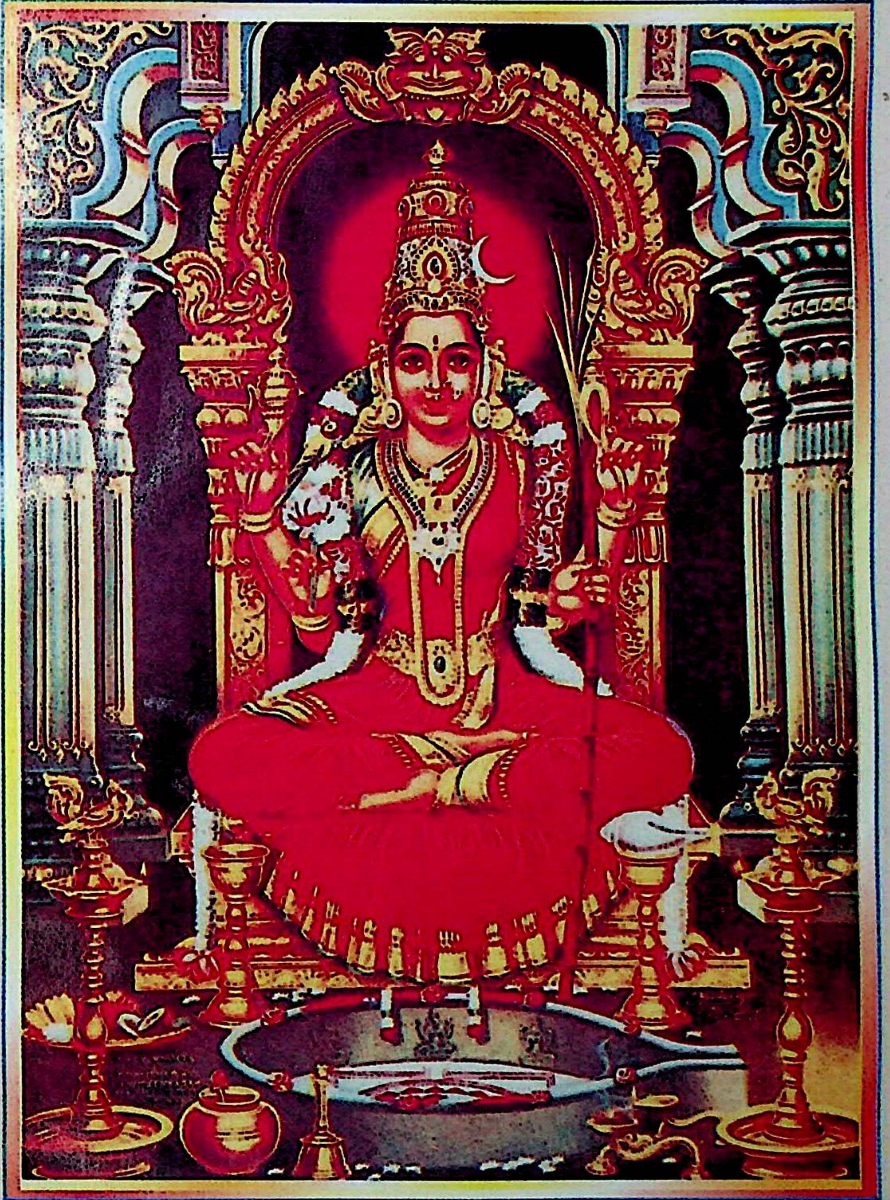
ISBN : 13-978-81-923336-0-1

Price : Rs. 400/-

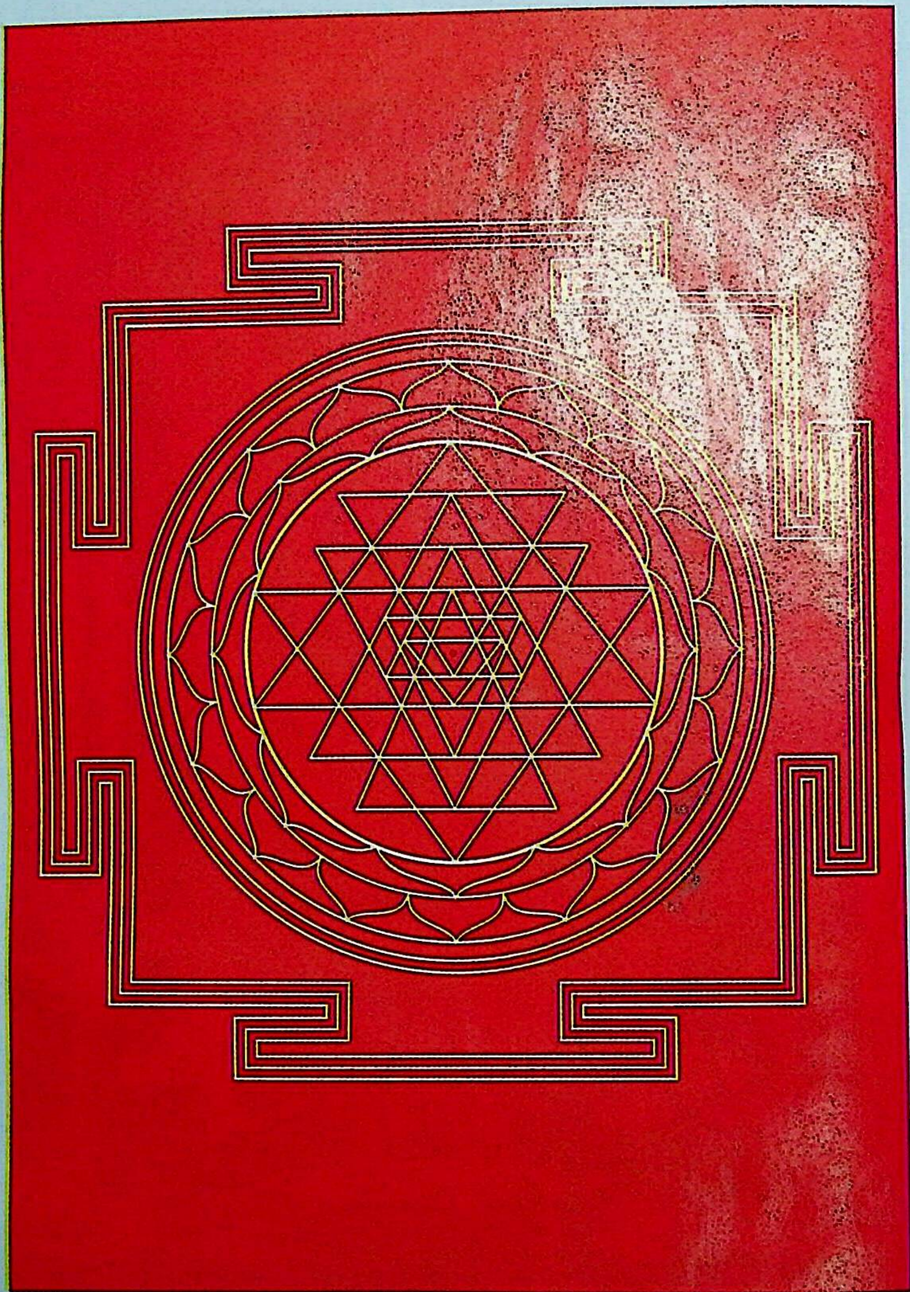
Laser Typesetting : Vishal Computers, Jaipur

Printed at : Star Line Varanasi (U.P.)

श्री ललितामहात्रिपुरसुन्दरी



अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापां ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥



श्रीयन्त्रम्

श्रीस्मरण

परमगुरु षोडशानन्दनाथ श्रीकरपात्रस्वामी द्वारा रचित तथा गुरुवर दत्तात्रेयानन्दनाथ द्वारा परिवर्द्धित एवं सम्पादित यह *श्रीविद्यारत्नाकरः* श्रीविद्या उपासना के लिए सर्वाङ्गीण पूर्णतम एवं अनुपम ग्रन्थरत्न है। इसका प्रथम संस्करण विक्रम संवत् २०२९ में हुआ, तत्पश्चात् इसके छः संस्करण भी शीघ्रतापूर्वक श्रीविद्या साधकों की श्रद्धापूर्वक स्वीकृति के कारण शेष हो गये हैं। गत मुद्रणों के अक्षरों में अनेक विकृति आफसेट मुद्रण के कारण आ गई थी। अतः संगणकटङ्कण के द्वारा उनका निराकरण करके शुद्ध, सुन्दर, सुसज्जित कर इसके नवीन संस्करण के प्रकाशन का निर्णय किया गया है।

साधना साहित्य श्रीमाता की वाङ्मयी मूर्ति मानी जाती है। इसे अलङ्कृत करना भी सौभाग्यजनक है। आराध्यचरण स्वामी श्रीकरपात्र महाराज ने श्रीविद्या की साङ्गोपाङ्ग साधना हेतु इस उत्तम ग्रन्थ की रचना की जिसके कारण अन्य ग्रन्थों की अपेक्षा नहीं रहती। दीक्षाक्रम, महागणपतिक्रम, श्रीक्रम, श्यामाक्रम, वाराहीक्रम एवं पराक्रम की सपर्यापद्धति का पूर्ण विवेचन तो इसमें है ही तथा इसके साथ अन्य उपयोगी विषय यथा—श्रीविद्यामन्त्रभाष्य, पूर्णाभिषेक, होमविधि, जपविधि, वाञ्छाकल्पलता, विविध स्तुतियाँ, षडाम्नायमन्त्र, लक्षार्चनविधि, महायागक्रम आदि का समावेश भी इसमें किया गया था। उपादेय साहित्य के संग्रह से इस ग्रन्थ की उपयोगिता में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है जो इस श्रीविद्या के प्रचार-प्रसार का शुभ सङ्केत है। यह साधना भारतीय आध्यात्मिक जगत् की सर्वश्रेष्ठमयी गूढ़ साधना है। योग, भक्ति, ज्ञान एवं कर्म आदि समस्त साधना के सामञ्जस्य से सुशोभित है। यह ज्ञानविज्ञानं युक्त अनुभूति प्रदान करने वाली उपासना है। श्रीविद्यासाधनापीठ श्रीविद्या के प्रचार-प्रसार में सर्वथा सन्नद्ध है तथा श्रीविद्यासाधकों की सेवा एवं सहयोग हेतु सर्वदा तत्पर है।

शिवसायुज्य प्राप्त पूज्य गुरुवर के प्रिय शिष्य श्रीविद्योपासक डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शर्मा, दर्शन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने इस अष्टम संस्करण के प्रारूप संशोधन एवं पाण्डित्यपूर्ण सूक्ष्म निरीक्षण करके प्रकाशन में प्रशंसनीय सहयोग दिया है, अतः पराम्बा से इनके कल्याण की कामना है। इस कार्य में अन्य विद्वज्जनों ने जो सहयोग दिया उनके लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ। इस ग्रन्थ के सुन्दर टङ्कण का श्रेय विशाल कम्प्यूटर्स तथा सुन्दर मुद्रण का श्रेय स्टारलाइन को है। अतः अनेक साधुवाद। शेष में श्रीगुरुचरणों में भावसुमनाञ्जलि समर्पित करता हूँ जो समस्त क्रियाओं के मूलकारण है।

विक्रम संवत् २०६९, गुरुपूर्णिमा

श्रीगुरुचरणसरोजरेणु
प्रकाशानन्दनाथ
श्रीविद्यासाधनापीठ, वाराणसी।

श्रीगुरुस्मरणम्

क्रियाशक्त्यम्बिकाधीनवामाङ्काय शिवात्मने।
दत्तात्रेयानन्दनाथ–श्रीविद्यागुरवे नमः।।१।।
ज्ञानशक्त्याम्बिकाश्लिष्टसुखिताय सदा नमः।
षोडशानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे।।२।।
अपर्णाम्बादृगुल्लासविश्रान्तमनसे नमः।
उमानन्दाय नाथाय गुरवे परमेष्ठिने।।३।।
श्रीविद्या परमोत्कृष्टा न शोध्या मन्दमेधसा।
गुरुकृपा परा शक्तिः तया संशोधनं कृतम्।।

प्रातः स्मरणीय परमगुरु श्रीकरपात्रस्वामी 'षोडशानन्दनाथजी' के द्वारा प्रणीत तथा गुरुवर श्री सीताराम कविराज 'दत्तात्रेयानन्दनाथजी' के द्वारा सम्पादित श्रीविद्या उपासना के मूर्धन्यग्रन्थ *श्रीविद्यारत्नाकरः* के अष्टम संस्करण के प्रारूप संशोधन का कार्यभार, श्रीविद्यासाधनापीठ के अध्यक्ष श्री प्रकाशानन्दनाथ के द्वारा मुझे दिया गया। यह कार्य श्रीगुरुजी की अक्षय कृपा से शीघ्र ही निर्विघ्नरूप में सम्पन्न हुआ है। जहाँ अपेक्षित हुआ वहाँ पाठ में संशोधन पूजनीय अध्यक्ष जी के आदेश से किया गया है। ग्रन्थ में प्रयुक्त मन्त्रों के उद्धरण को यथासम्भव पूर्ण करते हुए वरिवस्या में प्रयुक्त वाक्यों को भी साधक सौकर्य के लिए पूर्ण रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुनर्मुद्रण जनित विकल पाठों को अविकल किया गया है। इस कार्य को सम्पन्न कराने का पूर्णतः श्रेय श्रीगुरुजी के महिमामयी कृपा को है। हम सब शिष्यगण तो साधनमात्र है। अतः श्रीगुरुचरणों में प्रणामाञ्जलि समर्पित करता हूँ जो इस ग्रन्थ–प्रकाशन की समस्त क्रियाओं के मूलकारण है।

इस संस्करण में मानव स्वभाववश तथा दृष्टिदोष से रहने वाली अशुद्धियों के लिए साधक वरेण्यों से प्रार्थना है कि वे इसे शुद्ध करके सूचित करें ताकि उनका परिमार्जन हो सके।

विक्रम संवत् २०६९, गुरुपूर्णिमा

श्रीगुरुचरणचञ्चरीक
शिवानन्दनाथ
राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

सम्पादकीयम्

प्रथमसंस्करणस्य

श्रीविद्यारत्नाकरग्रन्थमिमं सम्पाद्य श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां श्रीपराम्बापादारविन्दमकरन्दजुषां श्रीविद्योपासकानां सेवासु समुपाहरन् अमन्दमानन्दसन्दोहं विन्दे। यद्यपि सन्त्यनेकाः श्रीविद्योपासकधौरेयैः सुधीभिः सम्पादिताः सपर्यापद्धतयः, सकला अपि ताः साङ्गोपाङ्गसाधनायै सापेक्षतामावहन्ति। यथा हि अर्चनायैकं न्यासायान्यत् स्तवनायापरं जपायेतरद्, एवमङ्गोपाङ्गदेवतानामुपासनायै तासां जपपूजातर्पणहोमपुरश्चरणादीनां कृते बहूनि पुस्तकानि समपेक्षितानि भवन्ति श्रीविद्योपासकानाम्। परञ्च *श्रीविद्यारत्नाकरोऽयं* आदीक्षाविधानमाच पूर्णाभिषेकं साधनकालत्सिद्धिपर्यन्तं यद्यदपेक्षितं विधानादिकं तत्तत्सकलमपि रत्नाकरवत्प्रपूरयति।

श्रीगुरुचरणैः *कुलार्णव-तन्त्रराज-कल्पसूत्र-श्रीविद्यार्णव-त्रिपुरारहस्य-नित्योत्सवादिकान्* विविधतन्त्रग्रन्थान् समालोड्य ग्रन्थरत्नमिदं निरमायि।

तपसा ग्रन्थित्रयभेदेन ज्ञानशक्तिप्रादुर्भावाद् वेदवेदाङ्गेषु निखिलदर्शनेतिहासपुराणधर्मशास्त्रादिसमस्तशास्त्रेष्वेवं योगतन्त्रभक्तिज्ञानादिसमस्तसाधनमार्गेषु च येषां सर्वज्ञता सम्पन्ना तैः प्रातः स्मरणीयगुरुचरणैः प्राणिमात्रकल्याणतत्परैः करुणापूरपूरितमानसैर्महदुपकृतं श्रीविद्योपासकानां ग्रन्थमिमं निर्माय।

सर्वतन्त्रविद्यातो ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यञ्चास्याः श्रीविद्यायाः। श्रीपरमशिवश्चतुःषष्टितन्त्रैः सकलैहिकसिद्धिसन्दोहं सम्पाद्य श्रीपराम्बायाः निर्बन्धेनेदं निखिलपुरुषार्थघटनास्वतन्त्रं श्रीतन्त्रं समाविष्कृतवान्। *सौन्दर्यलहर्यां* भगवत्पादैरिदमेव प्रतिपादितम्—

चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनम्,
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्॥ —*सौन्दर्यलहरी ३१*

अस्य साधनफलं तस्यां स्तुतावेव च समुद्घोषितम्—

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते,
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरञ्जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः,
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्।। — *सौन्दर्यलहरी ९९*

अन्यान्यदेवतार्चनासुः 'विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्' इत्यादिकं फलं प्रदर्शितं परं श्रीविद्योपासकस्तु विद्यापतित्वेन ब्रह्मणो लक्ष्मीपतित्वेन विष्णोश्चासूयां जनयन्नतिसुन्दरेण शरीरेण रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयन्, तत्तत्सिद्धिभिर्जनान् विस्मापयन्, पशुभावं विहाय शिवभावं भावयन् चिरञ्जीवन् ब्रह्मानन्दरसं रसयति। अतःपरं किमपि नावशिष्यते प्राप्तव्यम्। जन्मजन्मान्तरीय-पुण्यपुञ्जोदयेन कदाचित् केनचित् कथञ्चित् समधिगता सम्यक्तया यद्यस्याः साधनसरणिस्तदा सुसम्पन्नं तस्य सर्वं, कृतकृत्यं तस्य जीवितं; नान्यत्किञ्चिदपेक्षितं स्यादस्याः प्राप्त्यनन्तरं, तस्य चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यन्ति, स शिवयोगीति गीयते।

स्वस्मिन्पूर्णताञ्चानुभूयते। अन्यैः साधनमार्गैस्तु—

अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्। — *गीता ६.४५*
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।। — *गीता ७.१९*

परमेतस्मिन्नेव जन्मनि श्रीविद्योपासकस्तु पराङ्गतिं याति। यथा—

चरमे जन्मनि यथा श्रीविद्योपासको भवेत्। —*ललितासहस्रनाम उत्तर. ७२*
यस्य नो पश्चिमं जन्म यदि वा शङ्करः स्वयम्।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी।। —*ललितात्रिशती उत्तर. १११*

इति बहुभिः प्रमाणकदम्बकैः सुसिद्धमिदं यच्चरमे जन्मन्येव श्रीविद्या प्राप्यते। तेन जीवो जीवभावं विहाय शिवत्वमुपैति। यतो हि सृष्टिकालादारभ्याऽऽनन्दरूपिणः परब्रह्मणः पृथग्भूय विविधं विचष्टते जीवः। तमेव परमप्रेमास्पदं वस्तु प्राप्तुं जगति रूपरसादिषु तामानन्दकर्णिकां बहुमन्यमानः तत्संग्रहार्थं यतते, प्राप्नोति चाऽऽधिकमधिकं प्राप्यमाणोऽपि रिक्तरिक्तमिव प्रतीयते। यत उक्तम्—

यत् पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः।
न द्रुह्यन्ति मनः प्रीतिं पुंसः कामहतस्य ते।।

अतः ह्यानन्दसिन्धोः लहरीभूतो जीवस्तत् कणिकाभिः कथं तृप्येत। तमेवाऽऽनन्दसिन्धुं प्राप्यैव सुतृप्तो भवति। यथा कश्चिच्चक्रवर्ती ग्रामटिकां विजित्य किं मोदेत? वेदान्तमार्गेण 'अहं ब्रह्माऽस्मि' 'तत्त्वमसि' 'अयमात्मा ब्रह्म' इत्यादिकानां महावाक्यानां श्रवण–मननिदिध्यासनादिभिः शनैः शनैर्ब्रह्मभाव–माप्नोति, तदा पूर्णतां भजते। परं—क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्त–सक्तचेतसाम् इति भाव्यता भगवता भूतनाथेन परमकारुणिकेन 'श्रीविद्यातन्त्रम्' निरमायि।

सैवेयं ब्रह्मविद्या श्रीविद्या सच्चिदानन्दस्वरूपिणी यस्याः समाराधनेन जीवः सुखेन स्वरूपतां याति। अस्याः मन्त्रात्मकं यन्त्रात्मकं विग्रहात्मकञ्च त्रिरूपं साधकैः समाराध्यते।

श्रीविद्याया मन्त्रात्मकं रूपम्

अस्याः मन्त्रात्मकं रूपं पञ्चदशी, षोडशी, महाषोडशी च श्रीविद्यामन्त्रभाष्यं विवृण्वन् श्रीगुरुचरणैर्व्याख्यातम्। इति–'तद्विज्ञाने जाते सर्वं विज्ञातं भवति। तस्मिन्दृष्टे सर्वं बाधितं भवति। तस्य नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपा शक्तिस्तद्योगादेव विश्वोत्पत्तिस्थितिलयलीलात्वं शिवस्य।' तदुक्तं *वरिवस्यारहस्ये*–

स जयति महान् प्रकाशो यस्मिन्दृष्टे न दृश्यते किमपि।
कथमिव तस्मिन् ज्ञाते सर्वं विज्ञातमुच्यते वेदे।।
नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपाऽस्य वर्तते शक्तिः। (३.४)

तद्विज्ञानार्थमेव चतुर्दशविद्यास्थानानि तेष्वपि सारभूताः वेदाः। तेष्वपि गायत्री, तस्या रूपं द्वितयम्। तत्रैकं स्पष्टं द्वितीयं परं गोपनीयं श्रीविद्यारूपम्। तदेव 'कामो योनिः कमलावज्रपाणिरित्येवं' (*देव्यथर्वशीर्षे १४*) साङ्केतिकैः शब्दैर्वेदोऽपि व्यवहरति।

तत्र महाषोडशीमहिमा–

वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि।
वर्णितुं नैवं शक्येऽहं श्रीविद्यां षोडशाक्षरीम्।।
एकोच्चारेण देवेशि वाजपेयस्य कोटयः।
अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा।।

काश्यादितीर्थयात्राः स्युः सार्धकोटित्रयान्विताः।
तुलां नार्हन्ति देवेशि! नाऽत्र कार्या विचारणा।
अपि प्रियतमं देयं सुतदारधनादिकम्।
× × ×
राज्यं देयं शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी।। *त्रिशती १०*

श्रीविद्याया विग्रहात्मकं रूपम्

भगवत्याः यन्त्रात्मकं रूपं 'श्रीचक्रम्' तदाराधनेन सर्वसिद्धीश्वरः सञ्जायते, तन्त्रशास्त्रेषु तस्य महता समारोहेण महिमा वर्णितः—

सम्यक् शतक्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात्।
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्रीचक्रदर्शनम्।।
× × ×
तीर्थस्नानसहस्रकोटिफलदं श्रीचक्रपादोदकम्।

इत्यादिभिः प्रमाणनिकुरुम्बैरप्रतिमं महत्त्वमाचक्षते।

श्रीविद्याया यन्त्रात्मकं रूपम्

विग्रहात्मकं रूपन्तु राजराजेश्वरी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका, तस्याः स्वरूपं स्तुवद्भिर्भगवत्पादैरुक्तम्—

शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्। —*सौन्दर्यलहरी, १२*

श्रीललितापूजनफलन्तु पाद्मवचनैः प्राप्यते—यथाः —

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
ललितापूजनस्यैते लक्षांशेनाऽपि नो समाः।।
स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थगः।
गन्धानुलेपं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं लभेत्।।
चन्दनागरुकर्पूरैः सूक्ष्मपिष्टैः सकुङ्कुमैः।
आलिप्य ललितां लोके कल्पकोटीर्वसेन्नरः।। इति।
× × ×
गिरामाहुर्देवी द्रुहिणगृहिणीमागमविदो।
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।

तुरीया काऽपि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा।
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषी।। *–सौन्दर्यलहरी,* १७

एकामेव भगवतीं नानानामरूपैर्गृणन्त्यागमविदः–परब्रह्ममहिषी, महाविद्या, महामाया, महात्रिपुरसुन्दरीं ललितेति। एकैव सा कार्यकारणरूपा विश्वस्य स्वात्मानं विश्ववपुषा परिणमयितुं चिदानन्दाकारं विभर्ति। वस्तुतस्तु 'सर्वं शाक्तमजीजनत्' इति सिद्धान्तेन दृश्यमानं सकलं जगत् देवीमयमेव।

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः। —*प्राधानिकरहस्ये* २५

अत एव—

पुंरूपं वा स्मरेद्देवीं स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम्।।

इति प्रमाणकदम्बकानि तत्तदिच्छानुरोधेन पुंरूपतया, स्त्रीरूपतया, निर्गुणरूपतया वा परदेवतायाः ध्येयत्वं प्रतिपादयन्ति। तच्च पुरुषरूपं कीदृग्विधमिति जिज्ञासायां—

ममैव पौरुषं रूपं गोपिकाजनमोहनम्। *– ब्रह्मवैवर्तपुराणम्*

कदाचिल्ललिता देवी धृतश्रीकृष्णविग्रहा।
वेणुनादविनोदेन मोहयत्यखिलं जगत्।।

पद्मपुराणे वृन्दावनमाहात्म्यं वर्णयता नारदं प्रति श्रीविष्णुना स्वमुखेनेदमुक्तम्—

अहं च वासुदेवाख्यो नित्यं कामकलात्मकः।
अहञ्च ललितादेवी पुंरूपा कृष्णविग्रहा।
आवयोरन्तरं नास्ति सत्यं सत्यं हि नारद।
इदं वृन्दावनं नाम रहस्यं मम वै गृहम्।।

कूर्मपुराणे (११.२४५) च—

सहस्रमूर्धानमनन्तशक्तिं सहस्रबाहुं पुरुषं पुराणम्।
शयानमब्धौ ललिते तवैव नारायणाख्यं प्रणतोऽस्मि रूपम्।।

इत्यादिभिः प्रमाणैः पराम्बायाः पुंरूपं प्रतिपादितम्।

स्त्रीरूपन्तु स्पष्टमेव –

'न मातुः परमस्ति दैवतम्'

'अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्' – *देव्यपराधक्षमापने ११*

'आपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरणयुगलमम्बायाः।'

इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैर्मातृरूपेणैव ध्येयत्वं निश्चीयते।

त्रिविधदावदग्धान् भववनपतितान् स्वसेवकान् पीयूषवर्षैः परित्रातुं बद्धपरिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागतिः सर्वार्थसिद्धिदा। उक्तञ्च–

निष्कामो देवतां नित्यं योऽर्चयेद्भक्तिनिर्भरः।
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथाशक्ति मनुं जपन्।।
सैव तस्यैहिकं भारं वहेन्मुक्तिञ्च साधयेत्।
सदा सन्निहिता यस्य सर्वञ्च कथयेत सा।
वात्सल्यसहिता धेनुर्यथा वत्समनुव्रजेत्।
तथाऽनुगच्छेत्सा देवी स्वं भक्तं शरणागतम्।

एवमशरणशरण्यायाः करुणावरुणालयायाः भक्तजनस्य वाञ्छासमधिकफलं दातुं भयात्त्रातुञ्च नित्यनिर्भरायाः पराम्बायाः पादारविन्दार्चनं सकलैहिकामुष्मिकं वाञ्छितार्थं प्रपूरयति।

उपासनविधावपि श्रीविद्यायास्त्रयो भेदाः सन्ति—स्थूलोपास्तिः, सूक्ष्मोपास्तिः परोपास्तिरिति; कायिकी, वाचिकी, मानसी चेत्यपरनामधेयाः कायिकी स्थूलोपास्तिः श्रीचक्रार्चनम्, वाचिकी सूक्ष्मोपास्तिर्जपः, मानसी परोपास्तिर्भावनोपनिषद्भावना।

श्रीसाधकानां कृते साङ्गां त्रिविधामपि सपर्यामेकेनैव ग्रन्थरत्नेन सम्यक्प्रकारेण कार्यसम्पादनायालमिति यतमानानामस्माकं मनोरथाः साम्प्रतं पूर्णताङ्गताः।

इतो दशवर्षेभ्यः पूर्वं श्रीगुरुचरणैर्विरचितं श्रीपट्टाभिरामशास्त्रिचरणैः सम्पादितं '*त्रिपुरसुन्दरीवरिवस्या*' नामकं पुस्तकं प्रकाशितमासीत्। तामेव पद्धतिं श्रीचरणैर्नूतनैः कतिपयैः पूर्णाभिषेकादिविविधभिरलङ्कृत्य सम्पादनार्थं

समादिष्टोऽहम्। मया च साधकानां सौकर्यार्थं तत्तत्सपर्यापुस्तकान्यवलोक्य विषया विशदीकृताः समाराध्यचरणानामाज्ञया।

इदानीं *श्रीविद्यारत्नाकरः* इति नामा ग्रन्थोऽयं श्रीमतां पुरस्ताद् वर्तते। ग्रन्थेऽस्मिन् गणपतिश्रीश्यामावार्तालीपरादेवतानां साङ्गोपाङ्गसपर्याविधिर्वर्णितः। श्रीक्रमे सुदुर्लभं त्रिवृत्तार्चनं श्रीचक्रस्वरूपं तस्य महिमा च महता समारोहेण प्रमाणपुरःसरं वर्णितः श्रीचरणैः।

परिशिष्टे च श्रीविद्यामन्त्रभाष्यम्, वाञ्छाकल्पलताविद्या, पूर्णाभिषेकविधिः, लक्षार्चनम्, महायागक्रमः, एवञ्चोद्धृतानि मानसपूजादीनि सुललितानि स्तोत्राणि साधकानां मनांसि समाह्लादयन्ति।

ग्रन्थस्यास्य सम्पादने मुद्रणे च श्रीगुरुचरणानां कृपालेश एव परमो हेतुः, येन ग्रन्थोऽयं प्रकाशतान्नीतः। अतस्तेषां चरणेषु सहस्रशः प्रणामाः विलसन्तु। मुद्रितपुस्तकसंशोधनेनात्यन्तं साहाय्यमाचरितवतां पुरीपीठाधीश्वराणां जगद्गुरु-श्रीशङ्कराचार्याणामनन्तश्रीविभूषितानां स्वामिश्रीनिरञ्जनदेवतीर्थचरणानां पादरजः शिरसाऽऽवहामि।

वित्तसम्बन्धि सर्वविधसाहाय्यं कृतवतां श्रीहनुमानप्रसादधानुकानां, श्रीबाबूलालगनेड़ीवालानामेवं मुद्रणपत्रशोधनाय साहाय्यमनुष्ठितवतां त्रिवेद्युपाधि-श्रीब्रह्मदत्तशास्त्रिणां कृतेऽनन्तान् धन्यवादान् समर्पयामि।

अत्र सीसकाक्षरयोजनवैकल्येन काश्चनाशुद्धयो मुद्रणपथमधिरूढाः, अस्मदीयबुद्धिदोषात् दृष्टिदोषाद्वा या अशुद्धयो दृष्टिगोचरा उपासकानां भवेयुः तास्सकलीकृत्य बोधयन्तु येन तत्स्थलं संशोध्य साधकेभ्यो वितराम।

पराम्बापादारविन्दमकरन्दजुषां साधकपुङ्गवानां अत्यन्तोपकारकमिदम-पूर्वपुस्तकं परिगृह्य साधकजनता श्रीमातुः परमनुग्रहभाजनं भूयादिति साञ्जलिबन्धं सप्रणामं सादरं सामोदं चाशासानः –

श्रीगुरुचरणसरोजरेणुः
श्रीसीतारामकविराजः
'श्रीविद्याभास्करः'
दीक्षानाम–दत्तात्रेयानन्दनाथः

इत्यादिभिः प्रमाणैः पराम्बायाः पुंरूपं प्रतिपादितम्।

स्त्रीरूपन्तु स्पष्टमेव –

'न मातुः परमस्ति दैवतम्'

'अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्' – *देव्यपराधक्षमापने ११*

'आपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरणयुगलमम्बायाः।'

इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैर्मातृरूपेणैव ध्येयत्वं निश्चीयते।

त्रिविधदावदग्धान् भववनपतितान् स्वसेवकान् पीयूषवर्षैः परित्रातुं बद्धपरिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागतिः सर्वार्थसिद्धिदा। उक्तञ्च–

निष्कामो देवतां नित्यं योऽर्चयेद्भक्तिनिर्भरः।
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथाशक्ति मनुं जपन्।।
सैव तस्यैहिकं भारं वहेन्मुक्तिञ्च साधयेत्।
सदा सन्निहिता यस्य सर्वञ्च कथयेत सा।
वात्सल्यसहिता धेनुर्यथा वत्समनुव्रजेत्।
तथाऽनुगच्छेत्सा देवी स्वं भक्तं शरणागतम्।

एवमशरणशरण्यायाः करुणावरुणालयायाः भक्तजनस्य वाञ्छासमधिकफलं दातुं भयात्त्रातुञ्च नित्यनिर्भरायाः पराम्बायाः पादारविन्दार्चनं सकलैहिकामुष्मिकं वाञ्छितार्थं प्रपूरयति।

उपासनविधावपि श्रीविद्यायास्त्रयो भेदाः सन्ति—स्थूलोपास्तिः, सूक्ष्मोपास्तिः परोपास्तिरिति; कायिकी, वाचिकी, मानसी चेत्यपरनामधेयाः कायिकी स्थूलोपास्तिः श्रीचक्रार्चनम्, वाचिकी सूक्ष्मोपास्तिर्जपः, मानसी परोपास्तिर्भावनोपनिषद्भावना।

श्रीसाधकानां कृते साङ्गां त्रिविधामपि सपर्यामिकेनैव ग्रन्थरत्नेन सम्यक्प्रकारेण कार्यसम्पादनायालमिति यतमानानामस्माकं मनोरथाः साम्प्रतं पूर्णताङ्गताः।

इतो दशवर्षेभ्यः पूर्वं श्रीगुरुचरणैर्विरचितं श्रीपट्टाभिरामशास्त्रिचरणैः सम्पादितं '*त्रिपुरसुन्दरीवरिवस्या*' नामकं पुस्तकं प्रकाशितमासीत्। तामेव पद्धतिं श्रीचरणैर्नूतनैः कतिपयैः पूर्णाभिषेकादिविविधभिरलङ्कृत्य सम्पादनार्थं

समादिष्टोऽहम्। मया च साधकानां सौकर्यार्थं तत्तत्सपर्यापुस्तकान्यवलोक्य विषया विशदीकृताः समाराध्यचरणानामाज्ञया।

इदानीं *श्रीविद्यारत्नाकरः* इति नामा ग्रन्थोऽयं श्रीमतां पुरस्ताद् वर्तते। ग्रन्थेऽस्मिन् गणपतिश्रीश्यामावार्तालीपरादेवतानां साङ्गोपाङ्गसपर्याविधिर्वर्णितः। श्रीक्रमे सुदुर्लभं त्रिवृत्तार्चनं श्रीचक्रस्वरूपं तस्य महिमा च महता समारोहेण प्रमाणपुरःसरं वर्णितः श्रीचरणैः।

परिशिष्टे च श्रीविद्यामन्त्रभाष्यम्, वाञ्छाकल्पलताविद्या, पूर्णाभिषेकविधिः, लक्षार्चनम्, महायागक्रमः, एवञ्चोद्धृतानि मानसपूजादीनि सुललितानि स्तोत्राणि साधकानां मनांसि समाह्लादयन्ति।

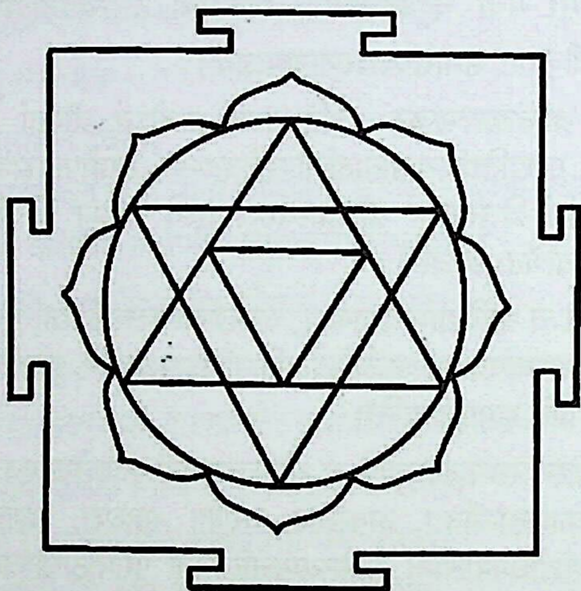
ग्रन्थस्यास्य सम्पादने मुद्रणे च श्रीगुरुचरणानां कृपालेश एव परमो हेतुः, येन ग्रन्थोऽयं प्रकाशतान्नीतः। अतस्तेषां चरणेषु सहस्रशः प्रणामाः विलसन्तु। मुद्रितपुस्तकसंशोधनेनात्यन्तं साहाय्यमाचरितवतां पुरीपीठाधीश्वराणां जगद्गुरु-श्रीशङ्कराचार्याणामनन्तश्रीविभूषितानां स्वामिश्रीनिरञ्जनदेवतीर्थचरणानां पादरजः शिरसाऽऽवहामि।

वित्तसम्बन्धि सर्वविधसाहाय्यं कृतवतां श्रीहनुमानप्रसादधानुकानां, श्रीबाबूलालगनेड़ीवालानामेवं मुद्रणपत्रशोधनाय साहाय्यमनुष्ठितवतां त्रिवेद्युपाधि-श्रीब्रह्मदत्तशास्त्रिणां कृतेऽनन्तान् धन्यवादान् समर्पयामि।

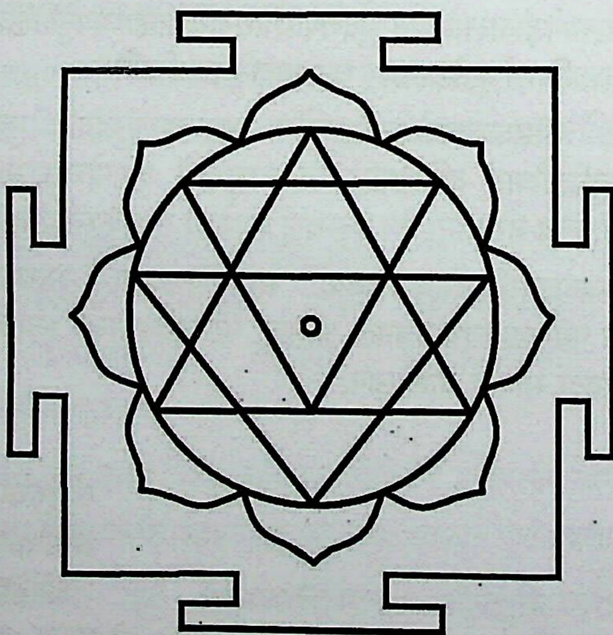
अत्र सीसकाक्षरयोजनवैकल्येन काश्चनाशुद्धयो मुद्रणपथमधिरूढाः, अस्मदीयबुद्धिदोषात् दृष्टिदोषाद्वा या अशुद्धयो दृष्टिगोचरा उपासकानां भवेयुः तास्सकलीकृत्य बोधयन्तु येन तत्स्थलं संशोध्य साधकेभ्यो वितराम।

पराम्बापादारविन्दमकरन्दजुषां साधकपुङ्गवानां अत्यन्तोपकारकमिदम-पूर्वपुस्तकं परिगृह्य साधकजनता श्रीमातुः परमनुग्रहभाजनं भूयादिति साञ्जलिबन्धं सप्रणामं सादरं सामोदं चाशासानः –

श्रीगुरुचरणसरोजरेणुः
श्रीसीतारामकविराजः
'श्रीविद्याभास्करः'
दीक्षानाम–दत्तात्रेयानन्दनाथः



यन्त्र महागणपति

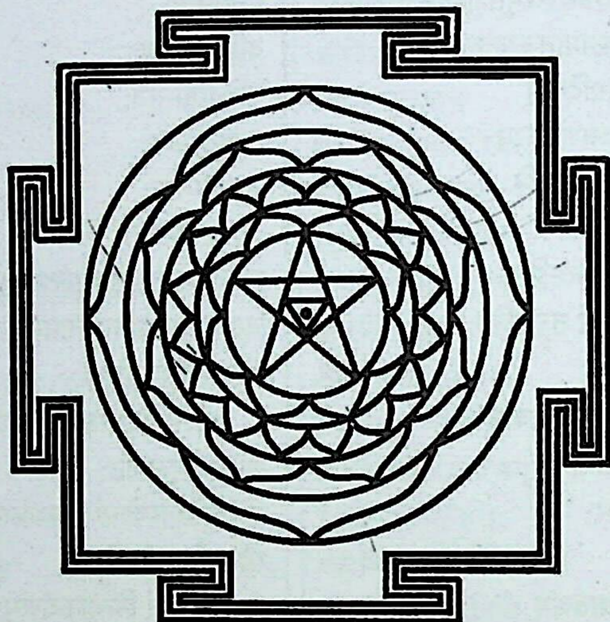


यन्त्र बालात्रिपुरासुन्दरी

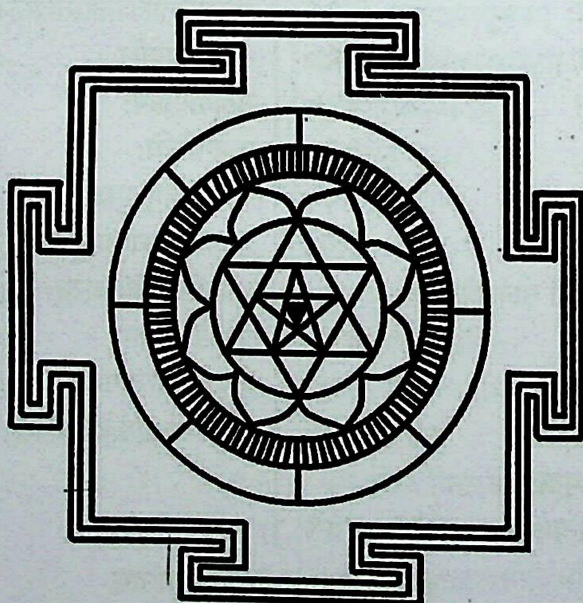
॥श्री॥

श्रीविद्यारत्नाकरस्थविषयानुक्रमणिका

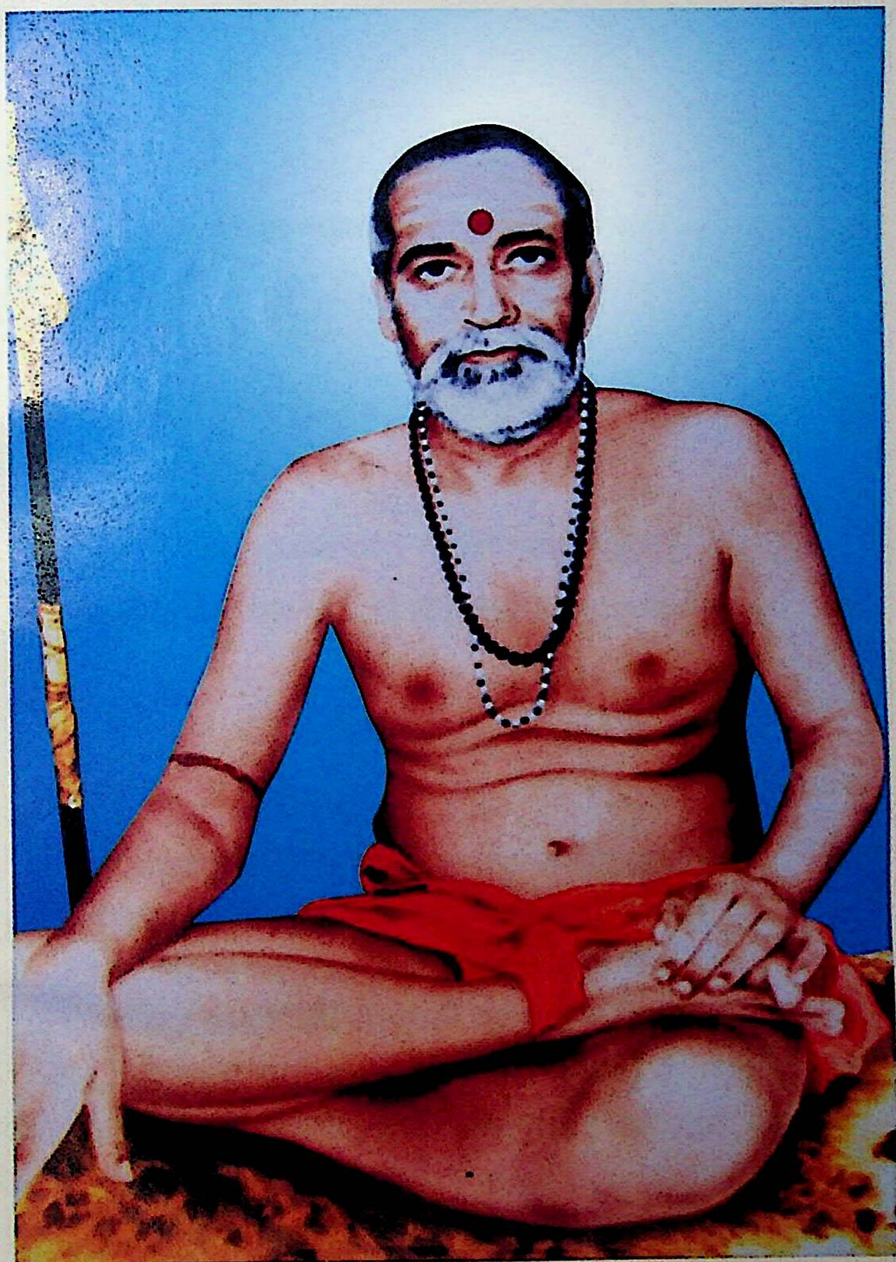
इति विषयानुमक्रमणं समाप्तम्



मातङ्गी यन्त्र



वार्ताली यन्त्र



श्रीकरपात्री स्वामी (षोडशानन्दनाथ)



षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचितः

श्रीविद्या-रत्नाकरः

।। श्रीः।।

।। श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीमहागणपतये नमः।।

।। श्रीसच्चिदानन्दस्वरूपिण्यै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।।

दीक्षाक्रमः

आब्रह्माण्डपिपीलिकान्ततनुभृत्सूज्जृम्भमाणा स्फुटम्,
जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति।
सा देवी जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी,
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे।।

अथ *परशुरामकल्पसूत्र-श्रीविद्यार्णव-नित्योत्सवादिरीत्या* गणपति- श्री-श्यामा-वार्ताली-परा-वरिवस्याः क्रमशो निरूप्यन्ते। अत आदौ दीक्षा-क्रमः निरूप्यते।

श्रीविद्यार्णवतन्त्रस्य श्रेष्ठत्वम्

तत्र श्रीविद्यार्णवोक्तमन्त्रेषु विशेषः। देवताप्रसादात् *श्रीविद्यार्णवो* विशेषतोऽनुगृहीतः। तथा हि, *श्रीविद्यार्णवारम्भे* (१.७१-७५) -

श्रीविष्णुशर्मणः शिष्यः प्रगल्भाचार्यपण्डितः।
तच्छिष्येण मया प्रोक्ते ग्रन्थेऽस्मिन् पूर्णतां गते।।

आविरासीज्जगद्धात्री महामाया ममाग्रतः।
इति प्रोवाच भो वत्स वृणीष्व वरमीप्सितम्।।
तदोक्तवानहं मातर्मत्कृतं ग्रन्थमुत्तमम्।
दृष्ट्वा गुरुक्रमं मन्त्रान् गुरुत्वेन विभाव्य माम्।।
दीक्षां विनाऽपि भक्त्या तु ये जपन्ति च साधकाः।
तेषामतितरां सिद्धिर्भवत्विति ममेप्सितम्।।
सुप्रसन्ना तदा देवी तत्तथैव भवत्विति।

मन्त्राणामतितरामैहिकामुष्मिकाभीष्टफलदातृत्वं जोघुष्यते सर्वमन्त्र-राद्धान्तेषु। पारम्पर्यवैधुर्यादेव तेषामनुष्ठानेऽपि निष्फलत्वमनुभूयते। अनिष्टप्रदत्वञ्चाऽपि तन्त्रेषु स्मर्यते। तदुक्तं तत्रैव–

गुरुक्रममविज्ञाय पूजयेद् यः परां शिवाम्।
सा पूजा निष्फला ज्ञेया भस्मन्यर्पितहव्यवत्।।
ज्ञात्वा गुरुमुखान्नित्यं सम्प्रदायमतन्द्रितः।
प्रत्यहं स्मरणं कुर्यान्मन्त्रवीर्यस्य सिद्धये।।
विंशतिः पुरुषाः वापि नव सप्त त्रयोऽपि वा।
स्ववंशादधिको ज्ञेयो गुरुवंशो महाशुभः।
जनकादधिको ज्ञेयो मन्त्रदस्तु महेश्वरः।।

गुरुलक्षणम्

परशुरामकल्पसूत्रभाष्ये गुरुलक्षणानि, *कुलार्णवे* १३ समुल्लासे–

श्रीगुरुः परमेशानि शुद्धवेशो मनोहरः।
सर्वलक्षणसम्पन्नः सर्वावयवशोभितः।।
सर्वागमार्थतत्त्वज्ञः सर्वतन्त्रविधानवित्।
लोकसम्मोहनाकारो देववत् प्रियदर्शनः।।
सुमुखः सुलभः स्वच्छो भ्रमसंशयनाशकः।
इङ्गिताकारवित् प्राज्ञ ऊहापोहविचक्षणः।।

अन्तर्लक्ष्यबहिर्दृष्टिः सर्वज्ञो देशकालवित्।
आज्ञासिद्धस्त्रिकालज्ञो निग्रहानुग्रहक्षमः।।
वेधको बोधकः शान्तः सर्व–जीव–दयाकरः।
स्वाधीनेन्द्रियसञ्चारः षड्वर्गविजयप्रदः।।
अग्रगण्योऽतिगम्भीरः पात्रापात्रविशेषवित्।
शिवविष्णुसमः साधुर्मनुभूषणभूषितः।।
निर्ममो नित्यसन्तुष्टः स्वतन्त्रोऽनन्तशक्तिमान्।
सद्भक्तवत्सलो धीरः कृपालुः स्मितपूर्ववाक्।
भक्तप्रियः समो देवि! गम्भीरः शिष्टसाधक।।

....

नरवद् दृश्यते लोके श्रीगुरुः पापकर्मणा।
शिववद् दृश्यते लोके भवानि! पुण्यकर्मणा।।
दृश्यं विना स्थिरा दृष्टिर्मनश्चाऽऽलम्बनं विना।
विनाऽऽयासं स्थिरो वायुर्यस्य स्यात् स गुरुः प्रिये।
यो वेत्ता सच्चिदानन्दं हरेदिन्द्रियजं सुखम्।
धन्यं तदुक्तमखिलं स गुरुः परमो मतः।
विद्धस्तु वेधयेद्देवि! नाविद्धो वेधको भवेत्।।
मुक्तस्तु मोचयेदूर्ध्वं न मुक्तो मोचकः कथम्।
शिलां सन्तारयेन्नौर्हि न शिला तारयेच्छिलाम्।।
अभिज्ञश्चोद्धरेन्मूर्खं न मूर्खो मूर्खमुद्धरेत्।।
प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृता।।
पञ्चैते कार्यभूताःस्युः कारणं बोधको भवेत्।
पूर्णाभिषेककर्त्ता यो गुरुस्तस्यैव पादुका।।
पूजनीया महेशानि! बहुत्वेऽपि न संशयः।
श्रीगुरुं लक्षणोपेतं संशयच्छेदकारकम्।।

लब्ध्वा ज्ञानप्रदं देवि ! न गुर्वन्तरमाश्रयेत्।
अनभिज्ञं गुरुं प्राप्य संशयोच्छेदकारकम्।।
गुर्वन्तरं तु गत्वा स नैतद्दोषेण लिप्यते।
मधुलुब्धो यथा भृङ्गः पुष्पात् पुष्पान्तरं व्रजेत्।।
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो गुरोर्गुर्वन्तरं व्रजेत्।
नातिबालो न बृद्धश्च न खञ्जो न कृशस्तथा।।
नाधिकाङ्गो न हीनाङ्गो न खल्वाटो न दन्तुरः।
कुमारीहिमवन्मध्ये स्वतः कृष्णमृगान्विते।
देशे जातस्तु यो विद्वान् आचार्यत्वमथार्हति।
सर्वत्र व्यतिरिक्तं तु आत्मानं वेत्ति यो द्विजः।
सर्वलक्षणहीनोऽपि स गुरुर्नाऽत्र संशयः।। —*हयशीर्षपाञ्चरात्रे*

अतीतागमे विशेषः —

जटी मुण्डी शिखी वाऽपि शस्तदेशसमुद्भवः।
शिवशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः श्रुतवृत्तान्वितो द्विजः।।
शिवमेवाश्रितो नित्यं वाङ्मनःकायकर्मभिः।
आचार्यः स सदोद्दिष्टः शिवदीक्षादिकर्मसु।।

मोहशुरोत्तरे—

चीर्णाचारव्रतो मन्त्री ज्ञानवान् सुसमाहितः।
नित्यनिष्ठो यतिः ख्यातो गुरुः स्याद् भौतिकोऽपि च।।

गुरुगौरवे—

विद्ययाऽभयदातारं लौल्यचापल्यवर्जितम्।
एवं विधं गुरुं प्राप्य को न मुच्येत बन्धनात्।।

पौष्करे तु —

सर्वलक्षणहीनोऽपि ज्ञानवान् गुरुरुच्यते।
ज्ञानञ्च तत्त्वविज्ञानं षडध्वज्ञानसंश्रयम्।।

मालिनीतन्त्रेऽपि—

स गुरुर्मत्समः प्रोक्तो मन्त्रवीर्यप्रकाशकः।
आदिमान्त्यविहीनास्तु मन्त्राः स्युः शरदभ्रवत्।।
गुरोर्लक्षणमेतावदादिमान्त्यं निवेदयेत्।। — इति।

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तापहारकाः।
दुर्लभोऽयं गुरुर्देवि शिष्यसन्तापहारकः।।
स्वच्छः स्वच्छन्दचरितोऽतुच्छधीस्त्यक्तहृच्छयः।
देशकालादिविद्देशे देशे दैशिक उच्यते।।
इष्टदो नित्यसंहर्ता दृष्टादृष्टसुखावहः।
रतोऽविरतमर्चासु परं पुरमुरद्विषोः।।
दाता दान्तः शान्तमना नितान्तं कान्तविग्रहः।
स्वदुःखकारणेनाऽपि परं परसुखोद्यतः।।
ऊहापोहविदध्यांत्मव्याकुलो मोहवर्जितः।
आज्ञानुकम्पी विज्ञातज्ञानी ज्ञातपरेङ्गितः।।

शिष्यलक्षणम्

आस्तिको दृढभक्तिश्च गुरौ मन्त्रे च दैवते।
एवम्विधो भवेच्छिष्य इतरो दुःखकृद् गुरोः।।

वशिष्ठागस्त्ययाज्ञवल्क्यादिवद् ब्रह्मनिष्ठः स्वस्थमानसो गृहस्थो गुरुः स्वयमेव सर्वमाचार्यकृत्यं कुर्यात्। त्यक्ताग्नयोऽन्याश्रमिणस्तु ब्रह्मादिकार्याणि ऋत्विग्भिरेव कारयेयुः। योगध्यानादिसाध्यान्यावरणार्चनादीनि च स्वयमेव विदधीरन्–

दीक्षाकालः

नित्योत्सवे–

वैशाखे सिद्धिदा दीक्षा श्रावणे वृद्धिदा नृणाम्।
आश्विने सर्वसिद्धिःस्यात् कार्त्तिके ज्ञानवृद्धिदा।।
शुभदा मार्गशीर्षे च माघे स्वर्गफलप्रदाः।
फाल्गुने सर्वसिद्धिः स्यादन्येऽनिष्टफलप्रदाः।।
मलमासं क्षयमासमस्वाध्यायं विवर्जयेत्।

रवि–सोम–बुध–गुरु–शुक्रेषु वारेषु द्वितीया–तृतीया–पञ्चमी–सप्तमी–दशम्येकादशी–द्वादशी–पूर्णिमा–तिथिषु दीक्षा सुखदा।

अश्विनी–रोहिणी–पुनर्वसु–पुष्य–मघा–पूर्वोत्तरफाल्गुनीहस्त–चित्रा–स्वाती–अनुराधा – पूर्वोत्तराषाढा – शतभिषा – पूर्वभाद्रपदा – उत्तरभाद्रपदा – रेवती

नक्षत्रेष्वायुष्मत्प्रीति-सौभाग्य-शुभ-सुकर्म-धृति-वृद्धि-ध्रुव-सिद्धि-हर्षाख्य-वरीयःशिव-सिद्ध-ब्रह्मेन्द्रयोगेषु च दीक्षा शुभावहा। मेष-कर्कट-कन्या-तुला-वृश्चिक-मकर-कुम्भराशिषु-

शुक्लपक्षे शुभा दीक्षा, कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिनात्।
भूतिकामैः सिते पक्षे मुक्तिकामैः सितेतरे।।
विषुवेऽप्ययनद्वन्द्वे संक्रात्यां दमनोत्सवे।
दीक्षा कार्या त्वकालेऽपि पवित्रे गुरुपर्वणि।।

विषुवे (मेष-तुला-सङ्क्रमणयोः) अयन-द्वन्द्वे (कर्कटमकरसंक्रान्त्योः) संक्रान्त्यां (तदन्यासु-संक्रान्तिषु) दमनोत्सवे (चैत्रपूर्णमादिषु) पवित्रे (श्रावणपूर्णिमादिसु) गुरुपर्वणि (गुरुजन्मव्याप्तिदिनयोः)।

दीक्षायां देविपर्वाणि

षष्ठी भाद्रपदे मासि कृष्णाश्विनचतुर्दशी।
कार्तिके नवमी शुक्ला मार्गे कृष्णा च पञ्चमी।
पौषे च पूर्णिमा देवि माघे चैव चतुर्थिका।
फाल्गुनैकादशी कृष्णा चैत्रे मासि त्रयोदशी।
वैशाखेऽक्षयतृतीया ज्येष्ठे दशहरा स्मृता ।।
आषाढे द्वादशी कृष्णा ह्यमावस्या च श्रावणी।
इष्टानि देवीपर्वाणि कोटियज्ञफलानि वै।।

मुहुर्तं विनापि मन्त्रदीक्षा

सत्तीर्थोदके विधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च।
मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत्।।

इह सकलानर्थनिवर्हणपरमानन्दावाप्तिमूलप्रत्यक्चैतन्याभिन्नपरात्परब्रह्मात्मिकायाः पराम्बायास्सच्चित्सुखरूपायाः साक्षात्कृतावुपास्तौ च दीक्षाऽपेक्षिता-

दीयते ज्ञानमत्यन्तं क्षीयते पापसञ्चयः।
यया दीक्षेति सम्प्रोक्ता परलोकप्रदायिनी।।

इति दीक्षानिर्वचनात् 'मतिमान् दीक्षेत' इति परशुरामसूत्रात्, 'आचार्यवान् पुरुषो वेद' इति श्रुतेश्च। दीक्षामन्तरा पुस्तकस्थान् मन्त्रान् दृष्ट्वा यो जपति, स प्रत्यवैति।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् दृष्ट्वा जपति यो नरः।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाऽभिजायते।। –इति *नित्योत्सवे*

दीक्षापद्धतिः

श्रीविद्यार्णवादिप्रोक्तशुभपुण्यतिथौ सद्गुरुं वृणुयात्।

तत्र निर्वर्तितनित्यस्नानविधिस्साधको वाद्यघोषपुरस्सरं ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा, आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ सङ्कीर्त्य, श्रेयस्कामोऽहम् अमुकविद्याग्रहणार्थम्, अमुकगुरोर्दीक्षां ग्रहीष्य इति सङ्कल्प्य, समित्पाणिः सोपहारो गुरुमुपगच्छेत्। पुनश्च गुरोराज्ञया देशकालगोत्रनक्षत्रराश्या-द्युच्चारणपूर्वकं भगवन्तं भवन्तं गुरुत्वेन वृण इति शिष्योक्तौ, गुरुर्वृतोऽस्मी-त्युक्त्वा, सशिष्यः सामयिकैस्सह गोमयेनोपलिप्तं पुष्पमालावितानाद्यलङ्कृतं मण्डपमासाद्य हस्तपादौ प्रक्षाल्याचम्य मण्डपान्तःप्रविश्य वक्ष्यमाणविधिना आसन उपविश्य भूशुद्धिभूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठाः कृत्वा गणपतिललिता-श्यामावार्तालीपराणां सपर्यां विधाय शिष्यमाहूय नूतनेन वाससा तस्य मुखं बद्ध्वा गणपत्यादिमूलमन्त्रानुच्चारयन् सामान्यार्घोदकबिन्दुभिस्तमभिवीक्ष्य त्रैपुरसिद्धान्तं श्रावयेत्।

त्रैपुरसिद्धान्तः

भूतानि, तन्मात्राणि, ज्ञानकर्मेन्द्रियाणि, अहङ्कारबुद्धिमनांसि, गुणसाम्यरूपा प्रकृतिः, शरीरकञ्चुकितश्शिवो जीवः, (परमशिवगताःस्वतन्त्रतानित्यता-नित्यतृप्तता-सर्वकर्तृकता-सर्वज्ञता धर्मा एव सङ्कुचितास्सन्तो जीवे) नियति-काल-राग-कला-विद्या-शब्दवाच्या भवन्ति। माया (जगत्परमशिवयोर्भेदबुद्धिः) शुद्धविद्या (तयोरभेदबुद्धिः) जगदिदन्तया पश्यन् परमशिव ईश्वरः, तदहन्तया पश्यन् सदाशिवः, शक्तिः परमशिवस्य जगत्सिसृक्षा, तद्वान् शिवः, षट्त्रिंशत्तत्वानि, स्वविमर्शः पुरुषार्थः।

मन्त्रोपासनम्

वर्णसमुदायरूपाः मन्त्राः नित्याः, (मूलविद्यासमसत्ताका व्यावहारिकनित्याः) मन्त्राणामचिन्त्यशक्तित्वेन स्वगुरुपरम्परोपदेशैकगम्यधर्मरूपेण सम्प्रदायेन

गुरुशास्त्रदेवतासु विश्वासेन सर्वास्सिद्धयः, आचार्योक्तरीत्या गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभावयन् मनःपवनयोरेकयत्ननिरोद्धव्यज्ञानाच्च प्रत्यगात्मवेदनम्, भावना-दार्ढ्यान्निग्रहानुग्रहसिद्धिः। दर्शनान्तरानिन्दनेन स्वोपास्यनिष्ठया मन्त्रार्थानु-सन्धानेन कामक्रोधनिन्दापरिवर्जनेन च सिद्धयो भवन्ति।

सर्वसारभूतो धर्मः

वृत्तिभिर्वेद्यं सर्वं हविः, इन्द्रियाणि स्रुचः, सङ्कोचेन स्वात्मस्थितास्स-र्वज्ञत्वसर्वकर्तृत्वादयः परमशिवशक्तय एव ज्वालाः, स्वात्मशिव एव पावकः, स्वयमेव होता, निर्गुणब्रह्मापारोक्ष्यं फलम्, स्वपारमार्थिकस्वरूपलाभान्न परमिति सारः।

शाम्भवी दीक्षा

गुरुः शिष्यस्य शिरसि रक्तशुक्लचरणं कामेश्वरीकामेश्वरयोर्भावयित्वा तदमृतक्षालितं सर्वशरीरमलं दूरीकुर्यात्।। *एषा चरणविन्यासरूपा दीक्षा*।।

शाक्ती दीक्षा

ततस्तस्यामूलमाब्रह्मबिलं प्रज्वलन्तीं बिसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलां ज्वलदनलनिभां परां संविदं ध्यात्वा तद्रश्मिभिः पापान् दहेत्।। *इयं शक्तिपातरूपा दीक्षा*।।

मान्त्री दीक्षा

त्रिकटु-त्रिफला-चतुर्जात-कङ्कोल-मदयन्ती-सहदेवी-दूर्वा-भस्म-मृत्तिका चन्दन-कुङ्कुम-रोचना-कर्पूरवासितजलपूर्णवस्त्रयुगलवेष्टितं नूतनकलशं बालाषडङ्गेनाभ्यर्च्य श्रीश्यामावार्तालीचक्राणि निःक्षिप्य तिसृणामावरणमन्त्रै-रभ्यर्च्य संरक्ष्यास्त्रेण प्रदर्श्य धेनुयोनी, ततः सक्षीरेण सिन्दूरकुङ्कुमादिना चन्दनपीठे मातृकायन्त्रं विलिख्य, तत्र शिष्यं निवेश्य तेन कुम्भाम्भसा ललितादिमूलविद्याभिः स्नापयेत्। मातृकायन्त्रप्रकारश्चेत्थम्-चतुरस्रालङ्कृतं सकेसरमष्टदलकमलं विलिख्य तत्कर्णिकायां हकारसकारौकारविसर्गात्मकं बीजं तत्केसरेषु प्राच्यादितो- ऽकारादिस्वरद्वन्द्वं दलोदरेषु क-च-ट-त-प-

य-श-ळ-क्षाख्यवर्गाष्टकं चतुरस्रस्य बाह्यतः प्रागादिदिक्षु वकारम् आग्नेयादिविदिक्षु ठवर्णञ्च लिखेत्। सर्वेषामक्षराणां सबिन्दुकत्वं सम्प्रदायात्।

ततः परिहितदुकूलं सुरभिचन्दनानुलिप्ताङ्गं मल्लिकादिमाल्यधारिणं, सुप्रसन्नं शिष्यं पार्श्वे निवेश्य तदङ्गे मातृकान्यासं विधाय विमुक्तमुख- बन्धवाससस्तस्य हस्ते क्रमात् त्रीन् चन्दनोक्षितान् पुष्पखण्डान् विनिक्षिप्य तत्त्वमन्त्रैर्ग्रासयित्वा गुरुर्दक्षिणकर्णे श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रमुपदिश्य बालामुपदिशेत्।

इति मान्त्री दीक्षा

ततस्तस्य शिरसि स्वचरणं निःक्षिप्य सर्वान् मन्त्रान् सकृद्वा क्रमेण वा यथाधिकारमुपदिश्य स्वाङ्गेषु किमप्यङ्गं शिष्यं स्पर्शयित्वा तदङ्गमातृकाव-र्णादिद्व्यक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा आनन्दनाथशब्दान्तं तस्य नाम निर्दिशेत्।

समयानुचारशासनं साधकधर्मः

ततस्समयाचारानुशासनम्। श्लेष्मातक-करञ्जाक्ष - निम्ब - अश्वत्थ - कदम्ब-बिल्व-वटोदुम्बरतिन्तिणीकुलवृक्षच्छेदनवर्जनम्, स्त्रीवृन्द-क्षीरकलश-सिद्धलिङ्गिविविधक्रीडाकुलकुमारीकुल-सहकाराशोकतरु-पितृवनमत्तवाराङ्गना-रक्तांशुकामत्तेभान् दृष्ट्वा वन्देत्। कृष्णाष्टमीकृष्णचतुर्दशीदर्श-पूर्णमास-संक्रमणपर्वसु नैमित्तिकी वरिवस्या कर्तव्या। गुरुपरमगुर्वादीन् आदरेण पश्येत्, शरीरस्यार्थस्यासूनाञ्च गुर्वर्थं धारणम्, तद्वचसि युक्तायुक्ताविचारम्, सर्वत्र शास्त्र-व्यवस्थापालनम्, परनिन्दात्मस्तुत्योश्च वर्जनम्, सर्वप्रयत्नेन परदेवताराधनद्वारा ब्रह्मभावा- भिलाषः, इत्थं विदित्वाऽनुतिष्ठन् कृतकृत्यो जीवन्मुक्तो भवेत्।

ततो गुरुर्देहेन्द्रियादिविलक्षणमवस्थात्रयसाक्षिसच्चिदात्मकप्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैव त्वमसि इति शिष्याय परमात्मतत्त्वमुपदिश्य ललिताश्यामावार्ता-लीपराविद्याभिः तदङ्गं द्विः परिमृज्य परिरभ्य तं मूर्ध्न्युपाघ्राय स्वमिव शिष्यमपि परचिद्रूपं कुर्यात्। शिष्योऽपि तथैव क्षणमात्मानं भावयित्वा कृतार्थस्सन् यथाविभवं श्रीगुरुमाराध्य तस्माद्विदितवेदितव्योऽशेषमन्त्राधिकारी भवेत्।

अनेनैवैकस्मिन्नेव काले समुचितेनाऽन्यतमेन कालभेदाद्दीक्षाविधिना गणपति–श्री–श्यामा–परा–वार्तालीनां क्रमानुष्ठानं न तु पृथक्–पृथक् दीक्षणम्।

दीक्षायाः संक्षिप्तविधिः

गणपतेर्ललितायाश्च उभयोरेव क्रमं निर्वर्त्य पात्राण्यासाद्य चक्रराजमात्रं कलशे निक्षिप्य- श्रीविद्यया केवलं शिष्यं स्नपयित्वा तदङ्गञ्च परिमृज्य शेषमशेषञ्चाऽनुतिष्ठेत्। गणपतिश्यामादीनां स्वातन्त्र्येणैकैकशः तत्तत्क्रमं प्रवर्त्य तत्तत्पात्रं आसाद्य तत्तद्यन्त्रं कुम्भे निःक्षिप्य तत्तन्मन्त्रदीक्षां कुर्यात्।

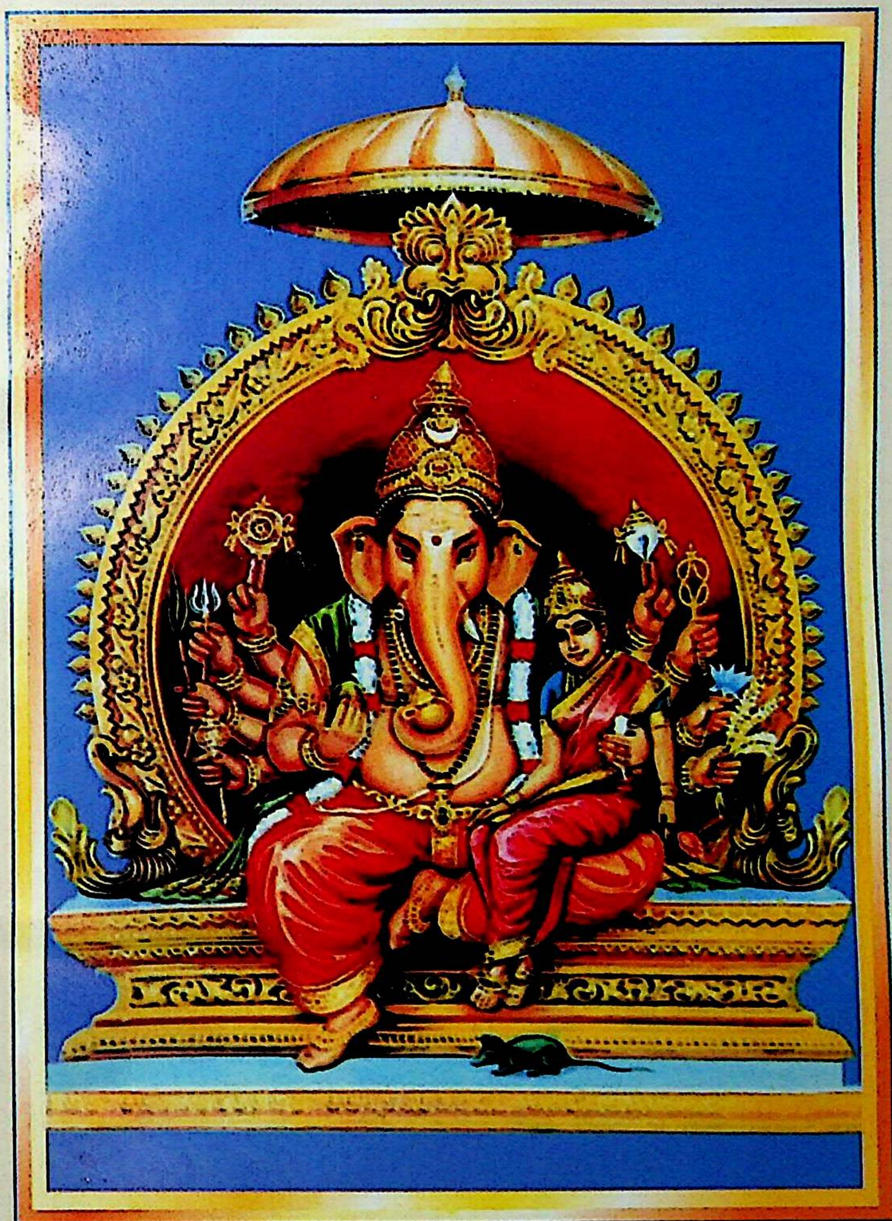
दीक्षायां त्रैवर्णिकस्यैवाऽधिकारः। शक्तीनान्तु ओघत्रयान्तर्गतगुरु–मण्डलान्तर्दर्शनज्ञापकबलादस्त्येवाऽधिकारः।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे

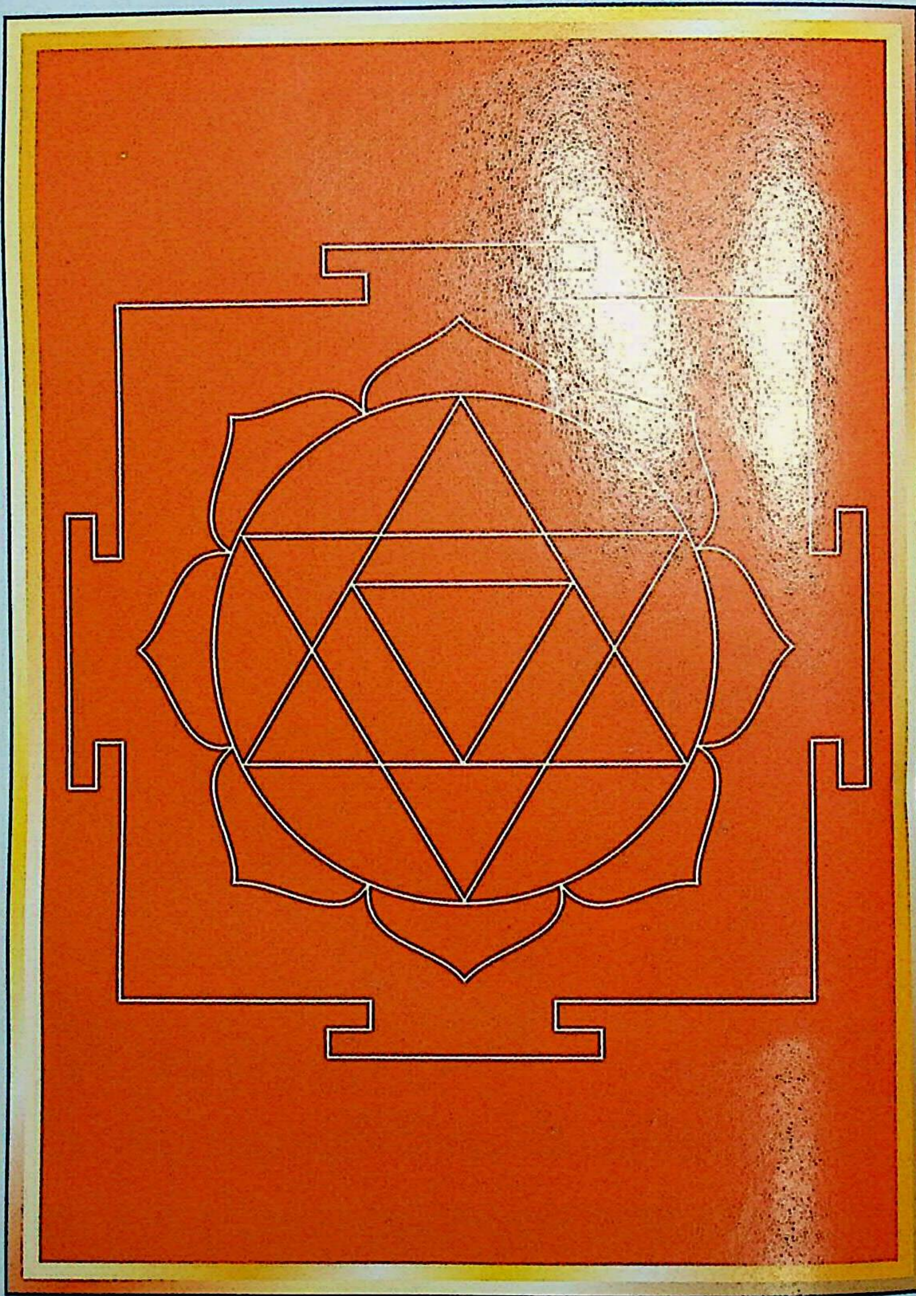
दीक्षाक्रमः सम्पूर्णः

गुरुक्रममविज्ञाय पूजयेत् यः परां शिवाम्।
सा पूजा निष्फला ज्ञेया भस्मन्यर्पितहव्यवत्।।

॥ सिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतिः ॥



बीजापूरगदेक्षुकार्मकरुजा [illegible] चक्राब्जपाशोत्पलंब्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिष्टोज्वलद्‌भूषया विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विध्यनेश इष्टार्थदः



श्रीमहागणपति यन्त्रम्

श्रीमहागणपतिक्रमः

इत्थं सद्गुरोराहितदीक्षः महाविद्याराधन-
प्रत्यूहापोहाय गाणनायकीं पद्धतिमामृशेत्।। *—परशुरामकल्पसूत्रम्*

श्रीमान् साधकः ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय श्रीगुरुपादुकास्मरणपूर्वकं हृदयकमले उद्यदरुणकिरणपाटलस्य देवस्य करटिवदनस्य ध्यानेन परिप्लुष्टनिःशेषदोषत्वम् आत्मनः तत्प्रभारुणतनुत्वञ्च भावयित्वा शय्यां त्यक्त्वा श्रीविद्यासपर्या-क्रमोक्तशौचदन्तधावनादीन् कृत्वा, स्नात्वा, धौते वाससी परिधाय सन्ध्यावन्दनं कृत्वा, ॐ गम् आत्मतत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं विद्यातत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं शिवतत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं सर्वतत्त्वाय स्वाहा। इति तत्त्वाचमनं कृत्वा मूलेन प्राणानायम्य। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्" इति गणपतिगायत्र्या, ॐ सूर्यमण्डलस्थाय महागणपतये एषोऽर्घ्यः स्वाहा, इति त्रिःअर्घ्यं दत्वा। ऋष्यादिषडङ्गन्यासपूर्वकम् अष्टोत्तरशतवारं वा अष्टविंशतिवारं मूलमन्त्रं जपित्वा। अनेन कर्मणा भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्। इति सन्ध्यां गणपतये निवेदयेत्। ततो गुरुपादुकामन्त्रं जपेत्—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः श्रीगुरुपादुकां पूजयामि।

चतुरावृत्तितर्पणम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम श्रीमहागणपतिप्रसाद-सिद्धये सर्वविघ्ननिवारणार्थं चतुरावृत्तितर्पणं करिष्य इति सङ्कल्प्य नद्यादौ हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर।।

इति मन्त्रेण सूर्यमभ्यर्थ्य-

आवाहयामि त्वां देवि! तर्पणायेह सुन्दरि।
एहि गङ्गे! नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते।।

इति गङ्गां प्रार्थ्य 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः' इत्युच्चार्य क्रों इत्यङ्कुशमुद्रया गङ्गाऽऽदितीर्थान्यावाह्य, वम् इत्यमृतबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्र चतुरस्राष्टदल-

षट्कोणत्रिकोणात्मकं महागणपतियन्त्रं विचिन्त्य, स्वदेहे ऋष्यादिन्यासान् न्यस्यं, तद्यथा-

अस्य श्रीमहागणतिमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्रीच्छन्दः, महागणपतिर्देवता, महागणपतितर्पणे विनियोगः।

न्यासः

	प्रथमवारम्	द्वितीयवारम्
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ	गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
३	श्रीं गीं तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
३	ह्रीं गूं मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
३	क्लीं गैं अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
३	ग्लौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।
३	गं गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ध्याये हृदब्जे शोणाङ्गं वामोत्सङ्गविभूषया।
सिद्धलक्ष्म्या समाश्लिष्टपार्श्वमर्धेन्दुशेखरम्।।
वामाधःकरतो दक्षाधः करान्तेषु पुष्करे।
परिष्कृतं मातुलुङ्गगदापुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः।।
शूलेन शङ्खचक्राभ्यां पाशोत्पलयुगेन च।
शालिमञ्जरिकास्वीयदन्ताञ्चलमणीघटैः ।।
स्रवन्मदञ्च सानन्दं श्रीश्रीपत्यादिसंवृतम्।
अशेषविघ्नविध्वंसनिघ्नं विघ्नेश्वरं भजे।। (इति ध्यात्वा)

(यन्त्रे सावरणदेवमावाह्य) ततस्तद्यन्त्रे मूर्तिं च गन्धपूष्पदूर्वाङ्कुरैः श्चोपचारैरर्चयेत्। तद्यथा-

श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्)।

३ महागणपतये हम् आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः(त्रिवारम्)।

३ महागणपतये यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्)।

३ महागणपतये रं वह्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्)।

३ महागणपतये वम् अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्)।

३ महागणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः(त्रिवारम्)। इति।

प्रथमं प्रत्यावृत्तिमूलान्ते महागणपतिं तर्पयामि द्वादशवारं तर्पयित्वा ततः स्वाहान्तेन मूलस्यैकैकेन वर्णेन चतुश्चतुर्वारं प्रतिवर्णान्तमावृत्तेन मूलेन च प्राग्वत् चतुश्चतुर्वारं देवं त्रयोदशसु मिथुनेषु श्रीश्रीपत्यादिषु एकैकां देवतां द्वितीयान्तेन तत्तन्नाम्ना चतुश्चतुर्वारं प्रतिदेवतामावृत्तेन च मूलेन देवं चतुश्चतुर्वारं तर्पयेत्। यथा-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणतपये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि। (द्वादशवारम्)

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलमन्त्रेण –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ श्रीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ ह्रीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ क्लीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ ग्लौं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)

३ गं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ गं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ णं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ पं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ तं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ यें स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ रं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ रं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ दं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ सं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वँ स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ जं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)

३ नं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ में स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ शं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ मां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ नं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ यं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ स्वां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ हां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ श्रियं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ श्रीपतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ गिरिजां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ गिरिजापतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ रतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)

३ रतिपतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन–	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ महीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ महीपतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ महालक्ष्मीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ महागणपतिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ ऋद्धिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ आमोदं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ समृद्धिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ प्रमोदं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ कान्तिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ सुमुखं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ मदनावतीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ दुर्मुखं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ मदद्रवां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)

३ अविघ्नं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ द्राविर्णीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ विघ्नकर्त्तारं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वसुधारां स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ शङ्खनिधिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ वसुमतीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
३ पद्मनिधिं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन –	महागणपतिं तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)

इत्याहत्य तर्पणसङ्ख्यापिण्डचतुश्चत्वारिंशदुत्तरशती (४४४) भवति। तर्पणान्ते उत्तरन्यासान् विधाय पुनर्मूलेन देवमुक्तरीत्या पञ्चोपचारैःसम्पूजयेत्।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाण कृततर्पणम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिर्महद्यशः।
कवित्वं भुक्तिमुक्ती च चतुरावृत्तितर्पणात्।।

अनेन कृतेन तर्पणेन भगवान् श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितः श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।।

।।इति षोडशानन्दश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नकारे चतुरावृत्तितर्पणविधिः।।

अथ गणपति–सपर्यापद्धतिः

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम्।।

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो, वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः। सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि, सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि।।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

यागमन्दिर–प्रवेशः

ततो यागगृहमागत्य स्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य यागमन्दिरं च रङ्ग-वल्लीपुष्पमालिकावितानादिभिरलङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामभागयोः ऊर्ध्वभागे च क्रमेण–

श्रीं ह्रीं क्लीं भं भद्रकाल्यै नमः। (दक्षशाखायाम्)
३ भं भैरवाय नमः। (वामशाखायाम्)
३ लं लम्बोदराय नमः। (ऊर्ध्वशाखायाम्)

(इति द्वारदेवतास्संम्पूज्य)

तत्त्वाचमनम्

ॐ गम् आत्मतत्त्वाय स्वाहा।
ॐ गं विद्यातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ गं शिवतत्त्वाय स्वाहा।
ॐ गं सर्वतत्त्वाय स्वाहा। (इत्याचम्य)

श्रीगुरुपादुकामन्त्रः

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौं ऐं ग्लौं हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाश-विमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपञ्जर-विलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्र-मुद्गरयोन्या-ख्याभिः पञ्चभिर्मुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत्।

घण्टापूजा

आगमार्थं च देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुर्याद् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम्।।
(इति घण्टानादं कृत्वा)

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

(मूलेन प्राणानायम्य)। देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-महागणपति-प्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि।

(आत्मानमलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनःसन् प्रमुदितचित्तः शिवोहं इति भावयेत्)।

आसनपूजा

आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय "सौः" इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत्।

अस्य श्रीआसनमहामन्त्रस्य पृथिव्या मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः-

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

३ योगासनाय नमः। ३ वीरासनाय नमः। ३ शरासनाय नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः।

(इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत्)

श्रीं ह्रीं क्लीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः।

(इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्)।

३ समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नमः।

(इति मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः)

३ ऐं ह्रः अस्त्राय फट्- इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृतेन अङ्गुष्ठादि-कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्।

दीपपूजा

(स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन् निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य)।

घृतदीपो दक्षिणे स्यात् तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः।।

(दक्षवामभागौ देवस्यैव।)

३ दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत् पूजासमाप्तिः स्यात्तावत् प्रज्वल सुस्थिरा।।

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्)

मूलेन यन्त्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

शिखाबन्धनादि मातृकान्यासान्तम्

श्रीक्रमे वक्ष्यमाणप्रकारेण भूतशुद्ध्यादिमात्मनः प्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय विंशतिधा षोडशधा दशधा त्रिधा वा मूलेन प्राणानायम्य।

३ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

(इति मन्त्रमुच्चार्य) युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रयकरास्फोटनत्रय–क्रूरदृष्ट्यवलोकनपूर्वकतालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्, अथ "नमः" (इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चरन्नङ्कुशमुद्रया शिखां बध्नीयात्)।

ततः श्रीक्रमे वक्ष्यमाणप्रकारेण मातृकान्यासं श्रीं ह्रीं क्लीं, इति त्रिबीजयोजनपूर्वकं विधाय, मूलमन्त्रस्य ऋषि–देवतादिविनियोगपूर्वकं करषडङ्गन्यासौ विधाय मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैरलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत्।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।

(मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानञ्च प्रोक्षयेत्)।

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दु–त्रिकोण षट्कोण–वृत्त–चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय, चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च गणपतिषडङ्गैः सम्पूजयेत्। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ ह्रीं गूं शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्लीं गैं कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ गं गः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ ह्रीं गूं शिखायै वषट्। शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्लीं गैं कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ गं गः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन मूलत्रिखण्डेन

३ ॐ श्री ह्रीं क्लीं गं नमः।

३ गणपतये वर वरद नमः।

३ सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः।

३ मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः, अस्त्राय फट् इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य,

३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रदशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित–श्रीमहागणपतेः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः। इति मण्डलोपरि संस्थाप्य।

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः। (इति अग्निमण्डलं विभाव्य)। दश वह्निकलाः सम्पूजयेत्। तद्यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।	३ षं सुश्रीकलायै नमः।
३ रं ऊष्माकलायै नमः।	३ सं सुरूपाकलायै नमः।
३ लं ज्वलिनीकलायै नमः।	३ हं कपिलाकलायै नमः।
३ वं ज्वालिनीकलायै नमः।	३ ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः।
३ शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः।	३ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।

३ अस्त्राय फट् (इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा)

श्रीं ह्रीं क्लीं उं सूर्यमण्डलायाऽर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतेः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः– इति संस्थाप्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्।

३ हां हीं हूं हैं हौं हः– हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः

(इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः सम्पूजयेत्)। तद्यथा–

३ कं भं तपिनीकलायै नमः।	३ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः।
३ खं बं तापिनीकलायै नमः।	३ जं थं भोगदाकलायै नमः।
३ गं फं धूम्राकलायै नमः।	३ झं तं विश्वाकलायै नमः।
३ घं पं मरीचिकलायै नमः।	३ ञं णं बोधिनीकलायै नमः।
३ ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः।	३ टं ढं धारिणीकलायै नमः।
३ चं धं रुचिकलायै नमः।	३ ठं डं क्षमाकलायै नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-महागणपतेः सामान्यार्घ्यामृताय नमः (इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्वा)।

श्रीं ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे।
३ सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः।
(इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः सम्पूजयेत्)। तद्यथा-

श्रीं ह्रीं क्लीं	अं अमृताकलायै नमः।	३ लृं चन्द्रिकाकलायै नमः।
३	आं मानदाकलायै नमः।	३ लॄं कान्तिकलायै नमः।
३	इं पूषाकलायै नमः।	३ एं ज्योत्स्नाकलायै नमः।
३	ईं तुष्टिकलायै नमः।	३ ऐं श्रीकलायै नमः।
३	उं पुष्टिकलायै नमः।	३ ओं प्रीतिकलायै नमः।
३	ऊं रतिकलायै नमः।	३ औं अङ्गदाकलायै नमः।
३	ऋं धृतिकलायै नमः।	३ अं पूर्णाकलायै नमः।
३	ॠं शशिनीकलायै नमः।	३ अः पूर्णामृताकलायै नमः।

ततस्तस्मिन् शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः (सम्पूज्य), अस्त्राय फट् (इति संरक्ष्य), कवचाय हुं (इति अवगुण्ठ्य), धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलात् किञ्चित् वर्धन्यां क्षिपेत्।

विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, विन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य षट्कोणे स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिंदुं चार्चयेत्। तद्यथा-
चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च

श्रीं ह्रीं क्लीं	ॐ गां हृदयाय नमः।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	श्रीं गीं शिरसे स्वाहा।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ह्रीं गूं शिखायै वषट्।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं गैं कवचाय हुं।	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	गं गः अस्त्राय फट्।	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ	गां हृदयाय नमः।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	श्रीं गीं शिरसे स्वाहा।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ह्रीं गूं शिखायै वषट्।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं गैं कवचाय हुं।	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	गं गः अस्त्राय फट्।	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं गणपतये वर वरद नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः।

३ ''मूलं'' नमः (बिन्दौ)

अथ–३ अस्त्राय फट् (इति आधारं प्रक्षाल्य)।

श्रीं ह्रीं क्लीं अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मी-सहितश्रीमहागणतपतेः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः (इति आधारं संस्थाप्य)

श्रीं ह्रीं क्लीं अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः–

इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्निकलाः पूजयेत्। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।	३ षं सुश्रीकलायै नमः।
३ रं ऊष्माकलायै नमः।	३ सं सुरूपाकलायै नमः।
३ लं ज्वलिनीकलायै नमः।	३ हं कपिलाकलायै नमः।
३ वं ज्वालिनीकलायै नमः।	३ ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः।
३ शं विस्फुलिङ्गिनीकालयै नमः।	३ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।

ततः- श्रीं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट् (इति मन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य)

श्रीं ह्रीं क्लीं उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मी-सहितश्रीमहागणपतेः विशेषार्घ्यपात्राय नमः (इति आधारोपरि संस्थाप्य)।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा, (इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य)।।

श्रीं ह्रीं क्लीं आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्।।

३ हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः।

(इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत्)। यथा-

श्रींह्रींक्लीं कं भं तपिनी कलायै नमः। ३ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः।
३ खं बं तापिनीकलायै नमः। ३ जं थं भोगदाकलायै नमः।
३ गं फं धूम्राकलायै नमः। ३ झं तं विश्वाकलायै नमः।
३ घं पं मरीचिकलायै नमः। ३ ञं णं बोधिनीकलायै नमः।
३ ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः। ३ टं ढं धारिणीकलायै नमः।
३ चं धं रुचिकलायै नमः। ३ ठं डं क्षमाकलायै नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मी-सहितश्रीमहागणतेः विशेषार्घ्यामृताय नमः-

इति अकारादि क्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं मातृकया अर्पितेन अमृतेन आपूर्य अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डं निक्षिप्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम्।
भवावाजस्य सङ्गथे।।

सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः-

इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत्। यथा-

श्रींह्रींक्लींअं अमृताकलायै नमः। ३ लृं चन्द्रिकाकलायै नमः।
३ आं मानदाकलायै नमः। ३ लॄं कान्तिकलायै नमः।
३ इं पूषाकलायै नमः। ३ एं ज्योत्स्नाकलायै नमः।
३ ईं तुष्टिकलायै नमः। ३ ऐं श्रीकलायै नमः।
३ उं पुष्टिकलायै नमः। ३ ओं प्रीतिकलायै नमः।
३ ऊं रतिकलायै नमः। ३ औं अङ्गदाकलायै नमः।
३ ऋं धृतिकलायै नमः। ३ अं पूर्णाकलायै नमः।
३ ॠं शशिनीकलायै नमः। ३ अः पूर्णामृताकलायै नमः।

ततः, श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ जुं सः स्वाहा। (इति अष्टवारमभिमन्त्र्य)।

तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादिषोडशवर्णात्मकरेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादि कोणेषु अप्रादक्षिण्येन हळक्षान् बहिः-प्रादक्षिण्येन महागणपतिमूलखण्डत्रयं बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरम्, तद्वामदक्षयोः क्रमेण हंसः इति विलिख्य-

श्रीं ह्रीं क्लीं हंसः नमः (इति आराध्य) त्रिकोणस्य परितः वृत्तं तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं "मूलं" तां चिन्मयीम् आनन्दलक्षणां अमृतकलश-पिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा (इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य) तदर्घ्यात् किञ्चित् पात्रान्तरेण-

श्रीं ह्रीं क्लीं वषट्। इति उद्धृत्य

३ स्वाहा। इति तत्रैव निक्षिप्य

३ हुं। इति अवगुण्ठ्य

३ वौषट्। इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य

३ फट्। इति संरक्ष्य

३ नमः। इति पुष्पं दत्वा

३ मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य

३ ऐं इतिं योनिमुद्रया नत्वा

श्रीं ह्रीं क्लीं "मूलेन" सप्तवारमभिमन्त्र्य सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य। तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य। सर्वं महागणपतिमयं विभावयेत्।

ततः विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणगणपतिगायत्र्या ऋचा चाभिमन्त्रयेत्-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।
गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।।
(श्रीक्रमोक्तचतुर्नवतिमन्त्राद्यभिमन्त्रणमत्र नास्ति)।

विशेषार्घ्यपात्रस्याधः त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य, प्रथममण्डले-

श्रीं ह्रीं क्लीं हंसः शिवः सोहं सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः नमः। इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय। द्वितीयमण्डले-

श्रीं ह्रीं क्लीं हंस नमः। इत्यभ्यर्च्य आत्मपात्रं निधाय। ततः विशेषार्घ्यामृतात् किञ्चित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत्। पुनः आत्मपात्रे तं विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलाधारे बालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलं ध्यात्वा,

श्रीं ह्रीं क्लीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः। इति मनसा सम्पूज्य,

श्रीं ह्रीं क्लीं (मूलं) पुण्यं जुहोमि स्वाहा।

३ (मूलं) पापं जुहोमि स्वाहा।	३ (मूलं) विकल्पं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) कृत्यं जुहोमि स्वाहा	३ (मूलं) धर्मं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) अकृत्यं जुहोमि स्वाहा	३ (मूलं) अधर्मं जुहोमि स्वाहा
३ (मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा	३ (मूलं) अधर्मं जुहोमि वौषट्

श्रीं ह्रीं क्लीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा–इति पूर्णाहुतिं विभाव्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा–

(इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्)

विशेषार्घ्यपात्रात् किञ्चित् क्षीरं कारणकलशे निक्षिपेत्।

पीठे प्राणप्रतिष्ठा

पुरतो रक्तचन्दनादिभिः निर्मिते पीठे कलधौतादिविरचितां महागणपतिप्रतिमां वा ध्यानोक्तरूपां चतुरस्राष्टदलषडरत्रिकोणात्मकं सिन्दूरादिना लिखितं लेखितं वा यन्त्रं धातुमयं वा निवेश्य–

श्रीगणेशयन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणाः, श्रीगणेशयन्त्रस्य जीव इह स्थितः, श्रीगणेशयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि श्रीगणेशयन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इह आयान्तु स्वाहा। (इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां विदध्यात्)।

(प्राणप्रतिष्ठितमूर्तौ यन्त्रे वा नावश्यकी प्रतिष्ठा)।

पीठशक्तिपूजा

यन्त्रस्य त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन परितो मध्ये च क्रमेण–

श्रीं ह्रीं क्लीं तीव्रायै नमः।	श्रीं ह्रीं क्लीं उग्रायै नमः।
३ ज्वालिन्यै नमः।	३ तेजोवत्यै नमः।
३ नन्दायै नमः।	३ सत्यायै नमः।
३ भोगदायै नमः।	३ विघ्ननाशिन्यैनमः।
३ कामरूपिण्यै नमः।	३ सर्वशक्तिकमलासनायै नमः।

(इति नवगणेशशक्तीरभ्यर्च्य)

धर्माद्यष्टकपूजा

तत्रैव आग्नेयादिविदिक्षु प्रागादिदिक्षु च क्रमेण

श्रीं ह्रीं क्लीं ॠं धर्माय नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं ॠं अधर्माय नमः।
३ ॠं ज्ञानाय नमः। ३ ॠं अज्ञानाय नमः।
३ लृं वैराग्याय नमः। ३ लृं अवैराग्याय नमः।
३ लॄं ऐश्वर्याय नमः। ३ लॄं अनैश्वर्याय नमः।
(इति–अर्चयेत्)

अन्तर्यागः

द्वादशान्ते सहस्रदलकमलकर्णिकामध्ये निविष्टगुरुचरणयुगलविगलद-मृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गो हृदयकमलमध्ये ज्वलन्तमुद्यदरुणकोटिपाटल-मशेषदोषनिश्शेषभूतमनेकपाननं पुर्यष्टकाकारं साङ्गं सावरणं भक्तानुग्रहार्थं तेजोरूपेण परिणतं प्रापय्य ब्रह्मरन्ध्रं बहन्नासापुटेन निर्गमय्य त्रिखण्डामुद्रा-मण्डितशिखण्डे कुसुमाञ्जलौ हस्ते समानीय–

ऐक्षवे जलधौ द्वीपे नवरत्नमये शुभे।
तत्तरङ्गोल्लसत्तोयै धौते शीततलेऽमले।। १।।
तत्तोयकर्णसंपृक्त–गन्धवाहनिषेविते ।
कल्पपादपसंशोभिभूभागसमलङ्कृते ।। २।।
नानाकुसुमसङ्कीर्णे नानापक्षिविराजिते।
अनेकफलसङ्कीर्णे भाविते वाप्सरोगणैः।। ३।।
उद्यद्बालातपोद्द्योतिचन्द्रज्योत्स्नासमाकुले।
विलसत्पद्मरागौघ–कुट्टिमारुणभूतले ।। ४।।
कल्पपादपपुष्पस्थ–षट्पदस्वनमञ्जुले।
पारिजातं कल्पतरुं तस्य मध्ये विचिन्तयेत्।। ५।।
युगपद् ऋतुषट्केन सेवितं पुष्पशोभितम्।
नवरत्नमयं तस्याऽधस्तात् सिंहासनं स्मरेत्।। ६।।
तन्मध्ये लिपिपद्मं च षडस्रं तस्य मध्यतः।

कर्णिकायां त्रिकोणं च तत्संस्थं च महागणम्।। ७।।

नानारत्नविभूषाढ्यमेकदन्तं गजाननम्।
बीजापूरगदाचापशूलचक्राम्बुजान्यपि ।। ८।।
पाशोत्पले च व्रीह्यग्रं स्वदन्तं रत्नपात्रकम्।
धारयन्तं दशभुजैः भक्ताभीष्टप्रदायकम्।। ९।।
सर्वाङ्गभूषोज्वलया पद्मसंशोभिहस्तया।
आश्लिष्टवामपार्श्वञ्च देव्या वल्लभया सदा।। १०।।
विघ्नेशं विघ्नहर्तारं फुल्लपद्माभविग्रहम्।
पुष्करोद्धृतरत्नौघमयकुम्भमुखस्नुतात् ।। ११।।
मणिमुक्ताप्रवालादीन् वर्षन्तं धारया मुहुः।
सर्वतः साधकस्याग्रे स्वदानजललोलुपान्।। १२।।
षट्पदालीं कर्णतालैः वारयन्तं मुहुर्मुहुः।
अमरासुरसंसेव्यं सद्रत्नमुकुटोज्वलम् ।। १३।।
ऊरूदरं गजमुखं नानाभरणभूषितम्।
इति ध्यात्वा गणपतिं यजेत् सर्वोपचारकैः।। १४।।
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।।१५।।

इति ध्यात्वा

आवाहनम्

गणानान्त्वेति मन्त्रेण मूलमन्त्रेण च अस्मिन् यन्त्रे (बिम्बे वा) श्रीसिद्ध-लक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिं साङ्गं सपरिवारं सावरणम् आवाहयामि नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं (मूलं) आवाहितो भव। ३ (मूलं) सम्मुखो भव।
३ (मूलं) संस्थापितो भव। ३ (मूलं) अवगुण्ठितो भव।
३ (मूलं) सन्निधापितो भव। ३ (मूलं) सुप्रसन्नो भव।
३ (मूलं) सन्निरुद्धो भव। ३ (मूलं) वरदो भव।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्त्वं प्रीतिभावेन यन्त्रेऽस्मिन् (बिम्बेऽस्मिन्) सन्निधिं कुरु ।।

इति मन्त्रैरावाहनादि षण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्।

अथ हृदयादि षडङ्गमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। महागणपतिप्रियदन्तपाशादि सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत्।

षोडशोपचारपूजा

(श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिदेवतायाः षोडशोपचारानाचरेत्)।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये पाद्यं कल्पयामि नमः।।१।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये अर्घ्यं कल्पयामि नमः।।२।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये आचमनीयं कल्पयामि नमः।।३।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये स्नानं[1] कल्पयामि नमः।।४।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये वस्त्रोत्तरीयं कल्पयामि नमः।।५।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये भूषणं कल्पयामि नमः।।६।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये गन्धं कल्पयामि नमः।।७।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये पुष्पं कल्पयामि नमः।।८।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये धूपं कल्पयामि नमः।।९।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये दीपं कल्पयामि नमः।।१०।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः।।११।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये ताम्बूलं कल्पयामि नमः।।१२।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नीराजनं कल्पयामि नमः।।१३।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये पुष्पाञ्जलिं कल्पयामि नमः।।१४।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये प्रदक्षिणां कल्पयामि नमः।।१५।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नमस्कारान् कल्पयामि नमः।।१६।।

श्रीं ह्रीं क्लीं दन्त-पाश-अङ्कुश-विघ्न-परशु-लड्डूक-बीजापूराह्वयाः सप्तमुद्राः गणेशस्य प्रियाः मताः। इति सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत्।

---

1 स्नानसमये दुग्ध-पञ्चामृत-मधु-फलरसादिना अभिषिञ्चेत्, पुरुषसूक्त-गणपत्यथर्वशीर्ष-गणपतिगायत्र्यादि-वेदमन्त्रान् उच्चरेत्।

चतुरायतनपूजा

विष्णुशिवसूर्यदेव्याह्वयाः चतुरायतनदेवताः।
आग्नेय-ईशान-नैर्ऋत-वायव्येषु तत्तन्मूलमन्त्रेण यजेत्।

श्रीमहागणपतितर्पणम्

(ततो मूलान्ते, श्रीमहागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि, इति देवं दशवारं पूजयेत्)
श्रीं ह्रीं क्लीं 'मूलं' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितमहागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
(इति दशवारं सन्तर्पयेत्)

षडङ्गपूजा

ततो देवस्याङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मौलौ दिक्षु च-

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः। हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। शिरः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ह्रीं गूं शिखायै स्वाहा। शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं गैं कवचाय हुं। कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ गं गः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

गुरुमण्डलार्चनम्

देवस्य पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्था गुर्वौघत्रयं यजेत्। यथा-

दिव्यौघः

श्रीं ह्रीं क्लीं विनायकसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ कवीश्वरसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ विरूपाक्षसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ विश्वसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ब्रह्मण्यसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ निधीशसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

सिद्धौघः

श्रीं ह्रीं क्लीं गजाधिराजसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ वरप्रदसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

मानवौघः

३ विजयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ दुर्जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ जयसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ दुःखारिसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ सुखावहसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ परमात्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः

३ सर्वभूतात्मसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ महानन्दसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ फालचन्द्रसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ सद्योजातसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ बुद्धसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ शूरसिद्धाचार्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततः परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, स्वगुरु-मन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत्।

आवरणार्चनम्

त्रिकोणबाह्ये पूर्वादिचतुर्दिक्षु समर्चयेत्।
अग्रस्थबिल्ववृक्षाधः श्रियं श्रीपतिमर्चयेत्।।
पद्मायुधधरा पद्मा शङ्खचक्रधरो हरिः।
दक्षिणे वटवृक्षाधः गौरीं गौरीपतिं यजेत्।।
पाशाङ्कुशधरा गौरी टङ्कशूलधरो हरः।
पश्चिमे पिप्पलस्याधो रतिं रतिपतिं यजेत्।।

रतिरुत्पलहस्ताढ्या कोदण्डास्त्रधरः स्मरः।
सौम्ये प्रियङ्गुवृक्षाधः महापोत्त्रिणमर्चयेत्।।
शूकव्रीह्यग्रहस्ताभूर्गदाचक्रधरः पतिः।
षट्कोणेषु च सम्पूज्याः आमोदाद्याः प्रियान्विताः।।
आमोदं सिद्धिसहितमग्रकोणे प्रपूजयेत्।
समृद्ध्या युक्तमभ्यर्च्य प्रमोदं वह्निकोणके।।
सुमुखं कान्तिसंयुक्तमीशकोणे समर्चयेत्।
दुर्मुखं मदनावत्या यजेद्वरुणकोणके ।।
विघ्नं मदद्रवायुक्तं कोणे नैशाचरे यजेत्।
वायव्ये विघ्नकर्तारं द्राविण्या सह संयजेत्।।
पाशाङ्कुशाभयाऽभीष्टधारिणोऽरुणविग्रहाः।
गण्डभित्तिगलद्दानपूरधौतमुखाम्बुजाः ।।
विघ्नस्तत्प्रमदास्सर्वाः मदाघूर्णितलोचनाः।
एकहस्तधृताम्भोजाः इतरालिङ्गितप्रियाः।।
षट्कोणपार्श्वयोः पूज्यौ शङ्खपद्मनिधी क्रमात्।
निजप्रियाभ्यां सहितौ सर्वाभरणभूषितौ ।।
केशरेष्वङ्गपूजा स्यात् ब्राह्म्याद्याः पत्रमध्यगाः।
बहिर्लोकेश्वराः पूज्याः वज्रादीनि यथाक्रमम्।।

प्रथमावरणम्

त्र्यस्रषडस्रयोरन्तराले प्रागादिदिक्षु क्रमेण

श्रीं ह्रीं क्लीं श्री-श्रीपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ गिरिजा-गिरिजापतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ रति-रतिपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ मही-महीपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाःसन्तु नमः। (इति पुष्पं दत्वा)।

मूलेन देव त्रिः सन्तर्प्य, (पञ्चोपचारं कृत्वा)।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।
(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)
अनेन प्रथमावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

द्वितीयावरणम्

(षडस्रे देवाग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन तद्दक्षवामपार्श्वयोश्च क्रमेण यजेत्)

श्रीं ह्रीं क्लीं ऋद्ध्यामोदश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ समृद्धिप्रमोदश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ कान्तिसुमुखश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ मदनावतीदुर्मुखश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ मदद्रवाऽविघ्नश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ द्राविणीविघ्नकर्तृश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ वसुधाराशङ्खनिधिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ वसुमतीपद्मनिधिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। इति पुष्पं दत्वा।

मूलेन देवं त्रिःसन्तर्प्य, पञ्चोपचारं कृत्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।
(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)
अनेन द्वितीयवरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तृतीयावरणम्

षडस्रसन्धिषट्के प्राग्वत् षडङ्गदेवताऽर्चनम्।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ श्रीं गीं शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ह्रीं गूं शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं गैं कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ग्लौं गौं नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ गं गः अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। इति पुष्पं दत्वा।

मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य। पञ्चोपचारं कृत्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य-

अनेन तृतीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तुरीयावरणम्

अष्टदले पश्चिमादि दिक्षु वायव्यादि विदिक्षु च प्रादक्षिण्यक्रमेण-

श्रीं ह्रीं क्लीं आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ईं माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ऊं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ॠं वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ॡं वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ऐं माहेन्द्रीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ औं चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ अः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः तुरीयावरणदेवता साङ्गा सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। इति पुष्पं दत्वा।

मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य, पञ्चोपचारं कृत्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम्।।

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य–

अनेन तुरीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

पञ्चमावरणम्

अथ चतुरस्रस्य रेखायां प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण–

श्रीं ह्रीं क्लीं लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमः, इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नमः, अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः, यमश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्षां निरृतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय सपरिवाराय नमः, निरृतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सपरिवाराय नमः, वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः, वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः, सोमश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः, ईशानश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिता सन्तुष्टाः सन्तु नमः। इति पुष्पं दत्वा।

मूलेन देवं त्रिःसन्तर्प्य। पञ्चोपचारं कृत्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

(इतिं सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम्।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

पुनः मूलेन दशवारं सन्तर्पयेत्

श्रीं ह्रीं क्लीं 'मूलं' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। इति दशवारं सन्तर्पयेत्।

षोडशनामार्चनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं सुमुखाय नमः।
३ एकदन्ताय नमः।
३ कपिलाय नमः।
३ गजकर्णकाय नमः।
३ लम्बोदराय नमः।
३ विकटाय नमः।
३ विघ्नराजाय नमः।
३ गणाधिपाय नमः।
३ धूमकेतवे नमः।
३ गणाध्यक्षाय नमः।
३ फालचन्द्राय नमः।
३ गजाननाय नमः।
३ वक्रतुण्डाय नमः।
३ शूर्पकर्णाय नमः।
३ हेरम्बाय नमः।
३ स्कन्दपूर्वजाय नमः।

पुनः पूर्वोक्तषोडशभिरुपचारैः पूजयेत्।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीमहागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पदूर्वादीनि समर्पयामि। अथ यथावकाशं सहस्रनामादिना-अर्चनं कुर्यात्।

धूपः

श्रीं ह्रीं क्लीं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्। अहुतमसि

हविर्धानं दृꣳहस्व माह्वार्मातेयज्ञपतिहर्व्वार्षीत्। मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्षे माभेर्मा संविक्था मा त्वा हिꣳसिषम्।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नमः धूपमाघ्रापयामि।

धूपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

दीपः

श्रीं ह्रीं क्लीं उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूꣳश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दिश।
मा नो हिꣳसीर्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नमः, दीपं दर्शयामि।

दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ततः–दन्त–पाश–अङ्कुश–विघ्न–परशु–लड्डुक– बीजापूराख्याः सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत्।

नैवेद्यम्

श्रीदेवाग्रे, चतुरस्रमण्डलं, सामान्यार्घ्योदकेन विधाय, तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्ण–रौप्य–कांस्यादि–स्थाली–चषकभरितं भक्ष्य–भोज्य–चोष्यलेह्यपेयात्मकं रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमधु, यथा–सम्भवं वा नैवेद्यं निधाय मूलेन निरीक्ष्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रः– इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य–

३ ॐ जुं सः वौषट्–इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य–

३ चक्रमुद्रां प्रदर्श्य–

३ यं–इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य–

३ रं– इति वह्निबीजेन अधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य–

३ वं–इतिं धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य–

३ मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य–

मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य–

ॐ क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं परश्रीं,

इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य,

देवस्य पाद्यम् अर्घ्यं आचमनीयं च दत्वा–

''मूलेन'' देवं त्रिः सन्तर्प्य–

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चित् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्–

३ 'मूलं' साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तये श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित–
श्रीमहागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः–

इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य। कृताञ्जलिः

३ **हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं संसुस्कृतम्।**
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वर।।
शर्करापायसापूपघृतव्यञ्जनसंयुतम् ।
विचित्ररुचिनैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम्।। इति निवेद्य

ॐ भूर्भुवस्वः+परिषिञ्चामि। अमृतोपस्तरणमसि– इति देवतायै आपोशनं दत्वा–वामकरेण ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य, दक्षकरेण प्राणादिपञ्चमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत्। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राणाय स्वाहा। श्रीं ह्रीं क्लीं उदानाय स्वाहा।
३ अपानाय स्वाहा। ३ समानाय स्वाहा।
३ व्यानाय स्वाहा। ३ ब्रह्मणे स्वाहा।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गं आत्मतत्त्वव्यापकः श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिस्तृप्यतु।
३ ॐ गं विद्यातत्त्वव्यापकः श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिस्तृप्यतु।
३ ॐ गं शिवतत्त्वव्यापकः श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिस्तृप्यतु।
३ ॐ गं सर्वतत्त्वव्यापकः श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिस्तृप्यतु।

(इति किञ्चित्किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं दद्यात्)।

श्रीं ह्रीं क्लीं चित्पात्रे सद्भविस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि ते देव सानुगस्त्वं जुषाण तत्।।

श्रीं ह्रीं क्लीं मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तुः न पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

(इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तादात्म्येन समर्पयेत्)

श्रीं ह्रीं क्लीं नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलम्।।
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित- श्रीमहागणपतये अमृतपानीयं समर्पयामि।

(देवं भुक्तवन्तं सुतृप्तं ध्यात्वा)

ॐ अमृतापिधानमसि। इत्युत्तरापोशनं दत्वा-

श्रीं ह्रीं क्लीं हस्तप्रक्षालनं, गण्डूषं, पादप्रक्षालनम्, आचमनीयं कल्पयामि नमः।

(ताम्रबलिपात्रे निवेदन-सामग्रीः किञ्चित्किञ्चिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत्)

ताम्बूलम्

श्रीं ह्रीं क्लीं वनस्पतिदैवत्याय ताम्बूलाय नमः। इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य-

श्रीं ह्रीं क्लीं तमालदलकर्पूरपूगभागसमन्वितम् ।
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतये ताम्बूलं कल्पयामि नमः।

कुलदीपः

३ 'मूलं' - अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये।।

कर्पूरनीराजनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते। यो राजा साम्राज्यो वा सोमेन यजते। देवसुवामेतानि हवीꣳषि भवन्ति। एतावन्तो वै देवानाꣳसवाः। त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति। त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय। देवसू राजा भवति।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यम्।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय-महाराजाय नमः।

३ सिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये नमः कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

मन्त्रपुष्पम्

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥

श्रीं ह्रीं क्लीं- नमो नरगजाकृते नलिनवर्णदेहाकृते
नरासुरसुरेडित - श्रुतिशिरोद्यदङ्घ्रिद्वय ।
नगेश्वरवरात्मजानयनपद्मभानो नमः
नतार्तिहरणाङ्घ्रियुक् कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतये नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

तान्त्रिकनित्यहोमविधिः

साधकः स्वस्तिपद्मं विरच्य तस्मिन् गणेशं साङ्गं सावरणं षोडषोपचारैः सम्पूज्य तदुत्तरतः लौकिकाग्निः प्रतिष्ठाप्य। तस्मिन्नग्नौ साङ्गं सावरणं गणपतिं सम्पूज्य अष्टद्रव्यैः मध्वाज्यमिश्रितैः ग्रासमितैः त्रिसंख्यं पञ्चसंख्यं वा हुनेत्। संभृताष्टद्रव्यं त्रिधा कृत्वा एकमंशं निवेदयेत्- द्वावंशौ जुहुयात्। ततः जपं कृत्वा गणपत्युपनिषदादिभिः स्तुवीत। पुनः पञ्चोपचारान् उपचर्य, नीराजनं

प्रदक्षिणनमस्कारादि कृत्वा। अग्नेः स्वस्तिपद्यादपि गणपतिं उद्वासयेत्। अष्टद्रव्यालाभे तु नारिकेलेन मध्वाज्यगुडश्रितेन यथासम्भवद्रव्येण जुहुयात्।

इति नित्यहोमविधिः।

विस्तरे तु गुरूपदिष्टमार्गेण चतुष्पात्रप्रयोगेणापि होमः कर्तव्यः। तस्मिन् प्रयोगे अग्निमुखानन्तरम्, अग्नौ गणपतिमावाह्य पञ्चोपचारं कृत्वा गणपतिमूलमन्त्रेण प्रधानाहुतिं दत्वा दशवारं मूलमन्त्रेण अङ्गावरणदेवतानां एकैकामाज्याहुतिं जुहुयात्। ततो होमशेषः। स्वस्वशाखोक्तविधिना अग्निप्रतिष्ठापनं कुर्यात्।

बलिदानम्

देवतादक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन वृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व्यापकमण्डलाय नमः। इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः महागणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

इत्युच्चरन्। बलिपात्रे सामान्यार्घ्योदकं विसृजेत्। ततः पादौ प्रक्षाल्य आचम्य त्रिः प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा यथाशक्ति मूलमन्त्रजपमाचरेत्। उत्तराङ्गं विधाय–

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।

(इति देवस्य हस्ते जपं समर्पयेत्)। ततः स्तुवीत। यथा–

सदाशिवप्रोक्तं गणेशाष्टकम्

श्रीभगवानुवाच–

गणेशस्य स्तवं वक्ष्ये कलौ झटिति सिद्धिदम्।
न न्यासो न च संस्कारो न होमो न च तर्पणम्।।
न मार्जनं च पञ्चाढ्यं सहस्रजपमात्रतः।
सिद्ध्यत्यर्चनतः पञ्चशतब्राह्मणभोजनात्।।

अस्य श्रीगणपतिस्तोत्रमालामन्त्रस्य भगवान् श्रीसदाशिव ऋषिः उष्णिक् छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ विनायकैकभावनासमर्चनासमर्पितं,
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोदमोदकम् ।
यदर्पितं समर्पितं नवन्यधान्यनिर्मितं,
न खण्डितं न खण्डितं न खण्डमण्डनं कृतम्।। १।।
सजातिकृद्विजातिकृत्स्वनिष्ठभेदवर्जितं
निरञ्जनं च निर्गुणं निराकृतिं च निष्क्रियम्।
सदात्मकं चिदात्मकं सुखात्मकं परं पदं
भजामि तं गजाननं स्वमाययाऽऽत्तविग्रहम्।। २।।
गणाधिप त्वमष्टमूर्तिरीशसूनुरीश्वरः
त्वमम्बरं च शम्बरं धनञ्जयः प्रभञ्जनः।
त्वमेव दीक्षितः क्षितिर्निशाकरः प्रभाकरः
चराचरप्रचारहेतुरन्तरायशान्तिकृत् ।। ३।।
अनेकदं तमालनीलमेकदन्तसुन्दरं
गजाननं नुमो गजाननामृताब्धिमन्दिरम्।
समस्तवेदवादसत्कलाकलापमन्दिरं
महान्तरायदुस्तमश्शमार्कमाश्रितोदरम् ।। ४।।
सरत्नहेमघण्टिकानिनादनूपुरस्वनैः
मृदङ्गतालनादभेदसाधनानुरूपतः।
धिमिद्धिमित्ततोऽङ्गतोङ्गथेयिथेयिशब्दतो
विनायकश्शशाङ्कशेखराग्रतः प्रनृत्यति ।। ५।।
नमामि नाकनायकैकनायकं विनायकं
कलाकलापकल्पनानिदानमादिपूरुषम्।
गणेश्वरं गुणेश्वरं महेश्वरात्मसम्भवं
स्वपादमूलसेविनामपारवैभवप्रदम् ।। ६।।
भजे प्रचण्डतुन्दिलं सदन्दशूकभूषणं
सनन्दनादिवन्दितं समस्तसिद्धसेवितम्।

सुरासुरौघयोस्तदा जयप्रदं भयप्रदं
समस्तविघ्नघातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ।। ७।।
कराम्बुजात्तकङ्कणःपदाब्जकिङ्किणीगणो
गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्गभूषणः।
जगत्त्रयान्तरायशान्तिकारकोस्तु तारको-
भवार्णवादनेकदुर्गृहाच्चिदेकविग्रहः ।। ८।।
यो भक्तिप्रवणः परावरगुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
शुद्धस्संयतचेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान्।
तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीशारदा सारदा
स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः।।
इति।

सुवासिनीपूजा

प्राङ्निमन्त्रितां सुवासिनीमाहूय तां देवीरूपां विभाव्य ३ **ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै अर्घ्यं कल्पयामि नमः।** इत्यादिरीत्या अर्घ्य-आचमन-स्नान-गन्ध-हरिद्रा-कुङ्कुम-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात्। (सति विभवे वसनादीनि च)।

बटुकपूजा

प्राङ्निमन्त्रितबटुकमाहूय तं गणपतिरूपं विभाव्य ३ **वं बटुकाय अर्घ्यं कल्पयामि नमः।** इत्यादिरीत्या अर्घ्य-आचमन-स्नान-वस्त्र- यज्ञोपवीत-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात्।

सामयिकपूजा

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य, गुरुपादुकामन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत्। असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं यजेत्। ततः सन्निहितान् सामयिकानाहूय गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य पात्राणि दद्यात्। पश्चात् तत्त्वशोधनं कुर्यात्। सामयिकाश्च पात्रमादाय समस्तप्रकटेत्यादि- समष्टिमन्त्रेण

पुष्पाञ्जलिं दत्वा स्वशिरसि गुरुत्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च इष्ट्वा देवं सन्तर्प्य तत्त्वशोधनं यथोपदिष्टं कुर्युः।

तत्त्वशोधनम्

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गम् आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

पूजासमर्पण–देवतोद्वासने

श्रीं ह्रीं क्लीं साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम।।
३ देव नाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।

इति देवतादक्षिणहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देवतोपरि त्रिः परिभ्राम्य, तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

श्रीं ह्रीं क्लीं ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं विभो।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

इति क्षमाप्य, सर्वासामारवणदेवतानां देवताङ्गे विलयं विभाव्य खेचरीं बद्ध्वा–

श्रीं ह्रीं क्लीं हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शक्त्या सह गजानन।।
प्रविश त्वं गणेशान सर्वैरावरणैः सह।।

इति तेजोरूपेण परिणतं देवं पूर्ववत् हृदयं नीत्त्वा, तत्र च मूर्तिं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुनः आत्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेत्।

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु॥

इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा–

विशेषार्घ्योद्वासनम्

मूलेन विशेषार्घ्यपात्रम् आमस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेण आदाय 'आर्द्रं ज्वलति' इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा स्वयमपि भुक्त्वा यथासुखं विहरेत्।

॥ इति शिवम्॥

श्रीगणेशपञ्चरत्नस्तोत्रम्

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम्
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥१॥
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम्
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥२॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम्
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम्
नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥३॥
अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम्
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम्
कपोलदानवारिणं भजे पुराणवारणम् ॥४॥
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्
नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव संविचिन्तयामि सन्ततम् ॥५॥
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम्
प्रजल्पति प्रदोषके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम्
समाहिरायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥६॥

इति शङ्कराचार्यकृतं गणेशपञ्चरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

गणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः॥१॥
ॐस्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥२॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अथ गणेशाथर्वशीर्षं व्याख्यास्यामः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।।१।। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।।२।। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।।३।। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वामानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।।४।। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि।।५।। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।।६।। गणादिं पूर्वमुचार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः।।७।। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।८।।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।।९।।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः।।१०।। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स

सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनात्। यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति। स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति स मेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा सन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते। महाप्रत्ययवायात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्।। ॐ भद्रं कर्णेभिः०।।१।। स्वस्ति न इन्द्रो०।।१।।

।।इति गणपत्यथर्वशीर्षं सम्पूर्णम्।।

पुरश्चरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन विधिना अष्टाविंशति-सहस्रसंख्यं पुरश्चरणजपः। प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितम्। प्रथमेऽह्नि-सहस्रम्। ततः प्रत्यहं सहस्रसंख्यञ्च कृत्वा जपदशांशेन होमः। तद्दशांशेन तर्पणम्, तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनानि च विदध्यात्।

होमे द्रव्याणि

मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः।
नारिकेलैस्तिलैश्शुद्धैस्सुपक्वैः कदलीफलैः।।

इत्युक्तान्यष्टौ, एतेषां प्रमाणन्तु-

मोदकाः अखण्डिताः ग्रासमिताः, पृथुकलाजसक्तवो मुष्टिपरिमिताः। इक्षुप्रमाणं श्लोक एवोक्तम्। नारिकेलम् अष्टधा खण्डितम्। तिलाःचुलुक-

प्रमाणाः शतसंख्याकाः वा। कदलीफलमल्पम्– यद्यखण्डितम् पृथु चेद्यथारूचि खण्डितम्। अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृतसिक्तानां पृथक् पृथगाहुतयो होमसंख्या पिण्डाष्टमभागमिताः ३५० श्लोकपाठक्रमेण भवन्ति। अष्टद्रव्यहोमात् प्रागावरणदेवतानामेकैकाहुतिः प्रधानदेवतायै च दशाहुतयः ता आज्येनैव भवन्ति। तर्पणपूर्वाङ्गन्तु चतुरावृत्तितर्पणवदेव इत्थं पुरश्चरणेन सिद्धमनुः, स्वातन्त्र्येणोपास्तौ च श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः काम्यापेक्षी चेत् श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन तत्तत्कामानुगुणेन द्रव्येणेष्ट्वा सिद्धसङ्कल्पः सुखी विहरेत्, इति शिवम्।

श्रीमहागणपतिसहस्रनामावलिः

ऋष्यादिन्यासः

अस्य श्रीमहागणति–सहस्रनाम–स्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतये–ऋषये नमः शिरसि अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे श्रीमहागणपति–देवतायै नमः हृदये गं बीजाय नमः, गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ, महागणपतिप्रसादसिद्धये (अर्चने) जपे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

करन्यास–षडङ्गन्यासौ

गां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,	गां	हृदयाय नमः
गीं	तर्जनीभ्यां नमः,	गीं	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां नमः,	गूं	शिखायै वषट्
गैं	अनामिकाभ्यां नमः,	गैं	कवचाय हुम्
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,	गौं	नेत्रत्रयाय वौषट्
गः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,	गः	अस्त्राय फट्

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल–
ब्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलश–प्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्ति–विपत्ति–संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।।

॥ श्रीः ॥

श्रीमहागणपतिसहस्रनामावलिः

गं गणेश्वराय नमः
गं गणक्रीडाय नमः
गं गणनाथाय नमः
गं गणाधिपाय नमः
गं एकदंष्ट्राय नमः
गं वक्रतुण्डाय नमः
गं गजवक्त्राय नमः
गं महोदराय नमः
गं लम्बोदराय नमः
गं धूम्रवर्णाय नमः १०
गं विकटाय नमः
गं विघ्ननायकाय नमः
गं सुमुखाय नमः
गं दुर्मुखाय नमः
गं बुद्धाय नमः
गं विघ्नराजाय नमः
गं गजाननाय नमः
गं भीमाय नमः
गं प्रमोदाय नमः
गं आमोदाय नमः २०
गं सुरानन्दाय नमः
गं मदोत्कटाय नमः
गं हेरम्बाय नमः
गं शम्बराय नमः
गं शम्भवे नमः
गं लम्बकर्णाय नमः
गं महाबलाय नमः
गं नन्दनाय नमः
गं अलम्पटाय नमः
गं अभीरवे नमः ३०
गं मेघनादाय नमः
गं गणञ्जयाय नमः
गं विनायकाय नमः
गं विरूपाक्षाय नमः
गं धीरशूराय नमः
गं वरप्रदाय नमः
गं महागणपतये नमः
गं बुद्धिप्रियाय नमः
गं क्षिप्रप्रसादनाय नमः
गं रुद्रप्रियाय नमः ४०
गं गणाध्यक्षाय नमः
गं उमापुत्राय नमः
गं अघनाशनाय नमः
गं कुमारगुरवे नमः
गं ईशानपुत्राय नमः
गं मूषकवाहनाय नमः
गं सिद्धिप्रियाय नमः
गं सिद्धिपतये नमः

गं सिद्धाय नमः
गं सिद्धिविनायकाय नमः ५०
गं अविघ्नाय नमः
गं तुम्बुरवे नमः
गं सिंहवाहनाय नमः
गं मोहिनीप्रियाय नमः
गं कटङ्कटाय नमः
गं राजपुत्राय नमः
गं शालकाय नमः
गं सम्मिताय नमः
गं अमिताय नमः
गं कूष्माण्डसामसम्भूतये नमः ६०
गं दुर्जयाय नमः
गं धूर्जयाय नमः
गं जयाय नमः
गं भूपतये नमः
गं भुवनपतये नमः
गं भूतानां पतये नमः
गं अव्ययाय नमः
गं विश्वकर्त्रे नमः
गं विश्वमुखाय नमः
गं विश्वरूपाय नमः ७०
गं निधये नमः
गं घृणये नमः
गं कवये नमः
गं कवीनामृषभाय नमः

गं ब्रह्मण्याय नमः
गं ब्रह्मणस्पतये नमः
गं ज्येष्ठराजाय नमः
गं निधिपतये नमः
गं निधिप्रियपतिप्रियाय नमः
गं हिरण्मयपुरान्तःस्थाय नमः ८०
गं सूर्यमण्डलमध्यगाय नमः
गं कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलाय नमः
गं पूषदन्तभिदे नमः
गं उमाङ्ककेलिकुतुकिने नमः
गं मुक्तिदाय नमः
गं कुलपालनाय नमः
गं किरीटिने नमः
गं कुण्डलिने नमः
गं हारिणे नमः
गं वनमालिने नमः ९०
गं मनोमयाय नमः
गं वैमुख्यहतदैत्यश्रिये नमः
गं पादाहतिजितक्षितये नमः
गं सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखलिने नमः
गं दुर्निमित्तहृते नमः
गं दुस्स्वप्नहृते नमः
गं प्रसहनाय नमः
गं गुणिने नमः
गं नादप्रतिष्ठिताय नमः
गं सुरूपाय नमः १००

गं सर्वनेत्राधिवासाय नमः
गं वीरासनाश्रयाय नमः
गं पीताम्बराय नमः
गं खण्डरदाय नमः
गं खण्डेन्दुकृतशेखराय नमः
गं चित्राङ्कश्यामदशनाय नमः
गं भालचन्द्राय नमः
गं चतुर्भुजाय नमः
गं योगाधिपाय नमः
गं तारकस्थाय नमः १९०
गं पुरुषाय नमः
गं गजकर्णकाय नमः
गं गणाधिराजाय नमः
गं विजयस्थिराय नमः
गं गजपतिध्वजिने नमः
गं देवदेवाय नमः
गं स्मरप्राणदीपकाय नमः
गं वायुकीलकाय नमः
गं विपश्चिद्वरदाय नमः
गं नादोन्नादभिन्न-बलाहकाय नमः १२०
गं वराहरदनाय नमः
गं मृत्युञ्जयाय नमः
गं व्याघ्राजिनाम्बराय नमः
गं इच्छाशक्तिधराय नमः
गं देवत्रात्रे नमः
गं दैत्यविमर्दनाय नमः
गं शम्भुवक्त्रोद्भवाय नमः
गं शम्भुकोपघ्ने नमः
गं शम्भुहास्यभुवे नमः
गं शम्भुतेजसे नमः १३०
गं शिवाशोकहारिणे नमः
गं गौरीसुखावहाय नमः
गं उमाङ्गमलजाय नमः
गं गौरीतेजोभुवे नमः
गं स्वर्धुनीभवाय नमः
गं यज्ञकायाय नमः
गं महानादाय नमः
गं गिरिवर्ष्मणे नमः
गं शुभाननाय नमः
गं सर्वात्मने नमः १४०
गं सर्वदेवात्मने नमः
गं ब्रह्ममूर्ध्ने नमः
गं ककुप्श्रुतये नमः
गं ब्रह्माण्डकुम्भाय नमः
गं चिद्व्योमभालाय नमः
गं सत्यशिरोरुहाय नमः
गं जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषाय नमः
गं अग्न्यर्कसोमदृशे नमः
गं गिरीन्द्रैकरदाय नमः
गं धर्माधर्मोष्ठाय नमः १५०
गं सामबृंहिताय नमः

गं ग्रहर्क्षदशनाय नमः
गं वाणीजिह्वाय नमः
गं वासवनासिकाय नमः
गं कुलाचलांसाय नमः
गं सोमार्कघण्टाय नमः
गं रुद्रशिरोधराय नमः
गं नदीनदभुजाय नमः
गं सर्पाङ्गुलीकाय नमः
गं तारकानखाय नमः १६०
गं भ्रूमध्यसंस्थितकराय नमः
गं ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय नमः
गं व्योमनाभये नमः
गं श्रीहृदयाय नमः
गं मेरुपृष्ठाय नमः
गं अर्णवोदराय नमः
गं कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः-
किन्नरमानुषाय नमः
गं पृथ्वीकटये नमः
गं सृष्टिलिङ्गाय नमः
गं शैलोरवे नमः १७०
गं दस्रजानुकाय नमः
गं पातालजङ्घाय नमः
गं मुनिपदे नमः
गं कालाङ्गुष्ठाय नमः
गं त्रयीतनवे नमः
गं ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलाय नमः

गं हृदयालाननिश्चलाय नमः
गं हृत्पद्मकर्णिकाशालि-
वियत्केलिसरोवराय नमः
गं सद्भक्तध्याननिगडाय नमः
गं पूजावारीनिवारिताय नमः १८०
गं प्रतापिने नमः
गं कश्यपसुताय नमः
गं गणपाय नमः
गं विष्टपिने नमः
गं बलिने नमः
गं यशस्विने नमः
गं धार्मिकाय नमः
गं स्वोजसे नमः
गं प्रथमाय नमः
गं प्रथमेश्वराय नमः १९०
गं चिन्तामणिद्वीपपतये नमः
गं कल्पद्रुमवनालयाय नमः
गं रत्नमण्डपमध्यस्थाय नमः
गं रत्नसिंहासनाश्रयाय नमः
गं तीव्राशिरोधृतपदाय नमः
गं ज्वालिनीमौलिलालिताय नमः
गं नन्दानन्दितपीठश्रिये नमः
गं भोगदाभूषितासनाय नमः
गं सकामदायिनीपीठाय नमः
गं स्फुरदुग्रासनाश्रयाय नमः २००
गं तेजोवतीशिरोरत्नाय नमः

गं सत्यानित्यावतंसिताय नमः
गं सविघ्ननाशिनीपीठाय नमः
गं सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयाय नमः
गं लिपिपद्मासनाधाराय नमः
गं वह्निधामत्रयाश्रयाय नमः
गं उन्नतप्रपदाय नमः
गं गूढगुल्फाय नमः
गं संवृत्तपार्ष्णिकाय नमः
गं पीनजङ्घाय नमः २१०
गं श्लिष्टजानवे नमः
गं स्थूलोरवे नमः
गं प्रोन्नमत्कटये नमः
गं निम्ननाभये नमः
गं स्थूलकुक्षये नमः
गं पीनवक्षसे नमः
गं बृहद्भुजाय नमः
गं पीनस्कन्धाय नमः
गं कम्बुकण्ठाय नमः
गं लम्बोष्ठाय नमः २२०
गं लम्बनासिकाय नमः
गं भग्नवामरदाय नमः
गं तुङ्गाय सव्यदन्ताय नमः
गं महाहनवे नमः
गं ह्रस्वनेत्रत्रयाय नमः
गं शूर्पकर्णाय नमः
गं निबिडमस्तकाय नमः
गं स्तबकाकारकुम्भाग्राय नमः
गं रत्नमौलये नमः
गं निरङ्कुशाय नमः २३०
गं सर्पहारकटीसूत्राय नमः
गं सर्पयज्ञोपवीतवते नमः
गं सर्पकोटीरकटकाय नमः
गं सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय नमः
गं सर्पकक्ष्योदराबन्धाय नमः
गं सर्पराजोत्तरीयकाय नमः
गं रक्ताय नमः
गं रक्ताम्बरधराय नमः
गं रक्तमाल्यविभूषणाय नमः
गं रक्तेक्षणाय नमः २४०
गं रक्तकराय नमः
गं रक्तताल्वोष्ठपल्लवाय नमः
गं श्वेताय नमः
गं श्वेताम्बरधराय नमः
गं श्वेतमाल्यविभूषणाय नमः
गं श्वेतातपत्ररुचिराय नमः
गं श्वेतचामरवीजिताय नमः
गं सर्वावयवसम्पूर्णसर्वलक्षण-
लक्षिताय नमः
गं सर्वाभरणशोभाढ्याय नमः
गं सर्वशोभासमन्विताय नमः २५०
गं सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय नमः
गं सर्वकारणकारणाय नमः

गं सर्वदैककराय नमः
गं शार्ङ्गिणे नमः
गं बीजापूरिणे नमः
गं गदाधराय नमः
गं इक्षुचापधराय नमः
गं शूलिने नमः
गं चक्रपाणये नमः
गं सरोजभृते नमः २६०
गं पाशिने नमः
गं धृतोत्पलाय नमः
गं शालीमञ्जरीभृते नमः
गं स्वदन्तभृते नमः
गं कल्पवल्लीधराय नमः
गं विश्वाभयदैककराय नमः
गं वशिने नमः
गं अक्षमालाधराय नमः
गं ज्ञानमुद्रावते नमः
गं मुद्गरायुधाय नमः २७०
गं पूर्णपात्रिणे नमः
गं कम्बुधराय नमः
गं विधृतालिसमुद्गकाय नमः
गं मातुलुङ्गधराय नमः
गं चूतकलिकाभृते नमः
गं कुठारवते नमः
गं पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभि-
वर्षकाय नमः

गं भारतीसुन्दरीनाथाय नमः
गं विनायकरतिप्रियाय नमः
गं महालक्ष्मीप्रियतमाय नमः २८०
गं सिद्धलक्ष्मीमनोरमाय नमः
गं रमारमेशपूर्वाङ्गाय नमः
गं दक्षिणोमामहेश्वराय नमः
गं महीवराहवामाङ्गाय नमः
गं रतिकन्दर्पपश्चिमाय नमः
गं आमोदमोदजननाय नमः
गं सप्रमोदप्रमोदनाय नमः
गं समेधितसमृद्धश्रिये नमः
गं ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय नमः
गं दत्तसौमुख्यसुमुखाय नमः २९०
गं कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः
गं मदनावत्याश्रिताङ्घ्रये नमः
गं कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखाय नमः
गं विघ्नसम्पल्लवोपघ्नसेवाय नमः
गं उन्निद्रमदद्रवाय नमः
गं विघ्नकृन्निघ्नचरणाय नमः
गं द्राविणीशक्तिसत्कृताय नमः
गं तीव्राप्रसन्ननयनाय नमः
गं ज्वालिनीपालितैकदृशे नमः
गं मोहिनीमोहनाय नमः ३००
गं भोगदायिनीकान्तिमण्डिताय नमः
गं कामिनीकान्तवक्त्रश्रिये नमः
गं अधिष्ठितवसुन्धराय नमः

गं वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्ख-
निधिप्रभवे नमः
गं नमद्वसुमतीमौलिमहापद्मनिधि-
प्रभवे नमः
गं सर्वसद्गुरुसंसेव्याय नमः
गं शोचिष्केशहृदाश्रयाय नमः
गं ईशानमूर्ध्ने नमः
गं देवेन्द्रशिखाय नमः
गं पवननन्दनाय नमः ३१०
गं अग्रप्रत्यग्रनयनाय नमः
गं दिव्यास्त्राणां प्रयोगविदे नमः
गं ऐरावतादिसर्वाशावारणा-
वरणप्रियाय नमः
गं वज्राद्यस्त्रपरीवाराय नमः
गं गणचण्डसमाश्रयाय नमः
गं जयाजयपरीवाराय नमः
गं विजयाविजयावहाय नमः
गं अजितार्चितपादाब्जाय नमः
गं नित्यानित्यावतंसिताय नमः
गं विलासिनीकृतोल्लासाय नमः ३२०
गं शौण्डीसौन्दर्यमण्डिताय नमः
गं अनन्तानन्तसुखदाय नमः
गं सुमङ्गलसुमङ्गलाय नमः
गं इच्छाशक्तिज्ञानशक्ति-
क्रियाशक्तिनिषेविताय नमः
गं सुभगासंश्रितपदाय नमः

गं ललितालिताश्रयाय नमः
गं कामिनीकामनाय नमः
गं काममालिनीकेलिलालिताय नमः
गं सरस्वत्याश्रयाय नमः
गं गौरीनन्दनाय नमः ३३०
गं श्रीनिकेतनाय नमः
गं गुरुगुप्तपदाय नमः
गं वाचासिद्धाय नमः
गं वागीश्वरीपतये नमः
गं नलिनीकामुकाय नमः
गं वामारामाय नमः
गं ज्येष्ठामनोरमाय नमः
गं रौद्रीमुद्रितपादाब्जाय नमः
गं हुं बीजाय नमः
गं तुङ्गशक्तिकाय नमः ३४०
गं विश्वादिजननत्राणाय नमः
गं स्वाहाशक्तये नमः
गं सकीलकाय नमः
गं अमृताब्धिकृतावासाय नमः
गं मदघूर्णितलोचनाय नमः
गं उच्छिष्टगणाय नमः
गं उच्छिष्टगणेशाय नमः
गं गणनायकाय नमः
गं सार्वकालिकसंसिद्धये नमः
गं नित्यशैवाय नमः ३५०
गं दिगम्बराय नमः

गं अनपायाय नमः
गं अनन्तदृष्टये नमः
गं अप्रमेयाय नमः
गं अजरामराय नमः
गं अनाविलाय नमः
गं अप्रतिरथाय नमः
गं अच्युताय नमः
गं अमृताय नमः
गं अक्षराय नमः ३६०
गं अप्रतर्क्याय नमः
गं अक्षयाय नमः
गं अजय्याय नमः
गं अनाधाराय नमः
गं अनामयाय नमः
गं अमलाय नमः
गं अमोघसिद्धये नमः
गं अद्वैताय नमः
गं अघोराय नमः
गं अप्रतिमाननाय नमः ३७०
गं अनाकाराय नमः
गं अब्धिभूम्यग्निबलघ्नाय नमः
गं अव्यक्तलक्षणाय नमः
गं आधारपीठाय नमः
गं आधाराय नमः
गं आधाराधेयवर्जिताय नमः
गं आखुकेतनाय नमः
गं आशापूरकाय नमः
गं आखुमहारथाय नमः
गं इक्षुसागरमध्यस्थाय नमः ३८०
गं इक्षुभक्षणलालसाय नमः
गं इक्षुचापातिरेकश्रिये नमः
गं इक्षुचापनिषेविताय नमः
गं इन्द्रगोपसमानश्रिये नमः
गं इन्द्रनीलसमद्युतये नमः
गं इन्दीवरदलश्यामाय नमः
गं इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः
गं इध्मप्रियाय नमः
गं इडाभागाय नमः
गं इडाधाम्ने नमः ३९०
गं इन्दिराप्रियाय नमः
गं इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसिने नमः
गं इतिकर्तव्यतेप्सिताय नमः
गं ईशानमौलये नमः
गं ईशानाय नमः
गं ईशानसुताय नमः
गं ईतिघ्ने नमः
गं ईषणात्रयकल्पान्ताय नमः
गं ईहामात्रविवर्जिताय नमः
गं उपेन्द्राय नमः ४००
गं उडुभृन्मौलये नमः
गं उण्डेरकबलिप्रियाय नमः
गं उन्नताननाय नमः

गं उत्तुङ्गाय नमः
गं उदारत्रिदशाग्रगण्ये नमः
गं ऊर्जस्वते नमः
गं ऊष्मलमदाय नमः
गं ऊहापोहदुरासदाय नमः
गं ऋग्यजुस्सामसम्भूतये नमः
गं ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय नमः ४१०
गं ऋजुचित्तैकसुलभाय नमः
गं ऋणत्रयविमोचकाय नमः
गं स्वभक्तानां लुप्तविघ्नाय नमः
गं सुरद्विषां लुप्तशक्तये नमः
गं विमुखार्चानां लुप्तश्रिये नमः
गं लूताविस्फोटनाशनाय नमः
गं एकारपीठमध्यस्थाय नमः
गं एकपादकृतासनाय नमः
गं एजिताखिलदैत्यश्रिये नमः
गं एधिताखिलसंश्रयाय नमः ४२०
गं ऐश्वर्यनिधये नमः
गं ऐश्वर्याय नमः
गं ऐहिकामुष्मिकप्रदाय नमः
गं ऐरम्मदसमोन्मेषाय नमः
गं ऐरावतनिभाननाय नमः
गं ओङ्कारवाच्याय नमः
गं ओङ्काराय नमः
गं ओजस्वते नमः
गं ओषधिपतये नमः
गं औदार्यनिधये नमः ४३०
गं औद्धत्यधुर्याय नमः
गं औन्नत्यनिस्वनाय नमः
गं सुरनागानामङ्कुशाय नमः
गं सुरविद्विषामङ्कुशाय नमः
गं अःसमस्तविसर्गान्तपदेषु
परिकीर्तिताय नमः
गं कमण्डलुधराय नमः
गं कल्पाय नमः
गं कपर्दिने नमः
गं कलभाननाय नमः
गं कर्मसाक्षिणे नमः ४४०
गं कर्मकर्त्रे नमः
गं कर्माकर्मफलप्रदाय नमः
गं कदम्बगोलकाकाराय नमः
गं कूष्माण्डगणनायकाय नमः
गं कारुण्यदेहाय नमः
गं कपिलाय नमः
गं कथकाय नमः
गं कटिसूत्रभृते नमः
गं खर्वाय नमः
गं खड्गप्रियाय नमः ४५०
गं खड्गखान्तान्तस्थाय नमः
गं खनिर्मलाय नमः
गं खल्वाटशृङ्गनिलयाय नमः
गं खट्वाङ्गिने नमः

गं खदुरासदाय नमः
गं गुणाढ्याय नमः
गं गहनाय नमः
गं गस्थाय नमः
गं गद्यपद्यसुधार्णवाय नमः
गं गद्यगानप्रियाय नमः ४६०
गं गर्जाय नमः
गं गीतगीर्वाणपूर्वजाय नमः
गं गुह्याचाररताय नमः
गं गुह्याय नमः
गं गुह्यागमनिरूपिताय नमः
गं गुहाशयाय नमः
गं गुहाब्धिस्थाय नमः
गं गुरुगम्याय नमः
गं गुरोर्गुरवे नमः
गं घण्टाघर्घरिकामालिने नमः ४७०
गं घटकुम्भाय नमः
गं घटोदराय नमः
गं चण्डाय नमः
गं चण्डेश्वरसुहृदे नमः
गं चण्डीशाय नमः
गं चण्डविक्रमाय नमः
गं चराचरपतये नमः
गं चिन्तामणिचर्वणलालसाय नमः
गं छन्दसे नमः
गं छन्दोवपुषे नमः ४८०
गं छन्दोदुर्लक्ष्याय नमः
गं छन्दविग्रहाय नमः
गं जगद्योनये नमः
गं जगत्साक्षिणे नमः
गं जगदीशाय नमः
गं जगन्मयाय नमः
गं जपाय नमः
गं जपपराय नमः
गं जप्याय नमः
गं जिह्वासिंहासनप्रभवे नमः ४९०
गं झलज्झल्लोल्लसद्दानझङ्कारि-
भ्रमराकुलाय नमः
गं टङ्कारस्फारसंरावाय नमः
गं टङ्कारिमणिनूपुराय नमः
गं ठद्वयीपल्लवान्तस्थःसर्वमन्त्रैक-
सिद्धिदाय नमः
गं डिण्डिमुण्डाय नमः
गं डाकिनीशाय नमः
गं डामराय नमः
गं डिण्डिमप्रियाय नमः
गं ढक्कानिनादमुदिताय नमः
गं ढौकाय नमः ५००
गं ढुण्ढिविनाकाय नमः
गं तत्वानां परमाय तत्त्वाय नमः
गं तत्त्वम्पदनिरूपिताय नमः
गं तारकान्तरसंस्थानाय नमः

गं तारकाय नमः
गं तारकान्तकाय नमः
गं स्थाणवे नमः
गं स्थाणुप्रियाय नमः
गं स्थात्रे नमः
गं स्थावराय जङ्गमाय जगते नमः ५१०
गं दक्षयज्ञप्रमथनाय नमः
गं दात्रे नमः
गं दानवमोहनाय नमः
गं दयावते नमः
गं दिव्यविभवाय नमः
गं दण्डभृते नमः
गं दण्डनायकाय नमः
गं दन्तप्रभिन्नाभ्रमालाय नमः
गं दैत्यवारणदारणाय नमः
गं दंष्ट्रालग्नद्विपघटाय नमः ५२०
गं देवार्थनृगजाकृतये नमः
गं धन्यधान्यपतये नमः
गं धन्याय नमः
गं धनदाय नमः
गं धरणीधराय नमः
गं ध्यानैकप्रकटाय नमः
गं ध्येयाय नमः
गं ध्यानाय नमः
गं ध्यानपराणाय नमः
गं नन्दाय नमः ५३०
गं नन्दिप्रियाय नमः
गं नादाय नमः
गं नादमध्यप्रतिष्ठिताय नमः
गं निष्कलाय नमः
गं निर्मलाय नमः
गं नित्याय नमः
गं नित्यानित्याय नमः
गं निरामयाय नमः
गं परं व्योम्ने नमः
गं परं धाम्ने नमः ५४०
गं परमात्मने नमः
गं परम्पदाय नमः
गं परात्पराय नमः
गं पशुपतये नमः
गं पशुपाशविमोचकाय नमः
गं पूर्णानन्दाय नमः
गं परानन्दाय नमः
गं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
गं पद्मप्रसन्ननयनाय नमः
गं प्रणताज्ञानमोचनाय नमः ५५०
गं प्रमाणप्रत्ययातीयाय नमः
गं प्रणतार्तिनिवारणाय नमः
गं फलहस्ताय नमः
गं फणिपतये नमः
गं फेत्काराय नमः
गं फाणितप्रियाय नमः

गं बाणार्चिताङ्घ्रियुगलाय नमः
गं बालकेलिकुतूहलिने नमः
गं ब्रह्मणे नमः
गं ब्रह्मार्चितपदाय नमः ५६०
गं ब्रह्मचारिणे नमः
गं बृहस्पतये नमः
गं वृहत्तमाय नमः
गं ब्रह्मपराय नमः
गं ब्रह्मण्याय नमः
गं ब्रह्मवित्प्रियाय नमः
गं वृहन्नादाग्र्यचीत्काराय नमः
गं ब्रह्माण्डावलिमेखलाय नमः
गं भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीकाय नमः
गं भर्गाय नमः ५७०
गं भद्राय नमः
गं भयापहाय नमः
गं भगवते नमः
गं भक्तिसुलभाय नमः
गं भूतिदाय नमः
गं भूतिभूषणाय नमः
गं भव्याय नमः
गं भूतालयाय नमः
गं भोगदात्रे नमः
गं भ्रूमध्यगोचराय नमः ५८०
गं मन्त्राय नमः
गं मन्त्रपतये नमः
गं मन्त्रिणे नमः
गं मदमत्तमनोरमाय नमः
गं मेखलावते नमः
गं मन्दगतये नमः
गं मतिमत्कमलेक्षणाय नमः
गं महाबलाय नमः
गं महावीर्याय नमः
गं महाप्राणाय नमः ५९०
गं महामनसे नमः
गं यज्ञाय नमः
गं यज्ञपतये नमः
गं यज्ञगोप्त्रे नमः
गं यज्ञफलप्रदाय नमः
गं यशस्कराय नमः
गं योगगम्याय नमः
गं याज्ञिकाय नमः
गं याजकप्रियाय नमः
गं रसाय नमः
गं रसप्रियाय नमः
गं रस्याय नमः ६००
गं रञ्जकाय नमः
गं रावणार्चिताय नमः
गं रक्षोरक्षाकराय नमः
गं रत्नगर्भाय नमः
गं राज्यसुखप्रदाय नमः
गं लक्ष्याय नमः

गं लक्ष्यप्रदाय नमः
गं लक्ष्याय नमः ६१०
गं लयस्थाय नमः
गं लड्डुकप्रियाय नमः
गं लानप्रियाय नमः
गं लास्यपराय नमः
गं लाभकृते नमः
गं लोकविश्रुताय नमः
गं वरेण्याय नमः
गं वह्निवदनाय नमः
गं वन्द्याय नमः
गं वेदान्तगोचराय नमः ६२०
गं विकर्त्रे नमः
गं विश्वतश्चक्षुषे नमः
गं विधात्रे नमः
गं विश्वतोमुखाय नमः
गं वामदेवाय नमः
गं विश्वनेत्रे नमः
गं वज्रिवज्रनिवारणाय नमः
गं विश्वबन्धनविष्कम्भाधाराय नमः
गं विश्वेश्वरप्रभवे नमः
गं शब्दब्रह्मणे नमः ६३०
गं शमप्राप्याय नमः
गं शम्भुशक्तिगणेश्वराय नमः
गं शास्त्रे नमः
गं शिखाग्रनिलयाय नमः
गं शरण्याय नमः
गं शिखरीश्वराय नमः
गं षड्ऋतुकुसुमस्रग्विणे नमः
गं षडाधाराय नमः
गं षडक्षराय नमः
गं संसारवैद्याय नमः ६४०
गं सर्वज्ञाय नमः
गं सर्वभेषजभेषजाय नमः
गं सृष्टिस्थितिलयक्रीडाय नमः
गं सुरकुञ्जरभेदनाय नमः
गं सिन्दूरितमहाकुम्भाय नमः
गं सदसद्व्यक्तिदायकाय नमः
गं साक्षिणे नमः
गं समुद्रमथनाय नमः
गं स्वसंवेद्याय नमः
गं स्वदक्षिणाय नमः ६५०
गं स्वतन्त्राय नमः
गं सत्यसङ्कल्पाय नमः
गं सामगानरताय नमः
गं सुखिने नमः
गं हंसाय नमः
गं हस्तिपिशाचीशाय नमः
गं हवनाय नमः
गं हव्यकव्यभुजे नमः
गं हव्याय नमः
गं हुतप्रियाय नमः ६६०

गं हर्षाय नमः
गं हृल्लेखामन्त्रमध्यगाय नमः
गं क्षेत्राधिपाय नमः
गं क्षमाभर्त्रे नमः
गं क्षमापरपरायणाय नमः
गं क्षिप्रक्षेमकराय नमः
गं क्षेमानन्दाय नमः
गं क्षोणीसुरद्रुमाय नमः
गं धर्मप्रदाय नमः
गं अर्थदाय नमः ६७०
गं कामदात्रे नमः
गं सौभाग्यवर्धनाय नमः
गं विद्याप्रदाय नमः
गं विभवदाय नमः
गं भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय नमः
गं आभिरूप्यकराय नमः
गं वीरश्रीप्रदाय नमः
गं विजयप्रदाय नमः
गं सर्ववश्यकराय नमः
गं गर्भदोषघ्ने नमः ६८०
गं पुत्रपौत्रदाय नमः
गं मेधादाय नमः
गं कीर्तिदाय नमः
गं शोकहारिणे नमः
गं दौर्भाग्यनाशनाय नमः
गं प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः
गं रुष्टचित्तप्रसादनाय नमः
गं पराभिचारशमनाय नमः
गं दुःखभञ्जनकारकाय नमः
गं लवाय नमः ६९०
गं त्रुटये नमः
गं कलायै नमः
गं काष्ठायै नमः
गं निमेषाय नमः
गं तत्पराय नमः
गं क्षणाय नमः
गं घट्यै नमः
गं मुहूर्ताय नमः
गं प्रहराय नमः
गं दिवानक्ताय नमः ७००
गं अहर्निशाय नमः
गं पक्षाय नमः
गं मासाय नमः
गं अयनाय नमः
गं वर्षाय नमः
गं युगाय नमः
गं कल्पाय नमः
गं महालयाय नमः
गं राशये नमः
गं तारायै नमः ७१०
गं तिथये नमः
गं योगाय नमः

गं वाराय नमः
गं करणाय नमः
गं अंशकाय नमः
गं लग्नाय नमः
गं होरायै नमः
गं कालचक्राय नमः
गं मेरवे नमः
गं सप्तर्षिभ्यो नमः ७२०
गं ध्रुवाय नमः
गं राहवे नमः
गं मन्दाय नमः
गं कवये नमः
गं जीवाय नमः
गं बुधाय नमः
गं भौमाय नमः
गं शशिने नमः
गं रवये नमः
गं कालाय नमः ७३०
गं सृष्टये नमः
गं स्थितये नमः
गं विश्वस्मै स्थावराय जङ्गमाय नमः
गं यस्मै नमः
गं भुवे नमः
गं अद्भ्यो नमः
गं अग्नये नमः
गं मरुते नमः
गं व्योम्ने नमः
गं अहङ्कृतये नमः
गं प्रकृतये नमः ७४०
गं पुंसे नमः
गं ब्रह्मणे नमः
गं विष्णवे नमः
गं शिवाय नमः
गं रुद्राय नमः
गं ईशाय नमः
गं शक्तये नमः
गं सदाशिवाय नमः
गं त्रिदशेभ्यो नमः
गं पितृभ्यो नमः ७५०
गं सिद्धेभ्यो नमः
गं यक्षेभ्यो नमः
गं रक्षोभ्यो नमः
गं किन्नरेभ्यो नमः
गं साध्येभ्यो नमः
गं विद्याधरेभ्यो नमः
गं भूतेभ्यो नमः
गं मनुष्येभ्यो नमः
गं पशुभ्यो नमः
गं खगेभ्यो नमः ७६०
गं समुद्रेभ्यो नमः
गं सरिद्भ्यो नमः
गं शैलेभ्यो नमः

गं भूताय नमः
गं भव्याय नमः
गं भवोद्भवाय नमः
गं साङ्ख्याय नमः
गं पातञ्जलाय नमः
गं योगाय नमः
गं पुराणेभ्यो नमः ७७०
गं श्रुत्यै नमः
गं स्मृत्यै नमः
गं वेदाङ्गेभ्यो नमः
गं सदाचाराय नमः
गं मीमांसायै नमः
गं न्यायविस्तराय नमः
गं आयुर्वेदाय नमः
गं धनुर्वेदाय नमः
गं गान्धर्वाय नमः
गं काव्यनाटकाय नमः ७८०
गं वैखानसाय नमः
गं भागवताय नमः
गं सात्वताय नमः
गं पाञ्चरात्रकाय नमः
गं शैवाय नमः
गं पाशुपताय नमः
गं कालामुखाय नमः
गं भैरवशासनाय नमः
गं शाक्ताय नमः

गं वैनायकाय नमः ७९०
गं सौराय नमः
गं जैनाय नमः
गं आर्हतसंहितायै नमः
गं सते नमः
गं असते नमः
गं व्यक्ताय नमः
गं अव्यक्ताय नमः
गं सचेतनाय नमः
गं अचेतनाय नमः
गं बन्धाय नमः ८००
गं मोक्षाय नमः
गं सुखाय नमः
गं भोगाय नमः
गं अयोगाय नमः
गं सत्याय नमः
गं अणवे नमः
गं महते नमः
गं स्वस्ति नमः
गं हुं नमः
गं फट् नमः ८१०
गं स्वधा नमः
गं स्वाहा नमः
गं श्रौषड् नमः
गं वौषड् नमः
गं वषण्णमः

गं नमो नमः
गं ज्ञानाय नमः
गं विज्ञानाय नमः
गं आनन्दाय नमः
गं बोधाय नमः ८२०
गं संविदे नमः
गं शमाय नमः
गं यमाय नमः
गं एकस्मै नमः
गं एकाक्षराधाराय नमः
गं एकाक्षरपरायणाय नमः
गं एकाग्रधिये नमः
गं एकवीराय नमः
गं एकानेकस्वरूपधृते नमः
गं द्विरूपाय नमः ८३०
गं द्विभुजाय नमः
गं द्व्यक्षाय नमः
गं द्विरदाय नमः
गं द्वीपरक्षकाय नमः
गं द्वैमातुराय नमः
गं द्विवदनाय नमः
गं द्वन्द्वातीताय नमः
गं द्वयातिगाय नमः
गं त्रिधाम्ने नमः
गं त्रिकराय नमः ८४०
गं त्रेतायै नमः
गं त्रिवर्गफलदायकाय नमः
गं त्रिगुणात्मने नमः
गं त्रिलोकादये नमः
गं त्रिशक्तीशाय नमः
गं त्रिलोचनाय नमः
गं चतुर्बाहवे नमः
गं चतुर्दन्ताय नमः
गं चतुरात्मने नमः
गं चतुर्मुखाय नमः
गं चतुर्विधोपायमयाय नमः ८५०
गं चतुवर्णाश्रमाश्रयाय नमः
गं चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्ति-
प्रर्वतकाय नमः
गं चतुर्थीपूजनप्रीताय नमः
गं चतुर्थीतिथिसम्भवाय नमः
गं पञ्चाक्षरात्मने नमः
गं पञ्चात्मने नमः
गं पञ्चास्याय नमः
गं पञ्चकृत्यकृते नमः
गं पञ्चाधाराय नमः
गं पञ्चवर्णाय नमः ८६०
गं पञ्चाक्षरपरायणाय नमः
गं पञ्चतालाय नमः
गं पञ्चकराय नमः
गं पञ्चप्रणवभाविताय नमः
गं पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये नमः

गं पञ्चावरणवारिताय नमः
गं पञ्चभक्ष्यप्रियाय नमः
गं पञ्चबाणाय नमः
गं पञ्चशिवात्मकाय नमः
गं षट्कोणपीठाय नमः ८७०
गं षट्चक्रधाम्ने नमः
गं षड्ग्रन्थिभेदकाय नमः
गं षडध्वध्वान्तविध्वंसिने नमः
गं षडङ्गुलमहाह्रदाय नमः
गं षण्मुखाय नमः
गं षण्मुखभ्रात्रे नमः
गं षट्शक्तिपरिवारिताय नमः
गं षड्वैरिवर्गविध्वंसिने नमः
गं षडूर्मिभयभञ्जनाय नमः
गं षट्तर्कदूराय नमः ८८०
गं षट्कर्मनिरताय नमः
गं षड्रसाश्रयाय नमः
गं सप्तपातालचरणाय नमः
गं सप्तद्वीपोरुमण्डलाय नमः
गं सप्तस्वर्लोकमुकुटाय नमः
गं सप्तसप्तिवरप्रदाय नमः
गं सप्ताङ्गराज्यसुखदाय नमः
गं सप्तर्षिगणमण्डिताय नमः
गं सप्तछन्दोनिधये नमः
गं सप्तहोत्रे नमः ८९०
गं सप्तस्वराश्रयाय नमः
गं सप्ताब्धिकेलिकासाराय नमः
गं सप्तमातृनिषेविताय नमः
गं सप्तच्छन्दोमोदमदाय नमः
गं सप्तच्छन्दोमखप्रभवे नमः
गं अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये नमः
गं अष्टप्रकृतिकारणाय नमः
गं अष्टाङ्गयोगफलभुवे नमः
गं अष्टपत्राम्बुजासनाय नमः
गं अष्टशक्तिसमृद्धश्रिये नमः ९००
गं अष्टैश्वर्यप्रदायकाय नमः
गं अष्टपीठोपपीठश्रिये नमः
गं अष्टमातृसमावृताय नमः
गं अष्टभैरवसेव्याय नमः
गं अष्टवसुवन्द्याय नमः
गं अष्टमूर्तिभृते नमः
गं अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये नमः
गं अष्टद्रव्यहविःप्रियाय नमः
गं नवनागासनाध्यासिने नमः
गं नवनिध्यनुशासित्रे नमः ९१०
गं नवद्वारपुराधाराय नमः
गं नवाधारनिकेतनाय नमः
गं नवनारायणस्तुत्याय नमः
गं नवदुर्गानिषेविताय नमः
गं नवनाथमहानाथाय नमः
गं नवनागविभूषणाय नमः
गं नवरत्नविचित्राङ्गाय नमः

गं नवशक्तिशिरोधृताय नमः
गं दशात्मकाय नमः
गं दशभुजाय नमः ९२०
गं दशदिक्पतिवन्दिताय नमः
गं दशाध्यायाय नमः
गं दशप्राणाय नमः
गं दशेन्द्रियनियामकाय नमः
गं दशाक्षरमहामन्त्राय नमः
गं दशाशाव्यापिविग्रहाय नमः
गं एकादशादिभीरुद्रैः स्तुताय नमः
गं एकादशाक्षराय नमः
गं द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय नमः
गं द्वादशान्तनिकेतनाय नमः ९३०
गं त्रयोदशाभिधाभिन्नविश्वेदेवाधि-
दैवताय नमः
गं चतुर्दशेन्द्रवरदाय नमः
गं चतुर्दशमनुप्रभवे नमः
गं चतुर्दशादिविद्याढ्याय नमः
गं चतुर्दशजगत्प्रभवे नमः
गं सामपञ्चदशाय नमः
गं पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय नमः
गं षोडशाधारनिलयाय नमः
गं षोडशस्वरमातृकाय नमः
गं षोडशान्तपदावासाय नमः
गं षोडशेन्दुकलात्मकाय नमः ९४०
गं कलासप्तदश्यै नमः
गं सप्तदशाय नमः
गं सप्तदशाक्षराय नमः
गं अष्टादशद्वीपपतये नमः
गं अष्टादशपुराणकृते नमः
गं अष्टादशौषधीसृष्ट्ये नमः
गं अष्टादशविधिस्मृताय नमः
गं अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञान-
कोविदाय नमः
गं एकविंशाय पुंसे नमः ९५०
गं एकविंशत्यङ्गुलिपल्लवाय नमः
गं चतुर्विंशतितत्त्वात्मने नमः
गं पञ्चविंशाख्यपूरुषाय नमः
गं सप्तविंशतितारेशाय नमः
गं सप्तविंशतियोगकृते नमः
गं द्वात्रिंशद्भैरवाधीशाय नमः
गं चतुस्त्रिंशन्महाह्रदाय नमः
गं षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतये नमः
गं अष्टत्रिंशत्कलातनवे नमः
गं नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्ग-
निर्गलाय नमः ९६०
गं पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै नमः
गं पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय नमः
गं पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय नमः
गं पञ्चाशन्मातृकालयाय नमः
गं द्विपञ्चाशद्वपुश्श्रेण्यै नमः
गं त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयाय नमः

गं चतुष्पष्ट्यर्णनिर्णेत्रे नमः
गं चतुष्षष्टिकलानिधये नमः
गं चतुष्षष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्द-
वन्दिताय नमः
गं अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरव-
भावनाय नमः १७०
गं चतुर्नवतिमन्त्रात्मने नमः
गं षण्णवत्यधिकप्रभवे नमः
गं शतानन्दाय नमः
गं शतधृतये नमः
गं शतपत्रायतेक्षणाय नमः
गं शतानीकाय नमः
गं शतमखाय नमः
गं शतधारावरायुधाय नमः
गं सहस्रपत्रनिलयाय नमः
गं सहस्रफणभूषणाय नमः १८०
गं सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः
गं सहस्राक्षाय नमः
गं सहस्रपदे नमः
गं सहस्रनामसंस्तुत्याय नमः
गं सहस्राक्षबलापहाय नमः
गं दशसाहस्रफणभृत्फणिराज-
कृतासनाय नमः
गं अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्र-
यन्त्रिताय नमः
गं लक्षाधीशप्रियाधाराय नमः
गं लक्षाधारमनोमयाय नमः
गं चतुर्लक्षजपप्रीताय नमः १९०
गं चतुर्लक्षप्रकाशिताय नमः
गं चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां
देहसंस्थिताय नमः
गं कोटिसूर्यप्रतीकाशाय नमः
गं कोटिचन्द्रांशुनिर्मलाय नमः
गं शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायक-
धुरन्धराय नमः
गं सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयव-
द्युतये नमः
गं त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणत-
पादुकाय नमः
गं अनन्तनाम्ने नमः
गं अनन्तश्रिये नमः
गं अनन्तानन्तसौख्यदाय नमः १०००

पुनरपि ऋष्यादि-कराङ्गन्यासौ ध्यानञ्च विदध्यात्।

श्रीगणपतिसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा।।

श्रीगणेश्वरैकविंशतिनामानि

गं	गणञ्जयाय नमः	१	गं	निधये नमः	१२
गं	गणपतये नमः	२	गं	सुमङ्गलाय नमः	१३
गं	हेरम्बाय नमः	३	गं	बीजाय नमः	१४
गं	धरणीधराय नमः	४	गं	आशापूरकाय नमः	१५
गं	महागणपतये नमः	५	गं	वरदाय नमः	१६
गं	लक्षप्रदाय नमः	६	गं	शिवाय नमः	१७
गं	क्षिप्रप्रसादनाय नमः	७	गं	काश्यपाय नमः	१८
गं	अमोघसिद्धये नमः	८	गं	नन्दनाय नमः	१९
गं	अमिताय नमः	९	गं	वाचसिद्धाय नमः	२०
गं	मन्त्राय नमः	१०	गं	ढुण्ढिविनायकाय नमः	२१
गं	चिन्तामणये नमः	११			

इति–एकविंशतिनामानि

गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः।
महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ।।
अमोघसिद्धिरमितो मन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदःशिवः।।
काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिविनायकः।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान्।।
यः स्तौति मद्गतमना मदाराधनतरत्परः।
स्तुतो नाम्नां सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः।।
नमो नमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये नमो नमः करिकलभाननाय ते।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे

श्रीमहागणपतिक्रमः सम्पूर्णः।

अथ श्री-क्रमः

प्रथमम् आह्निकप्रकरणम्

(ब्राह्ममुहूर्तकृत्यं मन्त्रमहार्णवश्रीविद्यार्णवनित्योत्सवादिषु प्रतिपादितम्)

(ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद् बहिर्निर्गत्य पादौ मुखं च प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिधाय शुद्धासने उपविश्य शिरसि सहस्रारे श्वेतवर्णं स्वगुरुं ध्यायेत्)

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि।।

श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम् ।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहं भजे।।१।।
तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया।
कोणलक्षितहळक्षमण्डलीं भावलक्ष्यमबलालयं भजे।।२।।
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम् ।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलम्।।३।।
ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम्।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः।।४।।
तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुङ्कुमासवपरीमरन्दयोः ।
द्वन्द्वबिन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मङ्गलास्पदम्।।५।।
निषक्तमणिपादुका-नियमितौघकोलाहलं,
स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकम्।
परामृतसरोवरोदितसरोजसद्रोचिषं,
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपदारविन्दद्वयम्।।६।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।७।।

श्रीगुरुपञ्चकम्

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह।।१।।

नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे।
सर्वाज्ञानतमो-भेद-भानवे चिद्घनाय ते।।२।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त-विग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे।।३।।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे।।४।।
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।।५।।
इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः।
प्रातः प्रबोध-समये जपात् सुदिवसं भवेत्।।६।।

ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः
स्वरूपनिरूपणहेत्वमुकाम्बासहितगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
स्वच्छप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्बासहितपरमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजस्कामुकाम्बासहितपरमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति गुरु-परमगुरु-परमेष्ठिगुरु-पादुकापूजनं भावयेत्।)

श्रीगुरुप्रणतिः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
वन्दे गुरु-पद-द्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्त-शुक्ल-प्रभा-मिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः।।

(इति प्रणम्य प्राणानायम्य च तच्चरणयुगलविगलदमृतरसविसरपरिपुताखिलाङ्गमात्मानं भावयेत्)।

इष्ट-मन्त्र-भावनम्

ततश्च सर्वचैतन्यात्मिकां जाग्रदाद्यवस्थात्रयावभासिकां सर्वाधिष्ठानरूपां प्रत्यक्चैतन्याभिन्नब्रह्मात्मिकां सर्वचैतन्यविवर्जितामखण्डां चितिं भावयेत्। यथा-

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं तडिल्लतासदृशाकृतिं तरुणारुणपिञ्जरां तैजसीं ज्वलन्तीं कुण्डलीरूपां सर्वाधिष्ठानभूतां परां संविदं चिन्तयेत्। मूलमन्त्रं च दशवारमावर्तयेत्।

कुण्डलिनी–मन्त्रजप–विधिः

नियमितपवनस्पन्दो मूलाधारे चतुर्दलपद्मे त्रिकोणात्मकं पीठस्थित-ज्योतिलिङ्गमावेष्ट्यावस्थितां सार्धत्रिवलयां 'हूं' बीजेनोत्थितां 'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रं च जपन् कुण्डलिनीं ध्यायेत्।

कुण्डलिनीमन्त्रः—

वाग्भवं भुवनेशी च श्रीबीजन्तु तथैव च ।
त्र्यक्षरो मन्त्र आख्यातः कुण्डलिन्यास्सुसिद्धिदः।। १।।
ऋषिश्शक्तिस्समाख्यातो गायत्रीच्छन्द ईरितम्।
चेतनाकुण्डली शक्तिर्देवतात्र समीरिता।। २।।
वाग्भवं बीजमाम्नातं शक्तिः श्रीबीजमुच्यते।
हृल्लेखा कीलकं प्रोक्तं कुण्डलिन्यास्तु चिन्तने।। ३।।
विनियोगस्समाख्यातः सर्वागमविशारदैः ।
बीजत्रयद्विरावृत्त्या षडङ्गन्यास ईरितः।। ४।।
ध्यानं वक्ष्यामि कुण्डल्यास्सावधानतया शृणु।
मूलाधारे त्रिकोणे तु सूर्यकोटिसमत्विषि।। ५।।
प्रसुप्तभुजगाकारां सार्धत्रिवलयस्थिताम् ।
नीवारशुकवत्तन्वीं तडित्कोटिसमप्रभाम् ।। ६।।
सूर्यकोटिप्रभां दीप्तां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्।
शिवशक्तिमयीं देवीं शङ्खावर्तक्रमात्स्थिताम्।। ७।।
सुषुम्नामध्यमार्गेण यान्तीं परशिवावधि।
ह्रीङ्कारबीजरूपेण चिन्तयेद् योगवर्त्मना ।। ८।।

अस्य श्रीकुण्डलिनीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्री छन्दश्चेतना–कुण्डलिनी देवता ऐं बीजं श्रीं शक्तिः ह्रीं कीलकं श्रीकुण्डलिन्याश्चिन्तने विनियोगः।

(इति विनियोगं कृत्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रेण करषडङ्गन्यासौ विधाय ध्यायेत्।

ध्यानम्

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुर-
त्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

कुण्डलिनीस्तुतिः

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं,
भित्त्वाधारसमूहमाशुविलसत्सौदामिनीसन्निभाम् ।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिं,
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम्।। १।।

हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम्।।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरुचिरा ध्येया जगन्मोहिनी ।। २।।

अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा ।
आनन्दामृतकन्दगं पुरभिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं,
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः।। ३।।

मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसङ्क्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तडित्कोटिप्रभाभास्वरे ।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम्।। ४।।

गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा तनुयाद् योगफलानि कुण्डली।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा भजतां वाञ्छितकल्पवल्लरी।। ५।।

आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद् भास्वरबन्धुजीवरुचिरां संविन्मयीं देवताम्।। ६।।

हृत्पङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसां भगवती निर्भर्त्सयन्तीं तमः।
नादाख्यां पदमर्धचन्द्रकुटिलां संविन्मयीं शाश्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेद् विभुं तेजसाम्।। ७।।

भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम् ।
वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत् सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम् ।। ८।।

मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी ।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयी देवता नः ।। ९।।

आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः, समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती, शिवाङ्गना नः शिवमातनोतु।। १०।।

निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः ।। ११।।
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंस-
मानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं
शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु।। १२।।

वर्णैरर्णवषड्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान् ।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतै-
र्भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम्।। १३।।

आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम्।
सङ्क्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत-
स्रोतःकन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये ।। १४।।

मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं,
कामं बालार्ककालानलजठरकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम् ।

विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य ।। १५।।

तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुटरुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छतीं सुषुम्नामनुसरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम्।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हूङ्कृतोदञ्चितोरः।। १६।।

नीता सा शनकैरधोमुखसहस्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कबिम्बमधुनः पीयूषधारास्रुतिम्।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्,
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत्।। १७।।

योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तर्बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः, सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः।।१८।।

(इति तद्रश्मिनिकरभस्मितसकलकल्मषजालो "मूलं" मनसा दशवार-मावर्तयेत्।)

अजपाजपविधिः

अथ पूर्वेद्युः सूर्योदयादारभ्याद्यसूर्योदयपर्यन्तं षट्शताधिकैकविंशतिसाहस्रिकां निःश्वासोच्छ्वासरूपिणीमजपां मूलाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तसप्तचक्रनिवासिनीभ्यो देवताभ्यो निवेदयिष्ये, इति सङ्कल्प्य क्रमशो निवेदयेत्। यथा -

मूलाधारे चतुर्दलपद्मे वं शं षं सं चतुरक्षरे चतुष्कोणयन्त्रे ऐरावतवाहने लं बीजे स्थिताय सिद्धिबुद्धिसहिताय कुङ्कुमवर्णाय महागणपतये षट्शतमजपाजपं निवेदयामि।

स्वाधिष्ठाने षड्दलपद्मे बं भं मं यं रं लं षडक्षरे अर्धचन्द्रे यन्त्रे मकरवाह्ने वं बीजे स्थिताय सरस्वतीशक्तिसहिताय सिन्दूरवर्णाय ब्रह्मणे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

मणिपूरचक्रे दशदलपद्मे डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं दशाक्षरे त्रिकोणयन्त्रे मेषवाहने रं बीजे स्थिताय लक्ष्मीशक्तिसहिताय नीलवर्णाय विष्णवे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

अनाहतचक्रे द्वादशदलपद्मे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं द्वादशाक्षरे षट्कोणयन्त्रे हरिणवाहने यं बीजे स्थिताय पार्वतीशक्तिसहिताय हेमवर्णाय परमशिवाय षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि।

विशुद्धिचक्रे षोडशदलपद्मे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः षोडशाक्षरे शून्ययन्त्रे हस्तिवाहने हं बीजे स्थिताय प्राणशक्तिसहिताय शुद्धस्फटिकसङ्काशाय जीवाय सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि।

आज्ञाचक्रे द्विदलपद्मे श्वेतवर्णे हं क्षं द्व्यक्षरे लिङ्गयन्त्रे नरवाहने प्रणवबीजे स्थिताय ज्ञानशक्तिसहिताय विद्युद्वर्णाय गुरवे सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि।

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदलपद्मे चित्रवर्णे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इति विंशतिवारोच्चारिते सहस्राक्षरे विसर्गयन्त्रे बिन्दुवाहने पूर्णचन्द्रमण्डले आनन्दमहासमुद्रमध्ये चिन्मयमणिद्वीपे चित्सार-चिन्तामणिमयमन्दिरे कल्पवृक्षाधस्तले अव्याकृतब्रह्ममहासिंहासने स्थिताय नानावर्णाय वर्णातीताय चिच्छक्तिसहिताय परमात्मने सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि। (इति निवेदयेत्।)

(अथ कतिचित् क्षणान् 'हंसः सोऽहम्' इति श्वासोच्छ्वासेषु भावयेत्।)

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।
हंसोऽतिपरमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा।।

(इति ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सर्वान् देवान् पूजयेत्।)

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। (कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्याम्)।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)।
यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि। (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि। (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्)।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान् समर्पयामि। (साङ्गुष्ठाभिः सर्वाभिरङ्गुलीभिः)।

श्रीचक्रदेवतान्तर्यागः

आमूलाधारादाब्रह्मविलं विलसन्त्यां बिसतन्तुतनीयस्यां विद्युत्पुञ्ज-पिञ्जरायां विवस्वदयुतप्रकाशायां कुण्डलिन्यामेव निम्नाङ्कितेषु चक्रेषु श्रीचक्रस्थितां देवतां भावयन् पूजयेत्। तद्यथा-

मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे तदुपरि स्थिते विषुवन्नाम्नि रक्तवर्णे षड्दले च देहश्रीचक्रयोरभेदेन भूपुरस्थिता अणिमादिदेवीः पूजयामि।
मूलाधारे चतुर्दले षोडशदलगतकामाकर्षिण्यादिदेवीः पूजयामि।
स्वाधिष्ठाने षड्दलेऽष्टदलगतानङ्गकुसुमादिदेवीः पूजयामि।
मणिपूरे दशदले चतुर्दशारगतसर्वसङ्क्षोभिण्यादिदेवीः पूजयामि।
अनाहते द्वादशदले बहिर्दशारगतसर्वसिद्धिप्रदादिदेवीः पूजयामि।
विशुद्धौ षोडशदलेऽन्तर्दशारगतसर्वज्ञादिदेवीः पूजयामि।
लम्बिकाग्रे अष्टारगतवशिन्यादिदेवीः पूजयामि।
आज्ञायां द्विदले आयुधदेवीस्त्रिकोणगतमहाकामेश्वर्यादिदेवीश्च पूजयामि।
सहस्रारे बिन्दुगतश्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं कामेश्वराङ्कनिलयां देवीं पूजयामि। इति।

(एवं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवान्यावरणानि विलीनानि विभाव्य मध्यत्र्यस्राग्रे स्थितजीवात्मना सहितां देवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिकुसुमैस्तां सम्पूज्य ततोऽकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः भूवियदनिलानलजललक्षणाः पञ्चभूतमयीः सर्वावयव-सुन्दरीः पञ्च देवता देव्यग्रे स्थिताः पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत्।

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण ता विलीना विभाव्य मूलविद्यामुच्चरन् जीवात्मानं देवीपादमूले लीनं विभाव्य हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तथैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् सङ्क्षोभिण्यादिमुद्रा[1] भावयित्वा क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।)

रश्मिमालामन्त्राः

ततो रश्मिमालाप्रवर्तनम्। रश्मिमालामन्त्रेषु वैदिकान् मन्त्रान् सस्वरान् पठेत्।

ॐ भूर्भुवस्स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रयोदयात् (इति गायत्री मूलाधारे)।। १।।

सावित्र्या विश्वामित्र ऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै –
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।१।।

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि।।
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः।।२।।
(इत्यैन्द्री विद्या सप्तषष्ट्यर्णा सङ्कटे भयनाशिनी, हृदये)।।

अभयङ्करमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अभयङ्करो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

---

1. मुद्रास्तु पूजा-प्रकरणे द्रष्टव्याः।

आरूढो वारणेन्द्रं दशशतनयनः श्यामलः कोमलाङ्गः
वर्मी वीरः प्रतापी प्रतिभटदहनप्रज्ज्वलच्चक्रपाणिः।
दोर्भिर्दिव्यायुधाढ्यैर्मणिगणखचितैर्देवमन्त्रीसनाथो
दत्वाभीष्टानि शश्वत्परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः।।२।।

ॐ घृणिस्सूर्य आदित्योम् (इत्यष्टार्णा सौरी तेजोदा, फाले)।। ३।।

सौरमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सूर्यो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे।।३।।

ॐ (इति प्रणवः केवलो ब्रह्मविद्या मुक्तिप्रदा, ब्रह्मरन्ध्रे) ।। ४।।

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

ओंकारवाच्यमुच्चण्डचण्डांशुसदृशप्रभम्।
वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे।।४।।

ॐ परोरजसेऽसावदोम् (इति नवार्णा तुरीया गायत्री स्वैक्यविमर्शिनी, द्वादशान्ते)।। ५।।

तुरीयागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

देवीं तुरीयगायत्रीं तुर्यातीतपदाश्रयाम्।
परोरजःप्रकाशात्मचितिरूपामहं भजे।।५।।

रश्मिपञ्चकमेतन्मूलाधारहृत्फालविधिबिलद्वादशान्तस्थानबीजतया विभावनीयम्। (द्वादशान्तस्थानन्तु ललाटस्योत्तरभागः)।

ॐ सूर्याक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरेकं तपन्तम्।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः।।

ॐ नमो भगवते सूर्यायाहोवाहिनि वाहिन्यहोवाहिनि वाहिनि स्वाहा।

वयस्सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः।
अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्।।

पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः (इति षोडशमन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा मूलाधारे)।।६।।

चक्षुष्मतीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चक्षुष्मती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पकन्दुकं बिभ्रतीं करैः।
रौप्यसिंहासनारूढां देवीं चक्षुष्मतीं भजे।।६।।

ॐ गन्धर्वराज विश्वावसो ममाभिलषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा (इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी हृदये)।। ७।।

विश्वावसुमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्रीछन्दः विश्वावसु देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

रक्ताङ्गरागारुणभूषणाढ्यां वीणाधरं वीटिकयोल्लसन्तम्।
गन्धर्वकन्याजनगीयमानं विश्वावसुं सद्बृहतीं नमामि।।७।।

ॐ नमो रुद्राय पथिषदे स्वस्ति मां सम्पारय (इति मार्गसङ्कटहारिणी विद्या, फाले)।। ८।।

पथिषद्रुद्रमन्त्रस्य वामदेवः ऋषिः पङ्क्तिच्छन्दः, पथिषद्रुद्रो देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

आत्तसज्जधनुर्बाणकरं वृषभसंस्थितम्।
अन्नपूर्णासमाश्लिष्टं पथिषद्रुद्रमाश्रये।। ८।।

ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा (इति जलापच्छमनी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे)।। ९।।

तारामन्त्रस्य मत्स्य ऋषिः, ताराम्बा देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्– नौकासिंहासनारूढां शाक्यदर्शनदेवताम्।
जलापच्छमनीं वन्दे तारां वारिदमेचकाम्।।९।।

अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः
(इति महाव्याधिनाशिनी नामत्रयी विद्या, द्वादशान्ते)।। १०।।

नामत्रयमन्त्रस्य काश्यपात्रिभरद्वाजा ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाविष्णुर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

समस्तदुस्तरव्याधिसंघध्वंसपटीयसे।
अच्युतानन्तगोविन्दनाम्ने धाम्ने नमो नमः।।१०।।

(एतद्रश्मिपञ्चकं मूलधारादिपरिकरतया ज्ञेयम्)।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा
(इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी, मूलाधारे)।। ११।।

महागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल–
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश्वरोऽभीष्टदः।।११।।

ॐ नमः शिवायै, ॐ नमः शिवाय
(इति द्वादशार्णा शिवतत्त्वविमर्शिनी विद्या, हृदये)।। १२।।

शिवशक्त्यात्मकपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, उमामहेश्वरो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

वामांसन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त–
न्यस्तारक्तोत्पलायाःस्तनभरविलसद्वामहस्तः प्रियायाः।

सर्वाकल्पाभिरामः श्रितपरशुमृगेष्टः करैः काञ्चनाभः
ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुः सम्पदे पार्वतीशः।।१२।।

ॐ जुं सः मां पालय पालय (इति दशार्णा मृत्योरपि मृत्युरेषा विद्या, फाले)।। १३।।

अमृतमृत्युञ्जयस्य कहोल ऋषिः, विराट्छन्दः अमृतमृत्युञ्जयसदाशिवो देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् –

स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा-
स्रवदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम्।
स्वकरलसितमुद्रापाशवेदाक्षमालं
स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि।।१३।।

ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वं ममामुष्य ॐ (इति श्रुतधारिणी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे)।।१४।।

श्रुतधारिणीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

चतुराननमम्भोजनिषण्णं भारतीसखम्।
अक्षमालावराभीतिकमण्डलुधरं भजे।।१४।।

अं आं...अः कं खं...ळं क्षं (इति सबिन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णमालिका-मातृका सर्वज्ञताकरी द्वादशान्ते)।। १५।।

मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

पञ्चाशता मातृकया ह्यारब्धाखिलदेहया ।
समस्तविद्यारूपिण्या धन्योऽहं मातृकाम्बया।।१५।।
(पञ्चेमाः रश्मयो मूलादिरक्षात्मकतया द्रष्टव्याः)।

हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं (इति लोपामुद्राविद्या स्वस्वरूपविमर्शिनी, मूलाधारे)।। १६।।

श्रीहादिलोपामुद्रामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्तिः ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ह ५ बीजम्, ह ६ शक्तिः स ४ कीलकम्, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। बालया षडङ्गम्। ध्यानम्-

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम्।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम्।।१६।।

क्लीं हैं ह्सौः स्हौः हैं क्लीं (इति षट्कूटा सम्पत्करी विद्या हृदये)।। १७।।

सम्पत्करीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सम्पत्सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

अनेककोटिमातङ्गतुरङ्गरथपत्तिभिः ।
सेवितामरुणाकारां वन्दे सम्पत्सरस्वतीम्।।१७।।

सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि (इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षणी परमायुःप्रदा, फाले) ।। १८।।

चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चण्डयोगीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

सृष्टिस्थितिभ्यां संहृत्यनाख्यया भासया श्रिताम्।
कूलङ्कषकपालाढ्यां चण्डयोगीश्वरीं भजे।।१८।।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं (इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे) ।।१९।।

परशम्भुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, परशम्भुनाथो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशम्भवे।
आनन्दताण्डवोद्दण्डपण्डिताय नमो नमः॥१९॥

सौः (इयं परा विद्या द्वादशान्ते) ॥ २०॥

परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परासरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती।
मुद्रापुस्तलसद्बाहा पातु मां परमा कला॥२०॥

(एताः पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीयाः)।

ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं, ऐं क्लीं सौः (इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता बाला)॥२१॥

बालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः बालात्रिपुरसुन्दरी देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

अरुणकिरणजालैरञ्जिता सावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला॥२१॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा (इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता अन्नपूर्णा)॥ २२॥

अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अन्नपूर्णेश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

आदाय दक्षिणकरेण सुवर्णदर्वीं
दुग्धान्नपूर्णमितरेण च रत्नपात्रम्।
अन्नप्रदाननिरतां नवहेमवर्णाम्
अम्बां भजे कनकभूषणमाल्यशोभाम्॥२२॥

ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा (इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता अश्वारूढा)।।२३।।

(अश्वारूढामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, अश्वारूढा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

बद्ध्वा पाशेनाङ्कुशेन कृष्यमाणां स्वसाध्यकम्।
घ्नन्तीं वेत्रेण फालस्रक्पाणिमश्वासनां भजे।।२३।।

ध्यानान्तरम्-

अश्वारूढा कराग्रे नवकनकमयीं वेत्रयष्टिं दधाना
दक्षेऽन्ये धारयन्ती स्फुरितधनुलतापाशहस्ता सुसाध्या।।
देवी नित्यप्रसन्ना शशिशकललसत्केशपाशा त्रिनेत्रा
दद्यादद्यानवद्यां श्रियमखिलसुखप्राप्तिहृद्यां श्रियै नः।।२३।।

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्तु-आह्निकप्रकरण एवोक्त इह पठितव्यः)। तद्यथा-

ऐ ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।। २४।।

श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्रीविद्यागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

तेजोमयमहाविद्यां शेखराश्रितमस्तकाम्।
रक्तां चतुर्भुजां वन्दे श्रीविद्यागुरुपादुकाम्।।२४।।

(अथ मूलविद्या-सा च गुरुमुखादवगता कादिनाम्नी)-

कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।।२५।।

(बाला अन्नपूर्णा अश्वारूढा श्रीपादुका चेत्येताभिश्चतसृभिर्युक्ता मूलविद्या साम्राज्ञी मूलाधारे विलोकनीया)।।

(ऋषिच्छन्दोदेवतादिकं गुरुपरम्परातः प्राप्तमवगन्तव्यम्।)

ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा

(इति श्यामाङ्गभूता लघुश्यामा) ।।२६।।

लघुश्यामामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः विराट्छन्दः, श्रीलघुश्यामाम्बा देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्दुशोणाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मदविघूर्णनेत्राञ्चलाम्।
घनस्तनभरालसां गलितचूलिकां श्यामलां
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम्।।
माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं
मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम्।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि।।२६।। (इति वा)।।

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।

(इयं श्यामाङ्गभूता वाग्वादिनी)।। २७।।

वागीश्वरीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, विराट्छन्दः, वागीश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ध्यानम्-

अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्-
करयुगलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा।
धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा
भवतु भवभयानां भञ्जिनी भारती नः।।२७।।

ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः।
सर्वस्य वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्।।

(इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता नकुलीविद्या) ।। २८।।

नकुलीवागीश्वरीमन्त्रस्य कहोल ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, नकुलीवागीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

नकुली वज्रदन्ताली साध्यजिह्वाहिदंशिनी।
भक्तवक्तृत्वजननी भावनीया सरस्वती।।

श्रीविद्यागुरुपादुकैव प्रथमबीजत्रयस्थाने बालासहिता श्यामागुरुपादुका भवति। यथा-

ऐं क्लीं सौः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।। २९।।

श्यामागुरुपादुकामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्यामागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्

वन्दे गुर्वङ्घ्रिमुकुटां श्यामलां शुकपाणिनीम्।
समस्तसिद्धिजननीं श्यामलागुरुपादुकाम्।।२९।।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि, क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि (त्रैलोक्यं) अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं (इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिरङ्गोपाङ्ग-पादुकेत्येताभिश्च चतसृभिर्विद्याभिस्सहिता हृच्चक्रे यष्टव्या)।।३०।। (ऋष्यादिकं गुरुपरम्परातोऽवगन्तव्यम्)

लूं वाराहि लूं उन्मत्तभैरवि पादुकाभ्यां नमः।

(इयं वार्ताल्यङ्गभूता लघुवार्ताली) ।। ३१।।

लघुवाराहीमन्त्रस्य नारद ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, लघुवाराही देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

महार्णवे निपतितामुद्धरन्तीं वसुन्धराम्।
महादंष्ट्रां महाकायां नमाम्युन्मत्तभैरवीम्।।३१।।

ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा

(इयं स्वप्ने शुभाशुभवक्त्री वार्ताल्या उपाङ्गभूता स्वप्नवाराही)।।३२।।

स्वप्नवाराहीमन्त्रस्य अग्निर्ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, स्वप्नवाराही देवता। तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम् -

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शासन्तीं भक्तकार्ययोः।
दुःस्वप्नहारिणीं वन्दे वाराहीं स्वप्ननायिकाम्।।

ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकल-पशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा।। ३३।।

(तिरस्करिणीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, तिरस्करिणी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

मुक्तकेशीं विवसनां सर्वाभरणभूषिताम्।
स्वयोनिदर्शनान्मुह्यत्पशुवर्गां नमाम्यहम्।।३३।।

ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (एषा वार्ताली-गुरुपादुका)।। ३४।।

वाराहीगुरुपादुकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, वाराहीगुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्-

देशिकाङ्घ्रिलसन्मौलिं खड्गिनीञ्च कपालिनीम्।
भावयामि घनच्छायां पञ्चमीगुरुपादुकाम्।। ३४।।

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः। रुन्धे रुन्धिनि नमः। जम्भे जम्भिनि नमः। मोहे मोहिनि नमः। स्तम्भे स्तम्भिनि नमः। सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु करु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट्

(इति द्वादशोत्तरशताक्षरो महावाराहीमन्त्रः)।। ३५।।

(पूर्वोक्ताभिश्चतसृभिर्युक्तेयं महावाराही आज्ञाचक्रे परिपूज्या।)

प्रथमद्वितीयकूटयोः हल्लेखावर्जं पञ्चदश्येव त्रयोदशाक्षरी श्रीपूर्तिविद्या ब्रह्मरन्ध्रे यष्टव्या। तद्यथा-

कएईल हसकहल सकलह्रीं (इयं कादिपूर्तिविद्या) हसकल हसकहल सकलह्रीं (इयं हादिपूर्तिविद्या)।।३६।।

श्रीपूर्तिविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीपूर्तिविद्या देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

प्रथमत्रिकस्थाने त्रितारी कुमारी वाक् ग्लौं इत्यष्टबीजपूर्वा श्रीगुरुपादुकैव महापादुका सर्वमन्त्रसमष्टिरूपिणी स्वैक्यविमर्शिनी महासिद्धिप्रदायिनी द्वादशान्ते वरिवस्या।। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।। ३७।।

महापादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, श्रीमहापादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्–

सर्वविद्यामयीं सर्वशक्तिपीठस्वरूपिणीम्।
कूराग्रे हृदये मूले देशिकाङ्घ्रियुगत्रयम्।।
दधतीं दीप्तभूषाढ्यां श्रीमहापादुकां नमः।।३७।।

इति ऋष्यादिसहितरश्मिमाला।

रश्मिमालामन्त्रा आहत्य सप्तत्रिंशतिः। एते ब्राह्मे मुहूर्ते सकृदावर्तनीयाः सर्व एवेमे मन्त्राः श्रीगुरुमुखादवगत्यैव पठिताः महते श्रेयसे, नान्यथेति शिवशासनम्।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते।।

इति सांख्यायनतन्त्रवचनेन गुरुमुखागमं विना जपस्य निषेधात्।।

प्रातःस्मरणम्

अहं देवी न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान्।।
त्वमेवाहमहं त्वञ्च संविन्मात्रं वपुस्तव।
आवयोरन्तरं देवि! नश्यत्वाज्ञाबलात् तव।।
अहं तीर्णो भवं घोरं कृत्यं किञ्चिन्न चास्ति मे।
तथापि देहि मे मातराज्ञां तव सुसेवने।।
कृत्वा समाधिस्थितया धिया ते, चिन्तां नवाधारनिवासभूताम्।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये।।

संसारयात्रामनुवर्तमानं तवाज्ञया श्रीत्रिपुरेश्वरेशि !।
स्पर्धा–तिरस्कार–कलि–प्रमाद–भयानि मां माऽभिभवन्तु मातः।।
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
त्वया हृषीकेशि! हृदिस्थयाऽहं, यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

प्रातः प्रभृति–सायान्तं सायादि–प्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगद्योने ! तदस्तु तव पूजनम् ।।
मञ्जुसिञ्जितमञ्जीरं वाममर्धं महेशितुः।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम्।।

श्रीललितापञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं,
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं,
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ।। १।।
प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं,
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम् ।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां,
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ।। २।।
प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं,
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादि–सुरनायकपूजनीयं,
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ।। ३।।
प्रातःस्तुवे परशिवां ललितां भवानीं,
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां,
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसाऽतिदूराम् ।। ४।।
प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम,
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति,
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ।। ५।।
यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।

तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना,
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्।। ६।।

भूप्रार्थना

समुद्रवसने देवि, पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादचारं क्षमस्व मे।।

(इति भूमिं सम्प्रार्थ्य धरणीतलन्यस्तवहन्नाडीपार्श्वपादमुत्थाय ग्रामाद्–बहिः स्मार्तेन विधिना शौचक्रमं निर्वर्तेत।)

दन्तधावनादिविधिः

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते।।

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्ठमभिमन्त्र्य ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः इति मन्त्रेण दन्तधावनं, ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं इति जिह्वोल्लेखनं च विधाय कफविमोचननासाशोधनदूषिकानिरसनपूर्वकं विहितविंशतिगण्डूषः ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं, ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं ह्रीं क्लीं, ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सहकलह्रीं श्रीं, इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य, यथा स्मृत्याचामेत्।

स्नानविधिः

(ततो नद्यादौ वैदिकस्नानोत्तरं 'श्रीललिताप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य, तत्र)

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव, तीर्थं देहि दिवाकर।।

इति सूर्यमभ्यर्थ्य–

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते।।

इति गङ्गामर्थयित्वा 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः 'क्रों' इत्युङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा ततो गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं 'वं' इति सलिलबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य मुहुर्मूलमावर्त्तयन् मूर्धनि त्रीनुदकाञ्जलीन् दत्त्वा त्रींश्च पीत्वा

मूलमन्त्रपूर्वं 'श्रीललितां तर्पयामि' इति त्रिस्तर्पणं, मूलेन त्रिः प्रोक्षणञ्चात्मनो योनिमुद्रया विदध्यात्। (गृहे तु विना तर्पणम्। अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मनोरन्यतर-न्निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमन-प्रोक्षणे केवलं कुर्यात्।)

सन्ध्याविधिः

(अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रो वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत्)। यथा-मूलेन त्रिराचम्य, द्विः परिमृज्य, सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसौ नाभि हृदयं शिरश्चाभिमृशेत्। एवं त्रिराचम्य, पूर्ववत् प्राणानायम्य मूलमन्त्राभिमन्त्रितेन जलेन त्रिरात्मानञ्च प्रोक्ष्य अञ्जलिना सलिलमादाय **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा** इति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्त्वा तन्मण्डले श्रीचक्रमनुचिन्त्य, तत्र ध्यायेत्-

ध्यायेत् कामेश्वराङ्कस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम्।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम्।।
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम्।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम्।।
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम्।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम्।।

(अत्रायुधानां, क्रमः स्वरूपञ्च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते।)

ततः- **ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे**
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि
ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

(इति मन्त्रेण महेश्यै त्रिरर्घ्यं दत्त्वा, मूलेन त्रिः सन्तर्प्य मूलेन पूर्ववदाचम्य जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारमावर्तयेत्। ततः पुनः कराङ्गन्यासादिकं कृत्वा जपं वक्ष्यमाणमन्त्रेण श्रीदेव्यै समर्प्याचम्य मण्डलस्थतीर्थं विसर्जनमुद्रया सूर्ये विसृजेत्। (इयमेकैव प्रातः सन्ध्यानुष्ठेया सूत्रकारमते)। अथ सपर्यासाधनानि सम्पाद्य ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेदिति शिवम्।

षोडशानन्दनाथ (श्रीकरपात्रस्वामि) सङ्कलिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीक्रमे प्रथममाह्निकप्रकरणं सम्पूर्णम्



पूज्य गुरूदेव दत्तात्रेयानंदनाथ (सीताराम कविराज)



श्रीक्रमे नित्यसपर्याप्रकरणम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः।

ॐ श्रीमहागणपतये नमः।

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम्॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः सर्वोपप्लुवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान् द्व्यष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

यागमन्दिर–प्रवेशः

(द्वार–देवता–पूजनम्)

ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः। (द्वारस्य दक्षशाखायाम्)
३ भं भैरवाय नमः। (द्वारस्य वामशाखायाम्)
३ लं लम्बोदराय नमः। (द्वारस्य ऊर्ध्वशाखायाम्)
३ द्वारश्रियै नमः, देहल्यै नमः।
इति सम्पूज्य।

तत्त्वाचमनम्

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। (इत्याचामेत्)।

गुरुपादुकामन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः सोऽहं हंसः शिवः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख–सुवृत्त–चतुरस्र–मुद्गर–योन्याख्याभिः पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत्।)

घण्टापूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे, घण्टाध्वनिविभूषिते।
वादयन्ति परानन्दे, घण्टादेवं प्रपूजयेत्॥

आगमार्थं च देवानां, गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुर्याद् घण्टारवं तत्र, देवताह्वानलाञ्छनम्।।
(इति घण्टां प्रपूज्य घण्टानादं कृत्वा)

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

मूलेन प्राणानायम्य देश-कालौ सङ्कीर्त्य

मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि। (इति सङ्कल्पयेत्)

(तत आत्मानम् अलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदितचित्तः 'शिवोऽहम्' इति भावयेत्)

पुष्पशोधनम्

ॐ पुष्पकेतुराजार्हते शताय सम्यक् सम्बन्धाय ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पभूषिते पुष्पचयावकीर्णे हुं फट् स्वाहा।

(इति मन्त्राभिमन्त्रितजलेन पुष्पाणि सम्प्रोक्षयेत्)।

आसनशुद्धिः

(आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय 'सौः' इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत्)।

अस्य श्रीआसनमहामन्त्रस्य पृथिव्याः मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः।

पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम्।। (इति प्रोक्ष्य)

३ योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः,
(आसनाधः मायाबीजं विलिख्य।)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः।।

(इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत्)।[1]

३ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नमः।

(इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्)।

---

1. यदाशाभिमुखो मन्त्री त्रिपुरां परिपूजयेत्।
देवी पश्चात्तदा प्राची प्रतीची त्रिपुरा पुरः।। (कुलार्णवे)

देहरक्षा

३ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष।

(इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा)।

३ गुं गुरुभ्यो नमः। (दक्षबाहौ)

३ गं गणपतये नमः। (वामबाहौ)

३ दुं दुर्गायै नमः। (दक्षोरौ)

३ वं वटुकाय नमः। (वामोरौ)

३ यां योगिनीभ्यो नमः। (पादयोः)

३ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। (नाभौ)

३ पं परमात्मने नमः। (हृदये) इति प्रणम्य,

३ ॐ ऐं नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

३ हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

३ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा।

(इति परितो वह्निप्राकारं विभाव्य)

'भूर्भुवस्स्वरोम्' (इति छोटिकया दिग्बन्धः)।

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम्।
सञ्चिन्त्य परमाद्वैतभावनाऽमृतसेवया।।
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसङ्कोचसङ्कटः ।।

इति मूलाधारात् कुण्डलीमुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा ततो गलितेनामृतेन स्वदेहं प्लावितं भावयेत्।

३ समस्तप्रकट-गुप्त-गुप्ततर-सम्प्रदाय-कुलोत्तीर्ण-निगर्भ-रहस्याति-रहस्यपरापरातिरहस्य-योगिनीदेवताभ्यो नमः।

(इति समष्टिमन्त्रेण यन्त्रे पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा)

३ ऐं ह्रः अस्त्राय फट् (इति अस्त्रमन्त्रेण मुहरावृत्तेन अङ्गुष्ठादिकनिष्ठि-कान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्)।

३ श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते, भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन्, श्रीचक्रयजनाय मे।।
३ अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

श्रीयन्त्रस्य लघुप्राणप्रतिष्ठा[1]

३ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोऽहं, हंसः शिवः श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः।।

३ आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

३ ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नस्स्वस्ति।।

मन्दिरपूजा

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः
३ रत्नद्वीपाय नमः
३ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
३ कल्पवाटिकायै नमः
३ सन्तानवाटिकायै नमः
३ हरिचन्दनवाटिकायै नमः
३ मन्दारवाटिकायै नमः
३ पारिजातवाटिकायै नमः
३ कदम्बवाटिकायै नमः
३ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
३ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
३ गोमेदकरत्नप्राकाराय नमः
३ वज्ररत्नप्रकाराय नमः
३ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
३ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
३ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
३ मरकतरत्नप्राकाराय नमः
३ विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
३ माणिक्यमण्डपाय नमः
३ सहस्रस्तम्भमण्डपाय नमः
३ अमृतवापिकायै नमः
३ आनन्दवापिकायै नमः
३ विमर्शवापिकायै नमः
३ बालातपोद्गाराय नमः

---

1. प्रतिष्ठिते श्रीयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठा नास्त्यावश्यकी

३ चन्द्रिकोद्गाराय नमः
३ महाशृङ्गारपरिघायै नमः
३ महापद्माटव्यै नमः
३ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
३ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
३ दक्षिणाम्नायमयदक्षिण-द्वाराय नमः
३ पश्चिमाम्नायमयपश्चिम-द्वाराय नमः
३ उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
३ रत्नप्रदीपवलयाय नमः
३ मणिमयमहासिंहासनाय नमः
३ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
३ विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
३ रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
३ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
३ सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः
३ हंसतूलिकातल्पाय नमः
३ हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
३ कौसुम्भास्तरणाय नमः
३ महावितानकाय नमः
३ महामायायवनिकायै नमः

(इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन् कुसुमाक्षतै-रभ्यर्चयेत्)।

दीपपूजा

(स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन् निधाय दीपौ दीपान् वाऽभितः प्रज्वाल्य)-

ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि, शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात् तावत्प्रज्वल सुस्थिरा।।[1]

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। ततो मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन् दद्यात्)।

भूतशुद्धिः

यथा- सुषुम्नावर्त्मना वायुमाकृष्य 'हुं' बीजेन मूलाधारस्थपद्मे त्रिकोणस्थितज्योतिर्मयलिङ्गं परिवेष्ट्य स्थितां सार्धत्रिवलयां कुण्डलिनीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परःशतसुधामयूखशीतलां तेजस्व-रूपामुत्थाप्य जीवशिवं परमशिवे संयोजयामि स्वाहा इति मन्त्रेण दीपकलिकाकारं

---

1. घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः।। दक्षवामभागौ देव्या एव।

हृदिस्थं जीवं कुण्डलिनीमुखेन ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेनैकीभूतं हंसः सोऽहमिति भावयन् वायुमिडया रेचयेत्। ततो—

वामकुक्षिस्थितं पाप(पुरुष)मङ्गुष्ठपरिमाणकम्।
विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकम्।
मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीद्वयम्।
तत्संयोगिपदद्वन्द्वमुपपातकरोमकम्।
रक्तश्मश्रुविलोचनमङ्गप्रत्यङ्गपातकम्।
खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं विचिन्तयेत्।

ततो यं यं इति वायुबीजं स्मरन् वायुं पिङ्गलयापूर्यैनं शोषयेत्। ततो रं रं इति वह्निबीजेन पूरकापेक्षया द्विगुणितकालं कुम्भकं विधाय पापपुरुषं यं इति वायुबीजं ततोऽप्यधिककालं जपित्वेडया तद्भस्म रेचकेन बहिर्निष्कासयेत्। ब्रह्मरन्ध्रगते चन्द्रमण्डलेऽमृतवर्षिणीं भवानीं भूमिशुद्ध्यर्थं भावयेत्। ततस्तन्मौलिनिःस्यन्द-सुधाकल्लोलवृष्टिभिश्चिन्तयेन्मनसाऽऽत्मानम्।

इयं भूमिशुद्धिः।

ततश्च स्वशिरसि कामेश्वरीकामेश्वरयोः रक्तशुक्लचरणन्यासं भावयित्वा तदमृतक्षरणेन सबाह्याभ्यन्तरमात्मानं भावयेदिति *भूतशुद्धिः।*

अथ केचिद्वदन्ति—मातृकाःप्रणवं भूतानि च ब्रह्मरन्ध्रे प्रविलाप्य सच्चिन्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत्। पापपुरुषोत्थं भस्म 'वं' इति सुधाबीजेन सम्प्लावयेत्। लं लं इति भूबीजेन तद्भस्म कनकाण्डवद् घनीभावमापाद्य विशुद्धमुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं तत्स्मरेत्। आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्। ततोऽखण्डं ब्रह्म, तस्मात्तत्प्रेरकः पुरुषः, ततः प्रकृतिः, प्रकृतेर्महान्, ततोऽहंकारः, ततोऽहं त्रिगुणात्मकः, ततः आकाशः, आकाशाद्वायुः, वायोस्तेजः, तेजसो जलम्, जलात्पृथ्वी, पृथ्व्या ओषधयः, ओषधीभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः, रेतसः पुरुषः, पुरुषोऽन्नरसमयः हंसः सोऽहमिति कुण्डलिनीं जीवमादाय परसङ्गात्सुधामयीं संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधारगतां स्मरेदिति।

वयन्तु—पापपुरुषोत्थभस्मनस्सकाशादप्रामाणिकतमोमहदाद्युत्पत्त्यपेक्षया पापपुरुषदाहोत्थं भस्म पार्थिवप्रपञ्चेन साकं पृथिव्यां प्रविलीयते, पृथिव्या-

दिकं क्रमेण ब्रह्मणि प्रविलीयते, ततस्तमोमहदादीनामुत्पत्तिरिति युक्तं पश्यामः, अत्र श्रुतिस्मृतिप्रमाणबहुलस्योपलब्धेः।

मन्त्रमहार्णवरीत्या तु–स्वशरीरयुतं पापं 'रं' इति वह्निबीजेन कुम्भके दहेत्, ततो रेचके स्वशरीरात् पापोत्थं भस्म बहिर्निष्कासयेत्। ततो देहोत्थं भस्म 'वं' इति सुधाबीजेन सम्प्लाव्य 'लं' बीजेन घनीभूतं पिण्डं कृत्वा कनकाण्डवद्भावयेत्। ततो मूर्धादिनखान्ताः देहावयवाः मनसा रचनीया इति।

वस्तुस्तु देहोत्थभस्मपिण्डं पृथिव्यां पृथिव्यादिकं सर्वं जगद् ब्रह्मणि विलाप्य ततो महदादिक्रमेण पञ्च भूतानि समुत्पाद्य ततो दिव्यदेहं रचयेदित्येव शोभनम्। अत एवेडया लं वं रं यं हं इति पञ्च भूतबीजानि स्मरन् हंसः सोऽहमिति च स्मरन् उपसंहारक्रमेण मातृका भूतानि प्रणवे ब्रह्मणि विलापयेत्। तद्यथा–सकारं हकारे, हकारं सकारे, सकारं षकारे, षकारं शकारे, शकारं वकारे, वकारम् अःकारे, अःकारं अंकारे, अंकारं अकारे अकारं ब्रह्मरन्ध्रे प्रणवात्मके ब्रह्मणि प्रविलापयेत्।

भूतोपसंहारः

पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं लं बीजाढ्यं स्वर्णवर्णं स्मरेदवनिमण्डलम्। जान्वोरुपरि नाभिपर्यन्तं चन्द्रार्धनिभं पद्मद्वयाकृति वं बीजयुक्तं श्वेताभं मं सोममण्डलं स्मरेत्। नाभेर्हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकासनं रं बीजेन युतं रक्तं स्मरेत् पावकमण्डलम्। हृदो भ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षट्बिन्दुलाञ्छितं यं बीजयुक्तं धूम्राभं वायव्यं मण्डलं स्मरेत्। आब्रह्मरन्ध्रं भ्रूमध्याद्वृत्तं स्वच्छं मनोहरं हं बीजयुक्तमाकाशमण्डलञ्च विचिन्तयेत्। एवं भूतानि विचिन्त्य प्रत्येकं स्वकारणे प्रविलापयेत्–भुवं जले, जलं वह्नौ, वह्निं वायौ, वायुं नभसि, अमुम् अहङ्कारे, महत्तत्वेऽप्यहङ्कृतं, महान्तं प्रकृतौ, मायामात्मनि च प्रविलापयेत्।

पुनश्च वमित्यमृतबीजेनेडया वायुमापूर्य तस्मादेव ब्रह्मणस्तमोमहदादिक्रमेण भूतान्युत्पाद्य तैर्दिव्यमुपासनोपयोगि देहमुत्पादयेत्। तथा हि–ब्रह्मणोऽव्यक्तं, ततो महान्, महतोऽहङ्कारः, तत आकाशः, ततो वायुः,

वायोरग्निः, अग्नेरापः, ततो भूः इति दिव्यैः पञ्चभूतैर्दिव्यभावनया दिव्यदेहोत्पत्तिं भावयेत्। ततः कुण्डलिनीं ब्रह्मरन्ध्रादवतार्य हृदयाम्भोजे जीवं निधाय मूलाधारस्थितां कुण्डलिनीं विभावयेदिति *भूतशुद्धिः।*

आत्मप्राणप्रतिष्ठा

(अथ हृदि हस्तं दत्वा) ॐ आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ततो 'मम गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशामुकमन्त्रावृत्तीः करिष्ये' (इति सङ्कल्प्य) पञ्चदशवारं प्रणवं स्वेष्टं मन्त्रं वा आवर्तयेत्।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

(इति प्राणप्रतिष्ठा)

(नित्योत्सवरीत्या भूतशुद्धिः) पाञ्चभौतिकं सङ्कोचशरीरमेव यमिति वायुबीजेन शोषितं विभाव्य, रं बीजेन पुष्टं भस्मीकृतं विभाव्य, वमित्यमृतबीजेन तद्भस्म सहस्रारेन्दुमण्डलविगलदमृतरसेन सिक्तं विभाव्य लमिति भूबीजेन तद्भस्मना शाम्भवं दिव्यं शरीरमुत्पन्नं विभाव्य 'हंसः सोऽहम्' इति शिवपदाज्जीवमवतार्य मूलाधारे स्थापितं भावयेत्। तस्मिन्नेव आं सोहमिति त्रिःपठित्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायच्छेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इत्युच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रय-करास्फोटनत्रय-क्रूरदृष्ट्यव-लोकन-तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्। अथ 'नमः' इत्युङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीदेवीरूपं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं विदधीत।

न्यासविधिः मातृकान्यासः

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमातृकासरस्वतीदेवतायै: नमः हृदि, हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः, बिन्दुभ्यःकीलकेभ्यो नमः नाभौ, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं कुर्यात्।

		प्रथमवारम्	द्वितीयवारम्
६	अं कं खं गं घं ङं आं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
६	इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
६	उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
६	एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
६	ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रयाय वौषट्
६	अंयंरंलंवंशंषंहंळंक्षंअः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

एवं हृदयादिन्यासः।

भूर्भुवस्स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो-
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि।।

लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा।

मातृकाः त्रितारीबालापूर्विकाः स्वाङ्गेषु न्यसेत्। तद्यथा (केवलं त्रितारी वा)

अन्तर्मातृकान्यासः

(कण्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले)

६ अं नमः, आं नमः, इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋं नमः, ॠं नमः, लृं नमः, ॡं नमः, एं नमः, ऐं नमः, ओं नमः, औं नमः, अं नमः, अः नमः।

(हृदये अनाहते द्वादशदलकमले)

६ कं नमः, खं नमः, गं नमः, घं नमः, ङं नमः, चं नमः, छं नमः, जं नमः, झं नमः, ञं नमः, टं नमः, ठं नमः,

(नाभौ मणिपूरे दशदलकमले)

६ डं नमः, ढं नमः, णं नमः, तं नमः, थं नमः, दं नमः, धं नमः, नं नमः, पं नमः, फं नमः,

(लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दलकमले)

६ बं नमः, भं नमः, मं नमः, यं नमः, रं नमः, लं नमः,

(गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दलकमले)

६ वं नमः, शं नमः, षं नमः, सं नमः।

६ हं नमः, क्षं नमः। (भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले)

६ अं नमः, आं नमः + + क्षं नमः। (५१ वर्णाः मूर्ध्नि सहस्रारे)

बहिर्मातृकान्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः

अं नमः (शिरसि)

६ आं नमः (मुखवृत्ते)

६ इं नमः(दक्षनेत्रे)

६ ईं नमः(वामनेत्रे)

६ उं नमः(दक्षकर्णे)

६ ऊं नमः(वामकर्णे)

६ ऋं नमः(दक्षनासापुटे)

६ ॠं नमः(वामनासापुटे)

६ लृं नमः(दक्षकपोले)

६ ॡं नमः(वामकपोले)

६ एं नमः(ऊर्ध्वोष्ठे)

६ ऐं नमः(अधरोष्ठे)

६ ओं नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ)

६ औं नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ)

६ अं नमः (जिह्वाग्रे)

६ अः नमः(कण्ठे)

६ कं नमः (दक्षबाहुमूले)

६ खं नमः (दक्षकूर्परे)
६ गं नमः (दक्षमणिबन्धे)
६ घं नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)
६ ङं नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
६ चं नमः (वामबाहुमूले)
६ छं नमः (वामकूर्परे)
६ जं नमः (वाममणिबन्धे)
६ झं नमः (वामकराङ्गुलिमूले)
६ ञं नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
६ टं नमः (दक्षोरुमूले)
६ ठं नमः (दक्षजानुनि)
६ डं नमः (दक्षगुल्फे)
६ ढं नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
६ णं नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
६ तं नमः (वामोरुमूले)
६ थं नमः (वामजानुनि)
६ दं नमः (वामगुल्फे)
६ धं नमः(वामपादाङ्गुलिमूले)
६ नं नमः(वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६ पं नमः (दक्षपार्श्वे)
६ फं नमः (वामपार्श्वे)
६ बं नमः (पृष्ठे)
६ भं नमः (नाभौ)
६ मं नमः (जठरे)
६ यं नमः (हृदये)
६ रं नमः (दक्षकक्षे)
६ लं नमः (गलपृष्ठे)
६ वं नमः (वामकक्षे)
६ शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्)
६ षं नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्)
६ सं नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्)
६ हं नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्)
६ ळं नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तम्)
६ क्षं नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तम्)

करशुद्धिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः(दक्षकरतले)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (वामकरतले)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (मध्यमयोः)
३ आं नमः (अनामिकयोः)

३ सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)	३ आं नमः (तर्जन्योः)
३ अं नमः (अङ्गुष्ठयोः)	३ सौः नमः(करतलकरपृष्ठयोः)

आत्मरक्षान्यासः

३ ऐंक्लींसौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष (इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात्)।।

बालाषडङ्गन्यासः

३ ऐं हृदयाय नमः	३ ऐं कवचाय हुं
३ क्लीं शिरसे स्वाहा	३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
३ सौः शिखायै वषट्	३ सौः अस्त्राय फट्

चतुरासनन्यासः

३ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः (पादयोः)
३ हैं ह्क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः (जान्वोः)
३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः (ऊरुमूले)
३ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः

३ अं आं + + अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवतायै नमः (शिरसि)
३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (ललाटे)
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (भ्रूमध्ये)
३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (कण्ठे)
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (हृदये)
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (नाभौ)
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (गुह्ये)
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (मूलाधारे)

बहिश्चक्रन्यासः

३ अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टा-विंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (जान्वोः)

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (ऊरुमूलयोः)

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (नाभौ)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (हृदये)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (कण्ठे)

३. ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (मुखे)

३ ह्स्रैं ह्स्क्लूरीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (नेत्रयोः)

३ (पञ्चदशी) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (मूर्ध्नि)।।

अन्तश्चक्रन्यासः

३ अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (अधः सहस्रारे)

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (मूलाधारे)

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (स्वाधिष्ठाने)

३. हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (मणिपूरे)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (अनाहते)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (विशुद्धौ)

३ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (लम्बिकाग्रे)

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (आज्ञाचक्रे)

३ (पञ्चदशी) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (सहस्रारे)

पुनः आज्ञाचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे

अं आं सौः नमः (बिन्दौ)
ऐं क्लीं सौः नमः (अर्धचन्द्रे)
ह्रीं क्लीं सौः नमः (रोधिन्यां)
हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः (नादे)
ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः नमः (नादान्ते)
ह्रीं क्लीं ब्लें नमः (शक्तौ)
ह्रीं श्रीं सौः नमः (व्यापिकायाम्)
ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौं नमः (समनायाम्)
(पञ्चदशी) नमः (उन्मनायाम्)
(षोडशी) नमः (ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ)

कामेश्वर्यादिन्यासः

३ ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ– नव–योनिचक्रात्म–कात्मतत्त्वसृष्टिकृत्यजाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति–वाग्भवात्मक–वागीश्वरी–स्वरूप–ब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः(मूलाधारे)

३ क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ–दशारद्वय–चतुर्दशारचक्रात्मक–विद्यातत्व–स्थितिकृत्य–स्वप्नदशाधिष्ठायक–ज्ञानशक्ति–कामराजात्मक–कामकलास्वरूप–महावज्रेश्वरी–विष्ण्वात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (अनाहते)

३ सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ–अष्टदल–षोडशदल–चतुरस्रचक्रात्मक– शिवतत्त्व–संहारकृत्य– सुषुप्ति–दशाधिष्ठायक –क्रियाशक्ति–शक्तिबीजात्मक–परापरशक्ति–स्वरूप–महाभगमालिनी–रुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (आज्ञायाम्)

३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ–समस्तचक्रात्मक–सपरिवार–परमतत्व–सृष्टिस्थिति–संहारकृत्य–तुरीयदशाधिष्ठायकेच्छा–ज्ञानक्रिया–शान्ताशक्तिवाग्भव–कामराजशक्तिबीजात्मक–परमशक्तिस्वरूप–श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपर–ब्रह्मात्म–शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (ब्रह्मरन्ध्रे)

मूलविद्यान्यासः

अथ ऋष्यादिषडङ्गन्यासं यथोपदेशं कृत्वा–

३	कं	नमः	(शिरसि)	३	हं	नमः	(मुखे)
३	एं	नमः	(मूलाधारे)	३	लं	नमः	(दक्षभुजे)
३	ईं	नमः	(हृदि)	३	ह्रीं	नमः	(वामभुजे)
३	लं	नमः	(दक्षनेत्रे)	३	सं	नमः	(पृष्ठे)
३	ह्रीं	नमः	(वामनेत्रे)	३	कं	नमः	(दक्षजानुनि)
३	हं	नमः	(भ्रूमध्ये)	३	लं	नमः	(वामजानुनि)
३	सं	नमः	(दक्षश्रोत्रे)	३	ह्रीं	नमः	(नाभौ)
३	कं	नमः	(वामश्रोत्रे)				

षोडश्युपासकानां विशेषन्यासाः

श्रीषोडशाक्षरीन्यासाः

३ 'मूलं' नमः। दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत्।
तत्र तां षोडशी दीपाभां स्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा-

३ 'मूलं' नमः महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि। (सौभाग्यदण्डिन्या मुद्रया वामकर्णसंवेष्टनपूर्वकं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः मम शत्रून्निगृह्णामि। (रिपुजिह्वाग्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः त्रैलोक्यस्याहं कर्ता। (त्रिखण्डया मुद्रया फाले न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया गलोर्ध्वमामस्तकं न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादामस्तकञ्च न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (योनिमुद्रया मुखे न्यसेत्)।

३ 'मूलं' नमः। (योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत्)।

सम्मोहनन्यासः

३ 'मूलं' मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य-

३ 'मूलं' (ब्रह्मरन्ध्रे अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्)

३ 'मूलं' (मणिबन्धद्वये अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्)

३ 'मूलं' (फाले अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्)

३ 'मूलं' (शाक्ततिलकं धारयेत्)।।

(महाषोडशीदीक्षितानामत्राधिकारः)

श्रीमहाषोडशी–अक्षरन्यासः

संहारन्यासः

अथ त्रितारीनमस्सम्पुटितान् मूलविद्याषोडशार्णान् क्रमेण पादयोः जङ्घयोः जान्वोः कटिभागद्वये पृष्ठे लिङ्गे नाभौ पार्श्वयोः स्तनयोरंसयोः कर्णयोः मूर्ध्नि मुखे नेत्रयोः कर्णयुगसन्निधौ कर्णवेष्टनयोश्च न्यसेत्। (अत्र कूटत्रयस्य वर्णत्रयत्वेन षोडशार्णत्वव्यपदेशः)। पादादिषु प्रथमं दक्षः ततो वाम इति बोध्यम्। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः पादयोः, ह्रीं नमः जङ्घयोः, क्लीं नमः जान्वोः, ऐं नमः कटिभागद्वये, सौः नमः पृष्ठे, ॐ नमः लिङ्गे, ह्रीं नमः नाभौ, श्रीं नमः पार्श्वयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः स्तनयोः, हसकहलह्रीं नमः अंसयोः, सकलह्रीं नमः कर्णयोः, सौः नमः मूर्ध्नि, ऐं नमः मुखे, क्लीं नमः नेत्रयोः, ह्रीं नमः कर्णयुगसन्निधौ, श्रीं नमः कर्णवेष्टनयोः।

सृष्टिन्यासः

पुनस्तथैव मूलविद्यार्णान् क्रमेण ब्रह्मरन्ध्रे फाले दृशोः कर्णयोः घ्राणपुटयोः गण्डयोः दन्तपङ्क्त्योः ऊर्ध्वाधरोष्ठयोः जिह्वायां चोरकूपे पृष्ठे सर्वाङ्गे हृदि स्तनयोरुदरे लिङ्गे च न्यस्य मूलेन व्यापकं कुर्यात्। यथा–

ॐ ऐं ह्रीं, श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे, ह्रीं नमः फाले, क्लीं नमः नेत्रयोः, ऐं नमः कर्णयो, सौः नमः नासापुटयोः, ॐ नमः गण्डयोः, ह्रीं नमः, दन्तपङ्क्त्योः, श्रीं नमः ओष्ठयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः जिह्वायाम्, हसकहलह्रीं नमः कण्ठे, सकलह्रीं नमः पृष्ठे, सौः नमः सर्वाङ्गे, ऐं नमः हृदि, क्लीं नमः स्तनयोः, ह्रीं नमः उदरे, श्रीं नमः लिङ्गे। ततः मूलेन व्यापकम्।

स्थितिन्यासः

अथ पूर्वक्रमेणैवाङ्गुष्ठादिकनिष्ठिकान्तकराङ्गुलिषु मूर्ध्नि मुखे हृदि नाभेः पादद्वयावधि, कण्ठादानाभि मूर्ध्नि आकण्ठं पूर्ववत्पादाङ्गुलिषु च न्यसेत्। (अत्र दक्षवामकरचरणाङ्गुलिषु द्वयोर्द्वयोरेकैकमक्षरम्)। तथा हि–

ॐ ऐंह्रींश्रीं, श्रीं नमः अङ्गुष्ठयोः, ह्रीं नमः तर्जन्योः, क्लीं नमः मध्यमयोः, ऐं नमः अनामिकयोः, सौः नमः कनिष्ठिकयोः, ॐ नमः मूर्ध्नि, ह्रीं नमः मुखे,

श्रीं नमः हृदिः, क ए ई ल ह्रीं नमः नाभौः, हसकहलह्रीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम्, सकलह्रीं नमः मूर्धादिकण्ठान्तम्, सौः नमः पादाङ्गुष्ठयोः, ऐं नमः पादतर्जन्योः, क्लीं नमः पादमध्यमयोः, ह्रीं नमः पादानामिकयोः, श्रीं नमः पादकनिष्ठिकयोः।

एते पञ्चैव ज्ञानार्णवमते। तन्त्रान्तरेषु तु अन्येऽपि पञ्चोपलभ्यन्ते।

एते पूर्वोक्तन्यासाः कर्तव्या एव, अन्येषामकरणे न प्रत्यवायः, करणे त्वभ्युदय एव।

लघुषोढान्यासः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः, (शिरसि) गायत्र्यै छन्दसे नमः, (मुखे) गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये) श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

		प्रथमवारम	द्वितीयवारम्
ऐं ह्रीं श्रीं,	अं कं खं गं घं ङं आं ऐं –	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
३	इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं–	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
३	उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः–	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
३	एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं –	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम
३	ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं–	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
३	अंयंरंलंवंशंषंसंहं ळं क्षं अः सौः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

एवमेव हृदयादिन्यासः। ध्यानम्–

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
रक्तमाल्याम्बरालेपां रक्तभूषणभूषिताम्।।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्।।
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्।।

आयुधक्रमस्तु सपर्याप्रकरण एवोक्त इहानुसन्धेय इति श्रीदेवीं समष्टिरूपेण ध्यात्वा गणेशादिव्यष्टिरूपेण च ध्यायेत्।

गणेशन्यासः

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान्।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान्।।
ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कारभूषिताः।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः ।।

(वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाधःकरपर्यन्तं गणेशानां पाशादिध्यानम्। शक्तीनान्तु वामकरे कमलं दक्षिणे च प्रियाश्लेष इति ध्यात्वा, मातृकास्थानेषु त्रितारीमातृकापूर्वकं गणेशान् न्यसेत्)। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः (शिरसि),
३ आं ह्रींयुक्ताय विघ्नराजाय नमः (मुखवृत्ते) (ललाटे)
३ इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः (दक्षनेत्रे),
३ ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः (वामनेत्रे),
३ उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते नमः (दक्षकर्णे),
३ ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः (वामकर्णे),
३ ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजे नमः (दक्षनासापुटे),
३ ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः (वामनासापुटे),
३ ऌं कान्तियुक्ताय एकदन्ताय नमः (दक्षगण्डे),
३ ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः (वामगण्डे),
३ एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः (ऊर्ध्वोष्ठे),
३ ऐं जटायुक्ताय निरञ्जनाय नमः (अधरोष्ठे),
३ ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ),
३ औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ),
३ अं नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय नमः (जिह्वाग्रे),
३ अः सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय नमः (कण्ठे),
३ कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः (दक्षबाहुमूले),
३ खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः (दक्षकूर्परे),
३ गं जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः (दक्षमणिबन्धे),

३	घं	सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः	(दक्षकराङ्गुलिमूले),
३	ङं	विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
३	चं	सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः	(वामबाहुमूले),
३	छं	कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः	(वामकर्पूरे),
३	जं	मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः	(वाममणिबन्धे),
३	झं	विकटायुक्ताय आमोदाय नमः	(वामकराङ्गुलिमूले),
३	ञं	पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः	(वामकराङ्गुल्यग्रे),
३	टं	भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः	(दक्षोरुमूले),
३	ठं	भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः	(दक्षजानुनि),
३	डं	शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः	(दक्षगुल्फे),
३	ढं	रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),
३	णं	मानुषीयुक्ताय शूराय नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे),
३	तं	मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः	(वामोरुमूले),
३	थं	वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः	(वामजानुनि),
३	दं	भ्रूकुटीयुक्ताय वरदाय नमः	(वामगुल्फे),
३	धं	लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले),
३	नं	दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे),
३	पं	धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय[1] नमः	(दक्षपार्श्वे),
३	फं	यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः	(वामपार्श्वे),
३	बं	रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः	(पृष्ठे),
३	भं	चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः	(नाभौ),
३	मं	शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः	(जठरे),
३	यं	लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः	(हृदये),
३	रं	चपलायुक्ताय जटिने नमः	(दक्षस्कन्धे),
३	लं	ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः	(गलपृष्ठे),
३	वं	दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः	(वामस्कन्धे),

1. *नित्याषोडशिकार्णवे तु द्वितुण्डाय नमः इति पाठः।*

३ शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्),
३ षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्),
३ सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्),
३ हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्),
३ ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः (हृदयादिगुह्यान्तम्),
३ क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः (हृदयादिमूर्धान्तम्),

ग्रहन्यासः

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम्।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद् रविपूर्वकान् ।।

कामरूपधरान् देवान् दिव्याभरणभूषितान्।
वामोरुन्यस्तहस्ताँश्च दक्षहस्तवरप्रदान् ।।

शक्तयोऽपि तथा ध्येया वराभयकराम्बुजाः।
स्वस्वप्रियाङ्कनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः ।।

(इति ध्यात्वा)–

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं
औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः (हृदयाधो हृज्जठरसन्धौ)
३ यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः (भ्रूमध्ये),
३ कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः (नेत्रयोः)
३ चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः (श्रोत्रकूपाधः),
३ टं ठं डं ढं णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः (कण्ठे),
३ तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः (हृदि),
३ पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः (नाभौ),
३ शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः (मुखे),
३ ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः (गुदे)।

नक्षत्रन्यासः

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः।
नतिपाण्योऽश्विनीपूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः।। इति ध्यात्वा–

ऐं ह्रीं श्रीं	अं आं अश्विन्यै नमः	(ललाटे),
३	इं भरण्यै नमः	(दक्षनेत्रे),
३	ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः	(वामनेत्रे),
३	ऋं ॠं लृं ॡं रोहिण्यै नमः	(दक्षकर्णे),
३	एं मृगशिरसे नमः	(वामकर्णे),
३	ऐं आर्द्रायै नमः	(दक्षनासापुटे),
३	ओं औं पुनर्वसवे नमः	(वामनासापुटे),
३	कं पुष्याय नमः	(दक्षस्कन्धे),
३	खं गं आश्लेषायै नमः	(कण्ठे),
३	घं ङं मघायै नमः	(वामस्कन्धे),
३	चं पूर्वाफाल्गुन्यै नमः	(पृष्ठे),
३	छं जं उत्तराफाल्गुन्यै नमः	(दक्षकूर्परे),
३	झं ञं हस्ताय नमः	(वामकूर्परे),
३	टं ठं चित्रायै नमः	(दक्षमणिबन्धे),
३	डं स्वात्यै नमः	(वाममणिबन्धे),
३	ढं णं विशाखायै नमः	(दक्षहस्ते),
३	तं थं दं अनुराधायै नमः	(वामहस्ते),
३	धं ज्येष्ठायै नमः	(नाभौ),
३	नं पं फं मूलाय नमः	(कटिबन्धे),
३	बं पूर्वाषाढायै नमः	(दक्षोरौ),
३	भं उत्तराषाढायै नमः	(वामोरौ),
३	मं श्रवणाय नमः	(दक्षजानुनि),
३	यं रं धनिष्ठायै नमः	(वामजानुनि),

३ लं शततारकायै नमः (दक्षजङ्घायाम्),
३ वं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः (वामजङ्घायाम्),
३ षं सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः (दक्षपादे),
३ ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः (वामपादे),

योगिनीन्यासः

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिनेत्रां,
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्म सन्धारयन्तीम्।
वक्त्रेणैकेन युक्तां, पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां,
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्याम्।।

(इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं ड म ल व र यूं डाकिन्यै नमः।
३ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः मां रक्ष रक्ष त्वगात्मानं नमः।

(इति मन्त्रेण कण्ठस्थषोडशदलविशुद्धिकमलकर्णिकायां डाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पुरोभागादि प्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीर्न्यसेत्)। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः, आं आकर्षिण्यै नमः, इं इन्द्राण्यै नमः, ईं ईशान्यै नमः, उं उमायै नमः, ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, ऋं ऋद्धिदायै नमः, ॠं ॠकारायै नमः, लृं लृकारायै नमः, ॡं ॡकारायै नमः, एं एकपदायै नमः, ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, ओं ओङ्कारायै नमः, औं औषध्यै नमः, अं अम्बिकायै नमः, अः अक्षरायै नमः। (इति)

हृत्पद्मे भानुपत्रे द्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णा–
मक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां राकिणीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः,
ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगात्मानं नमः।

(इति हृदयस्थितद्वादशदलाननाहतनलिनकर्णिकायां राकिणीं न्यस्य तद्दलेषु प्राग्वत् तदावरणशक्तीर्न्यसेत्)। तथा–

ऐं ह्रीं श्रीं कं कालरात्र्यै नमः, खं खण्डितायै नमः, गं गायत्र्यै नमः, घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, ङं ङार्णायै नमः, चं चण्डायै नमः, छं छायायै नमः, जं जयायै नमः, झं झङ्कारिण्यै नमः, ञं ज्ञानरूपायै नमः, टं टङ्कहस्तायै नमः, ठं ठङ्कारिण्यै नमः, (इति)।

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां
गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः।

३ डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः।

(इति नाभिगतदशदलमणिपूरकसरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तत्परिवारशक्तीर्न्यसेत्)। यथा-

ऐं ह्रीं श्रीं डं डामर्यै नमः, ढं ढङ्कारिण्यै नमः, णं णार्णायै नमः, तं तामस्यै नमः, थं स्थाण्व्यै नमः, दं दाक्षायण्यै नमः, धं धात्र्यै नमः, नं नार्यै नमः, पं पार्वत्यै नमः, फं फट्कारिण्यै नमः। तदनु-

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां,
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्तां,
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं कां कीं क म ल व र यूं काकिन्यै नमः,

ऐं ह्रीं श्रीं बं भं मं यं रं लं मां रक्ष रक्ष मेद आत्मानं नमः।

(इति गुह्यस्थानगतषड्दलस्वाधिष्ठानसरोजकर्णिकायां काकिनीं न्यस्य तद्दलेषु तदावरणशक्तीः प्राग्वन्न्यसेत्)। यथा-

ऐं ह्रीं श्रीं बं बन्धिन्यै नमः, भं भद्रकाल्यै नमः, मं महामायायै नमः, यं यशस्विन्यै नमः, रं रक्तायै नमः, लं लम्बोष्ठ्यै नमः। ततः —

मूलाधारस्थपद्मे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां
धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।

बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं वं शं षं सं मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः।

(इति पायूपस्थमध्यगतचतुर्दलमूलाधारकमलकर्णिकायां साकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तदावृतिशक्तीर्न्यसेत्)। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं वं वरदायै नमः, शं श्रियै नमः, षं षण्ढायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः। तदनु –

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै–
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम्।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां,
हरिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं ह म ल व र यूं हाकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष रक्ष मज्जात्मानं नमः।

(इति भ्रूमध्यगतद्विदलाज्ञा–चक्र–कर्णिकायां हाकिनीं न्यस्य तद्दक्ष–वामदलयोः क्रमेण तच्छक्तिद्वयं न्यसेत्)।

ऐं ह्रीं श्रीं हं हंसवत्यै नमः, क्षं क्षमावत्यै नमः। तदनु –

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां,
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम्।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः।।

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं यां यीं य म ल व र यूं याकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अं आं ......क्षं (५१) मां रक्ष रक्ष शुक्रात्मानं नमः।

(इति ब्रह्मरन्ध्रगतसहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्दलेषु प्रतिविंशतिदलं तदावरणशक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्वन्न्यसेत्)।

राशिन्यासः

रक्तश्वेतहरित्पाण्डुचित्रकृष्णपिशङ्गकान् ।
कपिशबभ्रुकिर्म्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमात् स्मरेत्।।

(राशीन् इति शेषः, इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं मेषाय नमः (दक्षिणपादे),
३ उं ऊं वृषाय नमः (लिङ्गदक्षभागे),
३ ऋं ॠं लृं ॡं मिथुनाय नमः (दक्षकुक्षौ),
३ एं ऐं कर्काय नमः (हृदयदक्षभागे),
३ ओं औं सिंहाय नमः (दक्षबाहुमूले),
३ अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः (दक्षशिरोभागे),
३ कं खं गं घं ङं तुलायै नमः (वामशिरोभागे),
३ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः (वामबाहुमूले),
३ टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः (हृदयवामभागे),
३ तं थं दं धं नं मकराय नमः (वामकुक्षौ),
३ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः (लिङ्गवामभागे),
३ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः (वामपादे)।

पीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात्।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः।।

(इति भावयित्वा मातृकाभिस्समं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत्)। यथा –

ऐं ह्रीं श्रीं अं कामरूपाय नमः (शिरसि),
३ आं वाराणस्यै नमः (मुखवृत्ते) (ललाटे),
३ इं नेपालाय नमः (दक्षनेत्रे),

३ ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः (वामनेत्रे),
३ उं पुरस्थितकाश्मीराय नमः (दक्षकर्णे),
३ ऊं कान्यकुब्जाय नमः (वामकर्णे),
३ ऋं पूर्णशैलाय नमः (दक्षनासापुटे),
३ ॠं अर्बुदाचलाय नमः (वामनासापुटे),
३ ऌं आम्रातकेश्वराय नमः (दक्षगण्डे),
३ ॡं एकाम्राय नमः (वामगण्डे),
३ एं त्रिस्रोतसे नमः (ऊर्ध्वोष्ठे),
३ ऐं कामकोटये नमः (अधरोष्ठे),
३ ओं कैलासाय नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ),
३ औं भृगुनगराय नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ),
३ अं केदाराय नमः (जिह्वाग्रे),
३ अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः (कण्ठे),
३ कं श्रीपुराय नमः (दक्षबाहुमूले),
३ खं ओङ्काराय नमः (दक्षकर्पूरे),
३ गं जालन्धराय नमः (दक्षमणिबन्धे),
३ घं मालवाय नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले),
३ ङं कुलान्तकाय नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
३ चं देवीकोटाय नमः (वामबाहुमूले),
३ छं गोकर्णाय नमः (वामकर्पूरे),
३ जं मारुतेश्वराय नमः (वाममणिबन्धे),
३ झं अट्टहासाय नमः (वामकराङ्गुलिमूले),
३ ञं विरजायै नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे),
३ टं राजगेहाय नमः (दक्षोरुमूले),
३ ठं महापथाय नमः (दक्षजानुनि),

३	डं कोलापुराय नमः	(दक्षगुल्फे),
३	ढं एलापुराय नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),
३	णं कालेश्वराय नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे),
३	तं जयन्तिकायै नमः	(वामोरुमूले),
३	थं उज्जयिन्यै नमः	(वामजानुनि),
३	दं चित्रायै नमः	(वामगुल्फे),
३	धं क्षीरिकायै नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले),
३	नं हस्तिनापुराय नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे),
३	पं उड्डीशाय नमः	(दक्षपार्श्वे),
३	फं प्रयागाय नमः	(वामपार्श्वे),
३	बं षष्ठीशाय नमः	(पृष्ठे),
३	भं मायापुर्यै नमः	(नाभौ),
३	मं जलेशाय नमः	(जठरे),
३	यं मलयाय नमः	(हृदये),
३	रं श्रीशैलाय नमः	(दक्षस्कन्धे),
३	लं मेरवे नमः	(गलपृष्ठे),
३	वं गिरिवराय नमः	(वामस्कन्धे),
३	शं महेन्द्राय नमः	(हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्),
३	षं वामनाय नमः	(हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्),
३	सं हिरण्यपुराय नमः	(हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्),
३	हं महालक्ष्मीपुराय नमः	(हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्),
३	ळं ओड्याणाय नमः	(हृदयादिगुह्यान्तम्),
३	क्षं छायाच्छत्राय नमः	(हृदयादिमूर्धान्तम्)।

(इति षडवयवको लघु-पीठन्यासः समाप्तः)

श्रीचक्रन्यासः

(अस्य श्रीश्रीचक्रन्यासस्येत्यनन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्याह्निकप्रकरणोक्तवद् ध्यात्वा श्रीदेव्याः समष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा)–

शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम्।
त्वगाद्याकारनिर्मुक्तज्वलत्कालाग्निसन्निभम्।। (इति च ध्यात्वा)–

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्य-परापरातिरहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः (इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य)।

ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः	(दक्षोरौ),
३ क्षं क्षेत्रपालाय नमः	(दक्षांसे),
३ यां योगिनीभ्यो नमः	(वामांसे),
३ वं वटुकाय नमः	(वामोरौ),
३ लं इन्द्राय नमः	(पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे),
३ रं अग्नये नमः	(दक्षजानुनि),
३ टं यमाय नमः	(दक्षपार्श्वे),
३ क्षं निरृतये नमः	(दक्षांसे),
३ वं वरुणाय नमः	(मूर्ध्नि),
३ यं वायवे नमः	(वामांसे),
३ सं सोमाय नमः	(वामपार्श्वे),
३ हं ईशानाय नमः	(वामजानुनि),
३ हंसः ब्रह्मणे नमः	(मूर्ध्नि),
३ अं अनन्ताय नमः	(मूलाधारे),

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः

(इति व्यापकं न्यस्य ततः) 'ऐं ह्रीं श्रीं आद्यचतुरस्ररेखायै नमः' इति च व्यापकं न्यस्य अञ्जलिना दक्षांसपृष्ठादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत्)। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षांसपृष्ठे),
३ लघिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षपाण्यङ्गुल्यग्रेषु),
३ महिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षोरुसन्धौ),

३ ईशित्वसिद्ध्यै नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रेषु),
३ वशित्वसिद्ध्यै नमः (वामपादाङ्गुल्यग्रेषु),
३ प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः (वामोरुसन्धौ),
३ भुक्तिसिद्ध्यै नमः (वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु),
३ इच्छासिद्ध्यै नमः (वामांसपृष्ठे),
३ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः (शिखामूले),
३ सर्वकामसिद्ध्यै नमः (शिरःपृष्ठे),

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रमध्यरेखायै नमः (इति व्यापकं न्यस्य वक्ष्यमाणाङ्गेषु),
ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः (पादाङ्गुष्ठद्वये),
३ माहेश्वर्यै नमः (दक्षपार्श्वे),
३ कौमार्यै नमः (मूर्ध्नि),
३ वैष्णव्यै नमः (वामपार्श्वे),
३ वाराह्यै नमः (वामजानुनि),
३ इन्द्राण्यै नमः (दक्षजानुनि),
३ चामुण्डायै नमः (दक्षांसे),
३ महालक्ष्म्यै नमः (वामांसे),

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः (इति व्यापकं न्यस्य वक्ष्यमाणाङ्गेषु),
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः (पादाङ्गुष्ठद्वये),
३ सर्वविद्राविण्यै नमः (दक्षपार्श्वे),
३ सर्वाकर्षिण्यै नमः (मूर्ध्नि),
३ सर्ववशङ्कर्यै नमः (वामपार्श्वे),
३ सर्वोन्मादिन्यै नमः (वामजानुनि),
३ सर्वमहाङ्कुशायै नमः (दक्षजानुनि),
३ सर्वखेचर्यै नमः (दक्षांसे),
३ सर्वबीजायै नमः (वामांसे),

३ सर्वयोन्यै नमः (द्वादशान्ते),

३ सर्वत्रिखण्डायै नमः (पादाङ्गुष्ठद्वये),

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः (हृदये),

३ एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयस्सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्तास्सन्तु।

(इति हृदि चक्रसमर्पणं न्यसेत्)

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य)

ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकर्णपृष्ठे),

३ बुद्ध्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षांसे),

३ अहङ्काराकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकपूरे),

३ शब्दाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकरपृष्ठ–करतलयोः),

३ स्पर्शाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षस्फिचि दक्षोरौ),

३ रूपाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षजानुनि),

३ रसाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षगुल्फे),

३ गन्धाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षपादतले दक्षप्रपदे),

३ चित्ताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामपादतले वामप्रपदे),

३ धैर्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामगुल्फे),

३ स्मृत्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामजानुनि),

३ नामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामोरौ, वामस्फिचि),

३ बीजाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामकरपृष्ठ–वामकरतलयोः),

३ आत्माकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामकपूरे),

३ अमृताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामांसे),

३ शरीराकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामकर्णपृष्ठे),

३ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नमः (हृदये)

३ एताः गुप्तयोगिन्यस्सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः, सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वसङ्क्षोभणचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः (दक्षशङ्खे) (ललाटदक्षभागे),
३ अनङ्गमेखलायै नमः (दक्षजत्रुणि) (दक्षबाहुमूलसन्धौ)
३ अनङ्गमदनायै नमः (दक्षोरौ),
३ अनङ्गमदनातुरायै नमः (दक्षगुल्फे),
३ अनङ्गरेखायै नमः (वामगुल्फे),
३ अनङ्गवेगिन्यै नमः (वामोरौ),
३ अनङ्गाङ्कुशायै नमः (वामजत्रुणि) (वामबाहुमूलसन्धौ),
३ अनङ्गमालिन्यै नमः (वामशङ्खे) (ललाट-वामभागे),
ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः (हृदये)।

३ एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (इति व्यापकं न्यस्य)।
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः (ललाटमध्ये),
३ सर्वविद्राविण्यै नमः (ललाटदक्षभागे),
३ सर्वाकर्षिण्यै नमः (दक्षगण्डे),
३ सर्वाह्लादिन्यै नमः (दक्षांसे),
३ सर्वसम्मोहिन्यै नमः (दक्षपार्श्वे),
३ सर्वस्तम्भिन्यै नमः (दक्षोरौ),
३ सर्वजृम्भिण्यै नमः (दक्षजङ्घायाम्),
३ सर्ववशङ्कर्यै नमः (वामजङ्घायाम्),
३ सर्वरञ्जिन्यै नमः (वामोरौ),
३ सर्वोन्मादिन्यै नमः (वामपार्श्वे),
३ सर्वार्थसाधिन्यै नमः (वामांसे),
३ सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः (वामगण्डे),
३ सर्वमन्त्रमय्यै नमः (ललाटवामभागे),

३ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः (शिरःपृष्ठे),
३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः(हृदये)।

३ एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः (दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे),
३ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः (नासामूले, दक्षसृक्किणि, ओष्ठप्रान्ते),
३ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः (वामनेत्रे, दक्षस्तने),
३ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः (वामबाहुमूले, दक्षवृषणे),
३ सर्वकामप्रदायै नमः (वामोरुमूले, सीविन्या[1] दक्षभागे),
३ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः (वामजानुनि, सीविन्या, वामभागे),
३ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः (दक्षजानुनि, वामस्तने),
३ सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः (गुदे, वामवृषणे),
३ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः (दक्षोरुमूले वामसृक्किणि),
३ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः (दक्षबाहुमूले, वामनासापुटे),
३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रिये नमः(हृदये)।

३ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः (दक्षनासापुटे),
३ सर्वशक्त्यै नमः (दक्षसृक्किणि),
३ सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः (दक्षस्तने),
३ सर्वज्ञानमय्यै नमः (दक्षमुष्के),
३ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः (सीविन्या दक्षभागे),

1. सीविनी — अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा।

३ सर्वाधारस्वरूपायै नमः (वाममुष्के सीविन्या वामभागे),
३ सर्वपापहरायै नमः (वामस्तने),
३ सर्वानन्दमय्यै नमः (वामसृक्किणि),
३ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः (वामनासापुटे),
३ सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः (नासाग्रे),
३ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरामालिन्यै नमः (हृदि)।

३ एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वरोगहरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
३ अं...अः (१६) ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः (दक्षचिबुके),
३ कं खं गं घं ङं क्ल्हीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (दक्षकण्ठे),
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (हृदयदक्षभागे),
३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (नाभिदक्षभागे),
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (नाभिवामभागे),
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (हृदयवामभागे),
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (वामकण्ठे),
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (वामचिबुके),
३ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः (हृदि),

३ एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

आयुधन्यासः

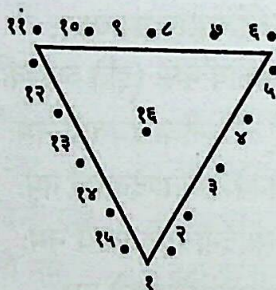
अथ हृदि त्रिकोणं विभाव्य तत्र प्रागादिदिक्षु क्रमेणायुधानां चतुष्टयं न्यसेत्, यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नमः (त्रिकोणपृष्ठे),
३ धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः (त्रिकोणदक्षे, स्ववामे),
३ ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः (त्रिकोणाग्रे),
३ क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नमः (त्रिकोणवामे, स्वदक्षभागे),

सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यासः

३ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
३ (मूलप्रथमकूटं) कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः (त्रिकोणाग्रकोणे)
३ (मूलद्वितीयकूटं) जालन्धरपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः (तद्दक्षकोणे)
३ (मूलतृतीयकूटं) पूर्णगिरिपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नमः (तद्वामकोणे)
३ ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) ओड्याणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः(तन्मध्ये)

(अथ तदन्तस्सपर्या–प्रकरणोक्तप्रकारेण षोडशस्वरान् विभाव्य षोडशनित्या न्यसेत्।)



यथा–मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं इति, उत्तररेखायां, ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत्। बिन्दौ षोडशं स्वरं (अः) विचिन्त्य महानित्यां न्यसेत्। यथा–

३ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगाह्वये भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः।

३ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः।

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः।

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः।

३ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै नमः।

३ ऌं ऐं क्लीं सौं ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः।

३ ॡं ह्स्क्ल्ड्रैं ह्स्क्ल्ड्रीं ह्स्क्ल्ड्रौः ॡं नित्यानित्यायै नमः।

३ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै नमः।

३ ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजयानित्यायै नमः।

३ ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै नमः।

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः।

३ अं च्क्रौं अं चित्रानित्यायै नमः।

३ अः 'पञ्चदशी' अः ललितामहानित्यायै नमः। (बिन्दौ)

३ **ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः।** (हृदि)

३ एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वान्यस्ताः सन्तु।

सर्वानन्दमयचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) सर्वानन्दमयचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),

३ (मूलं) श्रीललितायै नमः (हृदयमध्ये),

३ एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा न्यस्ताऽस्तु।

३ (मूलं) सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः (इति हृदि न्यस्य),

योनिमुद्रां प्रदर्श्य मूलं जपित्वा च पुनः कराङ्गन्यासं कुर्यात्।[1]

इति नित्याषोडशिकार्णवोक्तः श्रीचक्रन्यासः

1. इमौ पूर्वोक्तौ लघुषोढाचक्रन्यासौ श्रीमहाषोडशाक्षरीदीक्षितेभ्योऽपि समानौ।

अथ महाषोढान्यासः[1]

प्रपञ्चो भुवनं मूर्तिर्मन्त्रदैवतमातरः।
महाषोढाह्वयो न्यासः सर्वन्यासोत्तमोत्तमः।।

अस्य श्रीमहाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः श्री अर्धनारीश्वरो देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः (इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा मूर्धादिषु विन्यस्याऽङ्गन्यासं[2] कुर्यात्)।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (६) इति षडक्षरमन्त्रपूर्वकं सर्वं न्यसेत्। यथा–

६ हों ईशानाय नमः (अङ्गुष्ठयोः),
६ हें तत्पुरुषाय नमः (तर्जन्योः),
६ हुं अघोराय नमः (मध्यमयोः),
६ हिं वामदेवाय नमः (अनामिकयोः),
६ हं सद्योजाताय नमः (कनिष्ठिकयोः),
६ हों ईशानाय नमः (मूर्ध्नि),
६ हें तत्पुरुषाय नमः (मुखे),
६ हुं अघोराय नमः (हृदये),
६ हिं वामदेवाय नमः (गुह्ये),
६ हं सद्योजाताय नमः (पादयोः),
६ हों ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः (मूर्ध्नि अङ्गुष्ठेन),
६ हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः (मुखे, तर्जन्या),
६ हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः (दक्षकर्णे, मध्यमया),
६ हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः (वामकर्णे, अनामिकया),
६ हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः (चोरकूपे, कण्ठाधः, कनिष्ठया),

(अयं पञ्चवक्त्रन्यासः क्रमेणाङ्गुष्ठादिपञ्चाङ्गुलीभिरेकैकाङ्गुलिनैकेक-वक्त्रे न्यस्तव्यः। एवं न्यासं विधाय ततो "ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं ह्सौं ह्सः" इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा वक्ष्यमाणरूपं देवं हृदये ध्यात्वा न्यसेत्)। ओघप्रकारान्तरेण ध्यानम्–

---

1. केवलं पूर्णाभिषिक्तानां श्रीमहाषोडश्युपासकानां कृते।
2. अङ्गन्यासन्तु — अङ्गुलीदेहवक्त्रात्मकः।

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे।।

प्रपञ्चन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः (शिरसि),
६ आं द्वीपरूपायै मायायै नमः (मुखवृत्ते, ललाटे),
६ इं जलधिरूपायै कमलायै नमः (दक्षनेत्रे),
६ ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः (वामनेत्रे),
६ उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः (दक्षकर्णे),
६ ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः (वामकर्णे),
६ ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः (दक्षनासापुटे),
६ ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः (वामनासापुटे),
६ लृं आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः (दक्षगण्डे),
६ लॄं गुहारूपायै मायायै नमः (वामगण्डे),
६ एं नदीरूपायै रमायै नमः (ऊर्ध्वोष्ठे),
६ ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः (अधरोष्ठे),
६ ओं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ),
६ औं स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः (अधोदन्तपङ्क्तौ),
६ अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः (जिह्वाग्रे),
६ अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः (कण्ठे),
६ कं लवरूपायै आर्यायै नमः (दक्षबाहुमूले),
६ खं त्रुटिरूपायै उमायै नमः (दक्षकूर्परे),
६ गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः (दक्षमणिबन्धे),
६ घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले),
६ ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
६ चं श्वासरूपायै अपर्णायै नमः (वामबाहुमूले),
६ छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः (वामकूर्परे),
६ जं मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः (वाममणिबन्धे),
६ झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः (वामकराङ्गुलिमूले),

६	ञं	दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः	(वामकराङ्गुल्यग्रे),
६	टं	सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः	(दक्षोरुमूले),
६	ठं	रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः	(दक्षजानुनि),
६	डं	तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः	(दक्षगुल्फे),
६	ढं	वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),
६	णं	नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः	(दक्षापादाङ्गुल्यग्रे),
६	तं	योगरूपायै महामायायै नमः	(वामोरुमूले),
६	थं	करणरूपायै महेश्वर्यै नमः	(वामजानुनि),
६	दं	पक्षरूपायै मृडान्यै नमः	(वामगुल्फे),
६	धं	मासरूपायै रुद्राण्यै नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले),
६	नं	राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे),
६	पं	ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः	(दक्षपार्श्वे),
६	फं	अयनरूपायै काल्यै नमः	(वामपार्श्वे),
६	बं	वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः	(पृष्ठे),
६	भं	युगरूपायै गौर्यै नमः	(नाभौ),
६	मं	प्रलयरूपायै भवान्यै नमः	(जठरे),
६	यं	पञ्चभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः	(हृदये),
६	रं	पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः	(दक्षकक्षे),
६	लं	पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः	(गलपृष्ठे),
६	वं	पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः	(वामकक्षे),
६	शं	पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः	(हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं),
६	षं	गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः	(हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं),
६	सं	अन्तःकरणचतुष्टयरूपायैवाक्प्रदायै नमः	(हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं),
६	हं	अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः	(हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं),
६	ळं	सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः	(कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं),
६	क्षं	दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः	(कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं),

(इत्येकपञ्चाशच्छक्तिमातृकास्थानेषु विन्यस्य, ततः) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (अकारादिक्षकारान्तां मातृकामुच्चार्य) सकलप्रपञ्चाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। इति सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात्।

(इतिप्रपञ्चन्यासः)

भुवनन्यासः

(पादयोः[1]) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं अतललोकनिलयशत-कोटिगुह्याद्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(गुल्फयोः) ६ ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनीमूल-देवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(जङ्घयोः) ६ ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्य-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(जान्वोः) ६ लॄं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्र-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ऊर्वोः) ६ ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छा-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(स्फिचोः) ६ अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनी-मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(मूलाधारे) ६ कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रिया-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(स्वाधिष्ठाने) ६ चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(मणिपूरके) ६ टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिणी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

---

1. अत्रैतेषां स्थानानां प्रथममुल्लेखो न्यासस्थलज्ञानस्य सौकर्याय।

(अनाहते) ६ तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(विशुद्धौ) ६ पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(आज्ञायां) ६ यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ललाटे) ६ शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनी-योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ब्रह्मरन्ध्रे) ६ ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनी-मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

६ (समस्तमातृकामुच्चार्य) सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

इति भुवनन्यासः

मूर्तिन्यासः

(शिरसि) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं केशवायाक्षरशक्त्यै नमः,
(मुखे) ६ आं नारायणायाद्यशक्त्यै नमः,
(दक्षिणांसे) ६ इं माधवायेष्टदायै नमः,
(वामांसे) ६ ईं गोविन्दायेशान्यै नमः,
(दक्षपार्श्वे) ६ उं विष्णवे उग्रायै नमः,
(वामपार्श्वे) ६ ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः,
(दक्षकट्याम्) ६ ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्ध्यै नमः,
(वामकट्याम्) ६ ॠं वामनाय रूपिण्यै नमः,
(दक्षोरौ) ६ लृं श्रीधराय लुप्तायै नमः,
(वामोरौ) ६ लॄं हृषीकेशाय लूनदोषायै नमः,
(दक्षजानुनि) ६ एं पद्मनाभायैकनायिकायै नमः,
(वामजानुनि) ६ ऐं दामोदरायैकारिण्यै नमः,
(दक्षजङ्घायाम्) ६ ओं वासुदेवायौघवत्यै नमः,

(वामजङ्घायाम्)	६	औं	सङ्कर्षणायौर्वकामायै नमः,
(दक्षपादे)	६	अं	प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नमः,
(वामपादे)	६	अः	अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः,
(दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्)	६	कं भं	भवाय करभद्रायै नमः,
(वामपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्)	६	खं बं	शर्वाय खगबलायै नमः,
(दक्षपार्श्वे)	६	गं फं	हराय गरिमफलप्रदायै नमः,
(वामपार्श्वे)	६	घं पं	पशुपतये घोरपादायै नमः,
(दक्षदोर्मूले)	६	ङं नं	उग्राय पङ्क्तिनासायै नमः,
(वामदोर्मूले)	६	चं धं	महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नमः,
(कण्ठे)	६	छं दं	भीमाय छन्दोमय्यै नमः,
(वदने)	६	जं थं	ईशानाय जगत्स्थानायै नमः,
(दक्षकर्णे)	६	झं तं	तत्पुरुषाय झङ्कृत्यै नमः,
(वामकर्णे)	६	ञं णं	अघोराय ज्ञानदायै नमः,
(भाले)	६	टं ढं	सद्योजाताय टङ्कढक्कधरायै नमः,
(शिरसि)	६	ठं डं	वामदेवाय ठङ्कृतिडामर्यै नमः,
(मूलाधारे)	६	यं	ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः,
(स्वाधिष्ठाने)	६	रं	प्रजापतये रञ्जिन्यै नमः,
(मणिपूरके)	६	लं	वेधसे लक्ष्म्यै नमः,
(अनाहते)	६	वं	परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः,
(विशुद्धौ)	६	शं	पितामहाय शक्तिधरायै नमः,
(आज्ञायां)	६	षं	विधात्रे षडाधारालयायै नमः,
(अर्धेन्दौ)	६	सं	विरिञ्चये सर्वनायिकायै नमः,
(रोधिन्यां)	६	हं	स्रष्ट्रे हसिताननायै नमः,
(नादे)	६	ळं	चतुराननाय ललितायै नमः,
(नादान्ते)	६	क्षं	हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्)।

इति मूर्तिन्यासः।

मन्त्रन्यासः

(मूलाधारे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं एकलक्षकोटिभेदप्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यैनमः।

(स्वाधिष्ठाने) ६ ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(मणिपूरके) ६ ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेदवह्न्यादित्र्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(अनाहते) ६ ॡं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(विशुद्धौ) ६ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादिपञ्चाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(आज्ञायां) ६ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(बिन्दौ) ६ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेदगणपत्यादिसप्ताक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(अर्धेन्दौ) ६ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदबटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(रोधिन्यां) ६ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादे) ६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादान्ते) ६ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(शक्तौ) ६ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(व्यापिकायां) ६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेदलक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(समनायां) ६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(उन्मन्यां) ६ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटिभेददुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(ध्रुवमण्डले) ६ षं सं हं ळं क्षं षोडशलक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलमन्त्राधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्)।

इति मन्त्रन्यासः।

देवतान्यासः

(दक्षपादे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नमः।

(वामपादे) ६ इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षगुल्फे) ६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः।

(वामगुल्फे) ६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः।

(दक्षजङ्घायां) ६ ऌं ॡं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः।

(वामजङ्घायां) ६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षजानुनि) ६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः।

(वामजानुनि) ६ अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः।

(दक्षोरौ) ६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः।

(वामोरौ) ६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षोरुमूले) ६ ङं चं सहस्रकोट्यप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः।

(वामोरुमूले) ६ छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षपार्श्वे) ६ झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः।
(वामपार्श्वे) ६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः।
(दक्षस्तने) ६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः।
(वामस्तने) ६ णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः।
(दक्षदोर्मूले) ६ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः।
(वामदोर्मूले) ६ धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः।
(दक्षभुजे) ६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः।
(वामभुजे) ६ बं भं सहस्रकोटिबटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः।
(दक्षांसे) ६ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः।
(वामांसे) ६ रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः।
(दक्षकर्णे) ६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।
(वामकर्णे) ६ षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै नमः।
(भाले) ६ हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः।
(ब्रह्मरन्ध्रे) ६ क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

इति देवतान्यासः।

मातृकाभैरवन्यासः

(मूलाधारे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः।

(स्वाधिष्ठाने) ६ चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै इं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इं ळं चर्चिकानाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः।

(मणिपूरके) ६ टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः।

(अनाहते) ६ तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ॠ सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠ सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ऋं सं हरसिद्धनाथाय ऋं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः।

(विशुद्धौ) ६ पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै लॄं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै लॄं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय लृं षं भट्टिनाथाय लृं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः।

(आज्ञायां) ६ यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलिकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहिताय एं शं किलिकिलिनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः।

(भाले) ६ शं षं सं हं अनन्तकोटिवनचरीकुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः।

(ब्रह्मरन्ध्रे) ६ ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरीकुलसहितायै अः ळां भीषणाम्बादेव्यै अः ळां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं ळं भीषणनाथाय अं ळं संहारभैरवनाथाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (समस्तमातृकामुच्चार्य) समस्तमातृकाभैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्)।

इति मातृकाभैरवन्यासः।

(अनन्तरं पूर्वोक्तैः 'ह्सां ह्सीं'' इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यायेत्)। यथा-

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे ।।१।।
नवरत्नमयश्रीमत् - सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तस्समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ।।२।।

अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम् ।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम्।।३।।
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ।।४।।
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम्।।५।।
महाषोढोदिताशेष–देवतागणसेवितम् ।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम्।।६।।
पुरुषं वा स्मरेद् देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम्।।७।।
सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम्।

(इति स्वाभेदेन ध्यात्वा, योनि–लिङ्ग–सुरभि–कपाल–ज्ञान–त्रिशूल–पुस्तक–वनमाला–नभो–(खेचरी)महामुद्रा इति दशमुद्राः प्रदर्श्य शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत्)।

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं,
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम्।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं,
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम्।।

(इति श्रीगुरुं ध्यात्वा तद्विद्यया तत्पादुकां शिरसि विन्यस्य, प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम स्वमूलाधारे स्मृत्वा शिवरूपं च स्वात्मानं ध्यायेत्)।

इति महाषोढान्यासः

महाषोढान्यासफलं

कुलार्णवे

एवं न्यासे कृते देवि साक्षात्परशिवो भवेत्।
मन्त्री चात्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः।।

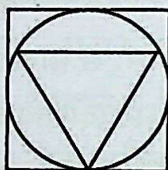
महाषोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने।
देवास्सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः।।
महाषोढाह्वयं न्यासं यत्र मन्त्री न्यसेत्ततः।
दिव्यक्षेत्रं समुद्दिष्टं समन्ताद् दशयोजनम्।।
कृत्वा न्यासमिमं देवि यत्र गच्छति मानवः।
तत्र श्रीर्विजयो लाभः स मान्यः पुरुषः प्रिये।।
महाषोढाकृतन्यासस्त्वदीक्षायाभिवन्दते ।
स मासान्मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम्।।
वज्रपञ्जरनामानमेवं न्यासं करोति यः।
दिव्यान्तरिक्षभूशैलजलारण्यनिवासिनः ।।
उद्दण्डभूत–वेताल–देव–रक्षो–ग्रहादयः ।
भयग्रस्तेन मनसा नेक्षन्ते साधकं प्रिये।।
महाषोढाह्वयं न्यासं ब्रह्मविष्णुशिवादयः।
देवास्सर्वे प्रकुर्वन्ति ऋषयश्च मुनीश्वराः।।
बहुनोक्तेन किं देवि! सुशिष्याय प्रकाशयेत्।
अक्षयां लभते सिद्धिं रहसि न्यासमाचरेत्।।
अस्मात् परतरः साक्षाद्देवताभावसिद्धिदः।
लोके नास्ति न सन्देहः सत्यं सत्यं न संशयः।।
ऊर्ध्वाम्नायप्रवेशश्च पराप्रसादचिन्तनम्।
महाषोढापरिज्ञानं नाल्पस्य तपसः फलम्।।

इति महाषोढान्यासफलम्।

अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्

(स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य)-



मण्डलं च मूलेन समभ्यर्च्य, कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत्।

ॐकलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
गङ्गे च यमुने! चैव गोदावरि सरस्वति ।।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः।।
आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

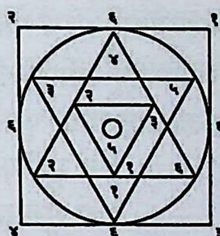
(इत्यावाह्य, मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन)-

ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै।।

(इति मन्त्रेण पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्षयेत्)।

सामान्यार्घ्यविधिः

(वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय) -



चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजयेत्। यथा-

३	ऐं हृदयाय नमः।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं शिरसे स्वाहा।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	सौः शिखायै वषट्।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ऐं कवचाय हुं।	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	सौः अस्त्राय फट्।	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

३	ऐं क-५ हृदयाय नमः।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	सौः स-४ शिखायै वषट्।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	ऐं क-५ कवचाय हुं।	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३	सौः स-४ अस्त्राय फट्।	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन -

३ ऐं क-५ नमः।

३ क्लीं ह-६ नमः।

३ सौः स-४ नमः।

३ मूलं नमः (बिन्दौ)।

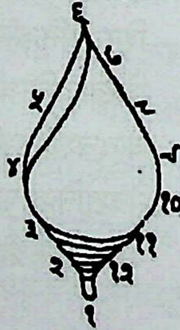
३ ततः "अस्त्राय फट्" (इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य)

३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः। (इति मण्डलोपरि संस्थाप्य)

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।
ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः।
(इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत्)। तद्यथा-

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।
३ रं ऊष्माकलायै नमः।
३ लं ज्वलिनीकलायै नमः।
३ वं ज्वालिनीकलायै नमः।
३ शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः।
३ षं सुश्रीकलायै नमः।
३ सं सुरूपाकलायै नमः।
३ हं कपिलाकलायै नमः।
३ ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः।
३ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।

३ अस्त्राय फट् -(इति अस्त्रमन्त्रेण क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा) -
३ उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः-(इति संस्थाप्य)
३ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।
३ हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः -
(इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्। तद्यथा-)



३ कं भं तपिनीकलायै नमः
३ खं बं तापिनीकलायै नमः।
३ गं फं धूम्राकलायै नमः।
३ घं पं मरीचिकलायै नमः।
३ ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः।
३ चं धं रुचिकलायै नमः।
३ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः
३ जं थं भोगदाकलायै नमः।
३ झं तं विश्वाकलायै नमः।
३ ञं णं बोधिनीकलायै नमः।
३ टं ढं धारिणीकलायै नमः।
३ ठं डं क्षमाकलायै नमः।

३ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः-(इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्त्वा)।

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं भवावाजस्य सङ्गथे।।

३ सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः

(इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत्। तद्यथा-)

३ अं अमृताकलायै नमः ३ लृं चन्द्रिकाकलायै नमः।

३ आं मानदाकलायै नमः। ३ लॄं कान्तिकलायै नमः।

३ इं पूषाकलायै नमः। ३ एं ज्योत्स्नाकलायै नमः।

३ ईं तुष्टिकलायै नमः। ३ ऐं श्रीकलायै नमः।

३ उं पुष्टिकलायै नमः। ३ ओं प्रीतिकलायै नमः।

३ ऊं रतिकलायै नमः। ३ औं अङ्गदाकलायै नमः।

३ ऋं धृतिकलायै नमः। ३ अं पूर्णाकलायै नमः।

३ ॠं शशिनीकलायै नमः। ३ अः पूर्णामृताकलायै नमः।

(ततस्तस्मिन् शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य, अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य, कवचाय हुं इति अवगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य)-

ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै।।

(इति मन्त्रेण तत्सलिलपृषद्भिः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलं किञ्चिद् वर्धन्यां क्षिपेत्)।

विशेषार्घ्यविधिः

(सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य, चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुं चार्चयेत्)। तद्यथा-



(चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च–)

३ ऐं क–५ हृदयाय नमः[1]	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं ह–६ शिरसे स्वाहा	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ सौः स–४ शिखायै वषट्	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ऐं क–५ कवचाय हुं	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ सौः स–४ अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन –)

३ ऐं क–५ हृदयाय नमः	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं ह–६ शिरसे स्वाहा	शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ सौः स–४ शिखायै वषट्	शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ऐं क–५ कवचाय हुं	कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ सौः स–४ अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन –)

३ ऐं क–५ नमः	३ सौः स–४ नमः।
३ क्लीं ह–६ नमः	३ मूलं नमः। (बिन्दौ)

अथ ३ अस्त्राय फट् (इति आधारं प्रक्षाल्य)

३ ऐं क–५ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः। (इति मण्डलोपरि आधारं संस्थाप्य)

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।

३ रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः।

(इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्निकलाः पूजयेत्)। यथा–

1. षोडश्युपासकैस्तु षोडशीमन्त्रेणैव सर्वत्र पूजा विधेया।

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः।
३ रं ऊष्माकलायै नमः।
३ लं ज्वलिनीकलायै नमः।
३ वं ज्वालिनीकलायै नमः।
३ शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः।
३ षं सुश्रीकलायै नमः
३ सं सुरूपाकलायै नमः।
३ हं कपिलाकलायै नमः।
३ ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः।
३ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः।

(ततः-)

३ अस्त्राय फट् (इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य)

३ क्लीं ह-६ उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः, (इति आधारोपरि संस्थाप्य)

३ ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्नि-भक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा (इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य)-

३ **आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

३ **हां ह्रीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः** (इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्)।

३ कं भं तपिनीकलायै नमः
३ खं बं तापिनीकलायै नमः
३ गं फं धूम्राकलायै नमः
३ घं पं मरीचिकलायै नमः
३ ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः
३ चं धं रुचिकलायै नमः
३ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः
३ जं थं भोगदाकलायै नमः
३ झं तं विश्वाकलायै नमः
३ ञं णं बोधिनीकलायै नमः
३ टं ढं धारिणीकलायै नमः
३ ठं डं क्षमाकलायै नमः

(ततो विशेषार्घ्यपात्रे-)

३ **सौः स-४ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुर-सुन्दर्याः विशेषार्घ्यामृताय नमः-** इति अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं सबिन्दुमातृकयार्पितं कस्तूरिकाद्यधिवासितं क्षीरं पूरयित्वा अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय।

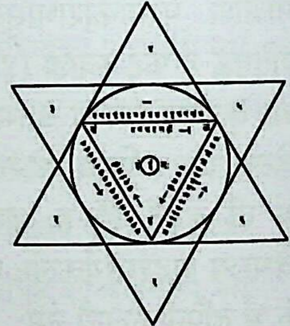
३ **आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम्। भवावाजस्य सङ्गथे।**

३ सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः
(इति सोममण्डलं विभाव्य षोडशसोमकलाः पूजयेत्।) यथा–

३ अं अमृताकलायै नमः
३ आं मानदाकलायै नमः
३ इं पूषा कलायै नमः
३ ईं तुष्टिकलायै नमः
३ उं पुष्टिकलायै नमः
३ ऊं रतिकलायै नमः
३ ऋं धृतिकलायै नमः
३ ॠं शशिनीकलायै नमः
३ लृं चन्द्रिकाकलायै नमः।
३ लॄं कान्तिकलायै नमः।
३ एं ज्योत्स्नाकलायै नमः।
३ ऐं श्रीकलायै नमः।
३ ओं प्रीतिकलायै नमः।
३ औं अङ्गदाकलायै नमः।
३ अं पूर्णाकलायै नमः।
३ अः पूर्णामृताकलायै नमः।

(ततः '३ ॐ जुं सः स्वाहा' इति अष्टवारमभिमन्त्र्य) –

तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि–षोडशवर्णात्मक–रेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तःस्वाग्रादिकोणेषु, अप्रादक्षिण्येन हळक्षान् बहिः प्रादक्षिण्येन पञ्चदशीमूल–खण्डत्रयं, बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरं 'ईं' तद्वामदक्षयोः क्रमेण 'हं सः' इति च विलिख्य–



३ 'हंसः नमः' (इति आराध्य, त्रिकोणस्य, परितः, वृत्तं, तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य)

३ (मूलं) तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणाम् अमृतकलशपिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा। (इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यात्किञ्चित् पात्रान्तरेण–)

३ वषट्। (इत्युद्धृत्य,)–३ स्वाहा। (इति तत्रैव निक्षिप्य)
३ हुं। (इति अवगुण्ठ्य,)–३ वौषट्। (इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य)
३ फट्। (इति संरक्ष्य)–३ नमः। (इति पुष्पं दत्त्वा)
३ मूलेन। (गालिन्या निरीक्ष्य)–३ ऐं। (इति योनिमुद्रया नत्वा)
३ मूलेन। (सप्तवारमभिमन्त्र्य, सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य)–

ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै।।

(इति मन्त्रेण तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य सर्वं विद्यामयं विभावयेत्)।

शुद्धिसंस्कारः

(विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य) -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय

(इति मण्डलमभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं च संस्थाप्य)

३ ॐ श्लीं पशु हुं फट् (इति अष्टवारमभिमन्त्र्य)

३ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।

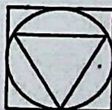
३ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रथमनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।

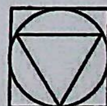
३ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

३ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

३ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानाम्
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।

(इत्यभ्यर्च्य)। नागरखण्डं निक्षिप्य तदधस्त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य, (प्रथममण्डले)-





३ हंसश्शिवस्सोऽहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोऽहं हंसः ह्स्ख्फ्रें ह्सक्षमलवरयूं नमः। (इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय)। (द्वितीयमण्डले)

३ हंसः नमः (इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्रं निदध्यात्)। (ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्)।

वह्निकलाः

३ यं धूम्रार्चिषे	नमः	३ षं सुश्रियै	नमः
३ रं ऊष्मायै	नमः	३ सं सुरूपायै	नमः
३ लं ज्वलिन्यै	नमः	३ हं कपिलायै	नमः
३ वं ज्वालिन्यै	नमः	३ ळं हव्यवाहिन्यै	नमः
३ शं विस्फुलिङ्गिन्यै	नमः	३ क्षं कव्यवाहिन्यै	नमः

सूर्यकलाः

३ कं भं तपिन्यै नमः
३ खं बं तापिन्यै नमः
३ गं फं धूम्रायै नमः
३ घं पं मरीच्यै नमः
३ ङं नं ज्वालिन्यै नमः
३ चं धं रुच्यै नमः
३ छं दं सुषुम्नायै नमः
३ जं थं भोगदायै नमः
३ झं तं विश्वायै नमः
३ ञं णं बोधिन्यै नमः
३ टं ढं धारिण्यै नमः
३ ठं डं क्षमायै नमः

सोमकलाः

३ अं अमृतायै नमः
३ आं मानदायै नमः
३ इं पूषायै नमः
३ ईं तुष्ट्यै नमः
३ उं पुष्ट्यै नमः
३ ऊं रत्यै नमः
३ ऋं धृत्यै नमः
३ ॠं शशिन्यै नमः
३ लृं चन्द्रिकायै नमः
३ लॄं कान्त्यै नमः
३ एं ज्योत्स्नायै नमः
३ ऐं श्रियै नमः
३ ओं प्रीत्यै नमः
३ औं अङ्गदायै नमः
३ अं पूर्णायै नमः
३ अः पूर्णामृतायै नमः

ब्रह्मकलाः

३ कं सृष्ट्यै नमः
३ खं ऋद्ध्यै नमः
३ गं स्मृत्यै नमः
३ घं मेधायै नमः
३ ङं कान्त्यै नमः
३ चं लक्ष्म्यै नमः
३ छं द्युत्यै नमः
३ जं स्थिरायै नमः
३ झं स्थित्यै नमः
३ ञं सिद्ध्यै नमः

३ हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।। नमः।

विष्णुकलाः

३ टं जरायै नमः
३ ठं पालिन्यै नमः
३ डं शान्त्यै नमः
३ ढं ईश्वर्यै नमः
३ णं रत्यै नमः
३ तं कामिकायै नमः
३ थं वरदायै नमः
३ दं ह्लादिन्यै नमः
३ धं प्रीत्यै नमः
३ नं दीर्घायै नमः

३ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। नमः।

रुद्रकलाः

३ पं तीक्ष्णायै नमः
३ फं रौद्र्यै नमः
३ बं भयायै नमः
३ भं निद्रायै नमः
३ मं तन्द्रायै नमः
३ यं क्षुधायै नमः
३ रं क्रोधिन्यै नमः
३ लं क्रियायै नमः
३ वं उद्गार्यै नमः
३ शं मृत्यवे नमः

३ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। नमः।।

ईश्वरकलाः

३ षं पीतायै नमः
३ सं श्वेतायै नमः
३ हं अरुणायै नमः
३ क्षं असितायै नमः

३ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।। नमः।।

सदाशिवकलाः

३ अं निवृत्त्यै नमः
३ आं प्रतिष्ठायै नमः
३ इं विद्यायै नमः
३ ईं शान्त्यै नमः
३ उं इन्धिकायै नमः
३ ऊं दीपिकायै नमः
३ ऋं रेचिकायै नमः
३ ॠं मोचिकायै नमः

३ लृं परायै नमः

३ लॄं सूक्ष्मायै नमः

३ एं सूक्ष्मामृतायै नमः।

३ ऐं ज्ञानायै नमः।

३ ओं ज्ञानामृतायै नमः।

३ औं आप्यायिन्यै नमः।

३ अं व्यापिन्यै नमः।

३ अः व्योमरूपायै नमः।

३ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।। नमः।

३ (मूलं) नमः।

३ अखण्डैकरसान्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके।। नमः।

३ अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि।। नमः।।

३ तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु।। नमः।

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।। नमः।

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः।। नमः।

(एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किञ्चिद् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं गुरुपादुकामन्त्रेण यजेत्। गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत्)।

(पुनः आत्मपात्रे गुरुयजनावशिष्टममृतं निक्षिप्य, मूलाधारे बालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा)

३ कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः। (इति मनसा सम्पूज्य)

३ (मूलं) पुण्यं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) पापं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) कृत्यं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) अकृत्यं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) विकल्पं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) धर्मं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) अधर्मं जुहोमि स्वाहा

३ (मूलं) अधर्मं जुहोमि वौषट्

३ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा–(इति पूर्णाहुतिं विभाव्य)

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

(इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। विशेषार्घ्यपात्रात्किञ्चित्क्षीरं क्षीरकलशे निक्षिपेत्। आविसर्जनं शङ्खं विशेषार्घ्यपात्रपञ्च न चालयेत्)।

अन्तर्यागः

(स च *ज्ञानार्णवे* दृष्टः, यथा–मूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं विसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परश्शत–सुधामयूख–शीतलतेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेत्। ततस्तत्तेजसि–)

मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे तदुपरि स्थिते विषुवन्नाम्नि रक्तवर्णे षड्दले च देहश्रीचक्रयोरभेदेन भूपुरस्थिता अणिमादिदेवीः पूजयामि।

मूलाधारे चतुर्दले षोडशदलगतकामाकर्षिण्यादिदेवीः पूजयामि।

स्वाधिष्ठाने षड्दलेऽष्टदलगतानङ्गकुसुमादिदेवीः पूजयामि।

मणिपूरे दशदले चतुर्दशारगतसर्वसङ्क्षोभिण्यादिदेवीः पूजयामि।

अनाहते द्वादशदले बहिर्दशारगतसर्वसिद्धिप्रदादिदेवीः पूजयामि।

विशुद्धौ षोडशदलेऽन्तर्दशारगतसर्वज्ञादिदेवीः पूजयामि।

लम्बिकाग्रे अष्टारगतवशिन्यादिदेवीः पूजयामि।

आज्ञायां द्विदले आयुधदेवीस्त्रिकोणगतमहाकामेश्वर्यादिदेवीश्च पूजयामि।

सहस्रारे बिन्दुगतश्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं कामेश्वराङ्कनिलयां देवीं पूजयामि। इति।

तत्तदग्रे जीवात्मानं पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्टं भावयन् तत्तत्पूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां देव्या वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य, श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य, मध्यत्र्यस्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मना सहितां श्रीदेवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैः तत्र तां सम्पूज्य ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्य–शालिकरकमला पीतहरितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः धरणिवियदनिलानल–जललक्षणपञ्चभूतमयीः पीत

असितश्याम-रक्तशुक्लवर्णाः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत्।

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य, मूलविद्याम् उच्चरन्, जीवात्मानं श्रीदेवीपादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् सङ्क्षोभिण्यादिनवमुद्राः[1] भावयित्वा, क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।

अथ देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमालम्ब्य तेजोरूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिबिलविलसदमल-दशशत-दलकमलाद् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुम-गर्भितेऽञ्जलौ समानीय-

३ ह्रीं श्रीं सौः श्रीललिताया अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः।

(इति विभाव्य यन्त्रे पुष्पाञ्जलिमर्पयेत्)। ततः-

ध्यानम्

ध्यायेन्निरामयं वस्तु जगत्त्रयविमोहिनीम्। अशेषव्यवहाराणां स्वामिनीं सविदं पराम्॥
उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम्। जपाकुसुमसङ्काशां पद्मरागमणिप्रभाम्।
स्फुरत्पद्मनिभां तप्तकाञ्चनाभां सुरेश्वरीम्। रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवराजिताम्॥
अनर्घरत्नखचितमञ्जीरचरणद्वयाम्। पादाङ्गुलीयकक्षिप्तरत्नतेजोविराजिताम्॥
कदलीललितस्तम्भसुकुमारोरुकोमलाम्। नितम्बविम्बविलसद्रक्तवस्त्रपरिष्कृताम्॥
मेखलाबद्धमाणिक्यकिङ्किणीनादविभ्रमाम्। अलक्ष्यमध्यमां निम्ननाभिं शातोदरीं पराम्।
रोमराजिलतोद्भूतमहाकुचफलान्विताम्। सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्गकुचमण्डलराजिताम्॥
अनर्घमौक्तिकस्फारहारभारविराजिताम्। नवरत्नप्रभाराजद्ग्रैवेयकविभूषणाम्॥
श्रुतिभूषामनोरम्यकपोलस्थलमञ्जुलाम्। उद्यदादित्यसङ्काशताटङ्कसुमुखप्रभाम्॥
पूर्णचन्द्रमुखीं पद्मवदनां वरनासिकाम्। स्फुरन्मदनकोदण्डसुभ्रुवं पद्मलोचनाम्॥
ललाटपट्टसंराजद्रत्नाढ्यातिलकाङ्किताम्। मुक्तामाणिक्यघटितमुकुटस्थलकिङ्किणीम्॥

1. षोडश्युपासकानां तु दशमुद्राः।

स्फुरच्चन्द्रकलाराजन्मुकुटाञ्च त्रिलोचनाम्। प्रवालवल्लीविलसद्बाहुवल्लीचतुष्टयाम्।।
इक्षुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचतुर्भुजाम्। सर्वदेवमयीमम्बां सर्वसौभाग्यसुन्दरीम्।।
सर्वतीर्थमयीं दिव्यां सर्वकामप्रपूरिणीम्। सर्वमन्त्रमयीं नित्यां सर्वागमविशारदाम्।।
सर्वक्षेत्रमयीं देवीं सर्वविद्यामयीं शिवाम्। सर्वयागमयीं विद्यां सर्वदेवस्वरूपिणीम्।।
सर्वशास्त्रमयीं नित्यां सर्वागमनमस्कृताम्। सर्वाम्नायमयीं देवीं सर्वायतनसेविताम्।।
सर्वानन्दमयीं ज्ञानगह्वरां सविदं पराम्। एवं ध्यायेत्परामम्बां सच्चिदानन्दरूपिणीम्।।

अथवा स्वमन्त्रदेवताध्यानं-

(इति निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य)

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः

महापद्मवनान्तःस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि।।

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः (इत्यावाहयेत्)।

(नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृतिवेषभूषणायुधशक्तिचक्रम् ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणरीत्या निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य-)

३ (मूलं) आवाहिता भव ३ (मूलं) संनिरुद्धा भव
३ (मूलं) संस्थापिता भव ३ (मूलं) सम्मुखी भव
३ (मूलं) सन्निधापिता भव ३ (मूलं) अवगुण्ठिता भव

(इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राः हृदयादिषडङ्गमुद्राः बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत्)।

चतुःषष्ट्युपचारपूजा

(अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत्। तेष्वशक्तो भावनया पुष्पाक्षतानर्पयेत्)। यथा-

३ श्रीललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः।।१।।
३ श्रीललितायै आभरणावरोपणं कल्पयामि नमः।।२।।
३ श्रीललितायै सुगन्धितैलाभ्यङ्गं कल्पयामि नमः ।।३।।
३ श्रीललितायै मज्जनशालाप्रवेशनं कल्पयामि नमः ।।४।।

३ श्रीललितायै मज्जनशालामणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः ।।५।।

३ श्रीललितायै दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं कल्पयामि नमः ॥६॥
३ श्रीललितायै उष्णोदकस्नानं कल्पयामि नमः ॥७॥
३ श्रीललितायै कनककलशच्युतसकलतीर्थाभिषेकं[1] कल्पयामि नमः॥८॥
३ श्रीललितायै धौतवस्त्रपरिमार्जनं कल्पयामि नमः ॥९॥
३ श्रीललितायै अरुणदुकूलपरिधानं कल्पयामि नमः ॥१०॥
३ श्रीललितायै अरुणकुचोत्तरीयं कल्पयामि नमः ॥११॥
३ श्रीललितायै आलेपमण्डपप्रवेशनं कल्पयामि नमः॥१२॥
३ श्रीललितायै आलेपमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः ॥१३॥
३ श्रीललितायै दिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनं कल्पयामि नमः ॥१४॥
३ श्रीललितायै केशभारस्य कृष्णागरुधूपं कल्पयामि नमः ॥१५॥
३ श्रीललितायै कुसुममालाः कल्पयामि नमः ॥१६॥
३ श्रीललितायै भूषणमण्डपप्रवेशनं कल्पयामि नमः ॥१७॥
३ श्रीललितायै भूषणमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः ॥१८॥
३ श्रीललितायै नवमणिमुकुटं कल्पयामि नमः ॥१९॥
३ श्रीललितायै चन्द्रशकलं कल्पयामि नमः ॥२०॥
३ श्रीललितायै सीमन्तसिन्दूरं कल्पयामि नमः ॥२१॥
३ श्रीललितायै प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्रं) कल्पयामि नमः ॥२२॥
३ श्रीललितायै तिलकरत्नं कल्पयामि नमः ॥२३॥
३ श्रीललितायै कृष्णाञ्जनं कल्पयामि नमः ॥२४॥
३ श्रीललितायै वालीयुगलं कल्पयामि नमः॥२५॥
३ श्रीललितायै मणिकुण्डलयुगलं कल्पयामि नमः ॥२६॥
३ श्रीललितायै नासाभरणं कल्पयामि नमः ॥२७॥
३ श्रीललितायै अधरयावकं कल्पयामि नमः ॥२८॥
३ श्रीललितायै कनकचिन्ताकं कल्पयामि नमः ॥२९॥
३ श्रीललितायै पदकं कल्पयामि नमः ॥३०॥
३ श्रीललितायै महापदकं कल्पयामि नमः ॥३१॥
३ श्रीललितायै मुक्तावलिं कल्पयामि नमः ॥३२॥
३ श्रीललितायै एकावलिं कल्पयामि नमः ॥३३॥
३ श्रीललितायै छन्नवीरं कल्पयामि नमः ॥३४॥
३ श्रीललितायै केयूरयुगलचतुष्टयं कल्पयामि नमः ॥३५॥

1. इह श्रीसूक्तेनाभिषेको विधेयः।

३ श्रीललितायै वलयावलिं कल्पयामि नमः ॥३६॥

३ श्रीललितायै ऊर्मिकावलिं कल्पयामि नमः ॥३७॥

३ श्रीललितायै काञ्चीदाम कल्पयामि नमः ॥३८॥

३ श्रीललितायै कटिसूत्रं कल्पयामि नमः ॥३९॥

३ श्रीललितायै सौभाग्याभरणं कल्पयामि नमः ॥४०॥

३ श्रीललितायै पादकटकं कल्पयामि नमः ॥४१॥

३ श्रीललितायै रत्ननूपुरं कल्पयामि नमः ॥४२॥

३ श्रीललितायै पादाङ्गुलीयकं कल्पयामि नमः ॥४३॥

३ श्रीललितायै एककरे पाशं कल्पयामि नमः ॥४४॥

३ श्रीललितायै अन्यकरेऽङ्कुशं कल्पयामि नमः ॥४५॥

३ श्रीललितायै इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं कल्पयामि नमः ॥४६॥

३ श्रीललितायै अपरकरे पुष्पबाणान् कल्पयामि नमः ॥४७॥

३ श्रीललितायै श्रीमन्माणिक्यपादुके कल्पयामि नमः ॥४८॥

३ श्रीललितायै स्वसमानवेषाभिरावरणदेवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं कल्पयामि नमः ॥४९॥

३ श्रीललितायै कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं कल्पयामि नमः ॥५०॥

३ श्रीललितायै अमृतासवचषकं कल्पयामि नमः ॥५१॥

३ श्रीललितायै आचमनीयं कल्पयामि नमः ॥५२॥

३ श्रीललितायै कर्पूरवीटिकां[1] कल्पयामि नमः ॥५३॥

३ श्रीललितायै आनन्दोल्लासविलासहासं कल्पयामि नमः ॥५४॥

मङ्गलारार्तिकम्—

(कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखितस्याष्टषट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारचरुगोलकवत्या चणकमुद्गजुषि वा कर्णिकायां दलेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्तपञ्चान्यतमसंख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं कर्षप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भितां वर्तिकां हृल्लेखया प्रज्वाल्य)

---

1. एलालवङ्गकर्पूरकस्तूरीकेशरादिभिः।
जातिफलदलैः पूगैः ताम्बूलैश्चूर्णनागरैः।
चूर्णै खादिरसारैश्च युक्ता कर्पूरवीटिका।

३ श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं (इति नवाक्षर्या रत्नेश्वरीविद्यया अभिमन्त्र्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य, तथा मूलेनाभ्यर्च्य)–

३ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा (इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां सम्पूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतलः तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य)–

३ श्रीललितायै मङ्गलारात्रिकं कल्पयामि नमः।।५५।।

सविनयमथ दत्त्वां जानुयुग्मं धरायां,
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य।
मुखकमलसमीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं,
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः।।
समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये।।

(इति नववारं, श्रीदेव्या आचूडम् आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्)।

३ श्रीललितायै छत्रं कल्पयामि नमः ।।५६।।
३ श्रीललितायै चामरयुगलं कल्पयामि नमः।५७।।
३ श्रीललितायै दर्पणं कल्पयामि नमः। ।५८।।
३ श्रीललितायै तालवृन्तं कल्पयामि नमः। ।५९।।
३ श्रीललितायै गन्धं कल्पयामि नमः। ।६०।।
३ श्रीललितायै पुष्पं कल्पयामि नमः। ।६१।।
३ श्रीललितायै धूपं कल्पयामि नमः। ।६२।।
३ श्रीललितायै दीपं कल्पयामि नमः। ।६३।।

नैवेद्यम्–

(देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरस्रमण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय, मूलेन प्रोक्ष्य, वं इति बीजोच्चारणपूर्वकं धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, मूलेन त्रिवारम् अभिमन्त्र्य आपोशनं च दत्त्वा)–

३ श्रीललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः।।६४।। (इति निवेदयेत्)।

(अथ श्रीललितायै पानीयम् उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं गण्डूषम् आचमनीयं ताम्बूलं च कल्पयेत्। ततोऽभिवन्द्य नैवेद्यं नैर्ऋत्यां स्थापयित्वाऽस्त्रेण भूमिं शोधयेत्)।

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ऐं (इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्शयेत्।)

'षोडश्युपासकास्तु ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः' इति (त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः)।

चतुरायतनपूजा

नित्योत्सवे तु, तत्तद्देवतामन्त्रैः तर्पणमात्रमेव। विस्तरेणापि लिख्यते। यथेच्छं विधेयम्।

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च ।
ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेत् ।।

श्रीमहागणपतिपूजा

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल–
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः।।

श्रीमहागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि। महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

गं सुमुखाय	नमः	गं धूम्रकेतवे	नमः
गं एकदन्ताय	नमः	गं गणाध्यक्षाय	नमः
गं कपिलाय	नमः	गं फालचन्द्राय	नमः
गं गजकर्णकाय	नमः	गं गजाननाय	नमः
गं लम्बोदराय	नमः	गं वक्रतुण्डाय	नमः
गं विकटाय	नमः	गं शूर्पकर्णाय	नमः
गं विघ्नराजाय	नमः	गं हेरम्बाय	नमः
गं विनायकाय	नमः	गं स्कन्दपूर्वजाय	नमः

श्रीमहागणतपये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।।

३ 'गणपतिमूलं' महागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सन्तर्पयेत्।।

महागणपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्। महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहागणपतिः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

सूर्यपूजा

अध्यारूढं रथेन्द्रे वसुदलसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये
भास्वन्तं भास्करं तं शुभदमसिगदाशङ्खचक्राब्जयुग्मम्।
वेदाकारं त्रिमूर्तिं त्रिविधनयगुणं विश्वरूपं पुराणं
ह्रांह्रींहूङ्काररूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्धृत्सरोजे।।

आदित्यं ध्यायामि। आवाहयामि। आदित्याय नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

ॐ मित्राय नमः
ॐ रवये नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ भानवे नमः
ॐ खगाय नमः
ॐ पूष्णे नमः
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
ॐ नीलरुचये नमः
ॐ आदित्याय नमः
ॐ सवित्रे नमः
ॐ अर्काय नमः
ॐ भास्कराय नमः

आदित्याय नमः नानाविधपरीमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।।

३ 'आदित्यमूलं' आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिःसन्तर्पयेत्।।

आदित्याय नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्। आदित्याय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मक आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

विष्णुपूजा

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

श्रीमहाविष्णुं ध्यायामि। आवाहयामि। महाविष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

ॐ	केशवाय	नमः	ॐ	त्रिविक्रमाय	नमः
ॐ	नारायणाय	नमः	ॐ	वामनाय	नमः
ॐ	माधवाय	नमः	ॐ	श्रीधराय	नमः
ॐ	गोविन्दाय	नमः	ॐ	हृषीकेशाय	नमः
ॐ	विष्णवे	नमः	ॐ	पद्मनाभाय	नमः
ॐ	मधुसूदनाय	नमः	ॐ	दामोदराय	नमः

महाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।।

३ 'अष्टाक्षरी' महाविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति त्रिःसन्तर्पयेत्।

महाविष्णवे नमः। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

महाविष्णवे नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।

शिवपूजा

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्कारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम्।
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम्।।

साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि। परमेश्वराय नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि।

ॐ भवाय देवाय नमः ॐ रुद्राय देवाय नमः
ॐ शर्वाय देवाय नमः ॐ उग्राय देवाय नमः
ॐ ईशानाय देवाय नमः ॐ भीमाय देवाय नमः
ॐ पशुपतये देवाय नमः ॐ महते देवाय नमः

परमेश्वराय नमः। नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

३ 'पञ्चाक्षरी' साम्बपरमेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति त्रिःसन्तर्पयेत्।।

परमेश्वराय नमः। धूममाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। परमेश्वराय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारस्देवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान् सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु।।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम्।।
इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्याः वामहस्ते पूजां समर्पयेत्।

लयाङ्गपूजा

३ (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी–पराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इति बिन्दौ देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्)।

षडङ्गार्चनम्

(देव्यग्रे बिन्दौ अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च–)

३ ऐं क–५ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्लीं ह–६ शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सौः स–४ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं क–५ कवचाय हुं कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्लीं ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

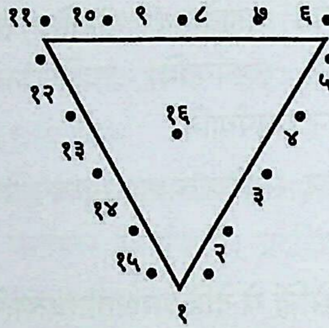
३ सौः स–४ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(षोडश्युपासकानां तु षोडशीषट्कूटेन षडङ्गपूजा)।

नित्यादेवीयजनम्

३ अः (पञ्चदशी) अः श्रीललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (इति बिन्दौ महानित्यां त्रिर्यजेत्)।

(अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रिर्यजेत्। ततश्च पूर्ववत् महानित्यां त्रिर्यजेत्)।



ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण 'अं आं इं ईं उं' इति पूर्वरेखायां, आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं' इति उत्तररेखायां, ईशानादिवारुण्यन्तं 'एं ऐं ओं औं अं' इति पञ्च पञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत्। बिन्दौ षोडशं स्वरं 'अः' इति विचिन्त्य महानित्यां यजेत्)। यथा–

३ 'अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः' अं कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं' आं भगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा' इं नित्यक्लिन्नानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा' ईं भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः' उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं' ऊं महावज्रेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः' ऋं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ॠ ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट्' ॠ त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'लृं ऐं क्लीं सौः' लृं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'लॄं ह्स्क्ल्ऱ्डैं ह्स्क्ल्ऱ्डीं ह्स्क्ल्ऱ्डौः' लॄं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं' एं नील-पताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ऐं भ्म्र्यूं' ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ओं स्वौं' ओं सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा' औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'अं च्क्रौं' अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'अः (पञ्चदशी)' अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(एवं शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादि-चित्रान्ताः कृष्णपक्षे तु चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः स्वस्वमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य बिन्दौ महानित्यां यजेत्)।

गुरुमण्डलार्चनम्

३ परौघेभ्यो नमः। (इति बिन्दुत्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बिन्दौ महापादुकां यजेत्)। तथा-

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(त्रिकोणे वामकोणादारभ्य पूर्वरेखायाम्) -

३ उड्डीशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ प्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

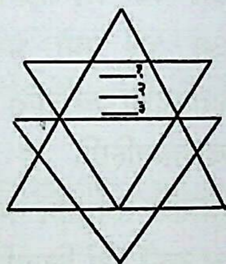
३ विमर्शानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ आनन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(दक्षकोणादारभ्य दक्षरेखायां)

३ षष्ठीशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ज्ञानानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ सत्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पूर्णानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(स्वाग्रकोणादारभ्य वामरेखायां)
३ मित्रेशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ स्वभावानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ प्रतिभानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ सुभगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहित-प्रागग्रत्रिकोणपश्चिमरेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवतासन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिणसंस्था-क्रमेण दिव्यसिद्धमानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेद-वसुसङ्ख्यं समर्चयेत्)। यथा-



३ दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः। (इति पुष्पाञ्जलिः)
(दिव्यौघः। प्रथमरेखायां-)
३ परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ परशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पराशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ कौलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ शुक्लदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ कुलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(सिद्धौघः। द्वितीयरेखायां-)
३ भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लिन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ समयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(मानवौघः। तृतीयरेखायां-)

३ गगनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ विमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ मदनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ भुवनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लीलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ प्रियानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, तृतीयरेखायां स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत्)।

आवरणपूजा

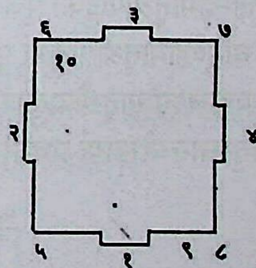
३ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे।।

प्रथमावरणम्

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः।

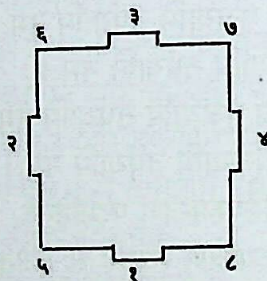
(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्)।

(ततः क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखा-त्रयस्य लकारप्रकृतिंकपृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादि-द्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वेशानयोश्च मध्ये-क्रमेण)

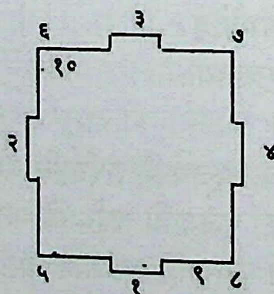


३ अं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ पं प्राप्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ सं सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत्। एवमुत्तरत्रापि)।
(अथ चतुरस्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु च क्रमेण-)



३ आं ब्राह्मीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ ईं माहेश्वरीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऊं कौमारीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॠं वैष्णवीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॡं वाराहीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऐं माहेन्द्रीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ औं चामुण्डामातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अः महालक्ष्मीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण)



३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ह्स्खफ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(अणिमासिद्धेः पुरतः-)

३ अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अं अणिमासिद्धि[1]श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रां (इति सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्श्य-)
३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

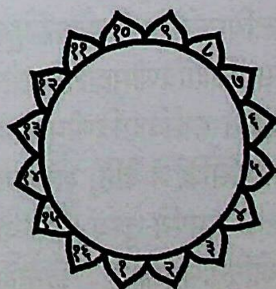
(इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य-)

३ प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवताहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

द्वितीयावरणम्

३ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिकषोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन)



---

1. चक्रेश्वर्याः दक्षे सिद्धिः, वामे मुद्रा एवमुत्तरत्रापि।

३ अं कामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ इं अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लॄं धैर्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ओं बीजाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ औं आत्माकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अं अमृताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ अः शरीराकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टा सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(कामाकर्षिण्याः पुरतः-)

३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रीं (इति सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य-)
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य)
३ गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुर-सुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

तृतीयावरणम्

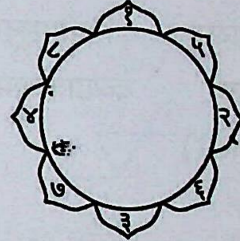
३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(हकारप्रकृतिक–अष्टमूर्त्यात्मक–

शिवाभिन्ने जपाकुसुममित्रे अष्टपत्रे

श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु

आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण–)



३ कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

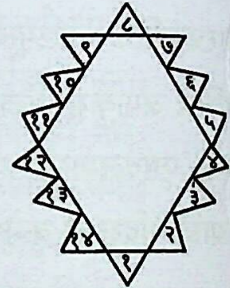
(अनङ्गकुसुमायाः पुरतः)

३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्लीं (इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य–)
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तृतीयावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य–)
३ गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

तुरीयावरणम्

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(ईकारप्रकृतिचतुर्दशभुवनात्मक-महामायारूपे दाडिमीप्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन)

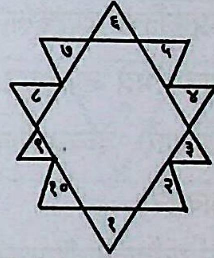


३ कं सर्वसंक्षोभिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ खं सर्वविद्राविणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ गं सर्वाकर्षिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ घं सर्वाह्लादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ङं सर्वसम्मोहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ चं सर्वस्तम्भिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ छं सर्वजृम्भिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ जं सर्ववशङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ झं सर्वरञ्जिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ञं सर्वोन्मादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ टं सर्वार्थसाधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ डं सर्वमन्त्रमयीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)
(सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः-)
३ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ब्लूं (इति सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य-)

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तुरीयावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य–)

३ सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

पञ्चमावरणम्



३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः।
(पुष्पाञ्जलिः)

(एकारप्रकृतिकदशावतारात्मकविष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन)

३ णं सर्वसिद्धिप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ तं सर्वसम्पत्प्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ थं सर्वप्रियङ्करीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ दं सर्वमङ्गलकारिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ धं सर्वकामप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

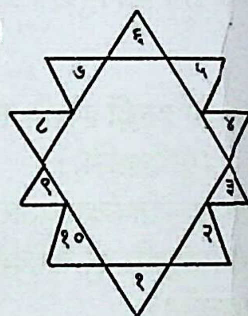
(सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः–)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः
३ सः (इति सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य–)
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य–)

३ कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

षष्ठावरणम्

३ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)



(रेफप्रकृतिक–दशकलात्मक–वैश्वानराभिन्ने जपासुमनःसहचरे अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन)

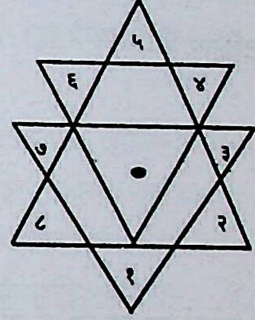
३ मं सर्वज्ञादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ यं सर्वशक्तिदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ लं सर्वज्ञानमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ शं सर्वाधारस्वरूपादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ षं सर्वपापहरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ सं सर्वानन्दमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(सर्वज्ञायाः पुरतः–)
३ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ पं प्राकाम्यसिद्धि –श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति –श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ क्रों (इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य)
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य–)

३ निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

सप्तमावरणम्

३ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)



(ककारप्रकृतिक–अष्टमूर्त्यात्मक–कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन –)

३ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कं खं गं घं ङं क्ल्हीं कामेश्वरी–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोदिनी–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनी–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी–वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) (वशिन्याः पुरतः) –

३ ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ भुं भुक्तिसिद्धि –श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्ख्फ्रें (इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य–)

३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**

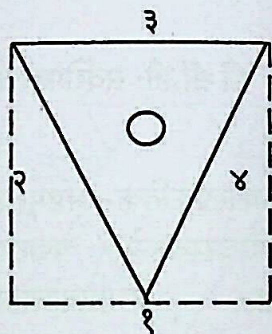
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्। (इति पूजां समर्प्य)

३ रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-
महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

अष्टमावरणम्

मध्यत्र्यस्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु

प्रादक्षिण्येन-



३ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरी-
कामेश्वरबाणेभ्यो नमः। बाणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः।
धनुःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः।
पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ क्रो क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः।
अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
इत्यायुधार्चनं विदध्यात्। ततः-

३ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौं सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्पबन्धुकिरणे त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण-)

३ ऐं क-५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक-
आत्मतत्त्व-सृष्टिकृत्य-जाग्रद्दशाधिष्ठायक-इच्छाशक्ति-वाग्भवात्मक-
वागीश्वरीस्वरूप-ब्रह्मात्मशक्ति-महाकामेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः।

३ क्लीं ह-६ सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथदशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मक-
विद्यातत्त्व-स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक-

कामकलास्वरूप–विष्णवात्मशक्ति–महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ सौः स–४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ–अष्टदलषोडशदलचतुरस्रचक्रात्मक–शिवतत्त्व–संहारकृत्य–सुषुप्तिदशाधिष्ठायक–क्रियाशक्ति–शक्तिबीजात्मक–परापरशक्तिस्वरूप–रुद्रात्मशक्ति–महाभगमालिनी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं क–५ क्लीं ह–६ सौः स–४ परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ–समस्तचक्रात्मक–सपरिवार–परमतत्त्व–सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य–तुरीय–दशाधिष्ठायक–इच्छाज्ञानक्रिया–शान्ताशक्ति–वाग्भवकामराजशक्ति–बीजात्मक–परमशक्तिस्वरूप–परब्रह्मात्मशक्ति–श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी–श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(महाकामेश्वर्याः पुरतः–)

३ ह्स्रैं हस्क्लीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्सौः–सर्वबीजामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्सौः (इति सर्वबीजामुद्रां प्रदर्श्य–)

३ **अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्॥ (इति पूजां समर्प्य–)

३ अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

नवमावरणम्

३ क–१५ सर्वानन्दमयचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(बिन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मके बिन्दुचक्रे–)

३ ("मूलं") श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (इति त्रिः सन्तर्प्य-)

३ एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाऽस्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) (महात्रिपुरसुन्दर्याः पुरतः-)

३ 'पञ्चदशी' श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ पं प्राप्तिसिद्धि -श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति -श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं (इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य)

षोडश्युपासकानाङ्कृते विशेषः -

३ हसकल हसकहल सकलह्रीं तुरीयाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (इति त्रिः सन्तर्प्य)

३ सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायकशान्त्यतीत-कलात्मकप्रकाशविमर्शसामरस्यात्मकपरब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाऽस्तु नमः। (इति समष्ट्यञ्जलिं विधाय)

३ सं सर्वकामसिद्धि - श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः इति सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

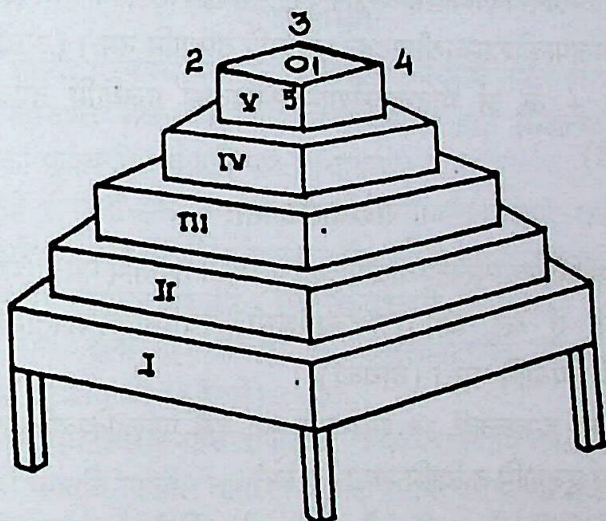
३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः (इति सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्श्य।) ततः समर्पणम्।

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।। (इति पूजां समर्प्य-)

३ परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।)

पञ्चपञ्चिकापूजा

(बिन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वाय्वीशानाग्निनिरृतिकोणेषु च क्रमेण यजेत्।)



पञ्चलक्ष्म्यः

३ (मूलं) श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।(मध्ये)

३ श्रीं लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं क्लीं, त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (आग्नेये)

३ श्रीं सहकलह्रीं श्रीं, सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैरृते)

पञ्चकोशाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ ॐ ह्रीं हंसस्सोहं स्वाहा। परंज्योतिःकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ॐ हंसः, परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ हंसः, अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (आग्नेये)

३ अं आं + ळं क्षं मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैरृत्ये)

पञ्चकल्पलताः

३ (मूलं) श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ॐ ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ह्स्रैं पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (आग्नेये)

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः, पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैरृत्ये)

पञ्चकामदुघाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।(मध्ये)

३ ॐ ह्रीं हंसः जुं सञ्जीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा। अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः सुधाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (आग्नेये)

३ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा। अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैर्ऋत्ते)

पञ्चरत्नाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्यारत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मध्ये)

३ ज्झ्रीं महाचण्डे तेजः सङ्कर्षिणि कालमन्थाने हः, सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीराजमातङ्गेश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्ट-मृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। श्रीराजमातङ्गीश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं श्रीं, भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।(आग्नेये)

३ ऐं ग्लौं ऐं भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा। वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (नैर्ऋते)

षड्दर्शनविद्या

३ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा, तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (भूगृहत्रये)

३ (गायत्री) परोरजसे सावदोम्, ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (षोडशदले)

३ ॐ ह्रीं नमश्शिवाय रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (चतुर्दशारे)

३ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्योम्, सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (द्विदशारे)

३ ॐ नमो नारायणाय, विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (अष्टारे)

३ श्रीं ह्रीं श्रीं, भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (त्रिकोणे)

षडाधारपूजा

३ सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथस्वरूपिण्यै नमः, गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कां सोऽहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः, ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ लां हंसस्सोऽहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः, विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिव-स्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ डां सोऽहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वर-स्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ हां हंसश्शिवस्सोऽहं सोऽहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै हाकिनीसहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

आम्नायसमष्टिपूजा

३ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः, पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (सृष्ट्यात्मके चतुरस्रषोडशदलाष्टदलात्मके पूर्वाम्नाये)

३ (मूलम्) गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशतिसहस्र-देवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुर-सुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्स्रौः, दाक्षणाम्नायसमयविद्येश्वरी-भोगिनी-देव्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (मन्वस्रद्विदशारात्मके स्थित्यात्मके दक्षिणाम्नाये)

३ (मूलम्) भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्यादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्तात्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरिपीठस्थितायै दक्षिणाम्ना-

यसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ हस्रैं हस्क्लीं हस्रौं हस्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं हस्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे हस्रैः हस्ख्फ्रें हस्रौः पश्चिमाम्नायसमय-विद्येश्वरी-कुब्जिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (अष्टारत्र्यस्रसंहारात्मके पश्चिमाम्नाये)

३ (मूलम्) दशदूती-मण्डलत्रय-दशवीर-चतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमा-म्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (बिन्दुचक्रे उत्तराम्नाये)

३ हस्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नायसमयविद्येश्वरी कालिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (बिन्दौ)

३ (मूलम्) नवमुद्रापञ्चवीरावलिसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्र-देवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

षोडश्युपासकानाम्

३ मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (बिन्दौ)

३ (मूलम्) श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्ताशीति-सहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रें हस्रौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (बिन्दौ)

३ (मूलम्) परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादिश्रीपूर्तिविद्यासहितानन्ता-नन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(ततः बाला-अन्नपूर्णा-अश्वारूढामन्त्रैः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्)।

दण्डनाथानामार्चनम्

३ पञ्चम्यै	नमः	३ पोत्रिण्यै	नमः
३ दण्डनाथायै	नमः	३ शिवायै	नमः
३ सङ्केतायै	नमः	३ वार्ताल्यै	नमः
३ समयेश्वर्यै	नमः	३ महासेनायै	नमः
३ समयसङ्केतायै	नमः	३ आज्ञाचक्रेश्वर्यै	नमः
३ वाराह्यै	नमः	३ अरिघ्न्यै	नमः

मन्त्रिणीनामार्चनम्

३ सङ्गीतयोगिन्यै	नमः	३ वीणावत्यै	नमः
३ श्यामायै	नमः	३ वैणिक्यै	नमः
३ श्यामलायै	नमः	३ मुद्रिण्यै	नमः
३ मन्त्रनायिकायै	नमः	३ प्रियकप्रियायै	नमः
३ मन्त्रिण्यै	नमः	३ नीपप्रियायै	नमः
३ सचिवेशान्यै	नमः	३ कदम्बेश्यै	नमः
३ प्रधानेश्यै	नमः	३ कदम्बवनवासिन्यै	नमः
३ शुकप्रियायै	नमः	३ सदामदायै	नमः

ललितानामार्चनम्

३ सिंहासनेश्यै	नमः	३ कामेश्यै	नमः
३ ललितायै	नमः	३ परमेश्वर्यै	नमः
३ महाराज्ञ्यै	नमः	३ कामराजप्रियायै	नमः
३ वाराङ्कुशायै	नमः	३ कामकोटिकायै	नमः
३ चापिन्यै	नमः	३ चक्रवर्तिन्यै	नमः
३ त्रिपुरायै	नमः	३ महाविद्यायै	नमः
३ महात्रिपुरसुन्दर्यै	नमः	३ शिवायै	नमः
३ सुन्दरीचक्रनाथायै	नमः	३ अनङ्गवल्लभायै	नमः
३ सम्राज्ञ्यै	नमः	३ सर्वपाटलायै	नमः
३ चक्रिण्यै	नमः	३ कुलनाथायै	नमः
३ चक्रेश्यै	नमः	३ आम्नायनाथायै	नमः
३ महादेव्यै	नमः	३ सर्वाम्नायनिवासिन्यै	नमः

ॐ शृङ्गारनायिकायै नमः

(अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिना-अर्चनं कुर्यात्।)

इति पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूपदीपौ कल्पयित्वा, सर्वसंक्षोभिण्यादि-सबीजामुद्राः प्रदर्श्य,

धूपः

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवास-सम्मिश्रितैः,
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषाऽऽलोडितैः।
श्रीखण्डागुरु-गुग्गुलप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः
धूपं ते परिकल्पयामि जननि! त्वं धूपमङ्गीकुरु।।
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दीपराभट्टारिकायै धूपमाघ्रापयामि नमः।

श्वेतकृष्णागरू लाक्षा गुग्गुलुश्चन्दनं घृतम्।
मधु बिल्वफलं रालः कर्पूरश्च दशाङ्गकम्।।

दीपः

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै दीपं दर्शयामि नमः।

महानैवेद्यार्पणम्

एवं सर्वसंक्षोभण्यादिमुद्राः सबीजाः प्रदर्श्य मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत्। यथा-

श्रीदेव्यग्रे चतुरस्रमण्डलं सामान्यार्घ्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्यकांस्यादिस्थालीचषकभरितं भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकं सद्रव्य-शुद्ध्यादिरसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं निधाय- "मूलेन" निरीक्ष्य

('स्विन्नं वामे आमं दक्षिणे निदध्यात्' इति *श्यामारहस्ये* दृष्टम्। *सुन्दरीमहोदये* तु 'देव्या वामे दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्' इत्युक्तम्।)

ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रोक्ष्य–

३ ऐं ह्रः–इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य–

३ ॐ जुं सः वौषट्–इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य–

३ यं–इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य

३ रं इति वह्निबीजेनाधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य

३ वं–इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य–(मूलेन) सप्तवारमभिमन्त्र्य–

३ ॐ क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं परश्रीं–इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य–

देव्यै पाद्यम्, अर्घ्यम् आचमनीयं च दत्त्वा–

३ (मूलेन) देवीं त्रिः सन्तर्प्य–

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चिद् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः। इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य, कृताञ्जलिः–

३ हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।।
शर्करापायसापूप–घृतव्यञ्जन–संयुतम्।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम्।। (इति निवेद्य)

अमृतोपस्तरणमसि–इति देव्यै आपोशनं दत्त्वा वामकरेण ग्रासमुद्रां दर्शयन्, दक्षकरेण प्राणादि–पञ्चमुद्राः प्रदर्शनपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत्। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ क्लीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः व्यानाय स्वाहा,
३ ऐं क्लीं उदानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा, ३ ब्रह्मणे स्वाहा।
३ कएईलह्रीं नमः, आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।
३ हसकहलह्रीं नमः, विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

३ सकलह्रीं नमः, शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

३ कएईलह्रींहसकहलह्रीं सकलह्रीं नमः, सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

(इति किञ्चित् किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं समर्पयेत्, प्रार्थयेच्च।)

३ चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत्।।
मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

-इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तदात्म्येन समर्पयेत्।

अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम्।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब! पीयताम्।।

३ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम्।
अमृतानन्द-सम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्।।

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै अमृतपानीयं समर्पयामि।
ततो भुञ्जानां परदेवतां ध्यायेत्-

३ ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद्,
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः।
नर्मक्रीडा-प्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्,
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री।।

इति निमीलितनयनः क्षणमवस्थाय देवीं भुक्तवतीं सुतृप्तां ध्यात्वा-

३ अमृतापिधानमसि। इत्युत्तरापोशनं दत्त्वा-

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनम् आचमनीयं च कल्पयामि नमः।

(ताम्रबलिपात्रे निवेदनसामग्रीः किञ्चित् किञ्चिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलमस्त्रेण शोधयेत्।)

ताम्बूलम्

३ वनस्पतिदैवत्याय ताम्बूलाय नमः। इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य-

३ तमाल-दल-कर्पूर-पूगभाग-समन्वितम्।
एलापत्र-सुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ताम्बूलवल्लिदलनिर्जितहेमवर्णं स्वर्णाक्तपूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम्।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं, ताम्बूलमम्ब! वदनाम्बुरुहे गृहाण।।

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै मुखमण्डनार्थं ताम्बूलं कल्पयामि नमः।।

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवन-कमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां,
जननि! कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि।।

इति च विभाव्य-

नीराजनम्

ततः सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्करेखात्मकम्, अष्टदलकमलकर्णिका-स्थापित-मणिमयस्वर्ण-रजत-ताम्रपात्रदीपं कर्पूरं च-प्रज्वाल्य पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकं नीराजयेत्, रत्नेश्वरीविद्यया अभिमन्त्र्य, नवचक्रेश्वरीमन्त्रैः, तथा ललिता-नीराजनपद्यैः निराजनं कुर्यात्।

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये।।
रत्नालङ्कृत-हेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै-
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः ।
आताम्रज्वलदुज्ज्वलज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः।।
महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्,
डमरु-सदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान्।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै-
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्त्तिकं ते।।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।।
(इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्।)

मन्त्रपुष्पम्

अथाञ्जलौ पुष्पाण्यादाय मन्त्रपुष्पम्। यथा)–

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस–
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः।।[1]

(इति, उक्त्वा पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् प्रदक्षिणां नमस्कारांश्च)–

प्रदक्षिणा

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि–फलं ददाति।
तां सर्वपापक्षय–हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।
(इति प्रदक्षिणां विभाव्य[2] नमस्कुर्यात्–)

रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानी–पदपङ्कजाभ्याम्।।

कञ्जासनादि–सुरवृन्दलसत्किरीट–
कोटिप्रघर्षण–समुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे ।
त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं,
दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन।।

सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंसमानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतुः।।

महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं, स्वतो न्यस्तबिन्दुं स्वयं न्यस्तहार्दम्।
भवद्वक्त्र–वक्षोज–गुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद् भावयेत् स त्वमेव।।

---

1. इत्येते कतिचिच्चतुष्षष्ट्युपचारातिरिक्ता उपचारास्तु पूर्ववत् धूपदीपेतिसूत्रगतेनादिपदेन गृह्यन्ते।
2. अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमा।

वेदार्धचन्द्रवह्न्यद्रिसङ्ख्याः स्युः सर्वसिद्धये।।

तथाऽन्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः।।
मिहिरबिन्दुमुखीं तदधो लसच्छशि–हुताशन–बिन्दुयुगस्तनीम्।
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम्।।

कालकलाध्यानम्

(अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्तनौ सपरार्धेन योनिरिति सानुस्वारे तुरीयस्वरे कामकलात्मिकां ध्यात्वा, सौः इति देवीशक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत्।)

होमस्य कृताकृतत्वम्

(अथ होमः। स च "यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः" इति सूत्रगतेन "यदि" इति पदेन कृताकृतः सूचितः। तस्य च करणपक्षे तदितिकर्तव्यता होम–प्रकरणाद् ज्ञातव्या। तत्र च महाव्याहृतिहोमादर्वागेव बलिदानम्।)

(होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम्)

बलिदानविधिः

(देव्या दक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण–वृत्त–चतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य)

३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः।

(इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं, पात्रं तत्र विन्यस्य)।

'३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा'।

(इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्त्वा, वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य प्रणमेत्।)

इति बलिदानविधिः।

अथ जपप्रकरणोक्तविधिना जपं निर्वर्त्य स्तुवीत।

पुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस–
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले,
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः।।१।।

समस्तमुनियक्षकिम्पुरुषसिद्धिविद्याधर–
गुहासुर–सुराप्सरो–गणमुखैर्गणैः सेविते ।
निवृत्तितिलकाम्बरप्रकृतिशान्तिविद्याकला–
कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥२॥
त्रिवेदकृतविग्रहे त्रिविधकृत्यसन्धायिनि,
त्रिरूपसमवायिनि त्रिपुरमार्गसञ्चारिणि ।
त्रिलोचनकुटुम्बिनि त्रिगुणसंविदुद्यत्पदे,
त्रयि त्रिपुरसुन्दरि त्रिजगदीशि पुष्पाञ्जलिः॥३॥
पुरन्दर–जलाधिपान्तक–कुबेररक्षोहर–
प्रभञ्जनधनञ्जय–प्रभृतिवन्दना–नन्दिते ।
प्रवालपदपीठिका–निकटनित्य–वर्तिस्वभू–
विरिञ्चिविहितस्तुते विहत एष पुष्पाञ्जलिः॥४॥
यदानतिबलादलङ्कृतिरुदेति विद्यावय–
स्तपोद्रविण–सौरभाकृति–कवित्वसंविन्मयी ।
जरामरणजन्मजं भयमपैति तस्यै समा–
हिताखिलसमीहितप्रसवभूमि तुभ्यं नमः॥५॥
निरावरण–संविदुद्गम–परास्तभेदोल्लस–
त्पदास्पदचिदेकतावरशरीरिणि स्वैरिणि ।
रसायनतरङ्गिणी–रुचितरङ्ग–सञ्चारिणि,
प्रकामपरिपूरणि प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः॥६॥
तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदं,
सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा,
शिवङ्करि शिवे परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः॥७॥
त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा,
त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला ।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिलायतिस्त्वं गुरुः,
प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः॥८॥

इति पुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्।

श्रीललितामहात्रिपुरासुन्दर्यै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि–
र्लक्ष्मीः स्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले,
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्।। १।।
एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते,
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सान्निध्यमुद्य–दरुणायत–सोदरस्य,
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य।। २।।
ईशित्वभावकलुषाः कति नाम सन्ति,
ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते,
यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति।। ३।।
लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं,
कारुण्यकन्दलित–कान्तिभरं कटाक्षम्।
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः,
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ।। ४।।
ह्रीङ्कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदाः,
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय,
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः।। ५।।
हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः,
क्रूरः कथं नु भविता गरलस्य वेगः।
आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्धं,
देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ।। ६।।
सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते,
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं,
द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति।। ७।।
कल्पद्रुमैरभिमत–प्रतिपादनेषु,

कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः ।

आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं,
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम्।। ८।।
हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये,
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि,
त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव।। ९।।
लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित्।
नूनं मयापि सदृशं करुणैकपात्रं,
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा।। १०।।
ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानां,
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीट-मदवारण-माननीयां-
स्तान् सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः।। ११।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि,
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितौघहरोद्यतानि,
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्।। १२।।
कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य,
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशाङ्कुशैक्षव-शरासन-पुष्पबाणा,
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका।। १३।।
लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं,
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं,
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम्।। १४।।
ह्रीङ्कारमेव तव धाम तदेव रूपं,
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसा परिणतं जगदादिमूलं,
सङ्गं तनोतु सरसीरुहसङ्गमस्य।। १५।।
ह्रीङ्कारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं,

स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।

तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी,
वाणीनिर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः।। १६।।

सर्वसिद्धिकृत्स्तोत्रम्

३ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि, मातृकां पीठरूपिणीम्।। १।।
प्रणमामि महादेवीं, मातृकां परमेश्वरीम्।
कालहल्लोहलोल्लोलकलनाशमकारिणीम् ।। २।।
यदक्षरैकमात्रेऽपि, संसिद्धे स्पर्धते नरः।
रविताक्ष्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ।। ३।।
यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम्।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं, महाश्रीसिद्धमातृकाम्।। ४।।
यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम्।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं, तां वन्दे सिद्धिमातृकाम्।। ५।।
यदेकादशमाधारं, बीजं कोणत्रयोद्भवम्।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं, जगदद्यापि दृश्यते।। ६।।
अकचादिटतोन्नद्धपयशाक्षरवर्गिणीम्।
ज्येष्ठाङ्गबाहुहृत्पृष्ठकटिपादनिवासिनीम् ।। ७।।
तामीकाराक्षरोद्धारां, सारात् सारां परात्पराम्।
प्रणमामि महादेवीं, परमानन्दरूपिणीम्।। ८।।
अद्यापि यस्या जानन्ति, न मनागपि देवताः।
केयं कस्मात् क्व केनेति, सरूपारूपभावनाम्।। ९।।
वन्दे तामहमक्षय्यामकाराक्षररूपिणीम् ।
देवीं कुलकलोल्लासप्रोल्लसन्तीं परां शिवाम्।। १०।।
वर्गानुक्रमयोगेन, यस्यां मात्रष्टकं स्थितम्।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्ध्यष्टकेश्वरीम् ।। ११।।
कामपूर्णजकाराख्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम्।
चतुराज्ञाकोशमूलां नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ।। १२।।
इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत्।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तथ्यतः।।१३।।

क्षमाप्रार्थना

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।
जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना,
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा,
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम्।।
पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्बान्धवजनः,
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम्।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे,
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः।।
दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा,
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता,
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः।।
हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये,
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे,
हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम्।।
नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते,
नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये,
नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते।।
जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये,
जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे।
जय जय निखिलार्थदानशौण्डे,
जय जय हे ललिताम्ब चित्सुखाब्धे।।

श्रीगुरुस्तोत्रम्

षडङ्गदेवता नित्या दिव्याद्योघत्रयीगुरून्।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः।।

अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः।।
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे।। (नमः)
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ।। (नमः)
यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम्।।
बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम्।
मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम्।।

(एवमेवादिभिरन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिरखिललोकमातरमभिष्टूय शक्तिं पूजयेत्।)

सुवासिनीपूजनम्

यथा-प्राङ्निमन्त्रितां गौरीरूपिणीं दीक्षितां सुवासिनीं प्रक्षालितपादामासन उपवेशयेत्। सा चेददीक्षिता तदा 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः' इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा, इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यसलिलेन शक्तिं त्रिः सम्प्रोक्ष्य-

३ ॐ शान्तिरस्तु शिवश्चास्तु प्रणश्यत्वशुभश्च यत्।
यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु।।

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखां जपेत्। अथ तां देवतारूपां विभाव्य '३ ऐं क्लीं सौः शक्त्यै अमुकं समर्पयामि' इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुम-चन्दनपट्टवासः पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात्।

सा च दीक्षिता चेत्, समस्तप्रकटयोगिनीत्यादि समष्टिमन्त्रेण श्रीदेव्यै नवावरणदेवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्यास्तस्याः करे विशेषार्घ्यादमृतं पात्रान्तरे कृत्वा समर्पयेत्। (साप्युत्थाय तदादाय शिरसि गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुं त्रिरिष्ट्वा हृदि देवीञ्च सन्तर्प्य मूलेन गुर्वाज्ञां गृहीत्वा मूलान्ते 'सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा) इति मन्त्रेण सर्वतत्त्वं संशोधयेत्। ततश्च तस्याः पूजनं कुर्यात्।

अदीक्षिता चेदलिपात्रदानमेव मन्त्रेणानेन शक्त्यै समर्पयेत्-

३ अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगे देवि यशो देहि रिपून् दह।।

(साऽपि तत्सावशेषं स्वीकृत्य)

३ वत्स तुभ्यं मया दत्तं पीतशेषं कुलामृतम्।
त्वच्छत्रून् संहरिष्यामि तवाभीष्टं ददाम्यहम्।।
इति मन्त्रेण प्रतिदद्यात्।
(पश्चात्तां भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत्।)

तत्त्वशोधनम्

(सन्निहिते गुरौ गन्धमाल्यादिभिः सम्पूज्य पात्राणि समर्पयेत्)। असन्निहिते च स्वशिरसि गुरुपात्रामृतेन गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुत्रयं यजेत्। समुपस्थित-साधकेभ्यः पात्राणि दत्त्वा पश्चात् तत्त्वशोधनं विदध्यात्)।

३ क-५ प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अं-अः ३ क-५ आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। आत्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ ह-६ मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं......मं ३ ह-६ विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। अन्तरात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ स-४ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं............क्षं ३ स-४ शिवतत्त्वेन कार्मणमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३(मूलम्) प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाऽविद्या-रागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना-
अं आं........ळं क्षं (मूलम्) सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

ततः षोडश्युपासकानां पूर्णाभिषिक्तानां पञ्चमपात्रेण-
३ (मूलम्) पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ।।

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

(गुरौ सन्निहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्धा) चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान् निक्षिप्य–

३ देवनाथ गुरो स्वामिन्, देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो! पात्रं पूर्णतरं कुरु।।

(इति गुरवे समर्पयेत्। असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रे निक्षिपेत्)

पूजासमर्पणम्

(ततः सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदादाय–)

साधु वाऽसाधु वा कर्म, यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि! गृहाणाराधनं मम।।

इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य–

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
पाहि पाहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।

शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिः–परिभ्राम्य तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

देवतोद्वासनम्

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि, यन्मयाऽऽचरितं शिवे।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा, क्षमस्व परमेश्वरि।। (इति क्षमाप्य,)
रश्मिरूपा महादेव्यः पूजिता याश्च देवताः।
ललिताया वपुष्यत्र, लीनाः सन्तु सुखावहाः।।

(सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य, खेचरीं बद्ध्वोद्वास्य– निर्वाणमुद्रया श्रीयन्त्रस्थं पुष्पमुत्थाप्य नासिकयाऽऽघ्राय च शिरसि धारयेत्)

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह सुन्दरि।
प्रविश त्वं महादेवि, सर्वैरावरणैः सह।।

तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववद् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्तिं लब्धोपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभाव्य।

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा,
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः,
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः।।

इति विसर्जनम्।

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां, यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां, करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः।।

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः,
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था,
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्।।
शिवाद्यवनिपर्यन्तं, ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च, जगद्यज्ञेन तृप्यतु।।

(इत्यादि शान्तिश्लोकान् पठित्वा, विशेषार्घ्यविसर्जनं कुर्यात्)

यथा–विशेषार्घ्यपात्रं मूलेनामस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेणादाय

आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्यानि च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्यावस्थापयेत्।

(पुनः श्रीयन्त्रं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य–)

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा, कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते, हृदयकमलमध्ये देवि! हर्षं तनोतु।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा–

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे शिवं गुरुम्।।

इति परमशिवं महाकामेश्वरं सम्पूज्य–

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

इति महाविष्णुं पूजयेत्।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि!।
यत्कृतं तु मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

इति श्रीदेव्या वामहस्ते जलेन पूजां समर्प्य-
कृतेनानेन समर्चनेन महाकामेश्वराङ्कनिलया
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका प्रीयताम्।

ततः श्रीयन्त्राभिषेक-तर्पणं समर्पणजलेन स्वगात्रं मार्जयेत्।

शेषेण चन्दनेन स्वललाटे तिलकं विधाय स्वात्मानं श्रीचक्राभिन्नं भावयेत्।

अन्तर्निरन्तर-निरिन्धनमेधमाने, मोहान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिंश्चिदद्भुतमरीचिविकासभूमौ, विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्।।

इति च विभाव्य-

मायान्ततत्त्वे सदहं शिवोऽहं शक्त्यन्ततत्त्वे चिदहं शिवोऽहम्।
शिवान्ततत्त्वे सुखदः शिवोऽहमतः परं पूर्णमनुत्तरोऽहम्।।
धर्माधर्म-हविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा श्रुचा।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्ष-वृत्तीर्जुहोम्यहम्।।
प्रकाशकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी-स्रुचम्।
धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम्।।
देशिकवागुपदेशविनश्यद्देहमरुन्मय-शून्य-विकल्पः।
अद्वयबोध-विमर्शसुखः सनद्य शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि।।
(अतो यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत)।

षोडशानन्दनाथ (श्रीकरपात्रस्वामि)सङ्कलिते
श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीक्रमेनित्यसपर्याप्रकरणं सम्पूर्णम्।

श्रीक्रमे विशेषसपर्याप्रकरणम्

श्रीचक्रे त्रिवृत्तार्चनम्

हयग्रीवानन्दभैरवदक्षिणामूर्तिसम्प्रदायत्रये पार्थक्यं मत्वा स्वसम्प्रदाय-पुरस्सरं केचन न कुर्वन्ति, केचन च कुर्वन्ति तेभ्यस्त्रिवृतार्चनविधिरपि लिख्यते। सम्प्रदायविशेषज्ञानां रीत्या हयग्रीवसम्प्रदाये श्रीचक्रे वृत्तत्रयं नोल्लिख्यते। आनन्दभैरवसम्प्रदाये वृतत्रये लिखितेऽपि तत्रार्चनं न भवति। श्रीदक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये वृत्तत्रयमुल्लिख्यते पूज्यते च।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राय नमः।

(इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा संहारक्रमेण शुक्लारुणकृष्णवर्णरेखात्रयस्य मायाबीज-प्रकृतिकस्य गुणप्रकृति-परादि-वागात्मकस्य प्रथमवृत्तरेखायां देव्यग्रमारभ्या-प्रादक्षिण्येन-)

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कालरात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं खण्डिताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गायत्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं घण्टाकर्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं ङार्णाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं चण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं छायाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(८) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं जयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं झङ्कारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१०) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं ज्ञानरूपाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(११) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं टङ्कहस्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं ठङ्कारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं डामरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं ढङ्कारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं णार्णाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं तामसीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं स्थाण्वीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१८) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं दाक्षायणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(१९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं धात्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२०) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं नारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं फट्कारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं बन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं महामायाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं यशस्विनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रक्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२८) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लम्बोष्ठीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं वरदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३०) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं श्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं षण्ढाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिं नमः।
(३२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं हंसवतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं क्षमावतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्वितीयवृत्तरेखायामप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आकर्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं इन्द्राणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ईशानीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं उमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं ऊर्ध्वकेशीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ऋद्धिदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(८) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं ॠकाराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं लृकाराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१०) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं लॄंकाराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(११) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं एकपदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ऐश्वर्यात्मिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ओङ्काराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं औषधिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अम्बिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः अक्षराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तृतीयवृत्तरेखायामप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं भगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं नित्यक्लिन्नाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं भेरुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं वह्निवासिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं शिवदूतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(८) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं त्वरिताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं कुलसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१०) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(११) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नीलपताकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं विजयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सर्वमङ्गलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं ज्वालामालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१५) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं चित्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१६) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(१७) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

एता मातृकायोगिन्यस्त्रिवर्गसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु इति, तासां समष्ट्यर्चनं विधाय कालरात्र्याः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेशिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

गं गरिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्राशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्रां प्रदर्श्य-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्।।

एतद्रीत्या सर्वाशापरिपूरकचक्रे तृतीयावरणम्। तथा च दशावरणानि सम्पद्यन्ते।

अन्तश्चक्रन्यासेऽपि-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्यादिसहितमातृका-योगिनीरूपायै त्रिपुरेशिनीदेव्यै नमः।

इति त्रिवृत्तार्चनम्।

श्रीचक्रस्वरूपम्

अधः सहस्रारोपरि भागेसृष्टिस्थितिसंहारक्रमेण श्रीचक्रार्चनमधिकारभेदेन भवति।

यथोक्तम्-

स्थितिक्रमो गृहस्थस्य संहारो वनिनो यतेः।
ब्रह्मचारिण उत्पत्तिः स्त्रियः शूद्रस्य चेष्टतः।।

दक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये बिन्दुमारभ्यभूपुरपर्यन्तं सृष्टिक्रमेणार्चनम्। भूपुरमारभ्याष्टारपर्यन्तं पुनश्च बिन्दुमारभ्य चतुर्दशारं यावत् पूजनं स्थितिक्रमे। भूपुरमारभ्यबिन्दुपर्यन्तमर्चनं संहारक्रमे।

हयग्रीवानन्दभैरवसम्प्रदाययोश्च स्थितिक्रमे पूर्वं बिन्दुत्रिकोणकामेश्वर्या-दिनित्या-गुरुपङ्क्ति पूजनम्, तदनु भूपुरमारभ्य क्रमेणाष्टारत्रिकोणपूजनम्। अन्यत् समानम्।

बिन्दुमाभ्य अष्टदलपर्यतं सृष्टिचक्रम्, चतुर्दशारमाभ्यान्तर्दशारं यावत्, स्थितिचक्रम्, अष्टारमारभ्य बिन्दुं यावत् संहारचक्रम्, तादृक् चक्रत्रयस्य त्रिपुरस्वरूपत्वम्, तत्प्रधाननायिकात्वेन ललिता परान्बा त्रिपुरसुन्दरी प्रोच्यते।

भूपुर–वृत्त–त्रिकोणादपरे गुणत्रयकालत्रयावस्थात्रयलोकत्रयादिबोधकाः। बिन्दुस्तुरीयरूपस्तुरीयातीतरूपो वा। पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यात् श्रीचक्रस्य–ब्रह्माण्डरूपत्वं पिण्डरूपत्वञ्च। प्रणवस्वरूपशब्दब्रह्मणोऽपि प्रतीकस्वरूपं श्रीचक्रम्। तद्रीत्या (अ, उ, म्) इति नादविन्दुत्रयस्य प्रणवस्य जाग्रदाद्याश्चतस्रोऽवस्थाः वैखरीमध्यमा–पश्यन्ती–परारूपाणि, श्रीचक्रस्य सृष्टिस्थितिसंहारानाख्या–चक्रेष्वन्तर्भवन्ति। पञ्चमं कार्यकारणातीतं भासा चक्रात्मकं भवति।

शरीरस्य मूलाधार–स्वाधिष्ठान–मणिपूरानाहत–विशुद्ध्याज्ञारूपाणां चक्राणामपि श्रीचक्रावयवेष्वन्तर्भावः। भूपुर–त्रिवृत्तषोडशदलाष्टदलानां समुदायः सृष्टिचक्रं चतुर्दशारबहिर्दशारान्तर्दशाराणां समूहः स्थितिचक्रम् अष्टार–त्रिकोणबिन्दूनां समवायः संहारचक्रम्। तेषां समष्टौ द्वितीयबिन्दुं यावदनाख्या चक्रम्, तृतीयबिन्दुं यावत् भासाचक्रम्। श्रीकल्पे पञ्चानामेषां क्रमेण स्वाधिष्ठान–मणिपूर–अनाहत–विशुद्धि–आज्ञा–चक्रेष्वन्तर्भावः।

कालीक्रमे सृष्टिचक्रं मूलाधारे भवति।

तत्रापि– १. चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि।
२. चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः।
नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः।।

इत्यादिरीत्या त्रिकोणाष्टकोण–दशारद्वयं चतुर्दशारञ्च शक्तिचक्राणि। बिन्द्वष्टदलकमलषोडशदलकमल–चतुरस्रत्रयाणि चत्वारि शिवचक्राणि। त्रिकोणेनाष्टदलम् अष्टारेण षोडशदलम् अन्तर्दशार–बहिर्दशाराभ्यां भूपरं चतुर्दशारेण संश्लिष्टम्। तत एवैषामविनाभावसम्बन्धः।

त्रिकोणमष्टकोणञ्च दशकोणद्वयं तथा।
चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च।।
बिन्दुश्चाष्टदलं पद्मं पद्मं षोडशपत्रकम्।
चतुरस्रञ्च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात्।।
त्रिकोणे बैन्दवं श्लिष्टमष्टारेऽष्टदलाम्बुजम्।
दशारयोः षोडशारं भूगृहं भुवनास्रके।।

एवमेव श्रीविद्यापञ्चदश्यामपि ककारत्रयं हकारद्वयञ्च शैवो भागः। ह्रीङ्कारश्चोभयात्मकः। शेषाणि शक्त्यक्षराणि।

कत्रयं हद्वयश्चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः।
शेषाणि शक्त्यक्षराणि ह्रीङ्कार उभयात्मकः॥

बिन्दुचक्रे सत्यलोकः, त्रिकोणे तपोलोकः, अष्टकोणे जनलोकः अन्तर्दशारे महर्लोकः बहिर्दशारे स्वर्लोकः, चतुर्दशारे भुवर्लोकः, प्रथमवृत्ते भूलोकः।

अष्टदलेऽतलम्, अष्टदलबहिर्वृत्ते वितलम्, षोडशदलकमले सुतलम्, वृत्तत्रये तलातलम्, भूपुरप्रथमरेखायां महातलम्, द्वितीयरेखायां रसातलम्, तृतीयरेखायां पातालम्।

श्रीचक्रमहिमा

ब्रह्मेन्द्रादि देवाः, सूर्यचन्द्रादि ग्रहाः, अश्विन्यादि-नक्षत्राणि, मेषादि-राशयः, वस्वादयो नागाः, वरुणवैनतेयादयो मन्दारादयो वृक्षाः, रम्भाद्यप्सरसः, कपिलादयः सिद्धाः, वसिष्ठाद्याः मुनीश्वरा, कुबेरप्रमुखा यक्षाः, राक्षसाः गन्धर्वाः, किन्नराः विश्वावस्वादयो गायकाः, ऐरावताद्या गजेन्द्राः, उच्चैः श्रवसाद्या अश्वाः, हिमालयाद्याः पर्वताः, गङ्गाद्याः पुण्यनद्यः, सर्वे समुद्राः, सर्वाणि नगरराष्ट्राणि सर्वाण्येतानि श्रीचक्रोत्पन्नानि।

बिन्दुं ब्रह्मरन्ध्रे, त्रिकोणं मस्तके, ललाटे अष्टकोणम्, भ्रूमध्ये अन्तर्दशारम्, कण्ठे बहिर्दशारं, हृदये अन्तर्दशारं, कुक्षौ वृत्तं, नाभौ अष्टदलं, कट्याम् अष्टदलबहिर्वृत्तम्, स्वाधिष्ठाने षोडशदलम्, मूलाधारे बहिस्त्रिवृत्तं, जान्वोः भूपुरस्य प्रथमरेखा, जङ्घायां द्वितीयरेखा, पादयोः भूपुरस्य तृतीयरेखा।

त्रिपुरेशीमहायन्त्रं पिण्डात्मकमधीश्वरि।
यो जानाति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिर्विधिः॥
पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः।
ज्ञात्वा शम्भुफलावाप्तिः नाल्पस्य तपसः फलम्॥

—इति योगिनीहृदये

तथैव मन्त्रयन्त्रयोरप्यैक्यम्। लकारेण भूपुरं सकारेण षोडशदलम्, हकारेणाष्टमूर्त्यात्मकमष्टदलम्, भुवनेश्वरीरूपेणेकारेण चतुर्दशारम्, एकारेण दशावतारात्मकं बहिर्दशारम्, हृल्लेखागतेन रेफेणान्तर्दशारम्, ककारेणाष्टारम्, अर्धचन्द्रेण त्रिकोणम्, तदन्तर्गता [illegible] च तन्मयान्येव।

नादरूपाया अर्धमात्रायाः सकाशात् त्रिकोणा योनिरुत्पद्यते। बिन्दोर्बिन्दुचक्रम्। बिन्दुचक्रं च कामेश्वरस्वरूपम्, तदेव च विश्वाधारस्वरूपम्।

श्रीविद्यान्तर्गतलंबीजरूपाल्लकारात्पृथिवी–तदन्तवर्तिवृक्षपर्वतादय उत्पद्यन्ते। तत एव एकपञ्चाशत्पीठानि सर्वतीर्थानि गङ्गाद्या नद्यः पुण्यक्षेत्राणि चोत्पद्यन्ते। मन्त्रस्थितसकारात् चन्द्र–नक्षत्र–ग्रह–राश्यादय उत्पद्यन्ते।

गणेशग्रहनक्षत्र–योगिनीराशि– रूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।।

इति नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रात्।

हं बीजरूपादाकाशस्य, भुवनेश्वरीबीजरूपादीकाराच्चतुर्दशभुवनानामुत्पत्तिः। दशावतारविष्णुस्वरूप एकारः वैष्णवीशक्तिरूपः। रं बीजरूपो– रेफः परमज्योतिर्मयी पराशक्तिः। ककारात्सर्वकामपूरणी कामदा शक्तिर्गृह्यते। अर्धचन्द्रात् (ँ) विश्वयोनिर्गृह्यते। बिन्दोः (ं) महाकामेश्वरी व्यज्यते। बिन्दुरेव सर्वानन्दमयचक्रं तच्च ब्रह्माभिन्नम्। तत्रैव महाकामेश्वरीमहाकामेश्वरयोर्वासः। तत्पदार्थभूतं निर्गुणब्रह्म महाकामेश्वरः, त्वं पदार्थभूतः संविद्रूपः कूटस्थः साक्षी महाकामेश्वरीरूपः, तयोरभेद एव सामरस्यम्। तत एव ज्ञातृज्ञेययोरहन्तेदन्तोः प्रकाशविमर्शयोश्चैक्यम्। भूमिं बिन्दुचक्रं तत्रत्या परापरातिरहस्ययोगिनी भवति। तत्रैव तुरीयाम्बायजनम्। सर्वानन्दमयचक्रमेवोड्याणपीठोऽप्युच्यते। तत एवोड्याणपीठनिलयैव बिन्दुमण्डलवासिनी भवति।

जपविधिः

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्दभैरवाय ऋषये नमः (शिरसि), ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः (मुखे), ३ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदि) ३ ऐं बीजाय नमः (गुह्ये) ३ सौः शक्तये नमः (पादयोः)। क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), ३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः (करसम्पुटे) ऐं ह्रीं श्रीं (मूलविद्यया, सर्वाङ्गे त्रिर्व्यापकम्।) करन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्।
ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम्।

ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

एवं हृदयादिन्यासः। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं शिखायै वषट्।
ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम्।
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं अस्त्राय फट्।
भूर्भुवस्स्वरोम् (इति दिग्बन्धः।)
(अथ ध्यानम्। तच्च पूर्वोक्तमेव।)

(षोडश्युपासकानान्तु षोडशीमन्त्रस्य ऋषिच्छन्ददेवताः षडङ्गन्यासाः)।
(श्रीषोडशाक्षर्यास्तु–दक्षिणामूर्तिः ऋषिः। तत्र करषडङ्गन्यासयोः। तत्कूटषट्कमिति विशेषः)।

(ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरुदेवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत्)।

जपपूर्वाङ्गमन्त्राः

अथ ह्रीं (मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य) ३ ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा (इति द्वादशाक्षरीं कुल्लुकाविद्याम्), ततो (हृदयमुद्रया हृदि हस्तं दत्त्वा), ३ ॐ (इत्येकाक्षरं सेतुम्), (अथ कण्ठे न्यासमुद्रया) ३ ह्रीं (इत्येकाक्षरं महासेतुम्), (तदनु नाभौ पूर्वमुद्रयैव) ३ ॐ अं....क्षं (५१) ऐं (मूलं) ऐं अं....क्षं (५१) ॐ (इति एकविंशाधिकैकशताक्षरं निर्वाणमन्त्रं च त्रिस्त्रिर्जपेत्।)

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं (इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिर्जपेत्)।
३ ईं (इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिर्जपेत्)।
३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्य–परापरातिरहस्ययोगिनीभ्यो नमः (इति समष्टिमन्त्रं जपेत्)।
३ ई ए क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। (इति पञ्चदशाक्षरमुत्कीलनं सप्तवारं जपेत्)।

३ विद्युदक्षीं परां विद्यां, कालिकां देशभाषिणीम्।
खड्गमुण्डविकाराख्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम्।।
रक्तमाल्याम्बरधरां, घोररूपां चतुर्भुजाम्।
खड्गं शूलं कपालं च दधतीं तीक्ष्णनासिकाम्।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद्देवीं, सर्वविद्यासुजीविनीम्।।

(इति सञ्जीविनीं ध्यात्वा पञ्चधोपचर्य), ३ श्रीं क्लीं क्लीं हैं हैं क ल ह्रीं सौः ल स क ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं (इति सप्तदशाक्षरं सञ्जीविनीमन्त्रं सप्तवारं जपेत्)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्री श्रीं हं सः क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हं सः ह्रीं श्रीं (इति त्रयोविंशत्यक्षरं प्राणमन्त्रं सप्तवारं जपेत्)।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं क ए ई ल ह्री ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह स क ह ल ह्रीं, ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ह क ल ए ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह ए क ल ह्रीं, ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क ह ल ए ह्रीं क ह ए ल ह्रीं क ह ह ल ह्रीं हं सः, ॐ श्रीं ह्रीं हं सः सोऽहं स क ल ह्रीं (इति चतुःसप्तत्यक्षरं दीपिनीमन्त्रं च सप्तवारं जपेत्)।

(इमे मन्त्राः पञ्चदशीषोडशीनां साधारणाः)।

(षोडशाक्षर्या असाधारणाः पञ्चमन्त्राः)। यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, य र ल व क्ष म ल व र यूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं (इति महाकामेश्वरमन्त्रं दशवारं जपेत्)।

ऐं ह्रीं श्रीं (पञ्चदशी) क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं (त्रिवारं जपेत्।। १।।)

ऐं ह्रीं श्रीं (षोडशी) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं (त्रिवारं जपेत्।।२।।)

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः बालायै नमः (त्रिवारं जपेत्।। ३।।)

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा (त्रिवारं जपेत्।। ४।।)

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा (त्रिवारं जपेत्।। ५।।)

(एते पञ्च मन्त्राः पञ्चरत्नपदेनोच्यन्ते।)

(ततः सूतकनिवारणाय प्रणवसम्पुटितां मूलविद्यां (पञ्चदशीं) दशवारमावर्त्यानन्तरं विघ्नहरान् षण्मन्त्रान् त्रिस्त्रिर्जपेत्। यथा-)

ऐं ह्रीं श्रीं इ रि मि लि कि रि कि लि प रि मि रोम्।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु।

ऐं ह्रीं श्रीं संहर संहर विघ्नरक्षोविभीषकान् कालय हुं फट् स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं रक्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं सां सारसाय बह्वाशनाय नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं दु मु लु षु मु लु षु ह्रीं चामुण्डायै नमः।

(एते कुल्लूकाद्या विघ्नहरान्ता जपस्य पूर्वाङ्गमन्त्राः। त्रितारीपूर्वकत्वं तु सर्वेषां सिद्धमेव)।

३ ऐं क्लीं ह्रीं भगवति त्रिपुरसुन्दरि स्वाहा, (कुल्लुकां शिरसि) ॐ (सेतुं हृदि), (कण्ठे ३ ह्रीं महासेतुं), ॐ श्रीं अं ऐं क्लीं सौः अं आं इं ईं उं ऊं........क्षं। (इति निर्वाणं नाभौ) क्लीं (कामबीजं लिङ्गे), जिह्वायां मूलविद्यां च विचिन्त्य जपेत्।

ततः पेशीच्छन्नां सुवर्णरत्नस्फटिकमणिपुत्रजीवरुद्राक्षाद्यन्यतमनिर्मितां मालां संस्कारविधिना संस्कृतामादाय, क्वचित्पात्रे वामपाणौ वा निधाय, सामान्यार्घ्योदकेन शुद्धोदकेन वा मूलेनाभ्युक्ष्य।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

(इति प्रार्थ्य,) 'ह्रीं सिद्ध्यै नमः (इति मन्त्रेण पुनः पुनः आवृत्तेन गन्धादिभिः पञ्चभिः गन्धपुष्पाभ्यामेव वा सम्पूज्य।)

ऐं ह्रीं श्रीं गं अविघ्नं कुरु माले त्वं, करे गृह्णामि दक्षिणे।
जपकाले तु सततं, प्रसीद मम सिद्धये॥

(इति दक्षिणहस्तेन मालां गृहीत्वा, मध्यमामध्यपर्वालम्बिनी तां तर्जन्या वामहस्तेन चास्पृशन् एकमणिग्रहण अन्यमनुपाददानः क्रमादङ्गुष्ठाग्रेण मणीन् परिवर्तयन्जृम्भाक्षुताद्यकुर्वन् अनिद्राणः, एतेषां सम्भवे आचम्य, देवतात्मत्वं भावयन्, मालामपातयन्, प्रमादपतितायामुक्तसंस्कारं कृत्वा खटखटाशब्दमकुर्वाणः अश्लिष्टमनुच्चारयन् असम्भाषमाणो मालामप्रदर्शयन् अन्यदप्युक्तमाचरन् श्रीगुरुमुखादवगतं षडर्थाद्यन्यतममर्थं चतुर्विधैक्यशून्यषट्कावस्थापञ्चकविशुद्धसप्तकमन्त्रचैतन्यादिरहस्यजातं चानुसन्दधानो यथाऽधिकारं मानसोपांशुना वा

सहस्रं त्रिशतं वा मूलविद्यामारम्भे प्रोक्तसंख्यावधौ च प्रणवपुटितां सकृज्जपित्वा उत्तराङ्गमन्त्रान् जपदशमांशमावर्तयेत्)।

जपोत्तराङ्गमन्त्राः

(ते तु त्रिपुराद्यष्टचक्रेश्वरीमन्त्रा अष्टौ–)

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः, ३ ऐं क्लीं सौः, ३ ह्रीं क्लीं सौः,
३ हैं ह्क्लीं ह्सौः, ३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः, ३ ह्रीं क्लीं ब्लें,
३ ह्रीं श्रीं सौः, ३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः।

(मूलमेकं) ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं। प्रोक्ताः तत्तत्तिथिनित्याविद्याः। ताश्च शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्रान्ताः। कृष्णपक्षे तु चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः। तिथिवृद्धावेकां नित्यां दिनद्वये, तिथिक्षये एकस्मिन् दिवसे नित्याद्वयम्, इति क्रमेण जप्याः।) यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं स क ल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा।

३ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं।

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

३ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट्।

३ ऌं ऐं क्लीं सौः।

३ ॡं ह स क् ल् र् डैं हस् क् ल् र् डीं ह स् क् ल् र् डौः।

३ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं।

३ ऐं भमस्यूं।

३ ॐ स्वौं।

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा।

३ अं च्कौम्।

(अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गीभूता बाला, अन्नपूर्णा, अश्वारूढा, इति त्रयो वक्ष्यमाणाश्चेति मन्त्राः)

३ ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः (इति श्रियोऽङ्गं बाला)

३ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा, (इति श्रिय उपाङ्गमन्नपूर्णा)।

३ ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा, (इति श्रीप्रत्यङ्गमश्वारूढा) (कालनित्या तु सूत्रकृता नोपात्ता)।

(अथ पुनरपि ऋष्यादि मानसपूजान्तं विधाय, सबीजाः सर्वसंक्षोभिण्यादिमुद्राः प्रदर्श्य)

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि, त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।

(इति देव्या वामकरे सामान्यार्घ्यप्रक्षेपेण जपं निवेद्य,)

त्वं माला सर्वदेवानां, प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे, यशो वीर्यं च सर्वदा।।

(इति मालां सम्प्रार्थ्य, निगूढं निधाय, श्रीगुरुपादुकामन्त्रं मुहुर्मुहुरुच्चारयन् गुरुपरमगुरुपरमेष्ठीगुरून् तत्तन्नामपूर्वं प्रणमेत्।)

जपार्चनादिषु प्राणायामन्यासादिकानां विधानम्

प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम्।
अतो यत्नेन कर्तव्याः प्राणायामाः शुभार्थिभिः।। १।।

(इति *दक्षिणामूर्तिकल्पे*।)

जपार्थं सर्वमन्त्राणां विन्यासेन लिपेर्विना ।
कृते तन्निष्फलं विद्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत्।। २।।

(इति *कपिलपञ्चरात्रे*)

ऋषिच्छन्दोदेवतानां विन्यासेन विना यदा ।
जप्यते साधितोऽप्येषा तत्र तुच्छफलं भवेत् ।। ३।।

(इति *गौतमीये*)

ध्यानं जपार्चना होमः सिद्धमन्त्रकृता अपि ।
अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलं त्वमी।। १।।

अत एव विहितानुष्ठाने दोषमाह याज्ञवल्क्यः-

विधिदृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः ।
फलं न किञ्चिदाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तत्।। १।।

(इति *उत्तरतन्त्रे*)

इति जपविधिः।

हादिविद्यान्यासध्यानानि

अस्य हादिपञ्चदशी-श्रीविद्यामहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गश्रीकामेश्वरो देवता हसकलह्रीं बीजं स क ल ह्रीं शक्तिः ह स क ह ल ह्रीं कीलकम्, श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गश्रीकामेश्वरदेवता प्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोगः।

करन्यासः

ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्तिधाम्ने	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने	तर्जनीभ्यां नमः।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्तिधांम्ने	मध्यमाभ्यां नमः।
ह स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्तिधाम्ने	अनामिकाभ्यां नमः।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्तिधाम्ने	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः

ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्तिधाम्ने	हृदयाय नमः।
ह स क ह ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने	शिरसे स्वाहा।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्तिधाम्ने	शिखायै वषट्।
ह स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्तिधाम्ने	कवचाय हुम्।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्तिधाम्ने	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्तिधाम्ने	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम्।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम्।।
उद्यद्दिनकरप्रख्यं जपाकुसुमसन्निभम्।
नवरत्नसमायुक्तं मुकुटेन विराजितम्।।
चतुर्बाहुमुदाराङ्गं मोहयन्तं जगत्त्रयम्।
श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं ध्यायेत्परशिवं प्रभुम्।।
एवं ध्यायेन्महादेवं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्। इति।

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य न्यासध्यानानि

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीदेवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीबालात्रिपुर-सुन्दरीदेवताप्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोगः।

दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः शिरसि। पङ्क्तिश्छन्दसे नमो मुखे। श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमो हृदये। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः।
सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः

ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा।
सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्।
क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

अरुणकिरणजालैः रञ्जिता सावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला।।

ऐङ्काराङ्कितगर्भितानलशिखा सौः क्लीं कलां बिभ्रतीम्,
सौवर्णम्बुजधारिणीं वरधरां धाराधराङ्गोज्ज्वलाम्।
वन्दे साङ्कुशपाशपुस्तकधरां स्रग्भासितोद्यत्कराम्,
तां बालां त्रिपुरां पदत्रयतनुं षट्चक्रसञ्चारिणीम्।।

मालासृणी–पुस्तक–पाश–हस्तां
बालाम्बिकां श्रीललितां कुमारीम्।
कुमारकामेश्वरकेलिलोलां
नमामि गौरीं नववर्षवेषाम्।।

श्रीमहाषोडशीमहिमा

समस्तजगतामुत्पत्तिभूता शिवा। सेयं श्रीर्ब्रह्मस्वरूपा सकलगुणमयी निर्गुणा निष्प्रपञ्चा साक्षात्कामदुघा सुरमुनिनिवहैर्वन्दिताऽऽनन्दरूपा।

वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि।
वर्णितुं नैव शक्येऽहं श्रीविद्यां षोडशाक्षरीम्।।
वैखरीवाच्यभावत्वादशक्ता गुणवर्णने।
यतो निरक्षरं वस्तु परा तत्रैव कारणम्।।
मूकीभूता हि पश्यन्ती मध्यमा मध्यमा भवेत्।
ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।।
एकोच्चारेण देवेशि ! वाजपेयस्य कोटयः।
अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा।।
काश्यांदितीर्थयात्राःस्युः सार्धकोटित्रयान्विताः।
तुलां नार्हन्ति देवेशि ! नात्र कार्या विचारणा।।
एकोच्चारेण गिरिजे किं पुनर्ब्रह्म केवलम्।
षोडशार्णा महाविद्या न प्रकाश्या कदाचन।।

गोपितव्या त्वया भद्रे स्वयोनिरिव पार्वति।
षोडशीयं सुगोप्या हि स्नेहाद्देवि प्रकाशिता।।
अपि प्रियतमं देयं सुतदारधनादिकम्।
राज्यं देयं शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी।।

श्रीसुन्दरीभेदाः

रुद्रयामले–ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए क ई ल ह्रीं हसकलहह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं क्लीं हूं, हसकलह्रीं हसकलहलह्रीं हंसः। (सप्तदशी)

हसकलहह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।

हसकलह्रीं, सहसकहलह्रीं सकलह्रीं। (इति षोडशीद्वयम्)।

हसकलहह्रीं। सहकहलह्रीं। सकलहह्रीं, लोपामुद्रा १७।

ऐं हसकलह्रीं क्लीं हसकलहह्रीं सौः सकलह्रीं लोपामुद्राविद्या १८।

ॐ ऐं क्लीं सौं कएलहह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः ह स क ल ह्रीं सौं क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः स क ह ल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ (इति परमा)।

क ल ईं, (ब्रह्मविद्या)

कएईलह्रीं हकहलह्रीं हसकलह्रीं, (इयमुन्मनीश्रीविद्या)।
कएईलह्रीं हकहलह्रीं सहकलह्रीं, (इयं वरुणोपासिता)।
कएकलह्रीं हकहह्रीं सहकलह्रीं, (धर्मराजोपासिता)।
कसकलह्रीं हसलकलह्रीं सकलरलह्रीं, (वह्न्युपासिता)।
हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलरलह्रीं (नागराजोपासिता)।
कएरलरह्रीं हकलरहलह्रीं सरकलरह्रीं, (वायूपासिता)।
कएईरलह्रीं हकहलरह्रीं सहकलरह्रीं (बुधोपासिता)।
कहलह्रीं हकलहललरह्रीं सकलह्रीं (ईशानोपासिता)।
कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं, (रत्युपासिता)।
कादि स०ह०क० विलोममिलिता ३० (नारायणोपासिता)।
कएईलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, (ब्रह्मोपासिता)।
हसकलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, (जीवोपासिता)।

हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं, (लोपामुद्रोपासिता)।
कहएईलह्रीं हकएईलह्रीं सकएईलह्रीं, (मनूपासिता)।

कामराजाख्यविद्यायाः शक्तिं तुर्यांश्च सुन्दरि।
हित्वा मुखे शिवेन्द्वाख्या लोपामुद्रा प्रकाशिता।

एकारं ईकारं हित्वा हकारं सकारं च दद्याद् अन्यत्समानम्। शक्तिमादनमध्यगं शिवं कुर्याद् वाग्भवे तु शिवाद्यं कामराजकं चन्द्राद्यन्तुं तृतीयं स्यान्मनूपासिता।

सहाद्यं वाग्भवं देवि ! चन्द्राद्यं शिवमध्यगम्।
मादनं कामबीजं तु शक्तिबीजं हसाननम्।। (चन्द्राराधिता)।।
हसाद्यं वाग्भवं शिवाद्यं सहमध्यगम्।
मादनं कामबीजं तु तार्तीयं शृणु पार्वति।
हसाद्यं शक्तिबीजं तु कुबेरेण प्रपूजिता।

हसकएईह्रीं हसकहएईलह्रीं हसकएईलह्रीं, (कुबेरोपासिता)।

कामराजाख्यविद्यायास्तृतीयं शृणु पार्वति।।
शक्तिबीजं सहाद्यं स्याद्विद्याऽगस्त्य-प्रपूजिता।।

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं,
(इयमगस्त्योपासिता द्वितीया लोपामुद्रोपासिता च)।

कामराजख्यविद्याया वाग्भवे मादनं त्यज।
चन्द्रं तत्रैव संयोज्य कामराजे ततः परम्।।
हित्वा चन्द्रं मुखे कुर्य्याद्विद्येयं नन्दिपूजिता।

सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं, (नन्दिपूजिता)।

कामराजमिदं भद्रे षड्वर्णं सर्वमोहनम्।
(हसकहलह्रीं)

शक्तिबीजं वरारोहे चन्द्राद्यं सर्वसिद्धिदम्।
कामराजाख्यविद्याया हित्वा भूमिं तृतीयके।
शक्तिबीजे स्थितां देवि! चन्द्राधः कुरु तत्र च।
इन्द्राराधितविद्येयं भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।

कएईलह्रीं हसकलह्रीं सकलह्रीं।

इन्द्रलोपामुद्राख्यविद्या द्वितीया या महेश्वरी।
कामराजे भृगुं हित्वा मुखे कुर्यात्तमेव हि।।
शिवं विना चतुर्थं तु तार्तीये शक्रगः शिवः।
एषा विद्या वरारोहे त्रिपुरा सूर्यपूजिता।

कएईलह्रीं सहकलह्रीं सहसकलह्रीं। (सूर्य्येणोपासिता)

क ए ई ल ह स क ह स ह स क ल ह्रीं (शिवोपासिता)।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ल ह ह्रीं स क ल ह्रीं ह्रीं (भुवनेशानी बिन्दुहीना नादहीना दुर्वाससा पूजिता)।

[illegible]जं शक्तिबीजञ्च कामबीजञ्च वाग्भवम्।
बालान्तः संस्थितं बीजं प्रणवञ्च ततः परम्।।
शक्तिबीजं रमां चैव विद्यां च परमेश्वरि।।
लोपां वा कामराजं वा त्रिकूटामथवा पराम्।।
विन्यस्य पुनराद्यानि पञ्चबीजानि सुन्दरि।।
विपरीतक्रमेणैव विन्यसेत्षोडशी परा।

(एषा श्रीपरमा परात्परतमा सर्वार्थसिद्धिप्रदा सारात्साररतरा

इति सुन्दरीभेदाः।

होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य, मूलेन निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य, कुशेन ताडयित्वा हुं इत्यवगुण्ठ्य, स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणे नमः। ७ यमाय नमः। ७ सोमाय नमः। ७ रुद्राय नमः। ७ विष्णवे नमः। ७ इन्द्राय नमः। इत्यभ्यर्चयेत्।

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात्। यथा-

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।
७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। ७ धूमव्यापिने कवचाय हुं।
७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

अनेनैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात्–

७ पीतायै नमः। ७ श्वेतायै नमः। ७ अरुणायै नमः। ७ कृष्णायै नमः।

७ धूम्रायै नमः। ७ तीव्रायै नमः। ७ स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ७ रुचिरायै नमः।

७ ज्वालिन्यै नमः। (इति पीठशक्तीः समर्चयेत्)

(ततः पीठमध्ये)– ७ तं तमसे नमः। ७ रं रजसे नमः। ७ सं सत्त्वाय नमः। ७ आं आत्मने नमः। ७ अं अन्तरात्मने नमः। ७ पं परमात्मने नमः। ७ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। (इति पूजयेत्।)

(ततः त्रिकोणे)–७ ॐ ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः। (इति मन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरीवागीश्वरौ सम्पूज्य) तयोर्मिथुनीभावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वह्निमुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वाग्निं स्थण्डिलाद्बहिराग्नेय्यां ऐशान्यां नैर्ऋत्यां वा दिशि निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं 'फट्' इति अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्यां निरस्य अग्निं (मूलेन) निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा, कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य ततः ७ ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मूलाधारोद्गतं संविदग्निं लालाटनेत्रद्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरबीजस्य वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयोजयेत्।

ततः ७ कवचाय हुं इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य

७ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्। (इत्युपस्थाय)

७ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा' (इति वह्निमुत्थाप्य ततः) 'ॐ ह्रीं' इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्डिले स्थापयेत्। ७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा (इति प्रज्वाल्य, ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, प्राक्तोयं निधाय वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा '७ ऐं नमः' अस्य होमाग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, ललिताग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म च कल्पयामि नमः। '७ ऐं नमः' अस्य ललिताग्नेः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म,

उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म च कल्पयामि नमः-इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत्।

ततः सामान्यार्घ्योदकेनाऽग्निं मूलेन परिषिच्य अग्निमलङ्कृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य त्रिभिः परिधिभिः प्राग्वर्जं परिधानं कृत्वा-वा यथासम्प्रदायं कुशकण्डिकां विधाय-)

त्रिनयनमरुणाप्तबद्धमौलिं सुशुक्लां-
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम्।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमत कनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम्।। इति ध्यायेत्।

शारदातिलके-

वैश्वानरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः।
शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु।।

(अथ अष्टकोणेषु स्वाग्रादिप्रादिक्षण्येन)

७ जातवेदसे नमः। ७ सप्तजिह्वाय नमः। ७ हव्यवाहनाय नमः ७ अश्वोदराय नमः। ७ वैश्वानराय नमः। ७ कौमारतेजसे नमः। ७ विश्वमुखाय नमः। ७ देवमुखाय नमः।

इत्यभिपूज्य-षट्कोणे षडङ्गं, यथा-

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः।
७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।
७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्।
७ धूमव्यापिने कवचाय हुम्।
७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्।
७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

(इत्यभ्यर्च्य) त्रिकोणे-

७ ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मन्त्रेणाग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत्।

(अथ आज्यं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणेन संशोध्य पुरतो दर्भेषु निधाय स्रुवञ्च मूलेन प्रक्षाल्य तदुत्तरतो निवेश्य)-

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात्। यथा–

७ हिरण्यायै नमः स्वाहा –हिरण्याया इदं न मम (ऐशान्यां)

७ कनकायै नमः स्वाहा –कनकाया इदं न मम (प्राच्यां)

७ रक्तायै नमः स्वाहा –रक्ताया इदं न मम (आग्नेय्यां)

७ कृष्णायै नमः स्वाहा –कृष्णाया इदं न मम (नैर्ऋत्यां)

७ सुप्रभायै नमः स्वाहा –सुप्रभाया इदं न मम (पश्चिमायां)

७ अतिरक्तायै नमः स्वाहा –अतिरक्ताया इदं न मम (वायव्यायां)

७ बहुरूपायै नमः स्वाहा –बहुरूपाया इदं न मम (मध्ये)

(ततस्तिस्र आहुतीर्जुहुयात् यथा–)

७ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा–अग्नय इंदम्।

७ उतिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाह्रा–अग्नय इदम्।

७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा–अग्नय इदम्।

(अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्यजिह्वायां)–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं: ह्स्क्लीं ह्स्रौः।

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।

(इति श्रीदेवीमावाह्य उपचारमन्त्रैः गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात्)। यथा–

४ "गणपतिमूलं" महागणपतये स्वाहा (त्रिः)।

४ 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (दशकृत्वः)।

क–५ हृदयाय नमः हृदयदेव्यै स्वाहा, ह–६ शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै स्वाहा, स–४ शिखायै वषट् शिखादेव्यै स्वाहा, क–५ कवचाय हुं कवचदेव्यै स्वाहा, ह–६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै स्वाहा, स–४ अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा।

अः क–१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा। (त्रिः)। तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तिथिनित्यायै।

४ अः क–१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा।

४ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै स्वाहा।

४ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै स्वाहा।

४ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै स्वाहा।

४ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै स्वाहा।

४ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै स्वाहा।

४ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै स्वाहा।

४ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै स्वाहा।

४ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै स्वाहा।

४ ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै स्वाहा।

४ ॡं हस्क्लर्डैं हस्क्लर्डीं हस्क्लर्डौः ॡं नित्यानित्यायै स्वाहा।

४ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै स्वाहा।

४ ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजयानित्यायै स्वाहा।

४ ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै स्वाहा।

४ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं हूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै स्वाहा।

४ अं च्क्रौं अं चित्रानित्यायै स्वाहा।

४ अः (पञ्चदशी) अः ललितामहानित्यायै स्वाहा।

४ ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्द-नाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा, उड्डीशानन्दनाथाय, प्रकाशानन्दनाथाय, विमर्शानन्दनाथाय, आनन्दानन्दनाथाय, षष्ठीशानन्दनाथाय, ज्ञानानन्दनाथाय, सत्यानन्दनाथाय, पूर्णानन्दनाथाय, मिनेशानन्दनाथाय, स्वभावानन्दनाथाय, प्रतिभानन्दनाथाय, सुभगानन्दनाथाय स्वाहा।

४ परप्रकाशानन्दनाथाय, परशिवानन्दनाथाय, पराशक्त्यम्बायै, कौलेश्वरानन्दनाथाय, शुक्लदेव्यम्बायै, कुलेश्वरानन्दनाथाय, कामेश्वर्यम्बायै, भोगानन्दनाथाय, क्लिन्नानन्दनाथाय, समयानन्दनाथाय, सहजानन्दनाथाय, गगनानन्दनाथाय, विश्वानन्दनाथाय, विमलानन्दनाथाय, मदनानन्दनाथाय, भुवनानन्दनाथाय, लीलाम्बायै, स्वात्मानन्दनाथाय, प्रियानन्दनाथाय (परमेष्ठिगुरवे), अमुकानन्दनाथाय (परमगुरवे), अमुकानन्दनाथाय, (स्वगुरवे) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा।

४ अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय, अं अणिमासिद्ध्यै, लं लघिमासिद्ध्यै, मं महिमासिद्ध्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै, भुं भुक्तिसिद्ध्यै, इं इच्छासिद्ध्यै, पं प्राप्तिसिद्ध्यै, सं सर्वकामसिद्ध्यै, आं ब्राह्मीमात्रे, इं माहेश्वरीमात्रे, ऊं कौमारीमात्रे, ॠं वैष्णवीमात्रे, ॡं वाराहीमात्रे, ऐं माहेन्द्रीमात्रे, औं चामुण्डामात्रे, अः महालक्ष्मीमात्रे, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्त्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, प्रकटयोगिनीभ्यः, अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै, अणिमासिद्ध्यै, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय, अं कामाकर्षिण्यै, आं बुद्ध्याकर्षिण्यै, इं अहङ्काराकर्षिण्यै, ईं शब्दाकर्षिण्यै, उं स्पर्शाकर्षिण्यै, ऊं रूपाकर्षिण्यै, ऋं रसाकर्षिण्यै, ॠं गन्धाकर्षिण्यै, लृं चित्ताकर्षिण्यै, ॡं धैर्याकर्षिण्यै, एं स्मृत्याकर्षिण्यै, ऐं नामाकर्षिण्यै, ओं बीजाकर्षिण्यै, औं आत्माकर्षिण्यै, अं अमृताकर्षिण्यै, अः शरीराकर्षिण्यै, गुप्तयोगिनीभ्यः, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै, लं लघिमासिद्ध्यै, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय, कं-५ अनङ्गकुसुमायै, चं-५ अनङ्गमेखलायै, टं-५ अनङ्गमदनायै, तं-५ अनङ्गमदनातुरायै, पं-५ अनङ्गरेखायै, यं-४ अनङ्गवेगिन्यै, शं-४ अनङ्गाङ्कुशायै, ळं क्षं अनङ्गमालिन्यै, गुप्ततरयोगिनीभ्यः, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, महिमासिद्ध्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, "मूलं" ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय, कं सर्वसङ्क्षोभिण्यै खं सर्वविद्राविण्यै, गं सर्वाकर्षिण्यै, घं सर्वाह्लादिन्यै, ङं सर्वसंमोहिन्यै, चं सर्वस्तम्भिन्यै, छं सर्वजृम्भिण्यै, जं सर्ववशङ्कर्यै, झं सर्वरञ्जिन्यै, ञं सर्वोन्मादिन्यै, टं सर्वार्थसाधिन्यै, ठं सर्वसम्पत्तिपूरण्यै, डं सर्वमन्त्रमय्यै, ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै, सम्प्रदाययोगिनीभ्यः, हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वर्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय, णं सर्वसिद्धिप्रदायै, तं सर्वसम्पत्प्रदायै, थं सर्वप्रियङ्कर्यै, दं सर्वमङ्गलकारिण्यै, धं सर्वकामप्रदायै, नं सर्वदुःखविमोचिन्यै, पं सर्वमृत्युप्रशमन्यै, फं सर्वविघ्ननिवारिण्यै, बं सर्वाङ्गसुन्दर्यै, भं सर्वसौभाग्यदायिन्यै, कुलोत्तीर्णयोगिनीभ्यः ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै, स्वाहा।

४ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय, मं सर्वज्ञायै, यं सर्वशक्त्यै, रं सर्वैश्वर्यप्रदायै, लं सर्वज्ञानमय्यै, वं सर्वव्याधिविनाशिन्यै, शं सर्वाधार-स्वरूपायै, षं सर्वपापहरायै, सं सर्वानन्दमय्यै, हं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै, निगर्भयोगिनीभ्यः ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै स्वाहा। (मूलं) ललिता-महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय, अं++अः(१६) ब्लूं वशिनी-वाग्देवतायै, कं-५ क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै, चं-५ न्ब्लीं मोदिनी-वाग्देवतायै, टं-५ य्लूं विमलावाग्देवतायै, तं-५ ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै, पं-५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै, यं-४ झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै, शं-६ क्ष्म्रीं कौलिनी-वाग्देवतायै, रहस्ययोगिनीभ्यः, ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा-चक्रेश्वर्यै, भुं भुक्तिसिद्ध्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरी-कामेश्वरबाणेभ्यः स्वाहा।

४ थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां स्वाहा।

४ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां स्वाहा।

४ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां स्वाहा।

४ ह्स्रैं हस्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय, ऐं क-५ महाकामेश्वर्यै, क्लीं ह-६ महावज्रेश्वर्यै, सौः स-४ महाभगमालिन्यै, ऐं क-५ क्लीं ह- ६ सौः स-४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै, अतिरहस्ययोगिनीभ्यः, ह्स्रैं हस्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बा-चक्रेश्वर्यै, इं इच्छासिद्ध्यै ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललिता-महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ (पञ्चदशी) सर्वानन्दमयचक्राय, (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। (इति दशवारं) परापरातिरहस्ययोगिन्यै, (मूलं) त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, पं प्राप्तिसिद्ध्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ षोडश्युपासकानां-(तुरीयविद्या) तुरीयाम्बायै, सं सर्वकामसिद्ध्यै, ह्स्रैं हस्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, (महाषोडशी) महात्रिपुरसुन्दरी-पराभट्टारिकायै स्वाहा।

(पञ्चपञ्चिकादिहोमे तत्तन्मन्त्रेण प्रदर्शितरीत्या होमः कर्त्तव्यः।)

(यथेप्सितवस्तुभिः मूलमन्त्रेण होमः)

(ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलम् अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य (मूलं) वौषट् इति उत्थितो जुहुयात्। ततो बलिदानम्, पृ. १९४)

(ततो महाव्याहृतिहोमः यथा-)

७ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा। अग्नये पृथिव्यै महत इदम्।

७ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम्।

७ स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महत इदम्।

७ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम्। (इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा)।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यत्कृत्यं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। परब्रह्मण इदम्।

(इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात्।)

अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोप-तन्त्रलोपद्रव्य-लोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यासप्रायश्चितार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि।

ॐ भूर्भुवस्स्वः स्वाहा। प्रजापतय इदम्।

श्रीविष्णवे स्वाहा। विष्णवे परमात्मन इदम्।

नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा। रुद्राय पशुपतय इदम्। आप उपस्पृश्य।

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि।

सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।

अग्नये सप्तवत इदम्। (आज्यपात्रादीनुतरतो निधाय, प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषिञ्चति।)

अदितेऽन्वमँस्थाः। अनुमतेऽन्वमँस्थाः। सरस्वतेऽन्वमँस्थाः। देव सवितः प्रासावीः।

ततः प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरत आदाय,

पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः। सदसि सन्मे भूयाः। सर्वमसि सर्वं मे भूयाः।

(इति अन्यजलं निनीय तज्जलं प्रागादिप्रदक्षिणं

प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्।

दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्।

प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम्।

उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम्।

ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयताम्

(इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तात् निस्राव्य, तेन)

ब्राह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः परित्रेणात्मानं पुनते सदा।

तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु माम्।।

(इत्यात्मानं प्रोक्ष्य, प्रागादिपरिस्तरणमुत्तरे विसृजेत्।)

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।

सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।। (इत्युपस्थाय)

चिदग्निं, उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन्।

आयुः प्रजां रयिमस्मासु धेहि अजस्रोः दीदिहि नो दुरोणे।।

'ललिताग्निमात्मन्युद्वासयामि नमः'। (इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात्)।

तद्भूतितिलकं–त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्। (इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत्।)

इति होमप्रकरणं समाप्तम्।।

(जपप्रकरणे सूत्रकृता पुरश्चरणादिकं न विधित्सितम्, काम्यकर्मण्येव तस्यावश्यकत्वात्। युक्तं चैतत्)

शुभं वाऽप्यशुभं वाऽपि काम्यं कर्म करोति यः।
तस्यारित्वं व्रजेन्मन्त्रो न तस्मात् तत्परो भवेत्।।
काम्यकर्मप्रसक्तानां तावन्मात्रं फलं भवेत्।
निष्कामं भजतां देवमखिलाभीष्टसिद्धयः।।

(देवेत्युपलक्षणं देव्या अपि। काम्यकर्मविधिश्च दुःसाध्यश्चेत् कस्यचित् काम्यफललिप्सा, तेन सदा श्यामाक्रमोक्तं पुरश्चरणादिकं काम्यहोमद्रव्यं चानुसन्धेयम्। अन्यश्च नित्यार्चनरतो नैमित्तिकार्चनं कुर्यात्। तेन सकलेप्सित-सिद्धिर्भवति।)

श्यामादीनामुपासनाकालः

ललिता प्राह्णे, अपराह्णे श्यामा, रात्रौ दण्डिनी, ब्राह्मे महूर्ते परा, (सूर्यपरावृत्तिप्राक्कालः प्राह्णः।)

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्य्याः प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा, तदुपासनद्वारा श्रीविद्या प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ प्रधान-सचिवमुपसेव्य तद्द्वारा राजदर्शनं कुर्वन्ति तथैव श्यामायाः प्रथममुपासनं न्याय्यम्। 'प्रधानद्वारा राजप्रसादनं हि न्याय्यम्' इति *परशुरामसूत्रात्।*

साङ्गां सङ्गीतमातृकां श्यामामिष्ट्वा सिंहासनारूढायाः ललितायाः महाराज्ञाः दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञां चन्द्रां कोलमुखीं वरिवस्येत्। इयञ्च महारात्रे पूज्या। ततश्च श्रीविद्याया महाराज्ञ्या हृदयात्मिकां परां पूजयेत्। तत्प्रीतौ श्रीविद्याप्रीतिः सुतरां सम्पद्यते 'प्रभुहृदयज्ञातुः पदे पदे सुखानि भवन्तीति *परशुरामसूत्रात्।*

क्रत्वर्थनियमाः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासंक्रान्तिसंज्ञेषु पर्वसु पञ्चसु सविशेषैः साधनैराराधयेत्। तत्प्रकारस्तु नैमित्तिकप्रकरणे वक्ष्यते। नित्यनैमित्तिकक्रमौ च शिष्यसुतादिभिरपि कारयितुं शक्यते।

श्रीललितोपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। वीरस्त्रियं न गच्छेत्। न तां हन्यात्। न

तद्द्रव्यमपहरेत्। नात्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात्। कुलभ्रष्टैः सह नासीत।। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत्। कुलपुस्तकानि गोपायेत्। एते क्रत्वर्थनियमाः, अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः। अन्यांश्च दीक्षाक्रमोक्तान् सामयिकानाचाराननुतिष्ठेत्। अनिशमात्मानं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता। शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नान्तरम्। स एव जीवन्मुक्तः सुखी विहरेदिति।

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः

दीक्षप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे कृताह्निकः साधको गणपतिमाराध्य ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मवर्मादिरहं महात्रिपुरसुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराजप्रतिष्ठापनं करिष्ये, इति दुग्धदधिघृतशकृन्मूत्रात्मकं पञ्चगव्यमानीय सम्मिश्र्य हौं इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्र्य, तत्र प्रणवेन यन्त्रं निक्षिप्य ततः उद्धृत्य पात्रान्तरे निधाय, मिश्रितेन गोदुग्धदधिघृतमधुशर्करात्मकेन पञ्चामृतेन संस्नाप्य धूपयेत्। अथ- प्रत्येकं दुग्धादिभिः क्रमेण अन्तरान्तरा धूपनपूर्वकं स्नपयित्वा पुनर्मिश्रितैश्च तैः स्नपयेत्। ततोऽष्टासु दिक्षु शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहितैः नूतनवसनवेष्टितैः गन्धपुष्पार्चितैः कुङ्कुमरोचनाचन्दनकस्तूरीसुरभिलशीतलसलिलपूर्णैः कुशाग्रेण स्पृष्ट्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रितैः सौवर्णादिमार्तिकान्यन्ततमैरष्टभिः कलशैरभिषिञ्चेत्। इह सर्वमपि पञ्चगव्यादिकं स्नानं मूलमन्त्रकरणकमेव। अथ यन्त्रं धौतेन वाससा परिमृज्य पीठे निधाय कुशाग्रैः स्पृशन्-ऐं ह्रीं श्रीं ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्, इति यन्त्रगायत्रीम् अष्टोत्तरशतवारानावर्त्यात्मनो भूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासान्तं कृत्वा यन्त्रं करेण संस्पृश्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। यथा-

अस्य श्रीयन्त्रराजस्य प्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, चैतन्यं देवता। आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकम् मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठायै जपे विनियोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

३ इं चं छं जं झं ञं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां नमः।

३ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः।

३ औं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

३ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्याहङ्कारचित्तान्तःकरणात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। ध्यानम्–

रक्ताम्बोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः श्रीचक्रस्य प्राणाः इह प्राणाः, ३ ॐ आं ह्रीं... हंसः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः, ३ ॐ आं ह्रीं... हंसः श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ ॐ आं ह्रीं...हंसः, श्रीचक्रस्य वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति।

(यन्त्रान्तरप्राणप्रतिष्ठायां तत्तन्नाम्न ऊहः कार्यः) अथ तत्र श्रीक्रमोक्तेन विधिना देवीमावाह्याभ्यर्च्य यन्त्रं कुशाग्रैः स्पृशन् मूलमष्टोत्तरसहस्रं शतं वा वारानावर्त्य होमप्रकरणोक्तेन क्रमेणाष्टोत्तरशतमाज्याहुतीः मूलेन हुत्वा सम्पाताज्यं मध्ये मध्ये यन्त्रे अवनीय सव्यञ्जनेनान्नेन सर्वभूतबलिं प्रदाय होमशेषं समाप्य गुरुवे सुवर्णशृङ्गालङ्कृतां गां वसनाभरणानि च प्रदाय देवीमुद्दिस्य कुमारीं योगिनीं ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। इमाञ्च यन्त्रप्रतिष्ठां गुर्वादिना वा कारयेदिति वामकेश्वरतन्त्रीयो यन्त्रप्रतिष्ठापनविधिः।

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः सम्पूर्णः

मुद्राप्रकरणम्

श्रीगुरुवन्दनमुद्राः

विकसितकल्प उत्तानाञ्जलिः सुमुखम्। इदमेव मुष्टीकृतं सुवृत्तम्। ऊर्ध्वाधःस्थितयोः दक्षवामकरतलयोः अङ्गुलीनां मिथो मणिबन्धसम्बन्धे चतुरस्रम्। अधरोत्तरस्य वामदक्षमुष्टियुगस्य स्वाभिमुख्येन योजने मुद्गरः। तिर्यङ्मिलिताग्रयोः मध्यमयोः पश्चात् ऊर्ध्वाधःस्थिते वामदक्षानामिके तिरः–

प्रसारिते तर्जनीभ्यां निपीड्य वामकनिष्ठां दक्षिणया धृत्वा अङ्गुष्ठाग्रयोः मध्यमापुरोमध्यपर्वद्वयसम्बन्धे **योनिःमुद्रा**।

इति श्रीगुरुवन्दनमुद्राः।

अर्घ्यस्थापनमुद्राः

अधोमुखप्रसारितं वामदक्षकरतलयुगमधरोत्तरं विधायाङ्गुष्ठद्वयचालने **मत्स्यः**। लक्ष्यममितः छोटिकां दत्वा मध्यमातर्जनीभ्याम् अधिवामकरतलं त्रिस्ताडने **अस्त्रम्**। अधोमुखस्य दक्षवाममुष्टिद्वयस्य प्रसारितयोः तर्जन्योः स्वस्व-भागमारभ्य क्रमेण लक्ष्यं परितः प्रादक्षिण्यवामावर्ताभ्यां परिभ्रमणे **अवगुण्ठनम्**। अभिमुखमन्योन्यग्रथितानां दक्षवामकराङ्गुलीनां क्रमेण कनिष्ठानामे तर्जनीमध्यमे च संयोज्य अंधोमुखीकरणे **धेनुः**। **योनिरुक्तैव**। उत्तानस्य वामकरस्य विरलम् आकुञ्चितैः अनामामध्यमातर्जन्यग्रैः अधोमुखस्य दक्षस्य वक्रीकृतानि तानि संयोज्य कनिष्ठाङ्गुष्ठाग्राणां मिथः सम्बन्धे **गालिनी**।

अर्चने मुद्राः

विततोत्तान ऊर्ध्वाधो व्यापारितोञ्जलिः **आवाहनी**। तथाविधो न्युब्जाञ्जलिः **संस्थापनी**। उदङ्गुष्ठयोः मुष्ट्योरभिमुखयोगे **सन्निधापनी**। सैव- कनिष्ठामूलं अन्तः प्रविष्टाङ्गुष्ठमिथः स्पृष्टनखा **सन्निरोधिनी**। सन्निधापन्येव तिरःप्रयोजिता **सम्मुखीकरणी**। **अवगुण्ठनी** उक्तैव। उदङ्गुलिनोः करतलयोः योजने **वन्दनं** प्रसिद्धम्। **धेनुयोनी** उक्ते एव। वामानामाङ्गुष्ठयोगे **तत्त्वमुद्रा**। दक्षाङ्गुष्ठतर्जनीयोगे **ज्ञानमुद्रा**।

सङ्क्षोभिण्यादिमुद्राः

उत्तानयोः करतलयोः प्रसारिततर्जनीकं संहतकनिष्ठानामामध्यमाग्राण्य-न्योन्याभिमुख्ये संयोज्य स्वस्वकनिष्ठोपर्यङ्गुष्ठाग्रसम्बन्धे **सर्वसंक्षोभिणी**। सैव प्रसारितमध्यमाऽपि **सर्वविद्राविणी**। इयमेव मध्यमा तर्जन्योराकुञ्चने **सर्वाकर्षणी**। परस्परग्रथिताङ्गुलिस्पृष्टनखाग्राङ्गुष्ठयोः मुष्ट्योः योगे **सर्ववशङ्करी**। अधरोत्तरं तिर्यक्प्रसारिते वामदक्षिणकनिष्ठे मध्यमाभ्यां धृत्वा तयोरग्रे अङ्गुष्ठाभ्यां निपीड्य अनामातर्जन्यग्राणां पार्श्वतो मिथः संस्पर्शे **सर्वोन्मादिनी**। एषैव अनामयोराकुञ्चने तर्जन्योः किञ्चित् भुग्नत्वे च **सर्वमहाङ्कुशा**। दक्षभुज-

मध्यसन्धिस्थापितवामकूर्परमामणिबन्धम्पाणी परिवर्त्य स्वाभिमुखमन्योन्य-स्पृष्टाग्रयोः मध्यमयोः पृष्ठतोऽधरोत्तरं तिरःप्रसारितानि दक्षवामानामाकनिष्ठाग्राणि तर्जनीभ्यां धृत्वा पुरोऽङ्गुष्ठयोरन्योन्यसम्बन्धे सर्वखेचरी। ऊर्ध्वाधस्तिरःप्रसृते वामदक्षकनिष्ठाग्रे धृत्वा अर्धचन्द्राकृतिरङ्गुष्ठायोजितेषु तर्जन्यङ्गुष्ठेषु मिथः श्लिष्टाभ्यामृजुभ्यां मध्यमाभ्यां तर्जन्योः सम्बन्धे सर्वबीजा। योनिरुक्तैव। अस्यामेव ऋजुकृतयोः कनिष्ठयोः मध्यमयोरङ्गुष्ठयोश्च पृथङ्मिथः संस्पर्शे सर्वत्रिखण्डा। उदग्राणां विरलानां वामकराङ्गुलीनां ईषदाकुञ्चने ग्रासः। मध्यमातर्जन्यङ्गुष्ठयोगे प्राणमुद्रा मध्यानामाऽङ्गुष्ठमेलने अपानस्य। कनिष्ठाऽनामाऽङ्गुष्ठसम्बन्धे व्यानस्य। तर्जन्यनामाऽङ्गुष्ठमिश्रणे उदानस्य। सर्वाङ्गुलिसंश्लेषः समानस्य। वाममुष्टेरङ्गुष्ठाग्र-चुम्बितमूलपर्वणि तर्जन्यामीषदधोमुखप्रसृतायां नाराचः। व्यत्ययेन वामदक्षकर-कनिष्ठाङ्गुष्ठाग्रयोः योगे अन्यासां वैरल्येन प्रसारणे च चक्रम्।

न्यासे मुद्राः

संहताभिः चतसृभिः अङ्गुलीभिः मुखस्पर्शे मुखम्। सम्पुटीकृतयोः करयोः मिथोऽभिमुखप्रश्लेषे करसम्पुटम्। किञ्चिदाकुञ्चिताङ्गुल्यग्रयोः स्वाभिमुखं करयोरन्योन्यसम्बन्धे अञ्जलिः। तर्जनीध्यमानामाऽग्रैः हृदयस्पर्शे हृदयम्। मध्यमाऽनामाग्रयोः ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धे शिरः। अङ्गुष्ठाग्रचूल्लीयोगे शिखा। व्यत्ययहस्तयोरधरोत्तरवामहस्तदक्षकरयोः सर्वाङ्गुलीभिः अंससम्बन्धे कवचम्। तर्जनीमध्यमाऽनामाग्रैः नेत्रयुगमध्यस्पर्शे नेत्रम्। अस्त्रम् उक्तचरम्। एताः षडङ्गन्यास एव। अङ्गुष्ठमिलितया अनामिकया तदत्तङ्गस्पर्शे न्यासमुद्रा। वामहस्तमुष्टिं बद्ध्वा सरलया तर्जन्या अंसकर्णमभितो भ्रामणे सौभाग्यदण्डिनी। सैव गर्भिताङ्गुष्ठवामपादतलं न्यस्ता रिपुजिह्वाग्रहा। अन्त्यमिदं मुद्रायुगलं श्रीषोडशाक्षरीविषयम्।

जपे मुद्राः

मुखकरसम्पुटषडङ्गमुद्राः प्रोक्तचर्या एव। परस्परमनभिमुखग्रथि-ताकुञ्चितानामामध्यमाकनिष्ठं करौ परिवर्त्य प्रसारिततर्जनीयुगाग्रसम्बन्धे शक्त्युत्थापनी। सर्वसङ्क्षोभिण्यादयो दश दर्शितचर्याः। अभिमुखाभ्यां दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां पराङ्मुखयोः वाममध्यमातर्जन्योः अवपीड्याकर्षणे-

ऽन्यासामङ्गुलीनां आकुञ्चने च पाशः। उदग्रायां दक्षमध्यमायां तन्मध्यपर्वस्पर्शिमध्यपर्वणस्तर्जन्याकुञ्चने अनामाकनिष्ठाग्रयोश्चाङ्गुष्ठाग्रनिपीडने अङ्कुशः। उत्तानदक्षमध्यमाऽग्रेण तादृशतर्जन्यग्रपरिग्रहे चापः। बाणस्तु नाराचपदेनोक्तचर एव। आहत्य अपुनरुक्ता मुद्राः पञ्चाशत्। एतासां प्रकारभेदोऽपि तन्त्रान्तरेषु दृश्यत इति शिवम्।

मुद्राप्रकरणं सम्पूर्णम्।

नैमित्तिकार्चनप्रकरणम्

पर्वसु नैमित्तिकार्चनविधिः

उक्तेन क्रमेण नित्यक्रमनिरतः साधकः प्रतिमासं पञ्चपर्वसु नैमित्तिकमर्चनमाचरेत्-

नित्यार्चरतैः सिद्धैः कार्यं नैमित्तकार्चनम्।। इति तन्त्रराजवचनात्।

तच्च नित्यार्चनाधिकसाधनविशेषकरणम्। पर्वाणि तु **कृष्णाष्टमी, कृष्णचतुर्दशी, दर्शः, पूर्णिमा, सङ्क्रान्तिश्चेति** कुलार्णवोक्तानि। तत्र कालस्य कर्तव्यतायाश्च निर्णयः। सङ्क्रान्तिव्यतिरिक्तपर्वार्चनं सूर्यास्तमयोत्तरं दशघटिकाऽऽत्मके रात्रिपूर्वभागे कार्यम्। सङ्क्रमणसपर्या तु तत्तत्सङ्क्रान्तिपुण्यकालोपलक्षितासु घटिकासु। तदुक्तम्-

प्रागूर्ध्वं च दशैव मेषतुलयोः सिंहे वृषे वृश्चिके
कुम्भे षोडशपूर्वतोऽथ मिथुने मीने धनुःकन्ययोः।
ऊर्ध्वाः षोडश कीर्तिताः प्रथमतस्त्रिंशत्तु कर्काटके
चत्वारिंशदथो परास्तु मकरे पुण्यप्रदा नाडिकाः।। इति।

नाडिकाः घटिकाः। अष्टमी-चतुर्दशी-दर्शपूर्णिमानां स्वस्वदिने पूजाकालव्याप्तौ न विवादः दिनद्वये एकदेशव्याप्तौ यत्राधिका सा तिथिर्ग्राह्या। समव्याप्तौ परैव। तिथिवृद्धिह्रासवशेन चतुर्दशी-दर्शयोः एकस्मिन्नेव दिने पूजाकालव्याप्तौ नैमित्तिकद्वयस्य तन्त्रेणानुष्ठानम्। तदा सङ्क्रान्तियोगे तु तत्र तत्रापि दिवा सङ्क्रमणे सति नित्यार्चनस्य प्रासङ्गिकी सिद्धिः। यत्र चतुर्णां

नैमित्तिकार्चनानामेकस्मिन्नेव काले सन्निपातः सम्भाव्यते तत्र तेषामप्येक-तन्त्रैणैव। यथा दमनसमर्पणस्य मुख्यकाले चैत्रपूर्णिमायामसम्भवे तत्कृष्णचतुर्दशी दर्शादिज्येष्ठकृष्णचतुर्दशीदर्शान्ते गौणकाले। यथा च पवित्रारोपणस्य श्रावण्यामलाभे आमिथुनसङ्क्रमणं आ च तुलासङ्क्रान्तिप्रोक्तासु तिथिसु आश्विनशुक्लाष्टमीनवमीचतुर्दशीपूर्णासु च तत्कृष्णचतुर्दशीदर्शयोश्च तादृशि विषये पूजाद्वयं त्रयं चतुष्टयं वा करिष्य इति सङ्कल्पयेदिति दिक्।

नित्यक्रमात् नैमित्तिके विशेषः

तत्र परिगणितेषु पर्वसु प्रातः नित्यक्रमं निर्वर्त्य रात्रौ अमुकपर्वप्रयुक्तं नैमित्तिकार्चनं करिष्य इति सङ्कल्य यथाविभवं समारम्भ-विशेषेण क्रमो निर्वर्तनीयः। चैत्राद्यासु पौर्णमासीषु तु वक्ष्यमाणेन विधिना तन्त्रान्तरोक्तेन दमनकादि समर्पणमपि। सति सम्भवे आश्वयुज्यां तत्प्रतिपदादि पर्वान्त-प्रयोगोऽप्यनुष्ठेयः, पञ्चपर्वसु विशेषार्चा इति सूत्रस्य नानाविद्याऽङ्ग-शान्त्यर्चाबोधकत्वात्, विविधाः शेषाः कालद्रव्यक्रियाऽऽदिरूपाण्यङ्गानि यस्यां तादृश्यर्चेति विग्रहात्।

निवेदने पक्षभेदाः

तत्र द्रवद्रव्यनिवेदने त्रयः पक्षा भवन्ति। पृथक्पृथक् पात्रस्थं हिमोदकादिके ऐं ह्रीं श्रीं अमुकदेवताया अमुकं कल्पयामि नम इति तत्तन्नामघटितेन उपचारमन्त्रेण प्रधानदेव्यादिभ्यो नवचक्रेश्वर्यन्ताभ्यस्त्रिपञ्चा-शदुत्तरशतसंख्याकाभ्यो देवताभ्यः प्रत्येकं निवेदयेत्। इह प्रधानदेव्या सह नित्याः षोडश, महाकामेश्वर्यादयश्चतस्रः, त्रिपुरादयः चक्रेश्वर्यो नव, कामेश्वरायुधदेव्यः चतस्र इति विवेकः। यदि वा प्रधानदेवतानिवेदनोत्तरं अङ्गदेवीभ्यो नित्याभ्यो अमुकौघायौघत्रयाय अणिमाऽऽदिभ्यो मातृभ्यो मुद्रादेवीभ्यो अणिमाऽऽदिभ्यो वा कामेश्वर्यादि नित्याकलाभ्यः अनङ्गकु-सुमादिभ्यः सर्वसङ्क्षोभिण्यादिभ्यः सर्वसिद्धिप्रदाभ्यः सर्वज्ञादिभ्यो वशिन्यादिभ्यः आयुधदेवीभ्यो महाकामेश्वर्यादिभ्यः त्रिपुराचक्रेश्वरीभ्योऽमुकं कल्पयामीति तत्समष्ट्यै निवेदयेत्। अथवा प्रधानदेवतायै पृथङ् निवेद्य-

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयदेव्यादिभ्यो नवचक्रेश्वर्यन्ताभ्योऽमुकं कल्पयामीति सर्वसमष्ट्यै निवेदयेदित्येकः।

अनेकपात्रासम्भवे अष्टादश चतुर्दश वा पात्राणि तत्तद्द्रव्यसम्भृतानि उपहृत्य, पूर्वोक्तान्यतमेन प्रकारेण निवेदयेदिति *द्वितीयः।* अत्रौघत्रयसिद्धि-मातृमुद्राणां पार्थक्यतदन्यत्वाभ्यां पात्राणामष्टादशत्वं चतुर्दशत्वञ्च ज्ञेयम्।

तत्राप्यसम्भवे प्रथमद्वितीययोः प्रकारयोः महति पात्रे सम्भृतं हिमोद-कादिकम् उपपात्रेण आदायादाय निवेद्य निवेद्य पात्रान्तरे निक्षिपेत्। अन्त्ये तु प्रकारे महापात्रस्थं सर्वाभ्यो देवताभ्यो युगपन्निवेदयेदिति *तृतीयः।*

कठिनद्रव्यनिवेदने पक्षद्वयम्। तत्र फलादिकमुक्तदेवतासमसंख्याक-मुक्तान्यतमेन प्रकारेण तत्तद्देवतायै निवेदयेदित्येकः। तदशक्तौ यथासम्भव-मुपहृत्येति द्वितीयः।

पवित्रारोपणे दीपदाने च प्रथमपक्षीयः प्रथमप्रकार एव नान्यो हिमोदकादौ। सङ्कोचपक्षाश्रयणे बीजमशक्तिरवसराभावो वा। तन्त्रान्तरोक्तानां चतुराम्नायपञ्च-सिंहासनपञ्चपञ्चिकाषड्दर्शनाङ्गदेवीभूतशक्तिसमयदेवतानामप्यर्चने अभ्युदय एवेति दिक्।

दमनकविधिः

अथादौ दमनार्चनम्। चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां सायं स्वयं दमनारामं गत्वा।

ॐ शिवप्रसादसम्भूत अत्र सन्निहितो भव।
देवीकार्यं समुद्दिश्य नेतव्योऽसि शिवाज्ञया।।

इति दमनमामन्त्र्य अस्त्रमन्त्रेण समूलं दमनलताः सपर्यापर्याप्ता उत्पाट्य तदलाभे तद्गुच्छान् वा शस्त्रेण छित्वा स्वातन्त्र्याभावे विक्रेतुरनुमत्या क्रयक्रीता वा आनीयानाय्य वा पवित्रे वंशादिपात्रे निधाय मूलविद्यया शुद्धाभिरद्भिः अभ्युक्ष्य ऐं ह्रीं श्रीं दमनाय अमुकं कल्पयामि इत्यादिरीत्या उपचारमन्त्रैः गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्याख्यान् पञ्चोपचारान् आचर्य, सूक्ष्मनववस्त्रेण आच्छाद्य यागमन्दिर एव क्वचन शुचिनि स्थले निधाय जागृयात्। जागरणं त्वभ्युदयाय। इत्यधिवासनम्। इदं च महोऽपि वा कार्यम्। एवमन्येषुरप्यपि कुसुमानाम्।

दुग्धान्नादिनिवेद्यस्य तु सद्य एवोचितवासनम्। अथ पूर्णिमायां रात्रौ प्रधानदेवीपूजोत्तरं आवरणार्चने–

षोडशार्णे जगन्मातः वाञ्छितार्थफलप्रदे।
हृत्स्थान् पूरय मे कामान् देवि कामेश्वरेश्वरि।।

इति देवीं प्रार्थ्य, नित्यार्चनक्रमेणैव श्रीदेव्याद्याः देवताः चतुराम्नायादि-समयान्तदेवताश्च दमनैः समभ्यर्च्य नित्यहोमत्रिगुणितं होमं कृत्वा मूलमन्त्रं च तथा जपित्वा अङ्गमन्त्रांश्च तद्दशांशं श्रीगुरुमभिपूज्य शक्तिसामयिकान् सम्भाव्य तैः सह अन्यैश्च ब्राह्मणैः भुञ्जीत। एतस्य मुख्यकाले कर्तुमसम्भवे चैत्रवैशाखज्येष्ठानां कृष्णाष्टमीकृष्णचतुर्दश्योः वैशाखज्येष्ठयोश्च वा कुर्यात्।

इति दमनविधिः।

चैत्रपूर्णिमाकृत्यम्

अस्यामेव पूर्णिमायां वसन्तोत्सवोऽपि विहितः। तत्र दमनार्पण-वसन्तोत्सवौ तन्त्रेण करिष्ये इति सङ्कल्प्य तत्कालसम्भवानि सकह्लाराणि कर्पूरचन्दनोक्षितानि कुसुमानि पूर्ववत् अधिवास्य तैर्दमनकैश्च युगपदर्चयेद्।।

इति चैत्रपूर्णिमाकृत्यम्।।

वैशाखकृत्यम्

अथ वैशाख्यां पूर्णिमायां नैवेद्यावसरे प्राग्वदधिवासितं हेमन्तकाले सङ्गृहीतं तुषारोदकं तदलाभे कर्पूरमृगनाभिसुरभिलं शीतलं सलिलं वा पूर्वोक्तान्यतमेन पक्षेण सावरणायै देवतायै निवेदयेत्। अवशिष्टं प्राग्वत्।।

इति वैशाखकृत्यम्।।

ज्येष्ठकृत्यम्

अथ ज्येष्ठायां प्राग्वदधिवासितानि कदलीपनसाम्रादीनि फलानि उक्तया रीत्या कयाचित् उक्तमन्त्रैः प्रधानदेवतादिभ्यो निवेदयेत्। तैः अर्चयेदिति केचित्। अन्यत् समानम्।।

इति ज्येष्ठकृत्यम्।।

आषाढ़कृत्यम्

अथाषाढ्यां प्राग्वदधिवासनपूर्वकं श्रीदेव्यै कुङ्कुममिश्रं चन्दनं समर्प्य जातीकुसुमैः सावरणमभ्यर्च्य ताम्बूलावसरे लवङ्गैलाकङ्कोलानि उक्तेन प्रकारेण केनापि निवेदयेत्। शेषं पूर्ववत्।।

इत्याषाढकृत्यम्।।

श्रावणे पवित्रारोपणविधिः

तदनु श्रावण्यां पूर्णिमायां पवित्रारोपणम्। तानि च सुवर्णरौप्यताम्रान्यतमन्तु सूत्रसरीपद्मदर्भमुञ्जशाणवल्कलकार्पासान्यतमसूत्रविनिर्मितानि। कार्पाससूत्रं तु सुवासिनीकर्त्तृकम्। उक्तान्यतमेन नवगुणितेन सूत्रेण निर्मितैः षोडशाङ्गुलायामैः तावत्संख्याकैः सरैः सम्पन्नं वेति द्वितीयः। तत्तदावरणगतशक्तिसमसंख्याकाङ्गुलायामसरग्रन्थिकम् वेति तृतीयः।। आदिमपक्षद्वये पवित्राणि सर्वेषां साधारणानि। अन्तिमे तु पक्षे मूलदेव्याः षोडशनवान्यतराङ्गुलायामसरग्रन्थिकम्, महाकामेश्वर्यादीनां तिसृणां त्र्यङ्गुलायामादिकम्, अङ्गदेवीनां षण्णां तत्संख्याकाङ्गुलायामादिकम्। नित्यानां पञ्चदशाङ्गुलायामादिकम्, गुरुपङ्क्तित्रयस्य तत्तदोघसमसंख्याङ्गुलायामादिकम्, आयुधदेवीनां चतुरङ्गुलायामादिकमिति विशेषः। पक्षत्रयेऽपि व्याप्तस्य श्रीगुरोः प्रधानदेवीवत्। जीवतस्तस्य स्वस्य च क्रमागमज्ञशिष्यशक्तिसामयिकानाञ्च कण्ठादिनाभ्यन्तयाममङ्गीकृतपक्षान्यतमसंख्यसरग्रन्थिकम् एकग्रन्थिकम् वा। क्रमः कालनित्याक्षरक्रमः। आगमः कादिकालीमतादिः। अन्येषां शक्तिसामयिकानां कण्ठादिनाभ्यन्तमानं नवसरमेकग्रन्थिकञ्च। वितानाद्देवताविष्टरायाममष्टोत्तरशतग्रन्थिकं शक्त्यवतारकं नाम। मण्डपस्य तत्परिधिसमप्रमाणमेकसरग्रन्थिकम्। होमाग्नेः षोडशनवान्यतराङ्गुलायाममेकसरमेकग्रन्थिकञ्च पवित्रं कुर्यात्। ग्रन्थिः सूत्रवेष्टनरूपः। वेष्टनसंख्या तु उत्तमादिभेदेन षट्त्रिंशच्चतुर्विंशद्द्वादशात्मिका ऐच्छिकी वा। तन्मन्त्रस्तु बाला वा कवचं वा उक्तपक्षत्रये एकतमस्यैवाश्रयणीयत्वं मानसाङ्कर्यम् अनिष्टापादकं सर्वथा नाचरेदिति स्थितिः। इत्थमुपकल्पितानि गोरोचनकुङ्कुमरक्तचन्दनमृगमदपङ्कालिप्तानि लाक्षागैरिकान्यतरचित्रितग्रन्थिकानि पवित्राणि

प्राग्वदधिवास्य श्रावण्यां रात्रौ शक्त्यवतारकं पवित्रं वितानाल्लम्बयित्वा मण्डपं तत्सूत्रेणावेष्ट्य प्रधानदेवीपूजान्ते ज्ञानमुद्रोपात्तैः समं श्रीदेव्याद्यावरणान्तदेवताभ्यः तत्तत्पादुकया पृथक् पृथक् समर्प्य अग्नये च पुरो निधाय श्रीगुरुशक्ति-सामयिकेभ्यः प्रदाय स्वयं धृत्वा शिष्येभ्यो दद्यात्। एतावत्कर्तुमसम्भवे षण्णवति-अङ्गुलायामसरग्रन्थिकानि त्रीणि पवित्राणि कृत्वा श्रीदेव्यै समर्पयेत्। शेषं पूर्ववत्। एतन्मुख्यकालातिक्रमे मिथुनादितुलान्तसंक्रान्तिगतासु कृष्णाष्टमी-कृष्णचतुर्दशीपूर्णिमासु वा कार्यम्।

इति पवित्रारोपणविधिः।।

भाद्रपदकृत्यम्

ततो भाद्रपद्यां पूर्ववदधिवासितेनैकेन केतकीपुष्पेण अलाभे पत्रेण वा ज्ञानमुद्रया सर्वाः देवता अर्चयेत्। पुष्पं तु निष्कासितकेसरमिति श्रीगुरुमुखागमः। शेषं समानम्।

इति भाद्रपदकृत्यम्।।

आश्वयुजकृत्यम्

अथाश्वयुज्यां पुष्पविशेषं विशेषकरणकः क्रमः प्रवर्तनीयः। अथवा-

आश्वयुज्यां विशेषस्तु दर्शान्तप्रतिपत्तिथिम्।
आरभ्य पूजयेत् देवीं गन्धपुष्पोपहारकैः।।

इति तन्त्रराजवचनात् तच्छुक्लप्रतिपदादिपूर्णावधिकः प्रयोगोऽनुष्ठेयः। तत्र प्रतिपद्रात्रौ विशेषतः पुष्पं नैवेद्याद्युपचारैः क्रमं प्रवर्त्य, प्रधानदेवतायै शतमाज्याहुतीः, आवरणदेवताभ्यः तद्दशांशं हुत्वा, जपं होमसमसंख्याकं विधाय, अविवाहिताक्षतां प्राङ्निमन्त्रितां कन्यामेकाम् अभ्यक्तस्नानाम् आसने उपवेश्य तस्यां देवीं आवाह्य बालया पञ्चधा उपचर्य यथाविभवं वसनाभरणादि दद्यात्। एवं द्वितीयादि चतुर्दश्यन्ते द्विशतादिहोमजपकन्याद्वयादिपूजनानि कृत्वा पूर्णिमायां वृद्ध्या शतेन सह षोडशशतहोमजपषोडशकन्यापूजनानि कुर्यादिति एकपक्षः। प्रतिपदि प्रकृतिहोमः शतमाहुतयो वृद्धिहोमस्य शतम् एव जपः

कन्यके द्वे। द्वितीयादिषु त्रिशतादिहोमजपौ त्रयादि कन्यका इत्यपरः। एतयोरेकमाश्रयेत्। तिथिवृद्धौ प्रतिपदादिक्रमेण शतादिहोमादिकम्। तिथिह्रासे तु तस्मिन्नेव दिने तद्द्वितयकृत्यं, एकस्मिन्नेव काले होमादिकं च कुर्यात्। अवशिष्टमविशिष्टम्। एवं कृते विद्या सिद्धा भवति। राजा च साधकस्य अर्चको भवति। अथवा– कुलार्णवोक्तनवरात्रपक्षोऽपि एकोत्तरवृद्धया वा तदसम्भवे यथोक्तक्रमेणैव वा कर्त्तव्यः। अयं स्वतन्त्रः न तु पूर्णिमाङ्गम्। तत्पक्षे पूर्णिमापूजाऽपि प्रत्येकमुक्तरीत्या कर्त्तव्येति दिक्।

इत्याश्वयुजकृत्यम्।

कार्तिककृत्यम्

अथ कार्तिक्यां प्राग्वदधिवासितं कुङ्कुमं सावरणायै देव्यै समर्प्य गोधूमादि-पिष्टप्रकृतिकैः घृतपूरितैः प्रज्वालितकर्पूरवर्तिभिः प्रदीपैः नित्यहोमक्रमेण तत्तद्देवताभ्यो हुत्वा देव्याः पुरः शुचिनि भूतले षोडशदीपान् दत्त्वा अङ्गदेवीभ्यो नित्याभ्यः ओघत्रयगुरुभ्यः तत्तत्स्थाने निवेश्य तदभितस्त्रिकोणादिचतुरस्रान्ताकृत्या च निधाय प्रतिदैवतमेकैकं दीपं निवेदयेत्। एतावदसम्भवे एकस्मिन्नेव भाजने मध्ये एकं तदभितो नव वा नवयोनिचक्राष्टदलकमलान्यतमालङ्कृते वा तत्र मध्ये एकं कोणेषु दलेषु वाऽष्टौ दीपान् प्रज्वाल्य देव्यै मूलेन सप्रसूनं निवेदयेत्। शेषमभिहितवत्।।

इति कार्तिककृत्यम्।।

मार्गशीर्षकृत्यम्

अथ मार्गशीर्षपूर्णिमायां सावरणां श्रीदेवीं सुगन्धिभिः कुसुमैरभ्यर्च्य माषपिष्टापूपान् कर्पूरसुरभिलं नारिकेलोदकं च प्रागुक्तान्यतमया भङ्ग्या सर्वाभ्यो देवताभ्यो निवेदयेत्। अन्यदविशेषम्।।

इति मार्गशीर्षकृत्यम्।।

पौषकृत्यम्

ततः पौष्यां प्राग्वदधिवासपूर्वकं शर्करया गुडेन वा साकं गव्यं दुग्धम् उक्तेन केनचित् प्रकारेण निवेदयेत्। अन्यदविशेषम्।।

इति पौषकृत्यम्।।

माघकृत्यम्

तदनु माघ्यां प्राग्वदधिवासितैः शुक्लैस्तिलैः अलाभे रक्तकृष्णैर्वा शुद्धैस्सकुसुमैरभ्यर्च्य शर्करादुग्धापूपान् निवेदयेत्। अत्रापूपाः गोधूमादि-पिष्टप्रकृतिका इति सम्प्रदायः। इतरत् समानम्।।

इति माघकृत्यम्।।

फाल्गुनकृत्यम्।

अथ फाल्गुन्यां सौवर्णराजतपुष्पैः पङ्कजैः कह्लारैः आम्रकुसुमैः मधूकैश्च यथासम्भवं मिलितैः प्राग्वदधिवासितैः सावरणां श्रीदेवीं वरिवस्येत्।

इति फाल्गुनकृत्यम्।।

अयमेव नैमित्तिकार्चनविधिः गणपतिश्यामावार्तालीनां सामान्यक्रमो-क्तानां देवतानाम्। सर्वत्रामुकपौर्णिमायां अमुकेन द्रव्य-विशेषेण अमुकदेवतां पूजयिष्ये इति सङ्कल्पः।

अत्राधिकमासापाते एकमासकृत्यस्य मासद्वये आवृत्तिः। क्षयमास-प्रसक्तौ त्वेकस्मिन् मासे मासद्वयकृत्यमपि कार्यं भवति। नैमित्तिकार्चन-मुख्यगौणकालातिक्रमे मूलविद्यासहस्रजपः। प्रायश्चितम् आम्नातं *तन्त्रराजे*-

नैमित्तिकातिक्रमणे सहस्रं प्रजपेत्तथेति।।

इति पञ्चपर्वार्चनविधिः।।

तन्त्रान्तरोक्तेषु युगमन्वादिषु विशेषदिवसेष्वपि श्रीदेव्यर्चनम् अभ्युदया-यैव। सूत्रकारेण काम्यहोमस्यैवोक्तत्वात् तत्पूजाऽनुक्तिरिति शिवम्।।

इति नैमित्तिकार्चनप्रकरणं सम्पूर्णम्।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीक्रमे विशेषसपर्याप्रकरणं सम्पूर्णम्।

श्यामाक्रमः

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्याः प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा। तदुपासनद्वारा श्रीविद्या शीघ्रं प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ प्रधानसचिवमुपसेव्य तद्द्वारा राजदर्शनं कुर्वन्ति तथैव श्यामायाः प्रथममुपासनं न्याय्यम्। 'प्रधानद्वारा राजप्रसादनं हि न्याय्यम्।' (*परशुरामकल्पसूत्रम्*)

श्रीमान् साधकः श्यामलां देवीमाराधयिषुः श्रीक्रमोक्तक्रमेण काल्य-कृत्याह्निके निर्वर्तयेत्। अत्र विशेषः-

श्रीगुरुपादुकायामादौ त्रितारीस्थाने बालायोगः। सर्वकारणभूतायाः संविदश्चिन्तनं मूलाधारादिद्वादशान्ताख्यललाटोर्ध्वभागावधिकमेव। (रश्मि-स्रगमनुस्मरणम्) तत्र तत्र यथोचितं सम्बुद्ध्यादीनामूहः। आदित्यमण्डले वक्ष्यमाणया भङ्ग्या सङ्गीतयोगिन्या भावनम्। मूलेन अर्घ्यदानम्। वक्ष्यमाणमृष्यादिन्यासत्रयञ्चेति। इदं चाह्निकं स्वतन्त्रोपास्तौ, पुरश्चरणकाले च, न तु श्रीक्रमाङ्गत्वेन सहानुष्ठाने।

यागमन्दिरप्रवेशः

अथापराह्णे श्यामायागमन्दिरमागत्य द्वारस्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य यागगृहञ्च रङ्गवल्लीपुष्पमालावितानकादिभिश्चालङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामशाखयोः ऊर्ध्वभागे च क्रमेण-

ऐं क्लीं सौः भद्रकाल्यै नमः, ३ भैरवाय नमः, ३ लम्बोदराय नमः, इति तिस्रो द्वारदेवताः सम्पूज्य, अन्तःप्रविष्टः, ३ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः, इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा, सपर्यासामग्रीं स्वस्य दक्षभागे निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य गन्धमाल्यादिभिरलङ्कृतात्मा ताम्बूलेन जातीपत्रफललवङ्गैलाकर्पूराख्यपञ्चतिक्तेन वा सुरभिलवदनः सुप्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णे शुचिनि ऊर्णामृदुनि बालातृतीयबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने ३ आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य ३ समस्तगुप्तप्रकटयोगिनीचक्रदेवता-

श्रीपादुकाभ्यो नमः, इति (मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः) स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकया श्रीगुरुं, महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य, ऐं ह्रः अस्त्राय फट्, इति मन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादिकरतलान्तकूर्परयोश्च विन्यस्य देहे च व्यापकं कृत्वा स्वस्य दैवतैक्यं भावयन्–

ऐं क्लीं सौः अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रयक्रूर-दृष्ट्यवलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्। तालत्रयं नाम, दक्षतर्जनीमध्यमाभ्यामधोमुखाभ्यां वामकरतले सशब्दमुपर्युपरि त्रिरभिघातः।

प्राणायामः

अथ ३ 'नमः' इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमोक्तप्रकारेण भूतशुद्धिम् आत्मप्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय मूलेन विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य, तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं, निजदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं धारयेत्।

षडङ्गादिन्यासपञ्चकम्

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं सर्वजनमनोहारि हृदयाय नमः।

७ सर्वमुखरञ्जिनि शिरसे स्वाहा।

७ क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि शिखायै वषट्।

७ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि कवचाय हुम्।

७ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्।

७ सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय स्वाहा अस्त्राय फट्। इति मन्त्रान् हृदयादिषु न्यसेदिति *षडङ्गन्यासः*।। १।।

अथ श्रीक्रमोक्तं *मातृकान्यासं* कुर्यात्।। २।।

ऐं क्लीं सौः रत्यै नमः, मूलाधारे, ३ प्रीत्यै नमः, हृदये,

३ मनोभवाय नमः, इति मुखे न्यसेत्। इति *रत्यादिन्यासः*।। ३।।

ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः, ब्रह्मरन्ध्रे,

३ ॐ नमो नमः ललाटे,
३ भगवति नमः भ्रूमध्ये,
३ श्रीमातङ्गीश्वरि नमः दक्षनेत्रे,
३ सर्वजनमनोहारि नमः वामनेत्रे,
३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः मुखे,
३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे,
३ ह्रीं नमः वामश्रोत्रे,
३ श्रीं नमः कण्ठे,
३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे,
३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे,
३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः हृदये,
३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने,
३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने,
३ अमुकं मे वशमानय नमः नाभौ,
३ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने,

३ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः मूलाधारे (न्यसेत्,)

इति मूलखण्डसप्तदशकन्यासः ॥ ४॥

एतानेव प्रतिलोममूलमन्त्रखण्डान् मूलाधारस्वाधिष्ठाननाभिवामस्तनकदक्षस्तनहृदयवामदक्षांसकण्ठवामदक्षश्रोत्रमुखवामदक्षनेत्रभ्रूमध्यललाटब्रह्मरन्ध्रेषु क्रमात् न्यसेत्। यथा–

ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः, मूलाधारे

३ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने,
३ अमुकं मे वशमानय नमः नाभौ,
३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने,
३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने,
३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः, हृदये
३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे,
३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे,
३ श्रीं नमः कण्ठे,
३ ह्रीं नमः वामश्रोत्रे,
३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे,
३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः मुखे,
३ सर्वजनमनोहारि नमः वामनेत्रे,
३ श्रीमातङ्गीश्वरि नमः, दक्षनेत्रे,
३ भगवति नमः भ्रूमध्ये,
३ ॐ नमो नमः ललाटे,

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे। *इति प्रतिलोममूलमन्त्रखण्डन्यासः*॥५॥

मन्दिरार्चनम्

अथामृताम्भोनिधिमध्यस्थमणिद्वीपमध्यगते कदम्बोद्याने मुक्ताकुसुममालिकाहरितपट्टवितानास्तरणवन्दनमालिकाद्यलङ्कृतं धूपधूपितं प्रज्वलत्प्रदीपपरम्परं चतुर्द्वारं मरकतमण्डपं विचिन्त्य, तस्य प्रागादिषु द्वारेषु–

ऐं क्लीं सौं सां सरस्वत्यैः लां लक्ष्म्यै नमः, शं शङ्खनिधये नमः, पं पद्मनिधये नमः, इति सम्पूज्य–

ऐं क्लीं सौः, लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमः, पूर्वे,

३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नमः, आग्नेये,

३ टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः दक्षिणे

३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय सपरिवाराय नमः,नैर्ऋते,

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सपरिवाराय नमः,पश्चिमे,

३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः,वायव्ये

३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः,उत्तरे,

३ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः। ऐशान्ये, इति प्रागाद्यष्टासु दिक्षु शक्रादीनभ्यर्च्य,

३ ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सपरिवाराय नमः। इति इन्द्रेशानयोः मध्ये,

३ श्रीं विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सपरिवाराय नमः, इति निर्ऋतवरुणयोः दिगन्तरे,

३ ॐ वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः, इति वास्तुनि चार्चयेत्।

यन्त्रोद्धारः

अथ चन्दनपङ्कप्रकृतिके मण्डले क्षीरमिश्रितेन सिन्दूरादिना बिन्दुत्रिकोणपञ्चकोणाष्टदलषोडशदलाष्टपत्रचतुष्पत्रचतुरस्रात्मकं चक्रं विलिख्य विलेख्य वा

सुवर्णरजतताम्रस्फटिकमरकतरत्नाद्युत्कीर्णं वा तत्समास्तीर्णपट्टवसने श्रीखण्डरक्तचन्दनादिनिर्मिते पीठे निवेश्य यन्त्रप्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

यथा–ऐं क्लीं सौः श्यामायन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः, ३ श्यामायन्त्रस्य जीव इह स्थितः, ३ श्यामायन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ श्यामायन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इहायान्तु स्वाहा।

इति मन्त्रेण लिखिते प्राणप्रतिष्ठां विदध्यात्। सुवर्णादिकृतस्य यन्त्रस्य तु प्राणप्रतिष्ठा श्रीक्रमोक्तात्राप्यनुसन्धेया। अत्र देवतानामाद्यूहस्त्वावश्यक एव। एवं देवतान्तरक्रमेष्वपि। ततो मूलेन चक्रे पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, श्रीक्रमोक्तक्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये आसादयेत्। अत्र चोभयोरप्यर्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिबिन्द्वन्तमण्डलकरणम्।

ऐं क्लीं सौः अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्तये वौषट्, इत्याधारस्थापनम्।

३ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषट्, इति पात्रनिधानम्।

३ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः, इति शुद्धजलापूरणम्।

(अत्र वह्निसूर्यसोमकलापूजनम्)

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह।। इति क्षीरपूरणम्।

उक्तं षडङ्गार्चनं, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम्। चतुर्णवतिमन्त्राभिमन्त्रणा-भावश्च विशेषः। ततो विशेषार्घ्यबिन्दुभिः वरिवस्यावस्तूनि सम्प्रोक्ष्य।

चक्रदेवीपूजा

ऐं क्लीं सौः आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इति पीठं पुष्पैरभ्यर्च्य, बिन्दुमध्ये ३ श्रीमातङ्गीश्वरीमूर्तये नमः, इति देव्याः मूर्तिं भावयित्वा, हृदि वक्ष्यमाणरूपां देवीं सञ्चिन्त्य, ३ श्रीमातङ्गीश्वर्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः। इत्यादिताम्बूलान्तं मानसोपचारैरभ्यर्च्य, तां तेजोरूपेण परिणतां ब्रह्मरन्ध्रं प्रापय्य वहन्नासापुटद्वारा कृतविनिर्गमां कुसुमगर्भिते अञ्जलौ

सन्निहितां देवीं ३ श्रीमातङ्गीश्वरि अमृतचैतन्यमावाहयामीति चक्रे भावितायां मूर्त्यामावाह्य मूलान्ते श्रीमातङ्गीश्वरि आवाहिता भव। इत्यादिरीत्या आवाहनसंस्थापन–संनिधापन–सन्निरोधन–सम्मुखीकरणावगुण्ठनानि, तत्तन्मुद्रा-प्रदर्शनपूर्वकं विधाय, बन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। तत्प्रकारश्च श्रीक्रमतो ज्ञातव्यः। ततः ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वर्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादि भङ्ग्या पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजनच्छत्रचामरयुगल-दर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलान्तान् षोडशोपचारान् परिकल्पयेत्। नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि च दत्वा ताम्बूलं समर्पयेत्। नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणं, मूलमन्त्रेण प्रोक्षणम्, वमित्यमृतबीजेनाभिमन्त्रणपूर्वं धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्। मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणं प्राणादिमुद्राप्रदर्शनश्च कार्यम्। अथ मूलमन्त्रान्ते श्रीमातङ्गीश्वरीश्रीपादुकां पूजयामीति एवं तद्धस्ताङ्गुष्ठानामिका-कनिष्ठिकापुष्पाक्षतैः पूजनम्। वामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्टद्वितीयकलशगृहीतक्षीर-बिन्दुभिस्सह समर्पितैः दक्षकरोपात्तैः कुसुमैः देवीं त्रिस्सन्तर्प्य, देव्या अग्नीशासुर-वायव्यभागेषु मौलौ प्रागादिदिक्षु च प्रागुक्तषडङ्गमन्त्रान्ते क्रमेण–

३ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कवचाय हुं कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति लयाङ्गत्वेनाङ्गदेवता आराध्य, देव्याः पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं वरिवस्येत्। यथा–

(अर्चने सर्वत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति योजनम्)।

ऐं क्लीं सौः परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, (अस्माकं सम्प्रदायस्तु दक्षकरगृहीतशलाकया विशेषार्घविन्दुभिस्तर्पणम्)

३ परमेशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्प्रयामि नमः, ३ परशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ कामेश्वर्यम्बानाथ-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ मोक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ कामानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति *दिव्यौघः।*

ऐं क्लीं सौः ईशानानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ तत्पुरुषा-नन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ अघोरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ वामदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सद्योजातानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति *सिद्धौघः।*

ऐं क्लीं सौः पञ्चोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ परमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सर्वज्ञानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सर्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति *मानवौघः।* (नाथ)शब्द सर्वत्रैव योज्यः।

आवरणार्चनम्

(अर्चने सर्वत्र नामादौ त्रितारी, अन्ते श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति कल्पनीयम्)।

त्र्यस्रे देव्यग्रकोणादिप्रादक्षिण्यक्रमेण–

ऐं क्लीं सौः रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ प्रीतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ मनोभवाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति प्रथमावरणम्।*

पञ्चारस्याराणां मूलेष्वग्रेषु च प्राग्वत्–

ऐं क्लीं सौं द्रां द्रावणबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ द्रींशोषणबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ क्लीं बन्धनबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ब्लूं मोहनबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सः उन्मादनबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति *पञ्चबाणार्चनम्।*

ऐं क्लीं सौः ह्रीं कामराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ क्लीं मन्मथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ऐं कन्दर्पश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ब्लूं मकरकेतनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ स्त्रीं मनोभवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति द्वितीयावरणम्। इति पञ्चकामार्चनम्।*

अष्टदलस्य दलानां मूलेष्वग्रेषु च-

ऐं क्लीं सौः आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ईं माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ऊं कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ॠं वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ॡं वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ऐं माहेन्द्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ औं चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ अः चण्डिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

ऐं क्लीं सौः लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ प्रीतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ कीर्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ शान्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ पुष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ तुष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। *इति तृतीयावरणम्।*

षोडशदले प्राग्वत्-

ऐं क्लीं सौः वामाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ज्येष्ठाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ रौद्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ शान्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्प्रयामि नमः, ३ श्रद्धाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ क्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सृष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ प्रमथिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ आश्वासिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ वीचिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ विद्युन्मालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सुरानन्दाश्रीपादुकां पूजयामि

तर्पयामि नमः, ३ नागबुद्धिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति चतुर्थावरणम्।*

द्वितीयाष्टदले प्राग्वत्–

ऐं क्लीं सौः अं असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ इं रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ उं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ऋं क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ लृं उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ एं कपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ ओं भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ अं संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति पञ्चमावरणम्।*

चतुर्दले प्राग्वत्–

ऐं क्लीं सौः मातङ्गीश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ सिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ महामातङ्गीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ महासिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति षष्ठावरणम्।*

चतुरस्रस्यान्तराग्नेयादिकोणेषु क्रमेण–

ऐं क्लीं सौः गं गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ दुं दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ वं वटुकंश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ क्षं क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

देव्यग्रादिद्वारेषु प्रागाद्यास्वेकादशसु दिक्षु च–

ऐं क्लीं सौः सां सरस्वत्यै नमः इत्यादि ३ ऐं वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः इत्यन्तैः मन्त्रैः प्रागुक्तै वास्तुपतिपर्यन्तदेवताः समभ्यर्च्य, पूर्वरेखायां च–

ऐं क्लीं सौः हंसमूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ परप्रकाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ पूर्णश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ नित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ३ करुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति सम्प्रदायगुरूँश्च पूजयेत्। *इति सप्तमावरणम्।*

(सर्वा अप्यावरणदेवताः देव्या अभिमुखासीनाः स्वयं तत्तदभिमुखः पूजयामीति भावयेत्)।

गुरुपादुकापूजा

अथ स्वशिरसि ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, ह्सौः स्हौः श्रीशिवादिगुरुश्रीपादुकाः पूजयामि। (इति सामान्यपादुकया शिवादिगुरून्,) ऐं क्लीं सौः ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौः स्हौः अमुकाम्बासहितामुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामीति च स्वगुरुमभ्यर्च्य, पुनर्देवीं त्रिः सन्तर्प्य प्राग्वत् बालया षोडशधा चोपचरेत्।

बलिदानम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण होमं कृत्वा कारयित्वा वा (अकृत्वा वा इति पाठान्तरम्) शुद्धजलेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलत्रयं विधाय ऐं व्यापक-मण्डलाय नमः, इति पुष्पैः समभ्यर्च्य अर्धान्नसलिलपूर्णसक्षीरोपादिमध्यमं सगन्धकुसुमं साधारं पात्रं निधाय ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वरि इमं वलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा। ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वरि शरणागतं मां त्राहि त्राहि हुं फट् स्वाहा, ऐं क्लीं सौः क्षेत्रपालनाथ इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रान् क्रमेण पठन् देव्याः दक्षिणभागे बलित्रयं प्रदाय तत्त्वमुद्रास्पृष्टं क्षीरं बल्युपरि निषिच्य, वामपार्ष्णिघात- करास्फोटान् कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो नाराचमुद्रया बलिं भूतैः ग्राहयित्वा पाणी प्रक्षाल्य देव्यै प्रदक्षिणनतीर्विधाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य जपेत्।

श्रीमातङ्गीश्वरीमन्त्रजपः

अस्य श्रीमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्यर्षये नमः–शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः–मुखे, श्रीमातङ्गीश्वरीदेवतायै नमः–हृदये। ऐं बीजाय नमः–गुह्ये, सौः शक्तये नमः–पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः–नाभौ, ममाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः–इति करसम्पुटे, न्यस्य मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा न्यासोक्तैरङ्गमन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा ध्यानम्–

मातङ्गीं भूषिताङ्गीं मधुमदमुदितां नीपमालाढ्यवेणीं
सद्वीणां शोणचेलां मृगमदतिलकामिन्दुरेखावतंसाम्।

कर्णोद्यच्छङ्खपात्रां स्मितमधुरदृशा साधकस्येष्टदात्रीं
ध्यायेद्देवीं शुकाभां शुकमखिलकलारूपमस्याश्च पार्श्वे।।

इति ध्यात्वा मनसा पञ्चधोपचर्य पुरश्चरणे वक्ष्यमाणपूर्वोत्तराङ्गमन्त्रसहितं मूलं श्रीक्रमोक्तेन विधिना यथाशक्ति जप्त्वा पुनः न्यासादि विधाय,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।

इति देव्या वामहस्ते सामान्यार्घ्यसलिलेन जपं समर्प्य, स्तुवीत–

मातङ्गीस्तुतिः

मातङ्गि मातरीशे मधुमदमथनाराधिते महामाये।
मोहिनि मोहप्रमथिनि मन्मथमथनप्रिये नमस्तेऽस्तु।।१।।
स्तुतिषु तव देवि विधिरपि पिहितमतिर्भवति विहितमतिः।
तदपि तु भक्तिर्मामपि भवतीं स्तोतुं विलोभयति।।२।।
यतिजनहृदयनिवासे वासववरदे वराङ्गि मातङ्गि।
वीणावादविनोदिनि नारदगीते नमो देवि ।।३।।
देवि प्रसीद सुन्दरि पीनस्तनि कम्बुकण्ठि घनकेशि।
मातङ्गि विद्रुमौष्ठि स्मितमुग्धाक्ष्यम्ब मौक्तिकाभरणे।।४।।
भरणे त्रिविष्टपस्य प्रभवसि तत एव भैरवी त्वमसि।
त्वद्भक्तिलब्धविभवो भवति क्षुद्रोऽपि भुवनपतिः।।५।।
पतितः कृपणो मूकोऽप्यम्ब भवत्याः प्रसादलेशेन।
पूज्यः सुभगो भवति जडश्चापि सर्वज्ञः।।६।।
ज्ञानात्मिके जगन्मयि निरञ्जने नित्यशुद्धपदे।
निर्वाणरूपिणि शिवे त्रिपुरे शरणं प्रसन्नस्त्वाम्।।७।।
त्वां मनसि क्षणमपि यो ध्यायति मुक्तामणीवृतां श्यामाम्।
तस्य जगत्त्रितयेऽस्मिन् कास्ताः ननु याः स्त्रियोऽसाध्याः।।८।।
साध्याक्षरेण गर्भितपञ्चनवत्यक्षराञ्चिते मातः।
भगवति मातङ्गीश्वरि नमोऽस्तु तुभ्यं महादेवि।।९।।

विद्याधरसुरकिन्नरगुह्यकगन्धर्वयक्षसिद्धवरैः ।
आराधिते नमस्ते प्रसीद कृपयैव मातङ्गि ॥१०॥
वीणावादनवेलानर्तदलाबुस्थगितवामकुचम् ।
श्यामल कोमलगात्रं पाटलनयनं स्मरामि त्वाम्॥११॥
अवटुतटघटितचूलीताडिततालीपलाशताटङ्काम्।
वीणावादनवेलाकम्पितशिरसं नमामि मातङ्गीम्॥१२॥
माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी।
कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बवनवासिनी ॥१३॥
वामे विस्तृतिशालिनी स्तनतटे विन्यस्तवीणामुखं
तन्त्रीं तारविराविणीमसकलैरास्फालयन्ती नखैः।
अर्धोन्मीलदपाङ्गमंसवलितग्रीवं मुखं बिभ्रती
माया काचन मोहिनी विजयते मातङ्गकन्यामयी॥१४॥
वीणावाद्यविनोदगीतनिरतां लीलाशुकोल्लासिनीं
बिम्बोष्ठीं नवयावकार्द्रचरणामाकीर्णकेशालिकाम्।
हृद्याङ्गीं सितशङ्खकुण्डलधरां शृङ्गारवेषोज्ज्वलां
मातङ्गीं प्रणतोऽस्मि सुस्मितमुखीं देवीं शुकश्यामलाम्॥१५॥
स्रस्तं केसरदामभिर्बलयितं धम्मिल्लमाबिभ्रती
तालीपत्रपुटान्तरेषु घटितैस्ताटङ्किनी मौक्तिकैः।
मूले कल्पतरोर्महामणिमये सिंहासने मोहिनी
काचिद्गायनदेवता विजयते वीणावती वासना॥१६॥
वेणीमूलविराजितेन्दुशकलां वीणानिनादप्रियां
क्षोणीपालसुरेन्द्रपन्नगवरैराराधिताङ्घ्रिद्वयाम् ।
एणीचञ्चललोचनां सुवसनां वाणीं पुराणोज्ज्वलां
श्रोणीभारभरालसामनिमिषः पश्यामि विश्वेश्वरीम्॥१७॥
मातङ्गीस्तुतिरियमन्वहं प्रजप्ता जन्तूनां वितरति कौशलं क्रियासु।
वाग्मित्वं श्रियमधिकाञ्च गानशक्तिं सौभाग्यं नृपतिभिरर्चनीयताञ्च॥१८॥

इति मन्त्रकोशे मातङ्गीस्तवः सम्पूर्णः।

श्यामला-दण्डकम्

माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम्।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि ।। १।।
चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पवाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः।। २।।
माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी।
कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बनवासिनी।। ३।।
जय मातङ्गतनये जय नीलोत्पलद्युते।
जय सङ्गीतरसिके जय लीलाशुकप्रिये।।

जय जननि सुधासमुद्रान्त-हृद्यन्मणिद्वीपसंरूढबिल्वाटवीमध्यकल्पद्रुमा-कल्पकादम्बकान्तारवासप्रिये कृत्तिवासप्रिये सर्वलोकप्रिये, सादरारब्धसङ्गी-तसम्भावनासम्भ्रमालोलनीपस्रगाबद्धचूलीसनाथत्रिके सानुमत्पुत्रिके, शेखरीभूत-शीतांशुरेखामयूखावलीबद्धसुस्निग्धनीलालकश्रेणिशृङ्गारिते लोकसम्भाविते कामलीलाधनुःसन्निभभ्रूलतापुष्पसन्दोहसन्देहकृल्लोचने, वाक्सुधासेचने, चारुगोरोचनापङ्ककेलीललामाभिरामे सुरामे रमे, प्रोल्लसद्वालिकामौक्तिकश्रेणिका-चन्द्रिकामण्डलोद्भासिलावण्यगण्डस्थलन्यस्तकस्तूरिकापत्ररेखासमुद्भूतसौरभ्य-सम्भ्रान्त-भृङ्गाङ्गनागीतसान्द्रीभवन्मन्दतन्त्रीस्वरे भास्वरे, वल्लकीवादनप्रक्रिया-लोलतालीदलाबद्धताटङ्कभूषाविशेषान्विते सिद्धसम्मानिते, दिव्यहालामदो-द्वेलहेलालसच्चक्षुरान्दोलनश्रीसमाक्षिप्तकर्णैकनीलोत्पले पूरिताशेषलोकाभिवाञ्छा-फले श्रींफले, स्वेदबिन्दूल्लसत्फाललावण्यनिःस्यन्दसन्दोहसन्देहकृन्नासिका-मौक्तिके सर्वविश्वात्मिके कालिके, मुग्धमन्दस्मितोदारवक्त्रस्फुरत्पूगताम्बूल-कर्पूरखण्डोत्करे ज्ञानमुद्राकरे सर्वसम्पत्करे पद्मभास्वत्करे, कुन्दपुष्पद्युतिस्निग्ध-दन्तावलीनिर्मलालोलकल्लोलसम्मेलनस्मेरशोणाधरे चारुवीणाधरे पक्वबिम्बा-धरे।।१।।

सुललितनवयौवनारम्भचन्द्रोदयोद्वेललावण्यदुग्धार्णवाविर्भवत्कम्बुबिम्बो-कभृत्कन्धरे सत्कलामन्दिरे मन्थरे, दिव्यरत्नप्रभाबन्धुरच्छन्नहारादिभूषास-मुद्द्योतमानानवद्यांशुशोभे शुभे, रत्नकेयूररश्मिच्छटापल्लवप्रोल्लसद्दोर्लता-

राजिते योगिभिः पूजिते, विश्वदिङ्मण्डलव्यापिमाणिक्यतेजःस्फुरत्कङ्क-णालङ्कृते विभ्रमालङ्कृते साधकैः सत्कृते, वासरारम्भवेलासमुज्जृम्भमा-णारविन्दप्रतिद्वन्द्विपाणिद्वये सन्ततोद्यद्दये अद्वये, दिव्यरत्नोर्मिकादीधितिस्तो-मसन्ध्यायमानाङ्गुलीपल्लवोद्यन्नखेन्दुप्रभामण्डले सन्नताखण्डले चित्प्रभामण्डले प्रोल्लसत्कुण्डले, तारकाराजिनीकाशहारावलिस्मेरचारुस्तनाभोगभारानमन्मध्य-वल्लीवलिच्छेदवीचीसमुल्लाससन्दर्शिताकारसौन्दर्यरत्नाकरे वल्लकीभृत्करे किङ्करश्रीकरे, हेमकुम्भोपमोत्तुङ्गवक्षोजभारावनम्रे त्रिलोकावनम्रे, लसद्वृत्त-गम्भीरनाभीसरस्तीरशैवालशङ्काकरश्यामरोमावलीभूषणे मञ्जुसम्भाषणे, चारुशिञ्जत्कटीसूत्रनिर्भर्त्सितानङ्गलीलाधनुःशिञ्जिनीडम्बरे दिव्यरत्नाम्बरे, पद्मरागोल्लसन्मेखलाभास्वरश्रोणिशोभाजितस्वर्णभूभृत्तले चन्द्रिकाशीतले।।२।।

विकासितनवकिंशुकाताम्रदिव्यांशुकच्छन्नचारुशोभापराभूतसिन्दूरशो-णायमानेन्द्रमातङ्गहस्तार्गले वैभवानर्गले श्यामले, कोमलस्निग्धनीलोत्पलाऽ-पादितानङ्गतूणीरशङ्काकरोदारजङ्घालते चारुलीलागते, नम्रदिक्पालसीमन्तिनी-कुन्तलस्निग्धनीलप्रभापुञ्जसञ्जातदूर्वाङ्कुराशङ्कसारङ्गसंयोगरिङ्खन्नखेन्दूज्ज्वले प्रोज्ज्वले निर्मले, प्राह्वदेवेश-लक्ष्मीशभूतेशतोयेशवाणीशकीनाशदैत्येशवाय्व-ग्निकोटीरमाणिक्यसंघृष्टबालातपोद्दामलाक्षा-रसारुण्यतारुण्यलक्ष्मीगृहीता-ङ्घ्रिपद्मे सुपद्मे उमे।। ३।।

सुरुचिरनवरत्नपीठस्थिते सुस्थिते, रत्नपद्मासने रत्नसिंहासने शङ्खपद्म-द्वयोपाश्रिते, तत्र विघ्नेशदुर्गावटुक्षेत्रपालैर्युते मत्तमातङ्गकन्यासमूहान्विते मञ्जुलामेनकाद्यङ्गनामानि ते भैरवैरष्टभिर्वेष्टिते, देविवामादिभिः शक्तिभिस्सेविते धात्रिलक्ष्म्यादिशक्त्यष्टकैः संयुते मातृकामण्डलैर्मण्डिते यक्षगन्धर्वसिद्धा-ङ्गनामण्डलैरर्चिते पञ्चबाणात्मिके पञ्चबाणेन रत्या च सम्भाविते, प्रीतिभाजा बसन्तेन चानन्दिते भक्तिभाजां परं श्रेयसे कल्पसे योगिनां मानसे द्योतसे छन्दसामोजसा भ्राजसे, गीतविद्याविनोदातितृष्णेन कृष्णेन सम्पूज्यसे, भक्तिमच्चेतसा वेधसा स्तूयसे विश्वहृद्येन वाद्येन विद्याधरैर्गीयसे।। ४।।

श्रवणहरणदक्षिणक्वाणया वीणया किन्नरैर्गीयसे यक्षगन्धर्वसिद्धाङ्गनामण्डलैरर्च्यसे, सर्वसौभाग्यवाञ्छावतीभिर्वधूभिः सुराणां समाराध्यसे, सर्वविद्याविशेषात्मकं चाटुगाथासमुच्चारणं कण्ठमूलोल्लसद्वर्णराजित्रयं कोमलं श्यामलोदारपक्षद्वयं तुण्डशोभातिदूरीभवत्किंशुकं तं शुकं लालयन्ती परिक्रीडसे, पाणिपद्मद्वयेनाक्षमालामपि स्फाटिकीं ज्ञानसारात्मकं पुस्तकं चाङ्कुशं पाशमाविभ्रती येन सञ्चिन्त्यसे तस्य वक्त्रान्तराद् गद्यपद्यात्मिका भारती निःसरेत्, येन वा यावकाभाकृतिर्भाव्यसे तस्य वश्या भवन्ति स्त्रियः पूरुषाः, येन वा शातकुम्भद्युतिर्भाव्यसे सोऽपि लक्ष्मीसहस्रैः परिक्रीडते, किं न सिद्ध्येद् वपुः श्यामलं कोमलं चन्द्रचूडान्वितं तावकं ध्यायतः, तस्य लीलासरोवारिधिस्तस्य केलीवनं नन्दनं तस्य गीर्देवता किङ्करी तस्य चाज्ञाकरी श्रीः स्वयम्, सर्वतीर्थात्मिके सर्वमन्त्रात्मिके सर्वतन्त्रात्मिके सर्वयन्त्रात्मिके सर्वपीठात्मिके सर्वतत्त्वात्मिके सर्वशक्त्यात्मिके सर्वविद्यात्मिके सर्वयोगात्मिके सर्वनादात्मिके सर्वशिष्या(शब्दा)त्मिके सर्वविश्वात्मिके सर्वदीक्षात्मिके सर्वसर्वात्मिके सर्वगे पाहि मां पाहि मां देवि! तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः।। ५।।

इति श्यामलादण्डकं सम्पूर्णम्।

श्यामे सङ्गीतमातः परशिवनिलये मुख्यसाचिव्यभारो-
द्वाहे दक्षं दयापूरितनिजहृदये मामकीं दैन्यवृत्तिम्।
श्रीमत्सिंहासनेश्यां भववनपतितान्दावदग्धान्नमस्ते
त्रातुं पीयूषवर्षैः कथय परिकरं बद्धवत्यां विविक्ते।।

इति मातङ्गिस्तुतिः सम्पूर्णा।

सुवासिनी पूजादिशेषकृत्यम्

अथ श्यामलां शक्तिमाहूय श्रीक्रमोक्तक्रमेण तामुपचर्य तच्छेषमुररीकृत्य हविःप्रतिपत्त्यादिक्रमशेषं समापयेत्। हविः प्रतिपत्तौ, मूलेन सर्वेण तत्त्वत्रयशोधनं विशेषः।

श्यामोपासकनियमाः

एतदुपासकस्यावश्यमनुष्ठेयाः नियमाः—

कदम्बतरुं न छिन्द्यात्, वाचा कालीति पदं नोच्चारयेत्। वीणावेणु-वादननर्तनगाथागोष्ठीषु प्रवर्तमानासु पराङ्मुखो न भवेत् गायकान् न निन्द्यात्, इति।

पुरश्चरण-विधानम्

एवं नित्यसपर्यां निर्वर्तयन् पुरश्चरणं कुर्यात्। तच्च जपः होमः तर्पणं ब्राह्मणभोजनश्चेति चतुर्भिरङ्गैरुपेतम्। दीक्षाप्रकरणोक्तकाले श्रीगुर्वनुज्ञातो ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा, आचम्य, प्राणानायम्य, अमुकशर्मवर्मादिरहं श्यामामन्त्रसिद्धिकामो लक्ष्यचतुष्टयं जपं तद्दशांशहवनम्, तद्दशांशतर्पणम्, तद्दशांशब्राह्मणभोजनश्चेति पूर्णाङ्गं पुरश्चरणं करिष्य इति सङ्कल्प्य जपेत्।

अथ सति सम्भवे तन्त्रान्तरदृष्टेन विधिना ग्रामाद् बहिः क्रोशे नगराच्च क्रोशद्वये क्षेत्रं परिगृह्णीयात्। अथवा समुद्रमहानदीतीरयोः पश्चिमाभिमुख-वृषशून्यशिवायतनयोः विष्णुगृहपुण्यक्षेत्रतीर्थारण्यपर्वतशिखराश्वत्थबिल्वमूल-विविक्तनिजगृहगोष्ठानां श्रीगुरुस्वेष्टदेवतासन्निध्याश्चान्यतमं देशमासाद्य दीपस्थानविन्यस्ते व्याघ्रचर्ममृगाजिनचित्रकम्बलकुशकटरक्तपटपट्टवसनोर्णा-वस्त्राद्यन्यतमे आसने उपविश्य, विघ्नानुत्सार्य, प्राणानायम्य, सङ्कल्प्य वक्ष्यमाणलक्षणया अक्षमालया वक्ष्यमाणसंस्कारया रुद्राक्षाद्यन्यतमया वा मालया पूर्वाङ्गमन्त्रपूर्वकं प्रत्यहं सहस्रसंख्याकं मूलमन्त्रं तद्दशांशान् उत्तराङ्गमन्त्रांश्च जपित्वा पुनर्न्यासादिकं कुर्यात्। *पूर्वाङ्गमन्त्रो* यथा—

३ हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके।

मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा। इति।

मूलमन्त्रश्च—न्यासोक्तसप्तदशखण्डसमष्टिरूपः।

उत्तराङ्गमन्त्रास्तु—ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा, इति श्यामाङ्गं लघुश्यामा।

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा, इति तदुपाङ्गं वाग्वादिनी।

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः।
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्।

इति तत्प्रत्यङ्गं नकुली।

जपकालः

अयञ्च जपः अपराह्ले कर्तव्यः, अपराह्ले श्यामेति सूत्रेण अपराह्लस्य पूजाकालत्वविधानात्। अन्ये त्वामध्यन्दिनमेव। देशोपप्लवादिसम्भावनाया-मासायाह्नमपीति स्थितिः।

पुरश्चरणाङ्गहोमः

एवं जपोत्तरं तस्मिन्नेवाहनि श्रीक्रमोक्तेन विधिना कुण्डस्थण्डिलान्य-तरप्रतिष्ठापितेऽग्नौ देव्या उपचारान्ते सर्वासामावरणदेवानाम् एकैकाहुतिं तत्तन्मन्त्रैः प्रधानदेवतायाः दशाहुतीश्च स्वाहाऽन्तमूलेन उद्देशत्यागपूर्वकम् एकैकेन त्रिमध्वक्तेन पलाशकुसुमेन हुत्वा, अथ जपदशांशञ्च हुत्वा होमशेषं समापयेत्।

मन्त्रान्ते या वह्निजाया सा तु मन्त्रस्वरूपिणी।
तदन्तेऽन्यां प्रयुञ्जीत सा होमाङ्गतया मता।।

इति शक्तिसङ्गमतन्त्रवचनात् स्वाहाऽन्तमन्त्रेष्वपि पुनः स्वाहाप्रयोगःकार्यः। इदं च द्रव्यं इह इन्द्रियकामाग्निहोत्राङ्गादधिवन्नित्यं काम्यं च, संयोग-पृथक्त्वात्। तिलैः शान्त्या इत्यादिविधीनामन्यतः सिद्धहोमाश्रयेण, गोदोहनस्य तादृशप्रणयनाश्रयेणेव फलाय गुणविधिरूपत्वात्, सत्यां कामनायाम् अयमेव होमो द्रव्यान्तरैरपि वक्ष्यमाणैः कार्यः, काम्यस्य नित्य-बाधकत्वात्।

पुरश्चरणाङ्गं तर्पणम्

ततो नद्यादौ चतुरस्रमण्डलं विधाय तत्र चिन्तिते श्यामायन्त्रे देवीमावाह्य पञ्चधा उपचर्य सुरभिलेन सुवर्णरजतताम्रादिपात्रगृहीतेन सलिलेन मूलान्ते श्रीमातङ्गीश्वरीं तर्पयामीति होमदशांशं तर्पयेत्। सत्यानुकूल्ये जपस्थान एव वा पूजाचक्रे तर्पयेत्। "तर्पणेऽपि तथैव स्यान्नमसोऽन्ते पुनर्नमः" इति सङ्गमतन्त्रोक्ते नमोन्तेष्वपि मन्त्रेषु पुनः नमस्तर्पयामीति प्रयोगः तन्त्रान्तरानुसारिणे मार्जनपक्षेऽपि नमो योजनं तत्रैवोक्तम्।

पुरश्चरणाङ्गं भोजनम्

ततः तर्पणदशांशसंख्याकानेतद्विद्यादीक्षितानामलाभे यथासम्भवं तत्तन्मन्त्र-दीक्षितान्वा सदाचारान् प्रातः निमन्त्रिताभ्यञ्जितान् ब्राह्मणान् सुवासिनीः कुमारीश्च यथाविभवं वस्त्रगन्धादिभिः देवताधियाऽभ्यर्च्य मृष्टान्नेन भोजितान् ताम्बूलदक्षिणापरितोषितान् प्रदक्षिणीकृतनमस्कृतानाशिषो गृहीत्वा विसृजेत्।

तर्पणदशांशब्राह्मणभोजनाशक्तौ तु तर्पणोक्तवज्जले देवतामावाह्य उपचर्य च मूलान्ते आत्मानमभिषिञ्चामि नमः, इति कुम्भमुद्रया तर्पणदशांशवारं मूर्धन्यभिषेकं वा कुशैर्मार्जनं वा विधाय तद्दशांशं ब्राह्मणान् भोजयेत्। इत्येकः पक्षः। प्रतिलक्षान्ते सर्वान्ते वा होमादि कुर्यादित्यपरौ।

होमप्रत्याम्नायो जपः

होमाशक्तौ ब्राह्मणानां पुरश्चरणजपसंख्याद्विगुणो जप इति मुख्यपक्षः। होमसंख्या द्विगुणो जप इति गौणः। क्षत्रियादीनां त्रयाणां त्रिगुणादिर्जपः। एवं तर्पणेऽपि। द्विजभक्तस्य शूद्रस्य द्विजस्त्रीणामपि होमप्रतिनिधिः।

आरब्धस्य पुरश्चरणादेः आशौचेऽपि कार्यत्वम्

इदं च पुरश्चरणमारब्धं सत् आशौचप्राप्तावपि कार्यम्, नित्यार्चनादि च। तदुक्तम्–

जपो देवार्चनविधिः कार्यो दीक्षान्वितैर्नरैः।
नास्ति पापं यतस्तेषां सूतकं वा यतात्मनाम्॥ इति *देवीयामले*।
सूतके मृतके चैव नित्यं विष्णुमयस्य च।
सानुष्ठानस्य विप्रेन्द्र सद्यः शुद्धिः प्रजायते॥ इति *नारदपाञ्चरात्रे*।
शिवविष्ण्वर्चने दीक्षा यस्य चाग्निपरिग्रहः। इति तस्येति शेषः।
ब्रह्मचारियतीनाञ्च शरीरे नास्ति सूतकम्॥ इति *विष्णुयामले*।
ब्राह्मणस्यैव पूज्योऽहं शुचेरप्यशुचेरपि।
पूजां गृह्णामि शूद्राणां त्वाचारनिरतात्मनाम्॥
यज्ञव्रतविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे।
आरब्धे सूतकं न स्यादनारम्भे च सूतकम्॥

आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः।
नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।।

इति *विष्णुवचनम्।*

ब्राह्मणस्य इत्युपलक्षणं क्षत्रियवैश्ययोः।

न चैवापूज्य भुञ्जीत शिवलिङ्गं महेश्वरि।
सूतके मृतके चापि न त्याज्यं शिवपूजनम्।।

इति *लिङ्गपुराणे।* पराशरोऽपि–

उपासने तु विप्राणाम् अङ्गशुद्धिः प्रजायते।।

इति च। एवम् अन्यान्यपि वचनानि तन्त्रान्तरेषु बहुलम् उपलभ्यमानानि विस्तरभयान्नेह लिखितानि। सूतकादौ नैमित्तिककाम्ययोः अनधिकार एव, साधकस्य प्रतिबन्धकबाहुल्यात्।।

सिद्धिपर्यन्तं पुरश्चरणस्य अभ्यासः

एकेन पुरश्चरणेन यदि न मन्त्रः सिद्ध्यति तदा तस्य द्वयं त्रयं वा कुर्यात्। तथाऽपि तदसिद्धौ सिद्धिकारकाः प्रयोगाः ग्रन्थान्तरोक्ताः ग्राह्याः। 'मनोरथानामक्लेशः सिद्धेरुत्तमलक्षणम्' इत्यादि सिद्धिसूचकानि चान्यतो ज्ञेयानि, इह तु विस्तरभयान्न लिखितानि।

सम्यक् सिद्धैकमन्त्रस्य पञ्चाङ्गोपासनेन हि।
सर्वे मन्त्राश्च सिध्यन्ति तत्प्रभावात् कुलेश्वरि।।
सम्यक् सिद्धैकमन्त्रस्य नासाध्यं विद्यते क्वचित्।
बहुमन्त्रवतः पुसं का कथा शिव एव सः।।

अतः पुरश्चरणमावश्यकमिति।

पुरश्चरणप्रत्याम्नायः

(पुरश्चरणस्य विविधप्रकाराः)

अतः पुरश्चरणप्रत्याम्नायाः कतिचित् लिख्यन्ते। शशिसूर्योपरागे त्रिरात्रमेकरात्रं वा पूर्वमुपोष्य एकभुक्तं वा विधाय ग्रहणारम्भघटिकार्धात् प्रागेव स्नातः समुद्रगाया नद्यास्तटादेवी नाभिमात्रजले तिष्ठन्, अशक्तौ तु तट

एवोपविष्टः, आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य ॐ अमुक- राशिगते सवितरि सोमस्य सूर्यस्य वा ग्रहणे अमुकगोत्रोऽमुकशर्मवर्मादिरहं अमुकविद्यासिद्धिकामः स्पर्शमारभ्य विमुक्तिपर्यन्तं जपं करिष्य इति सङ्कल्प्य जपेत्। ततोऽपरेद्युः ग्रहणकालीनस्य जपस्य समसंख्याकं तद्दशांशं वा होमं, तर्पणं तत्समसंख्याकं वा ब्राह्मणभोजनञ्च सम्पादयेत्। यद्वा-ग्रहण- पुण्यकाल एव मन्त्रानुसारेण जपस्य तत्समांशस्य तद्दशांशस्य वा होमस्य तदनुगुणस्य तर्पणस्य च कालं विभज्य जपाद्याचरेत्। परेद्युः तर्पणसमसंख्याकं तद्दशांशं वा ब्राह्मणभोजनं कारयेदित्येकः प्रकारः।

कृष्णाष्टम्यां प्रातः कृतनित्यक्रियः पूर्ववत् सङ्कल्प्य अयुतचतुष्टयं जपं सप्तधा विभज्य प्रत्यहं चतुर्दशोत्तरसप्तशताधिकसहस्रपञ्चकसंख्यया (५७१४) तत्कृष्णत्रयोदशीपर्यन्तं (६×५७१४=३४२८४) जपित्वा चतुर्दश्यां षोडशोत्तर-सप्तशताधिक-सहस्रपञ्चकं (५७१६;व ५७१६+ ३४२८४ = ४००००) जपेत्। सङ्कल्पे चाद्य कृष्णाष्टमीमारभ्य एतच्चतुर्दशीपर्यन्तमिति विशेषः। होमादि विधिस्तु तद्दशांश एवेत्यन्यः।

प्रातःनित्यक्रियोत्तरं प्राग्वत् सङ्कल्प्य अकारादि क्षकारान्तान् आनुलोम्येनोच्चार्य मूलञ्च सकृदुच्चार्य पुनर्मातृकावर्णान् विलोमानुच्चारयेत्। इत्येवं रीत्या प्रत्यहं अष्टोत्तरशतसंख्यया मासमात्रं जपित्वा होमादिकुर्यात्। सङ्कल्पस्तु एतदनुगुण एवोह्य इत्यपरः।

यथासम्भवं अनयोः प्रत्याम्नाययोः जपस्य चतुर्गुणित्वं तर्पणादेश्च तद्दशांशत्वं बोध्यम्। प्रत्यहं रात्रौ त्रिकालं सर्वोपचारैरिष्टदेवतां साङ्गां सावरणामर्चयेत्। एवं षण्मासान् मासमात्रं वा पूजयितुः पुरश्चरणमन्तरेणापि विद्यासिद्धिर्भवति। संकल्पश्चैतदनुरूप एवोह्यः, इति चापरः।।

सूर्योदयं समारभ्य यावत्सूर्योदयावधि।
तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।।
सहस्रारे गुरोः पादपद्मं ध्यात्वा प्रपूज्य च।
केवलं देवभावेन जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत्।। इति चान्यः

प्रकारान्तराणि च ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानीति दिक्।

कूर्मचक्रलक्षणम्

समीकृते भूतले प्राक्प्रत्यगायताः दक्षिणोत्तरायता चतस्रश्चतस्रो रेखा विलिख्य नव कोष्ठानि विधाय तत्र पूर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेण अष्टसु कोष्ठेषु क च ट त प य श ल, आख्यान् अष्टवर्गान् अकारादिस्वरद्वयं च विलिख्य मध्यकोष्ठे श्रीकारं विलिखेत्। इदं च कूर्मचक्रं क्षेत्रग्रामगृहभेदात् त्रिविधम्। तत्र क्षेत्रग्रामयोः तत्तन्नामाद्यक्षरयुक्तं कोष्ठं मुखम्। एतदेवास्य दीपस्थानमुच्यते। गृहे तु गृहपतेः नामाद्यक्षरयुक् कोष्ठे मुखम्। तत्पार्श्वद्वयकोष्ठद्वयं हस्तौ। एवमुक्तप्रकारस्य तदधः स्थितं कुक्षिः। तदधः स्थितौ चरणौ। कुक्षिमध्यगतं कोष्ठं पृष्ठम्। चरणमध्यगतं कोष्ठं च पुच्छमिति विवेकः। क्षेत्रादौ विभावितस्य कूर्मस्य मुखे पृष्ठे वा जपे होमे च सर्वार्थसिद्धिः। करयोः तनौ कोष्ठान्तराणि अनुपयुक्तानीति। कूर्मचक्रानावश्यकतोक्ता कतिपयेषु स्थलेषु। यथा–

कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गङ्गासागरसङ्गमे।
महाकाले च काश्याञ्च दीपस्थानं न चिन्तयेत्।। इति।

दीपस्थानोपलक्षितत्वात् कूर्मचक्रमपि दीपस्थानमित्युक्तम्। इह चक्रे चोक्तेषु कोष्ठेषु रिपुस्थानं विचिन्त्य तत्त्यागपूर्वकमवशिष्टं मित्रस्थानमुपादेयम्। अरिमित्रविचारो यथा–

अद्वयस्य ठकारेण ठकारस्यापि तेन च।
लृद्वयस्य पकारेण पकारस्यापि तेन च।।
ओद्वयस्य षकारेण षकारस्यौयुगेन च।
जकारस्य टकारेण झकारस्य खकारतः।
उकारस्य लकारेण फकारस्य धकारतः।।
भकारस्य तु रेफेण यकारस्य सकारतः।।
अरित्वमेषां वर्णानाम् अन्येषां मित्रभावना।।

मालासंस्कारः

ताश्च अकारादिक्षकारान्तमातृकावर्णरुद्राक्षमुक्ताफलमाणिक्यस्फटिकप्रवालस्वर्णरजतशङ्खरक्तचन्दनोपादानकमणिपुत्रजीवपद्मबीजकुशग्रन्थादिमय्यः।

अक्षमालायाः संस्कारानपेक्षा

अक्षमाला हि ब्रह्मरन्ध्रस्य दक्षभागादिनाभिमभिव्याप्य वामभागपर्यन्तम् अवरोहारोहणक्रमेण ब्रह्मनाड्यां अन्योन्याभिमुखत्वेन ग्रथितैः आनुपूर्व्येणोच्चारितैः अकारादिभिः ळकारान्तैः पुनः प्रातिलोम्येनोच्चारितैः च ळकारादिभिः अकारान्तैः वर्णैं शतवीजात्मिका भवति। क्षकारस्य मेरुस्थानीयस्य लकारद्वयस्य मध्य उच्चारणमात्रम्। न तु जपसंख्याऽन्तर्गणना। अत्रानुलोम्येन अवरोहारोहयोः प्रथमं मातृकां ततो मन्त्रः। प्रातिलोम्येन अवरोहारोहयोस्तु प्रथमं मन्त्रः ततो मातृकेति तत्त्वम्। शतान्ते अ क च ट त प य श, आख्यवर्गाष्टिकादित्वेन जपस्य अष्टोत्तरशतत्वं ज्ञयेम्। एवं सहस्रादौ च। अस्याः मालायाः न संस्कारापेक्षा।

रुद्राक्षमालासंस्कारः

अष्टोत्तरशतं रुद्राक्षात् षड्गुणिते वक्ष्यमाणान्यतमे सूत्रे सप्रणव-एकैकमातृकोच्चारणपूर्वकं अन्तरान्तरा सग्रन्थिकं अन्योन्याभिमुखं गोपुच्छाकारेण सर्पाकारेण वा ग्रथयित्वा स्थूलमेकं रुद्राक्षमेकीकृते सूत्राग्रद्वये मेरुत्वेन ग्रथयित्वा नवसंख्याकैः अश्वत्त्थपत्रैः अष्टदलपद्मं विरच्य तत्र मालां निवेश्य मूलमन्त्रान्ते गोमूत्रगोमयगव्यदुग्धदधिघृताख्येन पञ्चगव्येन,

ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।

इति मन्त्रान्ते कुशोदकेन च प्रक्षाल्य, **ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।**

इति मन्त्रान्ते चन्दनागुरुकूर्परादिभिराघर्षणं विधाय,

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्य सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

इति मन्त्रेण धूपयित्वा,

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्-इति मन्त्रेण चन्दनकस्तूरीकुङ्कुमकर्पूरैः लेपयित्वा अक्षमालां वामकरपुटे निधाय,

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

इति–मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारमभिमन्त्र्य रुद्राक्षमालायाः प्राणाः यह प्राणाः। रुद्राक्षमालायाः जीवः इह स्थितः। रुद्राक्षमालायाः सर्वेन्द्रियाणि रुद्राक्षमालायाः वाङ्मनः प्राणाः इह आयान्तु स्वाहा।

इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा उपास्यदेवतां तत्रावाह्य, मूलेन पञ्चधा उपचर्य, तेन मातृकावर्णैश्च अभिमन्त्र्य होम–प्रकरणोक्तरीत्या अग्निमुखं विधाय, मूलेन अष्टोत्तरशताज्याहुतीः हुत्वा, सम्पाताज्यं मालायां निक्षिपेत्। अशक्तौ तु होमसंख्याद्विगुणं मूलमन्त्राभिमन्त्रणम्, इति।

मालान्तरसंस्कारः

अथान्यासां मालानां संस्कारः– उक्तरीत्या ग्रथितां मालां प्रासादमन्त्रेण पञ्चगव्ये क्षणं निक्षिप्य तस्मादुद्धृत्य कुशोदकेन प्रक्षाल्य चन्दनादिभिरुपलिप्य पात्रे निधाय पञ्चायतनदेवताः तत्तन्मन्त्रेण आवाह्य पञ्चधोपचर्य प्रासादेन शतवारमभिमन्त्र्य सूर्यादीन् ग्रहान् इन्द्रादीन् दिक्पालांश्च तत्तन्मन्त्रेण सम्पूज्य सघृतैः तिलैः यथाशक्तिवारं मूलेनाग्नौ जुहुयात्। अशक्तौ अभिमन्त्रयेत्। ततो यथाविभवं काञ्चनं गुरवे दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणांश्च भोजयेत्।

संस्कारान्तरं यथा–सूत्रं मणींश्च पञ्चगव्ये दिनत्रयं संस्थाप्य चतुर्थदिने उद्धृत्य अस्त्रेण प्रक्षाल्य, हृन्मन्त्रेण स्वेष्टमन्त्रेण वा प्रत्येकं आवृत्तेन मणीनन्योन्याभिमुखं ग्रथयित्वा स्थण्डिले स्वेष्टदेवतासपर्यामण्डलं विधाय तत्र ताम् अभ्यर्च्य, मूलं अष्टोत्तरशतसंख्यं जपित्वा तत्तत्कल्पोक्त–पुरश्चरणहोम–द्रव्येण घृतेन वा यथाशक्ति हुत्वा, मण्डले मालां निधाय, तस्यामस्त्रमन्त्र–मूलमन्त्रषडङ्गमन्त्रांश्च विन्यस्य, तां स्वेष्टदेवतारूपां विभाव्य, सम्पूज्य सर्वभूतबलिं दत्त्वा आचार्यं दक्षिणादिभिः परितोष्य ब्राह्मणान् भोजयेदिति।

उक्तसंस्कारविधिः त्रैवर्णिकविषयः। स्त्रीशूद्राणां तु उपास्यमूलमन्त्रेणैव सर्वं कार्यम्।।

यन्मन्त्रजपार्थं या माला संस्कृता तया तस्यैव जपः कार्यो नान्यस्य।
अत्र च विशेषः–

शिवमन्त्रेण संग्रथ्य शक्तिमन्त्रं जपेदपि।
शक्तिमन्त्रेण संग्रथ्य शिवमन्त्रं जपेच्छिवे।।
ध्रुवेण मातृकाभिर्वा ग्रथ्यन्ते मणयो यदि।
तदा सर्वेऽपि जप्तव्या मनवो मालया तथा।। इति ध्रुवःप्रणवः।

देवताभेदेन सूत्रभेदः

देवताभेदेन सूत्रभेद उक्तः। यथा–देव्या रक्तपट्टसूत्रम्। शिवस्योर्णाभवं श्वेतं वा वल्कलं वा। सूर्यगणेशयोः कार्पासजम्। तच्च सुवासिन्या ब्राह्मण्या कर्तितम्। स्वसमानजातीययोषित्कर्तितं वा। त्रिगुणं त्रिगुणीकृतम्। यत्र ब्राह्मणीकर्तितं न मिलति तत्र वर्णान्तरीयकेवलसुवासिनी- कर्तितं ग्राह्यम्। अन्येषु सूत्रेषु त्वैच्छिकं गुणस्थौल्यं मानञ्च।

मालासंस्कारकालः

मालांसस्कारकालस्तु–विष्णोः द्वादश्यां पूर्वाह्णः। शक्तेः अष्टमी–नवमी चतुर्दशीनां रात्रिः। शिवस्य त्रयोदशी दिवा। सूर्यस्य सप्तमी, दिवा इति।।

मालाभेदेन फलभेदः

मालाभेदन फलभेदो यथा– मातृकाऽक्षमाला क्षिप्रं मन्त्रसिद्ध्यै। रुद्राक्ष-माला मोक्षाय। मौक्तिकमाणिक्यमय्यौ साम्राज्याय। स्फाटिकी सर्वेभ्यः कामेभ्यः। पुत्रजीवमयी सम्पत्सारस्वतावाप्त्यै। पद्मवीजमयी\श्रीयशोभ्याम्। रक्तचन्दनमयी वश्यभोगाभ्याम्। इत्यन्यासामपि फलानि ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानि।

सूत्रजीर्णतादौ प्रायश्चित्तम्

सूत्रे जीर्णे नवेन ग्रथयित्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रयेत्। जपसमये प्रमादात् करगलितायां छिन्नायां वा मालायां निषिद्धस्पर्शे वा अष्टोत्तरशत-मूलमन्त्रजपः प्रायश्चित्तम्।।

जपभेदाः

ज्ञानार्णवे–

निगदेनोपांशुना वा मानसेनाथवा जपेत्।
निगदः परमेशानि स्पष्टं वाचा निगद्यते ।।
अव्यक्तश्च स्फुरद्वक्त्र उपांशुः परिकीर्तितः ।
मानसस्तु वरारोहे चित्तेनान्तररूपवान् ।।
निगदेन तु यज्जप्तं लक्षमात्रं वरानने ।
उपांशुस्मरणेनैव तुल्यं भवति शैलजे ।।
उपांशुलक्षमात्रं तु यज्जप्तं कमलेक्षणे ।
मानसस्मरणेनैव तुल्यमेकेन सुन्दरि ।।

स्वच्छन्दतन्त्रसारे तु–

जपस्तु षड्विधः प्रोक्तस्तत् प्रकारोऽयमुच्यते।
वाचिकं मानसं चैव यौगिकं योगवाचिकम्।।
योगमानसिकं चैव वाङ्मानसिकयोगिकम्।
वाचा केवलयोच्चार्य मन्त्रं देवीं विभाव्य च।।
जपेद् यत् परमेशानि वाचिकं तत्प्रकीर्तितम्।
देव्या रूपं च सञ्चिन्त्य सावधानेन चेतसा।।
मन्त्रस्याप्यनुसन्धानं मानसं परिकीर्तितम्।
त्रिस्थानेन त्रिबीजानि क्रमात् सञ्चिन्त्य मार्गतः।।
आरोहो यौगिकं प्रोक्तमुच्यते योगवाचिकम्।
लक्ष्ये मनः समायोज्य वाचा मन्त्रं जपेच्छिवे।।
योगवाचिकमेतत् स्याद्योगमानसिकं शृणु।
लक्ष्येण मानसं पूर्व संयोज्य मनसा जपन्।।
योगमानसिकं विद्यादथान्यदपि चोच्यते।
मनसाऽपि जपेन्मन्त्रं बीजानारोहणक्रमात्।।
वाङ्मानसिकयोगाख्यं जपमेतदनुत्तमम्।
वाचिकेन जपेनैव केवला वाक् प्रवर्तते।।
मानसाच्छ्रियमाप्नोति यौगिकाद् योगसिद्धयः।
वाङ्मनस्रजपेनैव वाग्ज्ञानैश्वर्यसिद्धयः।।
भवन्ति परमेशानि योगमानसिकेन तु।
अणिमादीनि चान्यानि सर्वाणि लभते ध्रुवम्।।
वाङ्मानसिकयोगाख्यजपेन परमेश्वरि।
वागाद्यकुलपर्यन्तमचिराल्लभते नरः।।
येन केन जपेनैव ह्रस्वदीर्घप्लुतक्रमात्।
जप्ता विद्याश्च मन्त्राश्च सर्वे सर्वार्थदायिनः।।
भवन्ति गुरुवक्त्रेण लब्धाः सर्वाङ्गसुन्दरि।
स्वयं निरीक्ष्य ये कोशं मन्त्रं विद्यामथापि व।।

गृह्णीयुर्ये ब्रजेयुस्ते रौरवं नरकं शिवे।
तस्मादास्तिक्यसंयुक्तः साधको देशिकाज्ञया।।
शिवागमान्निरीक्षेत नान्यथा वीरवन्दिते।।

इति जपभेदाः।

होमे वह्निस्थितिविचारः

तत्र *मुहूर्तचिन्तामणौ*–

सैकातिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमः शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

अस्यार्थः–शुक्लप्रतिपदादिहोमदिनसंख्ययैकमधिकमङ्कमादित्यादिवारसंख्यां च मेलयित्वा चतुर्भिहरणेन त्रये शिष्टे शून्ये वा वह्निर्भुवि वसति। तदा होमः सुखाय भवति। एकस्मिन् द्वये वा शेषे क्रमाद्दिवि पाताले च वह्निवासः। तदानीं होमेन प्राणार्थनाशौ भवतः इति।।

तत्रैव ग्रहविचारे *रुद्रयामले*–

तेषां स्थितिक्रमं वक्ष्ये नक्षत्रेषु यथा स्थिताः।
सूर्यो बुधो भृगुश्चैव शनिश्चन्द्रो महीसुतः।।
जीवो राहुश्च केतुश्च नवैते देवि खेचराः।
सूर्यभाच्चन्द्रभं यावत् गणयेच्च महेश्वरि।।
त्रीणि त्रीणि च ऋक्षाणि रविभादीनि दापयेत्।
सूर्यादीनां फलं देवि शृणु वक्ष्ये तथाक्रमम्।।
आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे चैव धनागमः।
शुक्रे लाभं विजानीयाच्छनौ पीडा न संशयः।।
चन्द्रे लाभो महान् देवि भौमे चैव तु बन्धनम्।
गुरुणा च धनप्राप्तिः राहौ हानिस्तथैव च।।
केतुना जायते मृत्युः फलमेव महेश्वरि।
क्रूरहोमस्तथा देवि क्रूरग्रहमुखो भवेत्।।

सूर्यभं सूर्याक्रान्तं नक्षत्रं, चन्द्रभं तद्दिवसनक्षत्रम्। दापयेत् सूर्यादिभ्यः इति शेषः। सूर्यनक्षत्रादिचन्द्रनक्षत्रपर्यन्तं नक्षत्राणां त्रयं त्रयं सूर्यादिस्वामिक–

मित्यर्थः। क्रूरहोमो मारणोच्चाटनादि फलकः। शेषं सुगमम्। एवं वह्निस्थिति-ग्रहांश्च विचार्य सौम्यहोमः सौम्यग्रहेषु क्रूरश्च क्रूरग्रहेषु कार्यः।

कुण्डस्थण्डिलयोः परिमाणम्

तत्र एकोनपञ्चाशत् संख्याकाहुतिपर्यन्तं स्थण्डिलमेव। तच्च अष्टादशाङ्गुलप्रमाणं परितः अङ्गुष्ठोन्नतम्। अग्रे कुण्डेन सह विकल्पोऽशक्तिशक्तिभ्यां व्यवस्थितिः। पञ्चाशदादिनवनवतिसंख्याहुतिपर्यन्तं मुष्टिमात्रम्। मुष्टिः अरत्निः। शतादिनवनवत्यधिकनवशत्याहुतिपर्यन्तं अरत्निमितम्। निष्कनिष्ठमुष्ठिर्हस्तोऽरत्निः। सहस्रादि होमे हस्तमात्रम्। अयुतादौ द्विहस्तम्। लक्षादौ चतुर्हस्तम्। दशलक्षादौ षड्ढस्तम्। कोटिहोमादौ अष्टहस्तं वा। चतुर्विंशत्यङ्गुलैः हस्तः। अङ्गुलं तिर्यङ्निहिताष्टयवप्रमाणं स्वमध्यमामध्य-पर्वमितं वा ज्ञेयम्। मुष्ट्या वा चतुरङ्गुलानि। अर्धयवोनचतुस्त्रिंशताङ्गुलैः द्विहस्तम्। सार्धैकचत्वारिंशता त्रिहस्तम्। अष्टचत्वारिंशता चतुर्हस्तम्। पादोनचतुःपञ्चशता पञ्चहस्तम्। पादोनैकोनषष्ट्या षड्ढस्तम्। सार्धत्रिषष्ट्या सप्तहस्तम्। अष्टषष्ट्या यवोनया अष्टहस्तम्। द्विसप्तत्या नव हस्तम्। षट्सप्तत्या दश हस्तं कुण्डं-स्थण्डिलं वा भवति। कुण्डाङ्गानां व्यासखातनाभिकण्ठमेखलायोनीनां सम्यग्ज्ञान एव कुण्डं युक्तम्।

अन्यथा अत्यन्तमनिष्टम्। स्थण्डिलं चतुरस्रमङ्गुलोत्सेधं चतुरङ्गुलोत्सेधं वा। स्थूलद्रव्यहोमे तत्तत्परिमाणस्यापर्याप्तौ स्वोत्तरपरिमाणमपि ग्राह्यम्।

होमे इतिकर्त्तव्यताविशेषः

बहुऋत्विक्कर्तृके होमे यथाकालं प्रत्याहुति उद्देशत्यागयोः कर्तुमशक्यत्वात् यजमानो देवतां द्रव्यं च मनसा ध्यात्वा अमुकदेवताया इदं सर्वं होमद्रव्यजातं न ममेति त्यजेत्।

ऋत्विजस्त्वाचान्ताः कृतप्राणायामाः प्रत्येकं देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकेन वृतोऽहं अमुकसङ्ख्याकहोममध्ये अमुकांशेन यजमानोपकल्पितामुकद्रव्येण होमं करिष्य इति सङ्कल्प्य आसनविधिं भूतशुद्ध्यादिकं तत्तदेवता-ऋष्यादिन्यासत्रयं कृत्वा अग्नौ देवताध्यानमानसपूजान्ते प्राङ्मुखा वोदङ्मुखाः वा जुहुयुः। होमसङ्ख्यासमाप्तौ परिधिपरिस्तरणान्तःपतितं हविः सर्वमग्नौ प्रक्षिपेत्। तद्बहिः पतितं तु न।

अनेकदिनसाध्ये तु होमे प्रतिदिवसं कयाचित् सङ्ख्यया संस्थाप्य वह्निरक्षणपूर्वकं शुभदिने समाप्तिं कुर्यात्। प्रतिदिनं होमाद्यन्तयोः प्रधानदेवताम्

अङ्गदेवताश्च गन्धपुष्पादिभिः अग्निमध्ये पूजयेत्। आरम्भे समाप्तिदिने अग्निमूलमन्त्रेण स्वाहा स्वधा सहितं अग्निं पूजयेत्। तत्र गन्धादिकं वहिरेव अग्नये दद्यात्।

इह होम एव प्रयोगविशेषे फलप्रदत्वात् प्रधानं न पुनर्जपाङ्गम् तत्र तत्र ब्राह्मणभोजनसङ्ख्यया तन्त्रे विशेषानुक्तौ स्मृत्युक्ता ग्राह्या। तत्र लक्षहोमे षष्ठ्यधिका नवशती मुख्यः पक्षः। विंशत्यधिका पञ्चशती मध्यमः। दशाधिका त्रिशती अधमः।

यत्र प्रधानदेवता अङ्गत्वेन स्मृतितन्त्रोक्तयोरविरोधे समुच्चयपक्षमाश्रित्य ग्रहा अपि पूज्यन्ते, तत्र तदङ्गब्राह्मणभोजनमपि कार्यम्। तत्रोत्तमे पक्षे विंशत्यधिका सप्तशती ब्राह्मणानां भोजनीया। मध्यमपक्षे चत्वारिंशदुत्तरं शतत्रयम्। अधमे च दशाधिकं शतमिति।

काम्यहोमद्रव्याणां मानं फलं च

तिलैश्चुलुकमितैः शतसंख्याकैर्वा प्रत्याहुतिहोमः शान्त्यै, आज्येन च कर्षप्रमाणेन। ग्रासमितैरन्नैरन्नाय। अमृतासमिद्भिः कनिष्ठास्थूलाभिः चतुरङ्गुलप्रमाणाभिः ज्वरोपशमनाय चूतपल्लवश्च दूर्वाभिः तिसृभिस्तिसृभिरायुषे। कृतमालकुसुमैः धनाय। उत्पलैः भोगाय। विल्वदलैः राज्याय। समग्रैः पद्मैः साम्राज्याय। मुष्टिमितैः लाजैः कन्यायै। नन्द्यावर्तैः कवित्वाय। वञ्जुलमल्लिका-जातीपुन्नागैः भाग्याय। बन्धूकजपाकिंशुकमधूकैः ऐवश्र्याय। कदम्बैः वश्याय। लवणैः शुक्तिप्रमाणै आकर्षणाय। शालितण्डुलैः अर्धमुष्टिमितैः धान्याय। कुङ्कुमगोरोचनादिभिः गुञ्जामितैः सौभाग्याय। पलाशपुष्पैः तेजसे कपिलाघृतेन चोक्तमानेन। धत्तूरकुसुमैरुन्मादाय। विषवृक्षनिम्बश्लेष्मातकविभीतकसमिद्भिः दशाङ्गुलप्रमाणाभिः शत्रुनाशाय। निम्बतैलाक्तैः लवणैः उक्तमानैः मारणाय। काकोलूकपक्षेणैकेन विद्वेषणाय। तिलतैलाक्तै मरीचैः विंशत्या कासश्वासप्रशमनाय इति। पुष्पेषु स्थूलमेकैकं अल्पानि द्वित्राणि इति वा विवेकः। एतानि द्रव्याणि काम्यजपाङ्गेषु होमेषु तत्तज्जपदशांशसंख्याकानि। प्राधान्येन होमे तु संख्याऽनुक्तौ सहस्रसंख्याकानि। इह च प्रथमं अभीष्टदेवतायै विज्ञाप्य अमुककर्म सिद्ध्यर्थं एतावदाहुतीः करिष्यामीति सङ्कल्पयेत्। कर्षस्तु षडङ्गुलामितमाषषोडशप्रमाणः। शक्तिः कर्षद्वयम्। मुष्टिस्तु पलम्।।

पुरश्चरणकाले विहितानि

मनःस्थैर्यशौचमौनमन्त्रार्थचिन्तननिर्वेदश्रद्धोत्साहक्रोधाभावसन्तोषेन्द्रियनिग्रहब्रह्मचर्यगुरुप्रणतिसुगन्धामलकस्नानसुवसनसुरभिलानुलेपनमध्यपत्रवर्जपलाशपत्रालिमितैकवारभोजनप्रक्षालितदर्भास्तीर्णधौतवस्त्रशयनत्रिषवणस्नानादीनि। अशक्तौ तु प्रातः स्नानमात्रम्।

निषिद्धानि

अप्रियानृतभाषणकरञ्जविभीतकार्कस्नुहिछायाक्रमणप्रतिग्रहादीक्षितस्त्रीशूद्रपतितनास्तिकसम्भाषणबह्वेकमलिनवस्त्रधारणकाम्यकर्माविहितकर्मकांस्यभोजनासत्संगोष्णजलस्नानकञ्चुकोष्णीषधारणप्राणिहिंसापादुकायानशय्यारोहणनग्नत्वकुशरहितकरत्वादीनि अतिभोजनञ्च।।

भोज्यानि

शुक्लकविधान्नं हैमन्तनीवारकङ्गुषष्टिका यवाः शूद्रानवहताः गुडवर्जितमैक्षवं कृष्णतिलमुद्गकलायकन्दविशेषनारिकेलकदलीलवलीपनसाम्रामलकार्द्रकसामुद्रलवणानुद्धृतसारगव्यपिप्पलीजीरकनारङ्गादीनि।।

अभोज्यानि

गुडकृत्रिमलवणपर्युषितनिस्स्नेहकीटादिदूषितकाञ्जिकगृञ्जनविल्वकरञ्जलशुनमृणालकोद्रवतैलपक्वमाषमसूरचणकादिदेवधान्यादीनि।

भोजनपर्यायः

स्वेष्टदेवतायै निवेदितं सव्यञ्जनम् अन्नं मूलेन प्रोक्ष्य सप्तवारं प्रतिद्रव्य- मभिमन्त्र्य अश्नीयात्। उदकं द्वात्रिंशद्वारं मूलाभिमन्त्रितं पिबेत्।

जपादिसमय आवश्यकोपाधौ शुचौ देशे तं निवर्त्य स्नात्वा शेषं समापयेत्। अशक्तौ तु मन्त्रभस्मान्यतरस्नानवस्त्रपरिवर्तने केवलं कुर्यादिति।

इत्थं कृतपुरश्चरणः सिद्धमनुः देवताप्रसादसम्पन्नः स्वातन्त्र्येणोपास्तौ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः सति कामे काम्यमनुतिष्ठन् पूर्णमनोरथः सुखी विहरेदिति शिवम्।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्यामाक्रमः सम्पूर्णः।।

श्रीदण्डिनीक्रमः

इत्थं साङ्गां सङ्गीतमातृकामिष्ट्वा सिंहासनाधिरूढायाः ललितायाः महाराज्ञ्याः दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञाचक्रां समयसङ्केतां कोलमुखीं विधिवद्वरिवस्येत्।

कालकृत्यमाह्निकञ्च

साधकस्तावन्निशीथे प्रबुद्धः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण श्रीगुरुध्यानादिप्राणायामान्तं विधिं विदध्यात्। तत्र च श्रीगुरुपादुकायामादौ त्रितारीस्थाने वाक् ग्लौं इति बीजद्वयं योज्यम्। ततो हृदयपरमाकाशे स्फुरतोऽखण्डानन्ददायिनः परसंवित्परिणतेरनाहतस्य नादस्याऽनुसन्धानेन भस्मितनिखिलकश्मलो मूलं मनसा दशवारमावर्त्य, उत्थाय निर्वर्तितावश्यको गृह एव वारुणमान्त्रभास्मनस्नानेष्वन्यतमं कुर्यात्। वारुणे मूलेन त्रिरुदकाञ्जलिदानं शिरसि, त्रिराचमनं, त्रिःप्रोक्षणं च विदध्यात्। मान्त्रभास्मनस्नाने स्मृत्युक्ते एव। अथ वाससी धौते परिधाय विधृतपुण्ड्रः मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसे नाभिं हृदयं शिरश्चावमृशेत्।

यागमन्दिरप्रवेशः

एवं त्रिराचम्य यागमन्दिरमासाद्य गोमयेनोपलिप्तद्वारस्थण्डिलं, द्वारस्य दक्षवामोर्ध्वभागेषु क्रमेण–

ऐं ग्लौं भद्रकाल्यै नमः २ भैरवाय नमः, २ लम्बोदराय नमः,

इति तिस्रो द्वारदेवताः समर्च्य, अन्तःप्रविष्टो रङ्गवल्लीपुष्पमालावितानकादिभिरलङ्कृत्य यागमन्दिरम्,

ऐं ग्लौं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः। इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा, सपर्यासामग्रीं दक्षभागे निधाय, दीपानभितःप्रज्ज्वाल्य, गन्धमाल्यादिभिरात्मानमलङ्कृत्य, ताम्बूलसुरभिलवदनो जातिपत्रफललवङ्गैलाकर्पूराख्यपञ्चतिक्तामोदितवदनो प्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णे ऊर्णामृदुनि शुचिनि बालान्त्यबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने **ऐं ग्लौं आधारशक्तिकमलासनाय नमः** इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य, **ऐं ग्लौं शिवादिश्रीगुरुभ्यो नमः, ऐं ग्लौं**

समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नमः। इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकया श्रीगुरुं महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य, ऐं ग्लौं ऐं हः अस्त्राय फट् इति मन्त्रेणावृत्तेनाङ्गुष्ठादि करतलान्तं कूर्परयोः देहे च क्रमेण न्यासव्यापके कृत्वा स्वस्य दैवतैक्यं भावयन्,

ऐं ग्लौं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रयक्रूर-दृष्ट्यवलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्। तालत्रयं पूर्वमुक्तमेव।

प्राणायामः

अथ नमः इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण भूतशुद्धिम् आत्मप्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय मूलेन प्राग्वत् विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य।

द्वितारीन्यासः

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचमामुञ्चेत्। तत्रादौ अं ऐं ग्लौं अं नमः शिरसि। आंऐं ग्लौं आं नमः मुखवृत्ते इत्यादिरीत्या क्षान्तमातृकासम्पुटितमुक्तबीजद्वयं मातृकास्थानेषु न्यसेत्, *इति द्वितारीन्यासः।*

करषडङ्गन्यासौ

ऐं ग्लौं अन्धे अन्धिनि नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,
२ रुन्धे रुन्धिनि नमः तर्जनीभ्यां नमः,
२ जम्भे जम्भिनि नमो मध्यमाभ्यां नमः,
२ मोहे मोहिनि नमः अनामिकाभ्यां नमः,
२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
इति पञ्चभिः मन्त्रै, अङ्गुठादिकनिष्ठान्तं न्यस्य,

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि हृदयाय नमः,
२ वाराहि वाराहि शिरसे स्वाहा,
२ वराहमुखि वराहमुखि शिखायै वषट्,

२ अन्धे अन्धिनि नमः कवचाय हुम्

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः नेत्रत्रयाय वौषट्,

२ जम्भे जम्भिनि नमः अस्त्राय फट्,

(इति मन्त्रैः हृदयादिषु न्यसेत्)। नेह करन्यासेऽस्त्रमन्त्रः। तेन करतलन्यासो न भवति।

अर्घ्यशोधनम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये आसादयेत्। अत्र चोभयोरप्यर्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिमण्डलकरणम्–

२ अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्तये वौषट्, इत्याधारस्थापनम्

२ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषट्, इति पात्रनिधानम्,

२ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः, इति शुद्धजलापूरणम्,

ऐं ग्लौं ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम्।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह।।

इति क्षीरपूरणे मन्त्रान्तरं चोक्तम्, षडङ्गं, (चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावः,) मूलेन दशधा अभिमन्त्रणञ्च विशेषः। अथ विशेषार्घ्यबिन्दुभिः सपर्यासामग्रीं पावयित्वा।

सप्तार्णमन्त्रपञ्चकन्यासः

अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादीन् पञ्च मन्त्रान् उक्तबीजद्वयादिकान् शिरोवदनहृदयगुह्यपादेषु न्यस्य।

अष्टखण्डन्यासः

मूलस्य खण्डैरष्टभिः वक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत्। यथा–

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि, इति आपादजानु,

२ अन्धे अन्धिनि नमः इत्याजानुकटि,

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः इत्याकटिनाभि,

२ जम्भे जम्भिनि नमः इत्यानाभिहृदयम्,

२ मोहे मोहिनि नमः इत्याहृदयकण्ठम्,
२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः इत्याकण्ठभ्रूमध्यम्,
२ सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्र वश्यं नमः, इत्याभ्रूमध्यललाटम्,
२ ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट् इत्याललाटब्रह्मरन्ध्रं, चेति।

मातृकास्थानेषु मूलपदन्यासः

ततो मूलमन्त्रस्य द्विचत्वारिंशत्पदानि मातृकास्थानेषु न्यसेत्।

यथा–

ऐं ग्लौ ऐं नमः शिरसि, ग्लौं मुखवृत्ते, ऐं नेत्रयोः, नमः कर्णयोः, भगवति नासापुटयोः, वार्तालि कपोलयोः, वार्तालि ओष्ठयोः, वाराहि दन्तपङ्क्त्योः, वाराहि ब्रह्मरन्ध्रे, वाराहमुखि मुखान्तः, वाराहमुखि दक्षदोर्मूले, अन्धे तन्मध्यसन्धौ, अन्धिनि तन्मणिबन्धे, नमो तदङ्गुलिमूले, रुन्धे तदङ्गुल्यग्रे, रुन्धिनि, वामदोर्मूले, नमो तन्मध्यसन्धौ, जम्भे तन्मणिबन्धे, जम्भिनि तदङ्गुलिमूले, नमो तदङ्गुल्यग्रे, मोहे दक्षोरुमूले, मोहिनि तज्जानुनि, नमो तत्पादसन्धौ, स्तम्भे तदङ्गुलिमूले, स्तम्भिनि तदङ्गुल्यग्रे, नमो वामोरुमूले, सर्वदुष्ट–प्रदुष्टानां वामजानुनि, सर्वेषां तत्पादसन्धौ, सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगति–जिह्वास्तम्भनं तदङ्गुलिमूले, कुरु तदङ्गुल्यग्रे, कुरु पार्श्वयोः, शीघ्रं पृष्ठे, वश्यं नाभौ, ऐं जठरे, ग्लौं हृदि, ठः दक्षकक्षे, ठः अपरगले, ठः वामकक्षे, ठः हृदादिहस्तयोः, हुं हृदादिपादयोः, अस्त्राय हृदादिपाय्वन्तं, ऐ ग्लौं फट् नमः हृदादिमूर्धान्तम्, इति।

तत्त्वाष्टकन्यासः

ततः ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि इत्यादिरीत्या प्रागुक्तानाम् अष्टानां खण्डानां प्रत्येकमन्त्र क्रमेण

ह्रां शर्वाय क्षितितत्त्वाधिपतये नमः,
ह्रीं भवाय अम्बुतत्त्वाधिपतये नमः,
ह्रूं रुद्राय वह्नितत्त्वाधिपतये नमः,
ह्रैं उग्राय वायुतत्त्वाधिपतये नमः,
ह्रौं ईशानाय भानुतत्त्वाधिपतये नमः,

सों महादेवाय सोमतत्त्वाधिपतये नमः,
हं पशुपतये यजमानतत्त्वाधिपतये नमः,
भौं भीमाय आकाशतत्त्वाधिपतये नमः, इति
उक्तेषु पादादिजान्वित्यादिष्वष्टसु स्थानेषु तत्त्वाष्टकं न्यसेत्।

यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा

अथ मूलेन व्यापकत्रयं न्यस्य स्वपुरतः श्वेतपटपट्टदुकूलान्यतमे लिखिते लेखिते वा सुवर्णरजतताम्रचन्दनपीठादौ लिखिते उत्कीर्णे वा दृष्टिमनोहरे भूपुरत्रयसहस्रपत्रशतपत्राष्टपत्रषडरपञ्चारत्र्यस्रबिन्दुमये चक्रे कुसुमाञ्जलिं विकीर्य,

ऐं ग्लौं वार्तालियन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणाः, ऐं ग्लौं वार्तालियन्त्रस्य जीव इह स्थितः, ऐं ग्लौं वार्तालियन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ऐं ग्लौं वार्तालि- यन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इहायान्तु स्वाहा, इति यन्त्रप्राणप्रतिष्ठां विदध्यात्।

पीठपूजा

'अर्चने' द्वितारी' 'नमः' इति सर्वत्र योजनम्'

ऐं ग्लौं स्वर्णप्रकाराय नमः, २ सुराब्धये नमः, २ वराहद्वीपाय नमः, २ वराहपीठाय नमः, २ आं आधारशक्तये नमः, २ कूं कूर्माय नमः, २ कं कन्दाय नमः, २ अं अनन्तनालाय नमः, इति पीठस्य मध्ये।

ऐं ग्लौं ॠ धर्माय नमः, २ ॠ ज्ञानाय नमः, २ लृं वैराग्याय नमः, २ लॄं ऐश्वर्याय नमः तस्य आग्नेयादिदिक्षु।

ऐं ग्लौं ॠ अधर्माय नमः, २ ॠ अज्ञानाय नमः, २ लृं अवैराग्याय नमः, २ लॄं अनैश्वर्याय नमः, इति प्रागाद्यासु दिक्षु चाभ्यर्च्य,

ऐं ग्लौं त्र्यरपञ्चारषडरदलाष्टकशतदलपत्रसहस्रारपद्मासनाय नमः, इति चक्रमनुना चक्रमिष्ट्वा

ऐं ग्लौं वह्निमण्डलाय नमः, २ सूर्यमण्डलाय नमः, २ सोममण्डलाय नमः, २ सं सत्त्वाय नमः, २ रं रजसे नमः, २ तं तमसे नमः, २ आं आत्मने नमः, २ अं अन्तरात्मने नमः, २ पं परमात्मने नमः, २ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः इति च तत्रैव वरिवस्येत्।

(स्वर्णप्राकाराय नमः इत्याद्याः ह्रीं ज्ञानात्मने नमः इत्यन्ताः एते विंशतिः पीठमनवो ज्ञेयाः)।

ततः २ ह्रौं प्रेतपद्मासनाय सदाशिवाय नमः, इति पुष्पैः बिन्दौ देव्यासनमभिपूज्य।

मूर्तिकल्पनम्

तत्र २ लृ षा ई वराहमूर्तये ठः ठः ठः ठः हुं फट् ग्लौं ऐं, इति मूर्तिकरिण्या विद्यया चक्रे देव्या मूर्तिं सङ्कल्प्य।

देवीध्यानम्

हृदि देवीं ध्यायेत्। यथा–

पाथोरुहपीठगतां पाथोधरमेचकां कुटिलदंष्ट्राम्।
कपिलाक्षित्रितयां घनकुचकुम्भां प्रणतवाञ्छितवदान्याम्।।
दक्षोर्ध्वतोऽरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत्।
शङ्खं खेटहलवरान् करैर्दधानां स्मरामि वार्तालीम्।। अरिः सुदर्शनम्।

देव्याः षोडशोपचारपूजा

अथ वक्ष्यमाणेन प्रकारेण देव्यै मनसा पञ्चोपचारानर्पयित्वा, भक्तानुग्रहात्तेजोरूपेण परिणतां ब्रह्मरन्ध्रं प्राप्य, वहन्नासापुटद्वारा निर्गतां कुसुमगर्भिते निजाञ्जलौ सन्निहितां तां मूर्तौ मूलविद्यया आवाह्य, आवाहिता भवेत्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राप्रदर्शनपूर्वकम् आवाहनसंस्थापनसन्निधापनसन्नि-रोधन–सम्मुखीकरणावगुण्ठानादीनि विधाय, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। ततः ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि हृदयाय नमः इत्यादिकान् प्रागुक्तान् षडङ्गमन्त्रान् २ अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादिकान् पञ्चाङ्गमन्त्रांश्च न्यासोक्तभङ्ग्या देव्याः तत्तदङ्गे कुसुमेन विन्यस्य, ऐं ग्लौं वाराह्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या देव्यै पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीप-नीराजनच्छत्रचामरयुगलदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलाख्यान् षोडशोपचारान् कृत्वा, नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि च प्रदद्यात्। नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम्, वं इति धेनुमुद्रया चामृतीकरणं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणं, प्राणादिमुद्रादर्शनञ्च विधेयम्।

देवीतर्पणम्

अथ मूलान्ते वार्तालिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति वामकर-तत्त्वमुद्रासन्दष्टद्वितीयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुभिस्सह दक्षकरोपात्तकुसुमक्षेपैः देवीं दशवारं सन्तर्प्य, पूर्वोक्तानां षडङ्गमन्त्राणामन्ते।

२ हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

२ शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

२ शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

२ कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

२ नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

२ अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

इति क्रमेण देव्यङ्गे अग्निशासुरवायुकोणेषु मौलौ प्रागादिदिक्षु च षडङ्गानि सम्पूज्य।

ओघत्रयजनम्

पृष्ठतः प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत्। यथा-

ऐं ग्लौं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ परमेशानन्द-नाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ परशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, (परसिद्धानन्द इति पाठान्तरं) २ कामेश्वर्यम्बानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ मोक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ कामानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। *इति दिव्यौघः।* (आनन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि.नमः। इति सर्वत्र योजनम्)

ऐं ग्लौं ईशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ तत्पुरुषानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ अघोरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ वामदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ सद्योजातानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति सिद्धौघः।*

ऐं ग्लौं पञ्चोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ परमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ सर्वज्ञानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ सिद्धानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २

गोविन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, *इति मानवौघः।* आहत्य एकोनविंशतिगुरवः।

आवरणार्चनम्

अङ्गाद्यावरणान्तानामर्चनप्रकारस्तु पूर्वोक्त एव।

त्र्यस्रे देव्यग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रेण–

ऐं ग्लौं जम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि.नमः, २ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। *इति प्रथमावरणम्।*

पञ्चारे–

ऐं ग्लौं अन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ रून्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ जम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ मोहनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। *इति द्वितीयावरणम्।*

षट्कोणस्य कोणमूलेषु–

ऐं ग्लौं आ क्षा ई ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ ई ला ई माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ ऊ हा ई कौमारीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ ऋ सा ई वैष्णवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ ऐ शा ई इन्द्राणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ औ वा ई चामुण्डा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्पूज्य तस्यैव क्रोणाग्रेषु मध्ये च–

ऐं ग्लौं य म र यूं यां यीं यूं यैं यौं यः याकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां त्वग्धातुं गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, याकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ र म र यूं रां रीं रूं रैं रौं रः राकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां रक्तधातुं पिव पिव अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा राकिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ल म र यूं लां लीं लूं लैं लौं लः लाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मांसधातुं भक्षय भक्षय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, लाकिनी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ड म र यूं डां डीं डूं डैं डौ डः डाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मेदोधातुं ग्रस ग्रस अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, डाकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ क म र यूं कां कीं कूं कैं कौं कः काकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां अस्थिधातुं भञ्जय भञ्जय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, काकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ स म र यूं सां सीं सूं सैं सौं सः साकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मज्जाधातुं गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, साकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ह म र यूं हां हीं हुं हैं हौं हः हाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां शुक्रधातुं पिव पिव अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा, हाकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति धातुनाथानिष्ट्वा,

षडरस्य दक्षवामपार्श्वयोः क्रमेण-

ऐं ग्लौं क्रोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तत्रैव-

२ स्तम्भनमुसलायुधाय नमः। २ आकर्षणहलायुधाय नमः।

षडराद् बहिः देव्याः पुरतः-

ऐं ग्लौं क्षौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः, *इति तृतीयावरणम्।*

अष्टदले-

ऐं ग्लौं वार्तालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ वाराहीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ वाराहमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ अन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ रुन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ जम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २

मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, २ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तद्बहिः पुरतो देव्याः-

ऐं ग्लौं महामहिषाय देवीवाहनाय नमः। *इति चतुर्थावरणम्।*

शतपत्रे देवीपुरतोऽष्टत्रिंशद्दलसन्धिषु-

ऐं ग्लौं जम्भिन्यै नमः, २ इन्द्राय नमः, २ अप्सरोभ्य नमः, २ सिद्धेभ्यः नमः, २ द्वादशादित्येभ्यः नमः, २ अग्नये नमः, २ साध्येभ्यः नमः, २ विश्वेभ्यो देवेभ्यः नमः, २ विश्वकर्मणे नमः, २ यमाय नमः, २ मातृभ्यः नमः, २ रुद्रपरिचारकेभ्यः नमः, २ रुद्रेभ्यः नमः, २ मोहिन्यै नमः, २ निर्ऋतये नमः, २ राक्षसेभ्यः नमः, २ मित्रेभ्यः नमः, २ गन्धर्वेभ्यः नमः, २ भूतगणेभ्यः नमः, २ वरुणाय नमः, २ वसुभ्यः नमः, २ विद्याधरेभ्यः नमः, २ किन्नरेभ्यः नमः, २ वायवे नमः, २ स्तम्भिन्यै नमः, २ चित्ररथाय नमः, २ तुम्बुरवे नमः, २ नारदाय नमः, २ यक्षेभ्यः नमः, २ सोमाय नमः, २ कुबेराय नमः, २ देवेभ्यः नमः, २ विष्णवे नमः, २ ईशानाय नमः, २ ब्रह्मणे नमः, २ अश्विभ्यां नमः, २ धन्वन्तरये नमः, २ विनायकेभ्यो नमः।

तद्बहिः-

ऐं ग्लौं रौं क्ष्रौं क्षेत्रपालाय नमः। २. सिंहवराय देवीवाहनाय नमः। तद्बहिः-

ऐं ग्लौं महाकृष्णाय मृगराजाय देवीवाहनाय नमः। *इति पञ्चमावरणम्।*

सहस्रारे अष्टधा विभक्ते प्रतिपञ्चविंशत्युत्तरशतदलं प्राग्वत् क्रमेण-

ऐं ग्लौं ऐरावताय नमः, २ पुण्डरीकाय नमः, २ वामनाय नमः, २ कुमुदाय नमः, २ अञ्जनाय नमः, २ पुष्पदन्ताय नमः, २ सार्वभौमाय नमः, २ सुप्रतीकाय नमः।

एते दिग्गजाः सुराब्धेर्बहिर्वा प्रागाद्यासु यष्टव्याः। बाह्यप्राकारस्याष्टासु प्रागाद्यासु दिक्षु अध उर्ध्वं च क्रमेण प्राग्वत्-

ऐं ग्लौं क्ष्रौं हेतुकभैरवक्षेत्रपालाय नमः। हेतुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ त्रिपुरान्तकभैरवक्षेत्रपालाय नमः। त्रिपुरान्तकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अग्निभैरवक्षेत्रपालाय नमः। अग्निभैरवश्रीपादुकां पूजयामि. तर्पयामि.नमः।

३ यमजिह्वभैरवक्षेत्रपालाय नमः। यमजिह्वभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ एकपादभैरवक्षेत्रपालाय नमः। एकपादभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कालभैरवक्षेत्रपालाय नमः। कालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ करालभैरवक्षेत्रपालाय नमः। करालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ भीमरूपभैरवक्षेत्रपालाय नमः।भीमरूपभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ हाटकेशभैरवक्षेत्रपालाय नमः। हाटकेशभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अचलभैरवक्षेत्रपालाय नमः। अचलभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति षष्ठावरणम्।

(सर्वा अप्यावरणदेवताः देव्यभिमुखासीनाः, स्वयं च तत्तदभिमुखः पूजयामीति भावयेत्।)

देव्याः पुनः पूजादिबलिदानान्तम्

इत्थं षडावरणीमभ्यर्च्य पुनर्देवीं त्रिवारं सन्तर्प्य पुनः षोडशभिरुपचारैरुपचर्य, श्रीक्रमोक्तेन विधिना होमं तदन्ते बलिदानञ्च कुर्यात्।

होमाकरणपक्षे–देव्याः पुरतो वामभागे हस्तमात्रं सामान्योदकेनोपलिप्य त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य रक्तान्नहरिद्रान्नसक्तुशर्कराहेतु-फलत्रयमाक्षिकमुद्गत्रयमाषचूर्णदधिक्षीरघृतैः शुद्धौदनं सम्मर्द्य, कुक्कुटाण्डप्रमाणान् दशपिण्डान् कपित्थफलमानञ्च एकं पिण्ड विधाय तत्र निधाय तत्समीपे सादिमद्वितीयतृतीयं चषकं च निधाय, ऐं ग्लौं क्ष्रौं हेतुकभैरवक्षेत्रपालाय नमः इत्यादिभिः पूर्वोक्तैः दशभिः मन्त्रैः हेतुकादिभ्योऽचलान्तेभ्यो दशभ्यः क्रमेण दश पिण्डान् दश दिक्षु दत्वा मध्ये स्थूलमेकं पिण्डं चषकं च 'ऐं ग्लौं क्ष्रौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः' इति मन्त्रेण तस्मै दद्यात्।

(फलत्रयम्–त्रिफला। मुद्गत्रयं–हरितं कृष्णं पीतम्)।

अथ पाणिं प्रक्षाल्य, देव्यै पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रदक्षिणनमस्कारोक्तं जपेत्।

वाराहीमन्त्रजपः

अस्य श्रीवाराहीमहामन्त्रस्य ब्रह्मण ऋषये नमः, इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नमः इति मुखे, वाराह्यै देवतायै नमः इति हृदये, ऐं ग्लौं बीजाय नमः इति गुह्ये, फट् शक्तये नमः इति पादयोः, ठः ठः ठः ठः कीलकाय नमः इति नाभौ, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे च विन्यस्य, मूलेन त्रिव्यापकं कृत्वा, अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादिभिः पञ्चभिः मन्त्रैः पूर्वोक्तैः अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तम्, २ ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि हृदयाय नमः इत्यादिभिश्च हृदयादिषु न्यासं विधाय, उक्तप्रकारेण ध्यात्वा, मनसा

२ श्रीवाराह्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः,

२ श्रीवाराह्यै हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः,

२ श्रीवाराह्यै यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः,

२ श्रीवाराह्यै रं अग्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः,

२ श्रीवाराह्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः, नैवेद्याङ्गत्वेन च

२ श्रीवाराह्यै सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः

इति पञ्चोपचारानाचर्य, विघ्नदेव्यङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गसहितं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारान् यथाशक्ति वा, श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपेत्।

स्तं स्तम्भिन्यै नमः इति वाराह्या विघ्नदेवीमन्त्रः। एतं जपारम्भे त्रिवारं जपेत्। मूलमन्त्रश्च न्यासोक्ताष्टखण्डसमष्टिरूपः।

लूं वाराही लूं उन्मत्तभैरविपादुकाभ्यां नमः, इति वाराह्यङ्गं लघुवाराही।

ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा इति तदुपाङ्गं स्वप्नवाराही।

ऐं नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे पशुजनमनश्चक्षुश्श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा, इति तत्प्रत्यङ्गं तिरस्करिणी। एतान् त्रीन् मन्त्रान् मूलजपान्ते तद्दशांशं जपेत्। पुनः न्यासध्यानादि कृत्वा जपं निवेद्य स्तुवीत।

वाराहीस्तोत्रम्

अनुग्रहाष्टकम्

ईश्वर उवाच—

कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला
हलमुसलिनी सद्भक्तेभ्यो वराभयदायिनी।
कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोरघनस्तनी
जयति जगतां मातः सा ते वराहमुखी तनुः।। १।।

तरति विपदो घोरा दूरात्परिह्रियते भयम्
स्खलितमतिभिर्भूतप्रेतैः स्वयं व्रियते श्रिया।
क्षपयति रिपूनीष्टे वाचां रणे लभते जयं
वशयति जगत्सर्वं वाराहि यस्त्वयि भक्तिमान्।। २।।

स्तिमितगतयस्सीदद्वाचः परिच्युतहेतयः
क्षुभितहृदयास्सद्यो नश्यद्दृशो गलितौजसः।
भयपरवशा भग्नोत्साहाः पराहतपौरुषाः
भगवति पुरस्त्वद्भक्तानां भवन्ति विरोधिनः।। ३।।

किसलयमृदुर्हस्तः क्लिश्येत कन्दुकलीलया
भगवति महाभारः क्रीडासरोरुहमेव ते।
तदपि मुसलं धत्से हस्ते हलं समयद्रुहां
हरसि च तदाघातैः प्राणानहो तव साहसम्।। ४।।

जननि नियतस्थाने त्वद्वामदक्षिणपार्श्वयोः
मृदुभुजलतामन्दाक्षेपप्रवातितचामरे।
सततमुदिते गुह्याचारद्रुहां रुधिरासवै-
रुपशमयतां शत्रून् सर्वानुभे मम दैवते।। ५।।

हरतु दुरितं क्षेत्राधीशः स्वशासनविद्विषां
रुधिरमदिरामत्तः प्राणोपहारबलिप्रियः।
अविरतचटत्कुर्वद्दंष्ट्रास्थिकोटिरटन्मुखो
भगवति स ते चण्डोच्चण्डः सदा पुरतः स्थितः।। ६।।

क्षुभितमकरैर्वीचीहस्तोपरुद्धपरस्परैः
चतुरुदधिभिः क्रान्ता कल्पान्तदुर्ललितोदकैः।
जननि कथमुत्तिष्ठेत् पातालसर्पबिलादिला
तव तु कुटिले दंष्ट्राकोटी न चेदवलम्बनम्।। ७।।
तमसि बहुले शून्याटव्यां पिशाचनिशाचर-
प्रथमकलहे चोरव्याघ्रोरगद्विपसङ्कटे।
क्षुभितमनसः क्षुद्रस्यैकाकिनोऽपि कुतोभयं
सकृदपि मुखे मातस्त्वन्नाम सन्निहितं यदि।। ८।।
विदितविभवं हृद्यैः पद्यैर्वराहमुखीस्तवं
सकलफलदं पूर्णं मन्त्राक्षरैरिममेव यः।
पठति स पटुः प्राप्नोत्यायुश्चिरं कवितां प्रियां
सुतसुखधनारोग्यं कीर्तिं श्रियं जयमुर्वराम्।। ९।।

इत्यनुग्रहाष्टकम्

निग्रहाष्टकम्

देवि क्रोडमुखि त्वदङ्घ्रिकमलद्वन्द्वानुषक्तात्मने
मह्यं द्रुह्यति यो महेशि मनसा कायेन वाचा नरः।
तस्याद्य त्वदयोग्रनिष्ठुरहलाघातप्रभूतव्यथा-
पर्यस्यन्मनसो भवन्तु वपुषः प्राणाः प्रयाणोन्मुखाः।।१।।
देवि त्वत्पदपद्मभक्तिविभवप्रक्षीणदुष्कर्मणि
प्रादुर्भूतनृशंसभावमलिनां वृत्तिं विधत्ते मयि।
यो देही भुवने तदीयहृदयान्निर्गत्वरैर्लोहितैः
सद्यः पूरयसे कराब्जचषकं वाञ्छाफलैर्मामपि।। २।।
चण्डोच्चण्डमखण्डदुष्टहृदयप्रोत्क्षिप्तरक्तच्छटा-
हालापानमदाट्टहासजनिताटोपप्रतापोत्कटम्।
मातर्मत्परिपन्थिनामपहृतैः प्राणैस्त्वदङ्घ्रिद्वयं
ध्यानोद्दामरवैभवोदयवशात् सन्तर्पयामि क्षणात्।।३।।

वाराहि व्यथमानमानसगलत्संज्ञं त्वदाज्ञाबलात्
सीदद्धैर्यमपाकृताद्ध्यवसितं प्राप्ताखिलार्थाहतिम्।
क्रन्दद्बन्धुजनं कलङ्कितकुलं कण्ठे व्रणोद्यत्कृमिं
पश्यामि प्रतिपक्षमाशु सततं श्रान्तं लुठन्तं पुनः।। ४।।
वाराहि त्वमशेषजन्तुषु पुनः प्राणात्मिका स्पन्दसे
शक्तिव्याप्तचराचरामिह खलु त्वामेतदभ्यर्थये।
त्वत्पादाम्बुजसङ्गिनो मम सकृत् पापं चिकीर्षन्ति ये
तेषां मा कुरु शङ्करप्रियतमे देहान्तरावस्थितिम्।। ५।।
विश्वाधीश्वरवल्लभे विजयसे या त्वं नियन्त्र्यात्मिके
भूतान्ता पुरुषायुषावधिकरी पाकप्रदा कर्मणाम्।
तां याचे भवतीं किमप्यवितथं योऽस्मद्विरोधी जन-
स्तस्यायुर्मम वाञ्छितावधि भवेन्मातस्तवैवाज्ञया।।६।।
मातस्सम्यगुपासितुं जडमतिस्त्वां नाद्य शक्नोम्यहं
यद्यप्यञ्चितदेशिकाङ्घ्रिकमलानुक्रोशपात्रस्य मे।
जन्तुः कश्चन चिन्तयत्यकुशलं यस्तस्य तद्वैशसं
भूयाद्देवि विरोधिनो मम च ते श्रेयःपदासङ्गिनः।।७।।
श्यामां तामरसारुणत्रिनयनां सोमार्धचूडां जग-
त्त्राणव्यग्रहलामुदग्रमुसलांसंत्रासमुद्रावतीम्।
ये त्वां रक्तकपालिनीं शिववरारोहे वराहाननां
भावे सन्दधते कथं क्षणमपि प्राणन्ति तेषां द्विषः।।८।।

इति निग्रहाष्टकम्

वृन्दाराधनं, गुरुसन्तोषणं, शक्तिवटुकपूजा च

अथ योगिनीवीरयुग्मसमुदायात्मकं बृन्दं गन्धादिभिराराध्य, यथाविभवं श्रीगुरुं सन्तोष्य, सर्वलक्षणसम्पन्नाः तिस्रः शक्तीर्वटुकञ्चाहूयाभ्यर्च्य, स्नपयित्वा, मध्ये वार्तालीबुद्ध्यैकां क्रोधिनीस्तम्भिनीबुद्ध्या च द्वे पार्श्वयोरुपवेश्य, चण्डोच्चण्डधिया बटुकं चाग्रे समुपवेश्य, 'द्वितारी' नमः सम्पुटितैः तत्तन्नाममन्त्रैः गन्धादिभिः क्षीरादिभिश्च सर्वैः द्रव्यैः सन्तोष्य, मम श्रीवार्तालीमन्त्रसिद्धिः भूयादिति शक्तीः प्रार्थयेत्। ताश्च प्रसीदन्त्वधिदेवता इति प्रतिब्रूयुः।

हविःप्रतिपत्तिः

अथ श्रीक्रमोक्तक्रमेण हविः प्रतिपत्तिकर्मादिविशेषार्घ्यविसर्जनान्तं शेषं निर्वर्तयेत्। हविः प्रतिपत्तौ मूलेन तत्त्वत्रयशोधनमेवेति विशेषः।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यक्रममाचरन् श्यामाक्रमोक्तेन पुरश्चरणप्रकारेण प्रत्यहं सहस्रसंख्या, लक्षसंख्याकं प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितं जपं पुरश्चरणं कृत्वा तद्दशाशं नारिकेलोदकैः सन्तर्प्य, तद्दशांशं तापिच्छकुसुमैः तिलैः चुलुकमितैः शतसंख्याकैर्वा हरिद्राखण्डैर्वा तन्त्रान्तरोक्तैः त्रिमध्वक्तैः हेतुमिश्रैश्च जुहुयात्। इह पञ्चधोपचारात् प्राक् महाव्याहृत्यादिषु च आज्येनैव होमः। इतरेषु तापिच्छादिना। एवं सिद्धमन्त्रः स्वतन्त्रोपास्तौ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनरतः सत्यां कामनायां पूर्वोक्तैनेव क्रमेण तत्तत्काम्यानुगुणं होमं कृत्वा सफलमनोरथ आज्ञासिद्धः सुखी विहरेत्। इति शिवम्।।

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे वाराहीक्रमः सम्पूर्णः।

मातर्वाराहि जाते तवचरणसरोजार्चनं वा जपं वा
कर्तुं शक्तो न चाहं तदपि च सदये मय्यतस्त्वां हि याचे।
यस्त्वां द्रंष्ट्राशिताग्रां त्रिनयनलसितां चारुभूदारवक्त्रां
मूर्तिं चित्ते विधत्ते तदरिगणविनाशोऽस्तु तस्मिन् क्षणे वै।।

परा–क्रमः

'प्रभुहृदयज्ञातुः पदे पदे सुखानि भवन्ति'–अस्या उपासने हेतुमाह *परशुरामकल्पसूत्रे*।

काल्यकृत्यमाह्निकञ्च

श्रीमान् साधकः कल्ये प्रबुद्धः शयन एव स्थितः श्रोत्राचमनभस्मधारणे विधाय, श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण श्रीगुरोर्ध्यानं वक्ष्यमाणया मूलपूर्विकया सामान्यपादुकया सुमुखादिमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं वन्दनञ्च विधाय, वक्षमाणया रीत्या प्राणानायम्य ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धिनि सहस्रदलकमले सुखासीनायाः वक्ष्यमाण–ध्यानोक्तमूर्त्याः शक्तिबीजाभिन्नायाः पराऽम्बायाः चरणयुगलविगलदमृत–रसविसरपरिप्लुतमात्मानं ध्यात्वा मूलं मनसा दशवारमावर्त्त्य, बहन्नाडी पार्श्वपादमुत्थाय, निर्वर्तितावश्यकः उक्तया भङ्ग्या विहितदन्तधावनादिस्नानश्च शुचिवासो वसानः विधृतपुण्ड्रः सर्वेण मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसे नाभिं हृदयं शिरश्चावमृशेत्।

यागमन्दिरप्रवेशः

एवं त्रिराचम्य, यागमन्दिरमासाद्य, द्वारस्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य, यागगृहञ्च रङ्गवलीपुष्पमालिकावितानादिभिश्चालङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामशाखयोः उर्ध्वभागे च क्रमेण–

सौः भद्रकाल्यै नमः, सौः भैरवाय नमः सौः लम्बोदराय नमः, इति तिस्रो द्वारदेवताः सम्पूज्य, अन्तःप्रविष्टः **सौः रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः**, इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा, सपर्यासामग्रीं स्वदक्षिणभागे निधाय, प्रज्वालितदीपो गन्धमाल्यादिभिरलङ्कृतात्मा जातिपत्रफलैलालवङ्ग–कर्पूराख्यपञ्चतिक्तेनामोदितवदनः प्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णे उर्णमृदुनि शुचिनि मूलेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते सकृत्प्रोक्षिते चासने **सौः आधारशक्तिकमलासनाय नमः**, इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मस्वस्तिकाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य **सौः समस्त–गुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रदेवताश्रीपादुकाभ्यो नमः**, इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः **सौः**

ऐं ह्रीं श्रीं ऐ क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौः स्हौः अमुकाम्बासहितामुकानन्दनाथ-श्रीगुरुपादुकां पूजयामीति मन्त्रेण मस्तके निजदेशिकमभिवन्द्य गं गणपतये-नमः इति बद्धाञ्जलिः।

सौः अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।

इमि मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रितयक्रूरदृष्ट्य-वलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्।

प्राणयामः

अथ श्रीक्रमोक्तेन विधिना भूतशुद्धिमात्मप्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय सौः वर्णपूर्वकं मातृकावर्णैः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण बहिर्मातृकान्यासं कृत्वा षोडशवार-मावृत्तेन मूलेन पूरकं, चतुःषष्टिवारमावृतेन कुम्भकं द्वात्रिंशद्वारमावृत्तेन रेचकम्, इति विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य।

अङ्गन्यासः

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं मुहुरावृत्तेन सौः नमः इति नमोऽन्तेन मूलेन शिरोमुखहृन्मूलाधारेषु न्यासं विधाय सर्वाङ्गे च व्यापकं कृत्वा, सौः स् हृदयाय नमः, सौः औ शिरसे स्वाहा, सौः शिखायै वषट्, सौः स् कवचाय हुम्, सौः औ नेत्रत्रयाय वौषट्, सौः अस्त्राय फट्, इति मूलमन्त्रावयवैर्द्विरावृत्तैः वर्णषडङ्गं सर्वेण मूलेन षड्वारमावृत्तेन मन्त्रषडङ्गञ्च कुर्यात्। इह मूलमन्त्रस्य तृतीयोऽवयवः केवलो विसर्गो न त्वकारविशिष्ट इति च ज्ञेयम्।

चिदग्नौ सर्वतत्त्वविलापनम्

अथ काकचञ्चूपुटाकृतिना मुखेन बाह्यमनिलमन्तराकृष्य संस्तभ्य मूलं सप्तविंशतिवारमावर्त्यं वक्ष्यमाणक्षित्यादिशिवान्तषट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकं वेद्यं नाभौ मुद्रितं विभाव्य पुनः प्रोक्तवारं मूलं जपित्वा 'नमः' इति शिखाबन्धनोत्तरं पूर्ववद् अनिलमापूर्य तेन सर्वकारणचिद्रूपमग्निमुद्दीप्य तत्र प्राङ्मुद्रितस्य वेद्यस्य विलयनं भावयित्वा।

अर्घ्यशोधनम्

श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्यै आसादयेत्। अत्र चोभयोरप्यर्घयोः प्रवेशरीत्या अन्तास्त्रचतुरस्रादिबिन्द्वन्तमण्डलकरणम्-

अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्त्यै वौषडित्याधारस्थापनम्,

उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषडिति पात्रनिधानम्,

मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः इति शुद्धसलिलापूरणम्।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससंभृतम्।
आपूरितमहापात्रं पीयूषरसमावह।। इति क्षीरपूरणम्

हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामीत्वाद्यस्त्रान्तं प्रागुक्त- षडङ्गद्वयम्, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम् चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावश्च विशेषः। ततो विशेषार्घ्यबिन्दुभिः वरिवस्यावस्तूनि सम्प्रोक्ष्य।

तत्त्वकदम्बस्य हृत्पद्मस्थापनम्

पूर्वं नाभौ मुद्रयित्वा तप्तायोद्रवमिव चिदग्नौ विलापितं षट्त्रिंशत्त-त्त्वकदम्बरूपं वेद्यं हृत्सरोजमानीय स्थापयेत्।

पराचक्रनिर्माणम्

अथ सकुसमक्षेपैः मूलपूर्वकैः वक्ष्यमाणैः मन्त्रैः पराम्बायाश्चक्ररूपमासनं निर्मिमीत। यथा- (योगपीठाय नमः, इति सर्वत्र योज्यम्)

सौः पृथ्वीयोगपीठाय नमः अप्, तेजः, वायु, आकाश, गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द, उपस्थ, पायु, पाद, पाणि, वाक्, घ्राण, जिह्वा, चक्षुः, त्वक्, श्रोत्र, मनः, बुद्धि, अहङ्कार, प्रकृति, पुरुष, नियति, काल, अविद्या, कला, राग, माया, शुद्धविद्या, ईश्वर, सदाशिव, शक्ति, सौःशिवयोगपीठाय नमः इत्येवं पराचक्रं निर्माय।

चक्रे देव्याः पूजा

ब्रह्मरन्ध्रे- अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती।
मुद्रापुस्तलसद्बाहा पातु मां परमा कला।

इति ध्यातां सादाख्यचन्द्रकलारूपां श्रीपराम्बां मूलेन हृदयगत-पराचक्रे आवाह्य मूलान्ते श्रीपराम्बा आवाहिता भव इत्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं आवाहनाद्यवगुण्ठनान्तं कृत्वा वन्दनधेनुयोनिमुद्राः प्रदर्श्य मूलेन पुनः पुनरावृतेन श्रीपरादेव्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्ध-पुष्पधूपदीपनीराजनछत्रचामरमुकुरदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलाख्यान् षोडशोपचारान्

विधाय नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशने हस्तप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि च दद्यात्। नैवेद्याय त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम् वम् इति धेनुमुद्रया अमृतीकरणम्, मूलेन सप्तवाराभिमन्त्रणम्, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनश्चानुष्ठेयम्। ततो वामकरतत्त्वमुद्रा–सन्दष्टद्वितीयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुसहपतितैः दक्षकरोपात्तैः कुसुमैः

सौः स् प्रकाशरूपिणीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः, औ विमर्शरूपिणीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः, : प्रकाशविमर्शरूपिणी पराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः प्रकाशविमर्शरूपिणीषराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

इति त्रिभिः मन्त्रैः क्रमेण देव्या मूलाधारहृन्मुखेष्वभ्यर्च्य

सौः महाप्रकाशविमर्शरूपिणीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति मन्त्रेण देवीं दशवारं सन्तर्प्य।

देव्याम् अखिलतत्त्वहोमभावनम्

तामेव कालाग्निकोटिदीप्तां ध्यात्वा, तस्यां सौः पृथ्वीं जुहोमि स्वाहा, सौः आपो जुहामि स्वाहा इत्यादिरीत्या प्राग्वद्विलाप्य हृदये स्थापितं षट्त्रिंशत्तत्त्वकदम्बं पृथक् पृथक् मनसा जुहुयात्। इह क्रमे अयमेव होमः।

गुर्वोघत्रययजनम्

ततो मूलपूर्विकयोक्त्या श्रीगुरुपादुकया मस्तकस्थं श्रीगुरुं त्रिः सम्पूज्य पुनश्चिदग्निमुद्दीप्तं विभाव्य देव्याः पश्चात् प्रागपवर्गे रेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत्। यथा–

सौः पराभट्टारिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः अघोरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः श्रीकण्ठानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति दिव्यौघः।

सौः शक्तिधरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः क्रोधानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

सौः त्र्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति सिद्धौघः।

सौः आनन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

सौः प्रतिभादेव्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः वीरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः संविदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः मधुरादेव्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः ज्ञानानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः श्रीरामानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,
सौः योगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति मानवौघः।

बलिदानम्

ततः त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं कृत्वा ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति पुष्पेणाभ्यर्च्च्य, अर्धान्नं सलिलपूर्णं सक्षीरोपादिममध्यमश्च पात्रं निधाय, ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहेति त्रिः पठित्वा बलिं दत्वा, तत्त्वमुद्रास्पृष्टं क्षीरं बल्युपरि निषिच्य, वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदश्चितवक्त्रो नाराचमुद्रया बलिं भूतैः ग्राहयित्वा, पाणी प्रक्षाल्य, मानसिकीः प्रदक्षिणनतीः विधाय, देव्यै पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

परामनुजपः

अस्य श्रीपराभट्टारिकामहामन्त्रस्य भैरवाय ऋषये नमः, इति शिरसि, गायत्र्यैः छन्दसे नमः, इति मुखे, पराम्बायै देवतायै नमः, इति हृदये, सं बीजाय नमः, इति गुह्ये, औः शक्तये नमः इति पादयोः सौः कीलकाय नमः इति नाभौ, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यै विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे, च न्यस्य, मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा

सां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः, सीं तर्जनभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा), सूं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) सैं अनामिकाभ्यां नमः, (कवचाय हुं), सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्), सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्) इति मन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा।

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती।
मुद्रापुस्तलसद्बाहा पातु मां परमाकला॥ इति ध्यात्वा

सौः परादेव्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
सौः परादेव्यै हं आकाशात्मकं पुष्पाणि समर्पयामि।
सौः परादेव्यै यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि।
सौः परादेव्यै रं अग्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।
सौः परादेव्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

सौः परादेव्यै सं सर्वात्मकं सर्वोपचारान् समर्पयामि। इति षडुपचारैः मनसा अभ्यर्च्य, मूलं सहस्रं त्रिशतं शतं वा श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपित्वा स्तुवीत।

परास्तुतिः

याऽघोरादिभिरेतैः पारम्पर्यक्रमागतैर्नाथैः।
प्रथते तां विश्वमयीं विश्वतीतां स्वसंविदं नौमि।। १।।
आनन्दचरणकमलामकलङ्कशशाङ्कमण्डलच्छायाम्।
तन्मण्डलाधिरूढां तत्कलया कलितकलां नौमि।। २।।
इच्छादिशक्तिशूलाम्बुजमूलां मूलकुण्डलीरूपाम्।
नित्यामप्यणुरूपामणोश्च महतो महीयसीं नौमि।। ३।।
मौक्तिकमणिगणरुचिरां शशाङ्कनिर्मोकनिर्मलं क्षौमम्।
निवसानां परमेशीं नमामि सौवर्णसम्पुटान्तःस्थाम्।। ४।।
भक्तजनभेदभञ्जनचिन्मुद्राकलितदक्षपाणितलाम्।
पूर्णाहन्ताकारणपुस्तकवर्येण रुचिरवामकराम्।। ५।।
सृष्टिस्थितिलयकृद्भिर्नयनाम्भोजैश्शशीनदहनाख्यैः।
मौक्तिकताटङ्काभ्यां मण्डितमुखमण्डलां परां नौमि।। ६।।
षड्गतिषडूर्मिषडरीन् धिक्कृत्याशु स्वभक्तवर्गस्य।
कञ्चुकपञ्चकनोदनसञ्चितसंवित्प्रकाशिनीं नौमि।। ७।।
अध्वातीतं बुद्ध्वा बुधाः प्रबुद्धाः परं पदं यस्याः।
कैवल्यं यान्ति हठात् कटाक्षपातेन तां परां नौमि।
यः पठतीदं स्तोत्रं पात्रं स भवेच्च पञ्चवर्गस्य।। ८।।
गुरुचरणकमलभाजा सहजानन्देन योगिनाऽभिहितम्।। ९।।

।। इति परास्तुतिः।।

हविः शेषस्वीकरणम्

सौः आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
सौः विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
सौः शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

इति मन्त्रैः तत्त्वत्रयशोधनपूर्वकं हविःशेषं स्वीकृत्य मूलेन देवीं विसृज्य, तेनैव ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा विशेषार्घ्यपात्रमामस्तकमुद्धृत्य "आर्द्रं ज्वलति" इति मन्त्रेण तदर्घ्यमात्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा कामकलात्मकं देवीरूपं भावयन्नात्मानं कृतकृत्यो भवेत्।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यक्रमं निर्वर्तयन् श्यामाक्रमोक्तक्रमेण लक्षजपं पुरश्चरणम्। कलौ तच्चतुर्गुणितं प्रत्यहमयुतसङ्ख्यया, ग्रहणादिजपप्रत्याम्नायान्वा कृत्वा, होमतर्पण-ब्राह्मणभोजनानि क्रमेण दशांशतः कुर्यात्। होमद्रव्यस्य तन्त्रान्तरेष्वदर्शनात्, आज्यमेव। ततः सिद्धमनुः काम्यलिप्सुर्यदि श्यामाक्रमोक्तैरेव द्रव्यैः हुत्वा पूर्णमनोरथः सुखी विहरेत्। एतदेकविश्रान्तिमभिलषतोऽप्ययमेवोपास्तिक्रम इति शिवम्।

परापद्धतिः सम्पूर्णा।

नित्यनैमित्तिकक्रमौ शिष्यसुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते। नित्यक्रमस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूलशतजपः प्रायश्चित्तमाम्नातम्।

आपदि तु-

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद्वाऽर्चनसाधनम्।
दानाशक्तः सपर्यान्तं पश्येत्तत्परमानसः।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे पञ्चसर्पयापद्धतिः सम्पूर्णा।

श्रीविद्यारत्नाकरे पञ्चदेवतासपर्याक्रमः पूर्णताङ्गतस्तेन श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरी प्रसीदतु।

परिशिष्टे

श्रीविद्यामन्त्रभाष्यम्

ज्योतिषामपि ज्योतिर्निर्दृश्यदृक्स्वरूपो महान् प्रकाशः शिवः। तद्विज्ञाने जाते सर्वं विज्ञातं भवति। तस्मिन् दृष्टे सर्वं बाधितं भवति। तस्य नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपा शक्तिः, तद्योगादेव विश्वोत्पत्ति- स्थितिलयलीलत्वं शिवस्य। तदुक्तं *वरिवस्यारहस्ये*–

स जयति महान् प्रकाशो यस्मिन् दृष्टे न दृश्यते किमपि।
कथमिव तस्मिन् ज्ञाते सर्वं विज्ञातमुच्यते वेदे।
नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपाऽस्य वर्तते शक्तिः। (३.४) इति।

तद्विज्ञानार्थमेव चतुर्दश विद्यास्थानानि। तेष्वपि सारभूता वेदाः। तेष्वपि गायत्री। तस्या रूपद्वितयम्। तत्रैकं स्पष्टम्। द्वितीयं परमगोपीयं श्रीविद्याख्यम्। तदेव 'कामो योनिः कमलेत्येवं' (*देव्यथर्वशीर्षे* १४) साङ्केतिकैः शब्दैर्वेदोऽपि व्यवहरति।

तत्र कादिविद्यायाः कादिवर्णास्तु स्पष्टाः। हृल्लेखायान्तु व्योमाग्नि-वामलोचनाबिन्द्वर्धचन्द्ररोधिनीनादनादान्तशक्तिव्यापिकासमनोन्मनीति द्वादश संहतिः। बिन्द्वादिनवानां संहतिर्नाद उच्यते। तत्र कामकला (ईकारः) त्रिकोणा (एकारः) च मात्राद्वितयोच्चार्या। बिन्दुरहितहृल्लेखा मात्रात्रितयोच्चार्या। अन्ये स्वरा मात्राकालोच्चार्याः। व्यञ्जनानि तु अर्धमात्रोच्चार्याणि। बिन्दोरपि व्यञ्जनत्वादर्धमात्रैव।

एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनन्त्वर्धमात्रकम्।।

इति वचनादर्धचन्द्ररोधिन्यादयः पूर्वपूर्वार्धाः। बिन्दोरर्धः कालश्चन्द्ररोधिन्याः तस्यार्धः कालो रोधिन्या इत्येवम्। कालपरमाणुर्लव उच्यते। तदुक्तम्–

नलिनीपत्रसंहत्याः सूक्ष्मसूच्यभिवेधने।
दले दले तु यः कालः स कालो लवसंज्ञितः।। इति।

अतः सूक्ष्मतमः कालो योगिलभ्यो भृगूद्वह।

तथा षट्पञ्चाशदुत्तरशतद्वयलवैरेका मात्रा। तथा च बिन्दोरष्टाविंशदुत्तरशतं लवाः। अर्धचन्द्रस्य चतुःषष्टिः। रोधिन्याः द्वात्रिंशत्। नादस्य षोडश। नादान्तस्याष्टौ। शक्तेश्चत्वारः। व्यापिकाया द्वौ। समनाया एको लवः। उन्मनाया नास्त्येव कालः।

केषाञ्चिन्मतरीत्या द्वादशोत्तरपञ्चशतलवात्मकत्वमेव मात्रायाः स्वरूपम्। ततश्च मात्रायाः द्वादशोत्तरपञ्चशततमो भाग उन्मनाकालः।

प्रथमकूटे अष्टादश वर्णाः, द्वितीये द्वाविंशतिवर्णाः, तृतीयेऽप्यष्टादशैव। तदुक्तं *वरिवस्यारहस्ये*

प्रथमेऽष्टादश वर्णाः द्वाविंशतिरक्षराणि मध्ये स्युः।

प्रथमेन तुल्यमन्त्यं संघातेनाष्टपञ्चाशत्।। (२.१४) इति।

संहत्य लवत्रयन्यूना एकत्रिंशन्मात्रा मन्त्रे सम्पद्यन्ते। तत्र प्रथमकूटं प्रलयाग्निनिभं मूलाधारमारभ्याऽनाहतं यावत्, द्वितीयं कोटिसूर्याभमनाहत-मारभ्याज्ञाचक्रं यावत्, तृतीयं कूटं कोटिचन्द्राभं तदारभ्य ब्रह्मरन्ध्रं यावत्, मालामणिवद्वर्णाः क्रमेणोपर्य्युपरि भाव्या आधारोत्थितो नादो गुण इव वर्णमध्ये गतो भाति। इदञ्च स्थानत्रयं बिन्द्वादिरहितकूटत्रयस्यैव। बिन्द्वादिनवकस्य तु स्थितिस्थानरूपाकारानाह वरिवस्यारहस्यकारः—

मध्ये फालं बिन्दुर्दीप इवाभाति वर्त्तुलाकारः।
तदुपरि गतोऽर्धचन्द्रोऽन्वर्थकान्त्या तथाकृत्या।।
अथ रोधिनी तदूर्ध्वं त्रिकोणरूपा च चन्द्रिका कान्तिः।
नादस्तु पद्मरागवत्, अण्डद्वयवर्त्तिनीव सिरा।।
नादान्तस्तडिदाभः स व्यवस्थितबिन्दुयुक्तलाङ्गलवत्।
तिर्यग्बिन्दुद्वितये वामोद्गच्छत्सिराकृतिः शक्तिः।।
बिन्दूद्गच्छत्त्र्यस्राकारधरा व्यापिका प्रोक्ता।
ऊर्ध्वाधो बिन्दुद्वयसंयुतरेखाकृतिः समना।
सैवोर्ध्वबिन्दुहीनोन्मना तदूर्ध्वं महाबिन्दुः।
शक्त्यादीनान्तु वपुर्द्वादशरविकान्तिपुञ्जाभम्।। (१.२२-२७) इति।

मूलाधारे क ए, स्वाधिष्ठाने ई ल, मणिपूरे ह् र् ईं अनाहते हसक, विशुद्धौ ह ल, आज्ञायां ह्रीं सकल, सहस्रारे ह्रीं, बिन्दुः ÷ˇ, अर्धचन्द्रः ◡ , रोधिनी▿ˇ, नादः ०।०, नादान्तः ०↓ˇ, शक्ति !., व्यापिका ▿̤.ˇ , समना !̇, उन्मनी !ˇ, महाबिन्दुः ●।

मन्त्रवर्णानां कण्ठताल्वादीन्युत्पत्तिस्थानानि आन्तरान् बाह्यांश्च यत्नान् ज्ञात्वा तेषां स्थितिस्थानानि च ज्ञात्वा वर्णानेवमुच्चारयेद्यथा प्राथमिको नादो द्वितीयकूटेन सार्धमुच्चारितो भवेत्। द्वितीयनादस्तु तृतीयेन कूटेन सार्धमुच्चारितो भवेत्। प्राक्तनयोः बिन्द्वादिनवकयोस्तु सम्मेलनेन तृतीयं यथा तत्संवलितं भवेत्तथोच्चारणीयम्। तृतीयकूटस्थं नादं बिन्द्वादि समनान्तमुच्चारयेत्। तदुच्चारणमुन्मन्यन्तर्निलीनं विभावयेत्।

श्रीविद्याया वाग्भवकामराजशक्तिकूटानां व्यष्टिसमष्टिभेदेन चतुर्धा भिन्नानां चत्वारि बीजानि सृष्टिस्थितिसंहारानाख्यारूपाणि भावनीयानि। तान्येव ज्ञातृज्ञानज्ञेयानि तत्सामरस्यञ्च, तान्येवाग्निचक्रसूर्यचक्रसोमचक्राणि ब्रह्मचक्रञ्च, मित्रेशनाथषष्ठीशनाथोड्डीशनाथचर्यानन्दनाथाश्च, जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तयस्तुरीया च वामाज्येष्ठारौद्र्यः शान्ता च, इच्छाज्ञानक्रिया अम्बिका च, कामेश्वरीवज्रेश्वरी-भगमालिन्यो महात्रिपुरसुन्दरी च, आत्मान्तरात्मपरमात्मानो ज्ञानात्मा च, आत्मतत्त्वविद्यातत्त्वशिवतत्त्वानि सर्वतत्त्वञ्च, कामरूपपूर्णगिरिजालन्धराण्योड्यान-पीठञ्च, प्राग्दक्षिणपश्चिमान्वया उत्तरान्वयश्च, एत एव समयाम्नायपदाभ्याञ्च कथ्यन्ते। स्वयम्भूबाणेतराणि परञ्च, पश्यन्तीमध्यमावैखर्य्यः परा च, एतान्येव पुटधामतत्त्वपीठान्वयलिङ्गमातृकारूपेण चिन्तनीयानीत्यर्थः। तदुक्तं *वरिवस्यारहस्ये*

पुटधामतत्त्वपीठान्वय-लिङ्गक-मातृतत्समष्टीनाम्।
रूपान्तराणि बीजान्यमूनि चत्वारि चिन्तनीयानि।। (३३) इति।

सृष्टिस्थितिसंहाराख्यानि त्रिविधान्यपि कर्माणि प्रत्येकमपि त्रिविधानि। तद्यथा-सृष्टिसृष्टिः, सृष्टिस्थितिः, सृष्टिसंहृतिः, एवं स्थितिसृष्टिः, स्थितिस्थितिः, स्थितिसंहृतिश्च संहृतिसृष्टिः, संहृतिस्थितिः, संहृतिसंहृतिः।

स्वशक्तिभिः सहिता ब्रह्माद्या एतत्कर्मणामधिपतयः। तत्र प्रथमकूटे ककारो ब्रह्मणो रूपम्, त्रिकोणा भारतीस्वरूपा, तुर्यः स्वरः विष्णुस्वरूपः, लकारः पृथ्वीस्वरूपः, हकारो रुद्ररूपः, रेफो रुद्राणीस्वरूपः, तुर्यस्वरस्तु शान्ताम्बिकात्मकमिथुनस्वरूपः। द्वितीयकूटे मध्यमहकारं परित्यज्यावशिष्टाक्षरेष्वपि पूर्वोक्तैव रीतिः। तृतीयकूटे तु द्वितीयकूटस्थत्यक्तहकारस्य ब्रह्मरूपत्वं सकारो भारतीरूपः, शेषाः पूर्ववत्। प्रथमकूटे हृल्लेखान्तर्गतकामकलाया या सपरार्धकला तुरीयबिन्दुरूपा, बिन्दुना मुखं, बिन्दुद्वयेन कुचौ, सपरार्द्धेन योनिः, सैव वह्निकुण्डलिनी; द्वितीयकूटे सैव सूर्यकुण्डलिनी, सैव तृतीयकूटे सोमकुण्डलिनी। बिन्द्वादिनवकसमष्टिरूपो नादो दीपशिखाग्रवर्तिकज्जललेखावत्तत एवोत्पद्यते। मूलाधारमारभ्योत्थिते नादे त्रैलोक्यमोहनसर्वाशापूरकसंक्षोभणचक्रत्रयस्य त्रिविधसृष्टिरूपस्य, अनाहतमारभ्योत्थिते नादे सर्वसौभाग्यदायकसर्वार्थसाधकसर्वरक्षाकरचक्रत्रयस्य त्रिविधस्थितिरूपस्य, बिन्दुस्थानमारभ्योत्थिते नादे, सर्वरोगहरसर्वसिद्धिप्रदसर्वानन्दमयचक्रत्रयस्य त्रिविधसंहृतिरूपस्य च चिन्तनं कार्यम्।

बाह्येन्द्रियव्यवहाररूपा जागरावस्था, तद्धेतुर्ज्ञानं तृतीयकूटस्थहृल्लेखास्ये रेफे भावनीयम्। बाह्येन्द्रियानपेक्षान्तःकरणव्यवहाररूपा स्वप्नावस्था, तज्जनकज्ञानरूपः प्रकाशः हृल्लेखास्थया कामकलया बोद्ध्यः। अथापि स्वप्नावस्था गलस्थे द्वितीयकूटस्थे लकारे चिन्त्या, वृत्तिसामान्या भावरूपा अविद्या वृत्तिरूपा वा सुषुप्तिः ललाटस्थाने तृतीयकूटस्थहृल्लेखास्थे बिन्दौ चिन्त्या, चिदभिव्यञ्जकनादस्य वेदनं तुर्यावस्था, तद्धेतुः प्रकाशः अर्धचन्द्ररोधिनीनादेषु भावनीयः। मनोवचनातीतप्रत्यगानन्दघन एव तुर्यातीतावस्था नादान्तादिपञ्चके भाव्या—

तार्तीयके रेफस्थाने बिन्दौ च रोधिन्याम्।
नादान्तव्यापिकयोः चन्द्रकतुल्यानि पञ्चशून्यानि।।

भाव्यानि। नीरूपं षष्ठं महाशून्यम् उन्मन्यां चिन्त्यम्।

जपसारपत्रकम्

चक्र- स्थानम्	गुदोपरि द्व्यङ्गुलोर्ध्वे		लिङ्गे		नाभौ	
चक्रनाम	मूलाधारः		स्वाधिष्ठानम्		मणिपूरकम्	
देवता	कुल- कुण्डलिनी	भारती ब्रह्मा		भूमिः विष्णु		ह्-रुद्रः र्-रुद्राणी ईं-मिथुनम्
मन्त्राक्षरम्	▽ - -	- क ए -	--------	- ई ल -	-------	-- ह्रीं --
दलानि अक्षराणि परिवारः योगिन्यः धातवः	४ व-स वरदाऽऽदिः साकिनी अस्थि		६ ब-ल बन्दिन्यादिः काकिनी मेदः		१० ड-फ डामर्यादिः लाकिनी मांसम्	
कृत्यानि त्रिपुटी चक्राणि नाथाः अवस्था शक्तयः शक्तयः शक्तयः आत्मानः तत्त्वानि पीठानि अन्वयाः लिङ्गानि मातृकाः कुण्डलिनी	परा			सृष्टिः ज्ञाता अग्नि- मित्रेशानन्द जागरः वामा, इच्छा, कामेश्वरी आत्मा आत्म- कामगिरिः प्राक्- स्वयंभू	पश्यन्ती	वह्नि- कुण्डलिनी
कूटम् चक्रनाम स्वरूपम्	१. वा	ग्भ	व त्रैलोक्यमोहनम् (९) भूपुरम्	कू सर्वाशापरिपूरकम्, (८) षोडशदलम्	ट	म् सर्वसंक्षोभणम् (७) अष्टदलम्

	हृदि अनाहतम्		कण्ठे विशुद्धिः		भ्रूमध्ये आज्ञा	
		विष्णुः भारती ब्रह्मा		भूमिः ब्रह्मा		भूमिः विष्णुः भारती
	--------	-ह स क-	-----	ह ल	--ह्रीं--	-स क ल-
	१२ क-ठ कालरात्र्यादिः राकिणी असृक्		१६ अ-अः अमृतादि डाकिनी त्वक्	स्वप्न	२ ह,क्ष हंसवत्यादिः हाकिनी मज्जा	
	मध्यमा	स्थितिः ज्ञानम् सूर्य- षष्ठीशानन्द स्वप्नः ज्येष्ठा, ज्ञान, वज्रेश्वरी अन्तरात्मा विद्या- पूर्णगिरिः दक्षिण- बाण- सूर्यकुण्डलिनी	वैखरी			संहारः ज्ञेयम् सोम- उड्डीशानन्दः सुषुप्तिः रौद्री, क्रिया, भगमालिनी परमात्मा शिव- जालन्धरः पश्चिम- इतर-
		२. का म	रा	ज	कू ट म्	३.
		सर्वसौभाग्यदायकम्, (६) चतुर्दशारम्,	सर्वार्थसाधकम्, (५) बहिर्दशारम्,		सर्वरक्षाकरम् (४) अन्तर्दशारम्	

ललाटमध्ये सहस्रारम्			
स्वप्नः जागरः	सुषुप्तिः	तुर्याऽवस्था	तुर्यातीताऽवस्था
ह र् ई	÷˘ | ∪	Δ˘ ·|·	↓˘ !. ∇˘ ! !˘ ●
१००० अमृताऽऽदिः याकिनी शुक्रम्	बिन्दुः अर्धचन्द्रः रोधिनी नादः नादान्तः शक्तिः व्यापिका समना उन्मनी महाबिन्दुः		
सोमकुण्डलिनी	अनाख्या सामरस्यम् ब्रह्म- चर्याऽऽनन्द- तुर्या शान्ता, अम्बिका महात्रिपुरासुन्दरी ज्ञानात्मा सर्व- ओड्याणम् उत्तर- पर-	**श्रीविद्यामन्त्रार्थः** शब्दार्थप्रकाशकवेदादिशास्त्राध्ययनस्मरणप्रयोजकबुद्धि-व्यापनलहरीयुक्तया स्वप्रकाशसंविदा, अनिष्टनिवारणभोग-भोग्यादिप्राप्त्याधिक्यकीर्तिजालप्रयोजकगुणसन्ततिरचयित्री, सर्वतत्त्वसर्वकलाधिष्ठात्री विश्वोत्पत्तिस्थितिसंहृतिजनक-सर्वैश्वर्योपेतनिरतिशयानन्दानुभवप्रकाशिका निरतिशयानन्दात्मकदहराकाशस्थपरमात्मस्वरूपिणी स्वप्रकाशा चिच्छक्तिः।	
श क्ति सर्वरोगहरम्, (३) अष्टारम्,	कू सर्वसिद्धिप्रदम्, (२) त्र्यस्रम्,	ट म् सर्वानन्दमयम्, (१) बिन्दुः	

प्राणात्ममानसानां संयोगः '*प्राणविषुवसंज्ञकः*'। प्राथमिककूटनादे व्यष्टिसमष्टि-भेदने बीजचतुष्कस्य स्वस्य चैक्येन नादमयताविभावनं '*मन्त्रविषुवम्*'। मूलाधारादिषट्चक्रस्याध ऊर्ध्वं चैकैको ग्रन्थिरिति द्वादश ग्रन्थयः। तद्भेदनमार्गेणैव सुषुम्नानाडी मूलाधाराद् ब्रह्मरन्ध्रं व्याप्नोति। तेनैव मार्गेण नादस्य वर्णपङ्क्तेश्च नाडीसंयुतत्वेन भावनयोच्चारणं '*नाडीविषुवम्*'। तृतीयकूटस्थरेफादिषु सप्तसु स्थानेष्वाधारादारब्धस्य नादस्याभिधानादुत्तरोत्तर-क्षणेषु कांस्यतालध्वनिवत् सौक्ष्म्यतारतम्यशक्तौ लयभावनं '*प्रशान्तविषुवम्*'। शक्त्यन्तर्गतनादं समनायां लयचिन्तनं '*शक्तिविषुवम्*'। समनोर्ध्वं पुनरुज्जीवनस्य सूक्ष्मतमस्य नादस्योन्मन्यां लयः '*कालविषुवम्*'। अकुलसहस्रारादिकोन्मनान्त-प्रदेशसंस्थेषु ककारादिषून्मनान्तेषु श्रीविद्याकूटलयेषु अयुतोत्तराष्टशतोत्तरसप्तदश-त्रुटिपर्यन्तं विद्यावयवस्थानसंलग्नतापूर्वकं नादोच्चारणे कृते सति तत्त्वस्य संविदभेदस्य बोधो भवति, तदिदं '*तत्त्वविषुवम्*'। एवं पूर्वोक्तरीत्या पञ्चावस्था षट्शून्यानि सप्तविषुवानि नव चक्राणि मनोरथांश्च स्मरतो विद्यावर्णोच्चारणं जपः। (*वरिवस्यारहस्ये* ४३-५२)

श्रीविद्यामन्त्रार्थविमर्शः

क इति कामयत इति कः परं ब्रह्म, कं ब्रह्मेति श्रुतेः। कमेरौणादिको डः। जगत्सिसृक्षावान् परमेश्वरस्तत्पदार्थः काम इत्युच्यते। तदेव गायत्र्यास्तदिति शब्दार्थः।

एकारस्य त्रिकोणत्वाद्योनिरित्यर्थः। तदेव प्राणिप्रसवकारणम्। त्रिकोणा शक्तिरेकारेण महाभगेन प्रसूते, तस्मादेकार एव गृह्यते। सवितुरिति तु प्रत्ययान्तप्रथमान्तपदस्य स एवार्थः, 'षूञ् प्राणिप्रसवे' इति धातुस्मरणात्। तच्च सर्वसम्भजनीयत्वात् वरेण्यं सर्वप्राणिपरप्रेमास्पदम्। अत एव वरेण्यम् इत्यस्यापि स एवार्थः।

यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयात्मकम्।
ब्रह्माण्डादि कटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते।। इति वामकेश्वरस्मरणात्।

ईयते योगिभिः सर्वान्तर्यामितयेति ई। पदानां मध्यवर्तित्वेन तुरीयस्वरेण सर्वान्तर्यामी शिवः। स एव देवस्य भर्ग इत्यनयोरर्थः। सोऽहम् इति देवस्येति

पदमपि प्रथमान्तमेव। भर्गः शिवः। धत्त इति धीः सर्वाधारः शिव इति देवस्य भर्गो धीरिति गायत्र्याः पदत्रयस्यार्थः। स एव तुरीयस्वरस्यार्थः। 'तस्माद्भर्गो देवस्य धीत्येवमीकारः' इति श्रुतेः।

ल इति पृथ्वीबीजस्य ससागरं सभूधरं भूण्डलमर्थः। भूमण्डलमित्यपि पञ्चभूतोपलक्षणम्। तदपि च मृद्घट इतिवत् परमात्मसामानाधिकरण्येन भूमण्डलोपलक्षितपञ्चभूतात्मना परिणतं परमात्मतत्त्वमेव ल इत्यस्यार्थः। गायत्र्यां महीति पदस्यापि स एवार्थः। महत्त्वात् काठिन्याच्च मही पृथ्वीति बोध्यते।

ह्रीम् इति हकारस्य हृदयमर्थः। तत्र हृदये 'ई गतौ इट् गतौ' इति धातोः ई इत्यस्य वासोऽर्थः। तथा च ह्री हृदयागारवासिनी हृल्लेखा तां माति बोधयतीति ह्रीम् परमात्मतत्त्वावभासिनी गुणत्रयातीता निर्गुणब्रह्मस्वरूपा राजराजेश्वरी। **धियो यो नः प्रचोदयात्** इति गायत्र्यास्तृतीयपादस्य स एवार्थः। अस्मदादीनां धियो बुद्धीः ध्यानादिरहिते निष्प्रपञ्चे वस्तुनि प्रेरयति परतत्त्वविषयकज्ञान-जननीत्यर्थः। **परोरजसेऽसावदोम्** इति तुरीयपादस्य गुणत्रयातीतं ब्रह्मैवार्थः। रजसः परं परोरजसे सोः शे इत्यादेशः। रजोऽतीतं निर्मलं निर्गुणमिति यावत्। रजःशब्दस्य गुणत्रयोपलक्षकत्वात्। सावदोम् इत्यस्य सवदोऽवदश्च प्रणवो बोद्ध्यते। स च वक्तुं शक्यो वक्तुमशक्यश्च। शब्दैः शक्तिमर्यादया न बोध्यः। शक्यतावच्छेदकधर्ममात्रस्य परस्मिन्नभावात्। लक्षणया तु बोध्यते, सत्यज्ञानादिपदशक्यविशिष्टतादात्म्यवत्त्वात्। '**यतो वाचो निवर्तन्ते, सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति**' इत्यादिश्रुतिभ्यः। अकारोकारमकारैः प्रणवे ब्रह्मविष्णुरुद्रात्मकं ब्रह्मार्थः। हृल्लेखाया अपि तदर्थः। तथा च सर्वजगत्सिसृक्षावान् कामेश्वरः, जगत्कारणरूपा कामेश्वरी, शिवः सर्वान्तर्यामी सर्वाधारः पञ्चभूताद्यात्मना परिणतः परवस्तुविषयकज्ञानजनको निर्गुणो वेदैर्लक्षणया गम्यः शक्त्या चागम्यः ब्रह्मविष्णुरुद्रात्मक *इति प्रथमकूटस्यार्थः।*

एवं श्रीविद्याया द्वितीयकूटस्थब्रह्मशिववाचिप्रथमहकारस्य गायत्र्यास्तत्पदस्य च शिवोऽर्थः, सकारस्य सवितुरित्यस्य च सवितार्थः, ककारस्य वरेण्यमित्यस्य

च सर्वसम्भजनीयसर्वप्राणिपरप्रेमास्पदमित्यर्थः। द्वितीयहकारस्य भर्गो देवस्य धी इत्यस्य च सर्वान्तर्यामिसर्वधारकः शिवोऽर्थः।

तृतीयकूटे सकेत्याभ्यां तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीत्यन्तगायत्र्या अर्थ उच्यते। सकारेण कामेश्वरः सर्वजगद्योनिः, ककारेण सर्वधारकः सर्वप्राणि-प्रेमास्पदं शिवः, द्वितीयतृतीयकूटयोर्लह्रीं इत्येताभ्यां पूर्वोक्तरीत्या पञ्चभूताद्यात्मना परिणतः परमात्मैवार्थो बोध्यते, उभयत्रापि ह्रल्लेखाभ्यां गायत्र्याश्चतुर्थचरणार्थो बोध्यते।

तथा च त्रिरावृत्तायाश्चतुश्चरणाया गायत्र्या अर्थः पञ्चदश्याः कूटत्रयेण बोध्यते। *त्रिपुरोपनिषद्ययमर्थो* निरूपितः। *देवीभागवते* च सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यां विद्याञ्च धीमहि। बुद्धिं या नः प्रचोदयात् इति ह्याद्यायाः श्रीविद्याया एव ब्रह्मरूपत्वं प्रतिपादितम्।

एवं प्रकाशविमर्शात्मकस्य तत्त्वस्य प्रकाशांशभूता वामाज्येष्ठारौ-द्र्यस्तिस्रः शक्तयो ब्रह्मविष्णुरुद्राः पुरुषाः, तत्समष्टिः शान्तात्मिका-शक्तिः तुरीया विमर्शांशभूता। इच्छाज्ञानक्रियास्तिस्रः शक्तयः तद्भार्यात्वेन भारतीपृथ्वीरुद्राण्यः स्त्रीरूपाः प्रसिद्धाः तत्समष्ट्यम्बिकाशक्तिस्तुरीया।

प्रथममिथुनत्रयं ईकारविनिर्मुक्तकूटत्रयस्य क्रमेणार्थः। ईकाराणान्तु तुरीयमिथुनमर्थः। वक्ष्यमाणे शाक्तेऽर्थे त्वेकैकस्मिन्नपि कूटे रेफान्तवर्णषट्-कस्यापि मिथुनत्रयमर्थ इति भेदः।

वामेच्छे ब्रह्मभारत्यौ ज्येष्ठाज्ञाने हरिक्षिती।
रौद्रीक्रिये शिवापर्णे इत्येतन्मिथुनत्रयम्।। *वरिवस्यारहस्ये* ६४

त्रिभिः कूटैः क्रमान्मिथुनत्रयं वाच्यम्, ह्रल्लेखास्थैरी-कारत्रितयैस्तु तत्समष्ट्यात्मकं शान्ताम्बिकात्मकं बोध्यम्।

वामेच्छाद्याः षडीकार इति सप्तभिरक्षरैः।
त्रिरावृत्तैरियं विद्या सञ्जाता तेन तन्मयी।।
वामादिसप्तशक्तीनां समष्टिः परदेवता।
षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपादस्मान्मात्रयापि भिद्यते। (६७-६८)

मन्त्रे तृतीयवर्णस्य तुर्यस्वरस्य ज्येष्ठाशक्तिवाचकत्वेन वामादिषट्कान्तः- पातित्वेनावशिष्टानां हृल्लेखास्थानामेव कामकलानाम् ईकारपदेन परामर्शान्न त्रिरावृत्तैरिति संख्याविरोधः।

ककारस्य वामात्रिकोणाया इच्छातुर्यस्वरस्य ज्येष्ठा लकारस्य ज्ञानात् त्रिरावृत्तैर्हल्लेखास्थैः ईकारै रौद्रीक्रिये सर्वसमष्टिरूपा च।

न च शाक्तार्थेन पौनरुक्त्यम्, तत्र वामादिषट्कं कामकलाया अभिन्नमिति वाक्यार्थः। अत्र तु वामादिकामकलान्तसप्तकाभिन्नो मन्त्रः षट्त्रिंशत्तत्त्वा- भिन्नमात्रभिन्न इत्यर्थ इति भेदात्। अथवा-

शिवशक्तिसमष्टिजन्यत्वान् मन्त्रराजः स्पन्दश्च, तद्व्यष्टिरूपौ शिवशक्तिमयौ। तेन जगन्मन्त्रदेवीनामभेदभावनं भावार्थः तदुक्तं *योगिनीहृदये*-

....'चलत्ता संस्थितस्य तु।
धर्माधर्मस्य वाच्यस्य विषामृतमयस्य च।। २.२३
वाचकाक्षरसंयुक्तैः कथिता विश्वरूपिणी।
तेषां समष्टिरूपेण पराशक्तिं तु मातृकाम्।। २.२४
कूटत्रयात्मिकां देवीं समष्टिव्यष्टिरूपिणीम्।
आद्यां शक्तिं भावयन्तो भावार्थ इति मन्वते।। २.२५

इति। तदर्थो *वरिवस्यारहस्ये* (टीकायाम्, पृ. ३४) "पराहन्तेत्यादि भावार्थकत्वतलादिवाच्यत्वाद्धर्मः शक्तिर्निर्धर्मकत्वादिधर्मःशिवः। स्पन्दजननं प्रति शक्तिरहितस्य शिवस्य स्पन्दनाक्षमत्वाद्भवस्पन्दं प्रति। शक्तेः कारणतावच्छेदकत्वात् कारणत्वम्, भवचक्रात्मकं स्पन्दं प्रति स्वीकार्यम्, तेन जननमरणादिक्लेशमयसंसारजनकत्वादियं शक्तिस्तद्विनिर्मोकादमृतं शिवस्त- दुभयस्य वाच्यस्य वाचके ये अक्षरे हकाराकाररूपे ताभ्यां व्यस्ताभ्यां तदुभयसमावेशरूपकामकलाक्षरेण चास्य चलत्तासंस्थितस्य नश्वरतायुक्तस्य जगतो मन्त्रराजस्य च सम्यक् परिणामपरिणामिभावेन युक्तेः सम्बन्धादेषा विद्या विश्वरूपिणी, एकाकारेणोभयोरभेदात् शिवशक्तिसामरस्यरूपस्य पराशक्त्यादि- पदवाच्यस्य कारणस्य कार्याभ्यां विश्वविद्याभ्यामभेदात्" (६८) इति।

ब्रह्मपरिणामभूता सृष्टिर्द्वेधा अर्थमयी शब्दमयी च, चक्रमयी देहमयी चेति। सृष्टिद्वयन्तु बालक्रीडनकार्थे स्थूलगृहसमानाकारत्वेन सूक्ष्मगृहनिर्माण-तुल्यमर्थसृष्ट्यन्तर्गतमेव न ततो भिन्नम्। पूर्वोक्ता द्विविधापि सृष्टिः समकालीनोत्पत्तिका समकालीनाभिवृद्धिशालिनी च। यथा बीजाङ्कुरतच्छाये। छायादर्शनेन वृक्षानुमितिदर्शनात् छायायां वृक्षसमानाकारत्वं वृक्षाविनाभावश्च विनाऽनुपपन्नमिति तद्द्वयमपि कल्प्यते। तद्वत् शब्दोऽप्यर्थाविनाभूतः अर्थज्ञानजनकज्ञानविषयत्वात् 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' इति महाकविप्रयोग-दर्शनाच्च। तथार्थसमानाकारोपि। यावन्तः शब्देऽवयवाः तावन्तोऽर्थे तज्ज्ञाने चाभ्युपेतव्याः। यथा चैत्रस्तण्डुलं पचति इत्यत्र चैत्रपदं सुप्रत्ययः, तण्डुलपदं अम् प्रत्ययः पचिधातुः ति प्रत्ययश्चेति षडवयवात्मकस्य वाक्यस्य चैत्रः कर्तृत्वम्, तण्डुलः कर्मत्वम्, तेजःसंयोगः कृतिश्चेति विशकलिताः षडर्थाः तेषां परस्परमभिव्याहारस्य तु परस्परसम्बन्धविशेषो तत्तत्पदार्थविशिष्टा भावनैव वाक्यार्थ इति मीमांसकाः, एवं तज्ज्ञानमपि षट्पदार्थांस्तत्सम्बन्धादींश्च विषयीकुर्वत्तत्समानाकारं भवति, अन्यथा ज्ञानानां परस्परं वैलक्षण्यानुपपत्तेः। अन्तःकरणपरिणामविशेषरूपे ज्ञाने तत्तदाकारत्वेन परिणतत्वकल्पनसम्भवाच्च। अत एव चैत्रस्तण्डुलं पचतीत्याकारं ज्ञानमिति सकलतान्त्रिकाणां व्यवहारः। अनयोः सृष्ट्योर्ज्ञानजनकन्तु मन एव। तच्च शब्दं श्रोत्रद्वारैव गृह्णाति अर्थन्तु कञ्चन चक्षुरादिद्वारेति विशेषः।

द्वे अपि सृष्टी स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतरसूक्ष्मतमभेदात् प्रातिस्विकं चतुर्विधे। श्रोत्रमनसोरप्यर्थान्तःपातित्वात् चातुर्विध्यम्। एवञ्च स्थूलश्रोत्रेण स्थूलशब्दस्य श्रवणात् स्थूलार्थस्य स्थूलमनसा ज्ञानम्, सूक्ष्मश्रोत्रेण सूक्ष्मशब्दश्रवणात् सूक्ष्मार्थस्य सूक्ष्ममनसा ज्ञानम्। श्रोत्रमनसोः सूक्ष्मत्वादिकन्तु शास्त्राभ्यासादि-पाटवजन्यम्। 'निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा' इति सूत्रयोरेतत्स्पष्टम्। श्रुतिरपि—

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।।

वैखरी मध्यमा पश्यन्ती परा इति चतुर्विधा वाचः, एतदर्था अपि चतुर्विधा विज्ञेयाः। मस्तकाद्यवयवेन्द्रिये प्राणदशकशालित्वं स्थूलजगदादिव्यक्तौ सद्योजातशिशौ पिपीलिकादौ चेत्यविवादम्। इयाँस्तु भेदः-स्थूले स्थूला अवयवाः सूक्ष्मे तु सूक्ष्माः। तथा च वैखरीरूपघटपदवाच्यापेक्षया मध्यमादि-रूपघटपदैर्वाच्या घटाः युक्तिभिः कल्प्याः। ते चार्थाः सङ्कोचं गच्छन्तं केचिदस्पष्ट-निखिलावयवकाः, केचित्तु सङ्कुचज्जलौकः कमठादिवत् अस्पष्टकिञ्चिदवयवका अप्यवयवन्यूनाधिकभावेन परिणामभेदेऽपि द्रव्याभेदस्य मीमांसाकादिभि-रप्यङ्गीकाराद् यथायथमूहनीयम्।

चतुर्णां वाचकानां चतुर्भ्यो वाच्येभ्यो भेदा अपि चतुर्विधाः। सृष्टिचतु-ष्टयस्यापि मूलभूतो बिन्दुर्बीजस्थानापन्नः तस्मादपि परतः सूक्ष्मतरापेक्षया सूक्ष्मतममपि विशिष्य तद्वाचकत्वादभिन्नशब्दार्थरूपं शब्दब्रह्मेत्यादिपदनिर्देश्यं परं ब्रह्मैव। तच्च प्रकाशैकाकारस्य अर्थादत्यन्तभिन्नस्य शब्दब्रह्मेत्या-दिपदनिर्देशविशेषस्याभावात् अनिर्देश्यम् अग्राह्यम् अशब्दम् अस्पर्शम् इत्यपास्तविशेषम्।

वस्तुतः सृष्टिद्वयमूलभूतसूक्ष्मरूपविशेषात्मकत्वाद् अभिन्नशब्दार्थरूपं शब्दब्रह्मेत्यादिपदनिर्देश्यं परं ब्रह्मैव। तच्च प्रकाशकस्वरूपम् 'पटः स्फुरति घटःस्फुरति' इत्यादिप्रत्ययेन पदार्थमात्रस्फुरणस्य तत्तदभिन्नस्यानुभवसिद्धत्वात् 'प्रकाशः स्फुरति' इति प्रत्ययात् प्रकाशस्यापि स्फुरणमवश्यं वाच्यम्। तच्च स्फुरणं शक्तिरित्युच्यते। प्रकाशस्फुरणात्मकयोः शिवशक्त्योर्मिलितयोरेव जगत्कारणवत्त्वमन्यतरस्य तत्त्वानुपपत्तेः। तथा च शुद्धस्य शिवस्य केवलायाः शक्तेर्जगत्कारणत्वं तत्र तत्रोच्यमानं शिवशक्तिरूपस्योभयात्मन एव बोध्यम्।

अहमित्यत्र प्रकाशस्वरूपः शिवस्त्वकारस्तद्वाच्यश्च स्फुरणरूपशक्तिः हकारस्वरूपा तत्पदवाच्या। तावेतावकारहकारौ परारूपौ सूक्ष्मतमौ। परादिसृष्टिमूलभूतस्य बीजस्थानीयस्य बिन्दुविशेषस्य तु व्यक्ताव्यक्त-विलक्षणौ वाचकौ, तस्यापि जनकस्य परब्रह्मणस्तु केवलमव्यक्तावेव शून्यस्वरूपौ वाचकौ। तयोः शून्यस्वरूपत्वादेव विसर्गरूपस्य शून्यद्वयस्य सूक्ष्मयोः अकारहकारयोरिवोच्चारण भवति। तदुक्तम्—

अहमित्येकमद्वैतं यत्प्रकाशात्मविभ्रमः।
अकारः सर्ववर्णाग्र्यः प्रकाशः परमः शिवः।।
हकारोऽन्त्यः कलारूपो विमर्शाख्यः प्रकीर्त्तितः।
अनयोः सामरस्यं यत् परस्मिन्नहमि स्फुटम्।
'शून्याकाराद् विसर्गान्ताद् बिन्दुप्रस्पन्दसंविदः।।'–*योगिनीहृदये* १०

एवं *योगिनीहृदये* च शून्याकारः शून्यमात्ररूपो यो विसर्गान्तः षोडशस्वरान्त्यः तस्मात् बिन्दुविशेष उत्पन्न इति तदर्थः। विसर्गस्य अव्यक्तहकारतुल्यत्वेनाकारस्यापि तत्र सत्त्वेन षोडशस्वरकीर्त्तनम्। तेन अकारहकारावेव शून्याकारे कीर्त्तितौ वेदितव्यौ।

तथा कश्चित् पुरुषः उत्पत्स्यमानपुत्राद्यदृष्टवशात् उत्पादनेच्छाविशिष्टः स्वीयामुत्पादनशक्तिं भार्यामवलोक्य स्वार्धाङ्गिन्याः स्वयमन्तः प्रविशति शुक्ररूपेण आत्मा वै पुत्र नामासि इति श्रुतेः प्रवेश्यमानस्य स्वभिन्नत्वात् स्थूलतरभेदाक्रान्तत्वाच्च नाभेदभानम्। ततस्तस्य शुक्रस्यान्तः शोणितबिन्दुरूपेण भार्या प्रविशति। तेन च स बिन्दुरूच्छूनो भवति। स एष वटोदुम्बरादिबीजस्थानीयः। तस्मादङ्कुरविशेषाद्युत्पत्तिक्रमेण कालान्तरे पुत्राद्युत्पत्तिः।

यथा वा सूर्याभिमुखदर्पणे तदन्तःप्रविष्टकिरणात् उभयकिरणसङ्कलनरूपस्तेजोबिन्दुविशेषः कुड्यादौ प्रादुर्भवति तथा प्राण्यदृष्टवशात् स्वान्तःसंहृतविश्वसिसृक्षया प्रकाशरूपं ब्रह्म स्वीयां शक्तिमवलोकयितुं तदभिमुखीभूय तदन्तस्तेजोरूपेण प्रविश्य शुक्रबिन्दुभावमयते। ततस्तं बिन्दुं रक्तरूपा शक्तिः प्रविशति। तया सम्मिश्रबिन्दुरुच्छूनो भवति। तत्र च हार्दकलारूप एकः पदार्थविशेषो भवति। स च बिन्दुः समष्टिरूपेणैकः स्फुटशिवशक्तिसामरस्यनामा कामो रविरग्निसोमात्मक इत्यादिशब्दैर्व्यवह्रियते। व्यष्टिरूपेण द्वयं तत्र शुक्लइन्दू रक्तोऽग्निरिति बिन्दुद्वयात्मकत्वात् विसर्ग इति च व्यवह्रियते। अत एव च रवे रात्रौ, अग्नौ अमावास्यायाम् चन्द्रे च प्रवेशस्य श्रुतिसिद्धत्वात् समष्टिबिन्दो रवित्वमेवञ्च कामाख्यो बिन्दुर्विसर्गो हार्दकला चेति त्र्यवयवक एकः पदार्थोऽणादिप्रत्याहारवत् कामकलेत्युच्यते। इदमेव समस्तसृष्टिबीजम्।

अत एव अकारहकारयोर्मध्ये सर्ववर्णपाठः। ळकारस्य लकाररूपत्वात्, क्षकारस्य कृषयो रूपत्वाच्च न तद्बहिर्भावः। एतन्मूलभूतं ब्रह्म तु तुरीयबिन्दु-रित्युच्यते। तद्रूपाभ्यां शून्यस्वरूपाभ्याम् अकारहकाराभ्यां उत्पन्नकामकला व्यक्ताव्यक्तविलक्षणा अहम्पदवाच्या अकारहकारोभयात्मकत्वं शिवशक्तिद्वय-रूपत्वञ्चायम्पदस्य निष्कृष्टोऽर्थः।

तज्जन्यानां सूक्ष्मादिस्थूलान्तानाम् अखिलसृष्टीनाम् अहम्पदवाच्यत्वम्। यथा उदुम्बरपदवाच्यबीजाज्जनितानां परस्परविलक्षणानामपि पर्णकाष्ठकुसुमफल-कृमीणाम् सर्वेषामुदुम्बरत्वम् उदुम्बरपर्णमुदुम्बरकृमिः इत्यादिव्यवहारात्। तथा च ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् तद् आत्मानमेवावेत् अहं ब्रह्मास्मीति। (*बृहदारण्यकोपनिषदि* १.४.१०) त्वं वा अहम्, अहं वै त्वम् (*ऐतरेयोपनिषदि*) अस्मच्छब्दस्य सर्वनामताऽप्यत एव। हंसः सोऽहमित्यादिरूपेण पूर्णा अहम्भावना-रूपा उपासना प्रसिद्धा। अहमिति समाहारद्वन्द्वसमासः। 'अहमेव इदं सर्वं' इति श्रुतेश्च। *विरूपाक्षपञ्चाशिकायां* (२.१०)—

स्वपरावभासनक्षम आत्मा विश्वस्य यःप्रकाशोऽसौ।
अहमिति स एक उक्तोऽहन्तास्थितिरीदृशी तस्य।।

एतादृशस्य अहम्पदार्थस्य यथा अहमिति पदं वाचकं तथा उत्तमपुरुषस्यैकवचनमपि वाचकम्। तस्य च परस्मैपदात्मनेपदभेदद्वैविध्येऽपि तिपः इटश्च इकारत्वेन अनुगमात् इत्वमेव शक्यतावच्छेदकम्। अन्यायश्चानेकशब्दत्वमिति न्यायात् तस्य च धातूत्तरत्वेनोक्तं पुरुषत्वादिना वा उपस्थितिः पदार्थस्मारकत्वे तन्त्रम्। एर्णलादावपि लुप्तस्य स्मरणम्। तदभावे च शक्तिभ्रमाद् बोधः। तत्र च अकारहकारयोदर्शनेऽपि शास्त्रप्रामाण्यात् सूक्ष्मरूपौ तौ स्त इति स्वीकार्यम्। तस्यैव च हार्दकलायोगे दीर्घताऽपि सम्पद्यते, इति तुरीयस्वरस्य कामकलारूपत्वं मन्त्ररहस्यविद्भिः प्रतिपाद्यते। तदुक्तं *योगिनीहृदये*-

मध्यबिन्दुविसर्गान्तः समास्थानमये परे।
कुटिलारूपके तस्याः प्रतिरूपे वियत्कला।। इति २.२१।

मध्यबिन्दुः कामाख्यः तस्य तुरीयबिन्दुविसर्गमध्यपातित्वात् समष्टेर्व्यष्टिमध्य एवान्तर्गतत्वाच्च विसर्गो व्यष्टिरूपं बिन्दुद्वयं तयोरन्तर्मध्ये सम्यक् चैतन्यात्मनावस्थानम्। तन्मये तत्प्रधाने परे चरमे अकारहकाररूपे अक्षरे मातृकाणां क्रमेण पाठे चरमत्वात् हकारस्य व्युत्क्रमेण पाठे त्वकारस्य चरमत्वात्। किञ्च इमे अक्षरे कुटिलारूपके कुटिले अकुलकुले कुण्डलिन्यौ तयो रूपान्तरे तस्यास्तयोः कुण्डलिन्योः इत्यर्थः। वियत्पदेन शून्याकारत्वात् कामः प्रतिपाद्यते। कलापदेन हार्दकलावत्त्वात् विसर्गः, यतः कामविसर्गयोः कुण्डलिनीप्रतिबिम्बरूपत्वं, ततः कुण्डलिन्यभिन्नाकारहकाररूपत्वं संभवतीति भावः, इति *वरिवस्यारहस्ये* (पृ. ३४-३८) तद्व्याख्या। एवमकारहकारैकाररूपा कामकला। तद्भूते मन्त्रे विजातीयाक्षरवत्त्वान्यथानुपपत्त्यापि तयोर्गर्भे सूक्ष्मरूपेणान्येषां वर्णानामर्थसृष्टेश्चावस्थानं सिद्ध्यति। यथा वटबीजरूपे सम्पुटे पर्णकाष्ठादेः। यथा च वटबीजानां स्फोटेनैवाङ्कुराद्युत्पत्तिरिति बीजस्य पूर्वोत्तरार्धयोर्वियोगे इत्यविवादम्। तच्चार्धद्वयं महति वृक्षे कस्मिन् भागेऽस्तीति तु दुर्ज्ञेयम्। एवं मन्त्रांशेऽपि अकारहकारयोरवस्थितयोः परिज्ञानाय संकेतभाषयोक्तं *योगिनीहृदये*–

मध्यप्राणप्रथारूपस्पन्दव्योम्नि स्थिता पुनः।
मध्यमे मन्त्रपिण्डे तु तृतीये पिण्डके पुनः।
राहुकूटाद्वयस्फूर्जत् इति..॥ (२.२२-२३)

तदर्थोऽपि *वरिवस्यारहस्ये* कलाकामयोर्मध्यस्य विसर्गस्य यः प्राणश्चैतन्यं तस्य प्रथा पृथुत्वेन श्रूयमाणता स्थूलतेति यावत्। तद्रूपं यत् स्पन्दव्योम हकारः स्पन्दते उत्पद्यते इति स्पन्दः, स्पन्दो व्योम यस्मादिति व्युत्पत्तेः। हकाराद् व्योम सम्भूतम् इत्युक्तेरिति केचित्। मध्यात्मको विसर्गाभिन्नो यः प्राणो हकारस्तस्य प्रथारूपो यः स्पन्दः स्थूलरूपा सृष्टिरित्यर्थः, तद्रूपं व्योम हकार इत्यर्थो युक्तः। हः शिवो गगनः प्राण इति *मातृकाकोशात्*। मध्यम इत्यस्य द्विरन्वयः। तत्रैकपदं मन्त्रपिण्डेन सह सामानाधिकरण्येनान्वेति, अपरं वैयधिकरण्येन, मध्यमकूटस्य मध्यमव्यञ्जने द्वितीयहकार इत्यर्थः, द्वितीयगेषु सप्तसु व्यञ्जनेषु तस्य चतुर्थत्वेन मध्यमत्वात् तत्र स्थिता स्त्रीलिङ्गाच्छक्तिर्विशेष्या। तृतीयकूटे तु सकारेऽकारो मूलबीजीय इत्याह।

राहुकूटेति लघुषोढान्यासान्तर्गतग्रहन्यासे राहोः शषसहाख्यवर्णचतुष्टय-सहितस्य वक्त्रे न्यासः। वक्त्रेशादिचतुर्वर्णैः सहितं 'राहुमेवं च' इतिवचनात्। तेन शादिचतुष्कं राहुकूटम्। तत्र द्वयभिन्नोऽद्वयस्तृतीयः सकारस्तस्मिन् स्फूर्जत् शोभमानं नपुंसकलिङ्गबलात् ब्रह्म विशेष्यं शिव इत्यर्थः। तथा च—

अहकारौ शिवशक्तिशून्याकारौ परस्पराश्लिष्टौ।
प्रकाशस्फुरणात्मकशिवशक्तिस्वरूपौ वेदान्तवेद्यं ब्रह्म।

— *(वरिवरस्यारहस्ये ६९)*

तदेव

विश्वसिसृक्षया स्वार्धाशक्तिं विलोकयद् बिन्दुर्भवति।
तमिन्दुरूपं शक्तिस्तु रक्तबिन्दुतया (प्रविशति)।
एतत्पिण्डद्वितयं विसर्गसंज्ञं हकारचैतन्यम्।
मिश्रस्तु तत्समष्टिः कामाख्यो रविरकारचैतन्यम्।
एषाऽहंपदतुर्यस्वरकामकलादिशब्दनिर्देश्या।
वागर्थसृष्टिबीजं तेनाहन्तामयं विश्वं भवति।
अन्त्यप्रथमे मध्यचतुर्थे मन्त्रेऽपि तौ व्यक्तौ।
तेनाम्बामनुजगतामभेद एवात्र भावार्थः। ७०-७२

कामकलाविमर्शेऽपि—अन्तर्लीनविमर्शः प्रकाशमात्रतनुः पूर्णाहंभावभावना-गर्भितो महेशो विश्वोत्पत्त्यादिकृत्यपञ्चककारणम्। शक्तिश्च शिवादिषट्त्रिंश-त्तत्वमयी सर्वप्रपञ्चात्मिका तदुत्तीर्णा च। शिवस्य जगन्निर्मातृत्वं तया शक्त्या विना नोपपद्यते। तत्र प्रकाशस्वभावस्य तु परमशिवरवेः किरणसमूहः विस्फुरण-शक्तिरूपे विशदे विमर्शदर्पणे प्रतिफलति। यथा लोके सूर्याभिमुखस्थितदर्पणतले सूर्यकिरणप्रतिफलनानन्तरं निकटगते कुड्यो सूर्यकिरणप्रतिहततेजोबिन्दुः प्रत्यक्षं प्रपद्यते, तथैव प्रकाशस्वरूपपरमेश्वरस्य दर्पणस्वरूपविमर्शसम्बन्धे जाते महाबिन्दुः पूर्णोऽहमित्येवंरूपः परमेश्वरः प्रकाशते। सितशोणबिन्दुयुगलकामेश्वरीरूपं दिव्यमिथुनम्। तदेव वागर्थसृष्टिहेतुः। परमेश्वरः स्वाङ्गभूताखिलप्रपञ्चविस्तारात्मकविमर्शशक्तिमनुप्रविश्य बिन्दुभावं

मन्यते। ततो विमर्शशक्तिरपि स्वान्तर्गतप्रकाशमयं बिन्दुमनुप्रविशति। ततश्च बिन्दुरुत्पन्नो भवति। तस्माद् बिन्दोर्नादात्मिका समस्ततत्त्वगर्भिणी जीवरूपा बालाग्रवत्सूक्ष्मरूपिणी भवति। बिन्दुनादस्वरूपयोस्तयोः प्रकाशविमर्शयोरहमिति शरीरं भवति। विमर्शो रक्तबिन्दुरूपतां प्रकाशः शुक्लबिन्दुरूपतां भजति। उभयोर्मेलने मिश्ररूपं सर्वतेजोमयं परमात्मस्वरूपं भवति। तदेव सितशोणबिन्दुसमरसीभूतो मिश्रबिन्दुरुच्यते। अग्नीषोमरूपिणी विमर्शशक्तिः तदुभयभूतकामेश्वराविनाभूता महात्रिपुरसुन्दरी बिन्दुसमष्टिरूपा कामकला प्रोच्यते। निर्विशेषप्रकाशस्वरूपो रविरस्या मुखं, शशिहुताशनरूपबिन्दुयुगलं तस्याः स्तनद्वयं, तत्समरसीभावो योनिः। तदुक्तम्-

मिहिरबिन्दुमुखीं तदधोलसच्छशिहुताशनबिन्दुयुगस्तनीम्।
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम्।।
इकारोर्ध्वगतो बिन्दुर्मुखं भानुरधोगतौ।
स्तनौ दहनशीतांशू योनिर्हार्धकला भवेत्।।

वर्णपदमन्त्ररूपा वाक्कला तत्त्वभुवनात्मा अर्थः। तावेतौ वागर्थौ नित्यसंपृक्तौ प्रकाशविमर्शात्मकौ ताभ्यामेव षडध्वात्मकसर्वप्रपञ्चोत्पत्ति-श्रवणात्। कामकलारूपायास्त्रिपुरसुन्दर्या एव मातृ-मान-मेयपुट-धाम-पीठ-शक्ति-चक्रादिरूपेणाविर्भाव इति *कामकलाविलासे* विशदम्। अपरिच्छिन्ना-नन्ततेजोराशिमयी अनन्तकोटियोगिनीवृन्दसमाराधिता नित्यनिरवधिकातिशया-नन्दमयात्मसाम्राज्यसम्पदभिमानशालिनी महात्रिपुरसुन्दरी यदा चक्राकारेण परिणमते, तदा तस्यास्तेजःपुञ्जात्मकदेहस्य किरणरूपाणामवयवानां तत्तदावरण-देवतारूपे परिणतिर्भवति। तदेतत्सर्वमुक्तं *कामकलाविलासे*-

सेयं परा महेशी चक्राकारेण परिणमेद् यदा।
तद्देहावयवानां परिणतिरावरणदेवताः सर्वाः।।
आसीना बिन्दुमये चक्रे सा त्रिपुरसुन्दरी देवी।
कामेश्वराङ्कनिलया कलया चन्द्रस्य कल्पितोत्तंसा।
पाशाङ्कुशेक्षुचापप्रसूनशरपञ्चकाञ्चितस्वकरा।।
बालारुणारुणाङ्गी शशिभानुकृशानुलोचनत्रितया।।

सम्प्रदायार्थस्तु–

व्योमवाय्वग्निजलभूमिबीजैः ह, क, र, स, ल वर्णैर्युक्तत्वादियं विद्या पञ्चभूतमयी। तदुक्तम्–

हकाराद् व्योमसम्भूतं ककारात्तु पभञ्जनः।
रेफादग्निः सकाराच्च जलतत्त्वस्य सम्भवः।
लकारात्पृथिवी जाता तस्माद्विश्वमयी च सा। इति।
गुणाः पञ्चदश प्रोक्ता भूतानां तन्मयी शिवा।।

– *योगिनीहृदये २. २९–३०*

यद्यपि प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मकवस्तुविशेषस्यैव शब्दार्थसृष्टिजनकत्वम-विशिष्टं, तथापि प्रकाशांशस्यार्थसृष्टौ विमर्शांशस्य शब्दसृष्टौ जनकत्वं, तयोः परस्परसापेक्षत्वेन स्वस्वकार्यजनकत्वस्य श्रुतिस्मृतिसिद्धत्वात्तथा च विमर्श-शक्तेर्हकार उत्पन्नः ततः प्रकाशाद्व्योम ततो विमर्शात्ककारः, ततः प्रकाशाद्वायुः, ततो विमर्शाद्रिफस्ततः प्रकाशादग्निः, ततो विमर्शात्सकारः, ततः प्रकाशाज्जलम्, ततो विमर्शाल्लकारः ततः प्रकाशात्पृथिवी इत्येवंक्रमेण पञ्चमहाभूतोत्पत्तौ सत्यामपि हकारवद्विमर्शविशिष्टप्रकाशस्यैव व्योम प्रति कारणत्वात्कारणता-वच्छेदकस्य हकारे सिद्धे विनिगमनाविरहात्कारणत्वमपि सिद्ध्यति, एवमेव ककारादिष्वपि। न चैवं हकारादेर्वाय्वादिकं प्रत्यपि कारणत्वापत्तिरिति वाच्यम्, तेषामन्यथासिद्धत्वात्, पारम्पर्येण तत्त्वेऽपि दोषाभावाच्च।

ननु तर्हि विद्यायां पञ्चभूतात्मकं वर्णपञ्चकमेवास्तु किमधिकैर्वर्णैरिति चेन्न; व्योमादीनां पञ्चचतुस्त्रिद्व्येकशब्दादिगुणात्मकत्वेन पञ्चदशार्णानामुपपत्तेः। व्योम्नि पञ्चभूतगाः पञ्चविधाः शब्दाः, वायौ वाय्वादिगताश्चतुर्विधाः स्पर्शाः, तेजसि त्रिविधानि रूपाणि, जले द्विविधो रसः, भूमावेकविधो गन्धः। पञ्चदशभिर्गुणैः पञ्चदशानां वर्णानामभेदः। अथवा विद्यायां मायात्रये हकारत्रयं मध्यकूटे च द्वौ हकारौ तैः पञ्चभिः पञ्चशब्दाः बोध्यन्ते। (वरिवस्यारहस्ये ७४) तदुक्तम्–व्योमबीजैस्तु विद्यास्थैर्लक्षयेच्छब्दपञ्चकम् इति (*योगिनीहृदये २.३६*)।

अत एव भावार्थप्रकरणे हकारस्य शक्तिवाचकत्वेऽप्यत्र शब्दलक्षणकत्वानुपपत्त्यभावः, गङ्गायां घोषमत्स्यौ इत्यादौ वृत्तिद्वयस्यापीष्टत्वात्। अथवा तत्र शिवशक्त्यात्मकमूलबीजात्मकयोरकारहकारयोः सूक्ष्मतमं रूपमिह तु वैखर्य्यात्मकयोः स्थूलरूपयोरर्थान्तरपरत्वमुच्यते। तथा च मध्यमहकारे ध्वन्यंशः परब्रह्मवाचकः वर्णांशस्तु शब्दलक्षकः। सर्वेष्वपि वर्णेषु वर्णांशध्वन्यंशौ परस्परसंसृष्टौ कत्वादिवर्णधर्माणां तारत्वमन्द्रत्वषड्त्वादिध्वनिधर्माणाञ्च सर्ववर्णेष्वनुभूयमानत्वात् ध्वन्यालम्बनत्वेनैव तत्तद्वर्णानामेकैकरूपत्वेऽपि देवदत्तयज्ञदत्ताद्युच्चारितवर्णानां वैलक्षण्यप्रतीत्युपपत्तिः।

मायास्थैस्त्रिभिस्तृतीयाक्षररूपेण च चतुर्भिरीकारैश्चतुर्विधाः स्पर्शाः बोध्याः। अत्र पक्षे न ककारैः स्पर्शाः बोध्याः। तदुक्तम्

महामायात्रयेणापि कारणेन च बिन्दुना।।
वाय्वग्निजलभूमीनां स्पर्शानाञ्च चतुष्टयम्।
उत्पन्नं भावयेद्देवि स्थूलसूक्ष्मविभेदतः।। इति।

– *योगिनीहृदये*, २.३८–३९

बिन्दुनेति कामकलाचतुष्कस्यापि विशेषणम्। त्रिविधं रूपं मायान्तर्गतैस्त्रिरेफैर्जन्यते।

रूपाणां त्रितयं तद्वत्त्रिभी रेफैर्विभावितम्' इति।

– *योगिनीहृदये*, २.४०

सकार–द्वयेन रसद्वयम्,

विद्यास्थैश्चन्द्रबीजैस्तु स्थूलः सूक्ष्मो रसः स्मृतः। इति

– योगिनीहृदये २.४१–वचनात्।

चन्द्रबीजैः सकारैः स्थूलो व्यापको जलगतः, सूक्ष्मः व्याप्यो भूगतो रसश्च बोध्येते। चन्द्रबीजैरिति बहुवचनमविवक्षितम्, विद्यायां सकारद्वयस्यैव सत्त्वात्। हादिविद्यायान्तु सकारत्रयस्य सत्त्वेन तत्रामृतगतोऽप्येष रस इति। तेन रसत्रयं बोध्यते। लकारस्तु गन्धबोधकः 'वसुन्धरागतो गन्धस्तल्लिपिर्गन्धवाचिका' इतिवचनात्।

न च विद्यायां लकारत्रयमित्येकेन गन्धबोधोपपत्ताावितरयोर्वैयर्थ्यमिति वाच्यम्, भुवनत्रयेण सह वाच्यवाचकसम्बन्धाल्लकारत्रयस्योपपत्तेः। ये यद्यज्जनकास्तेषां तेषां त एवार्था इत्यस्यापवादोऽपि विद्यास्थैः ककारैस्त्रिभिः अशुद्धमिश्रशुद्धाः अधमा मध्यमा उत्तमाः साधकाः प्रोच्यन्ते। तत्र भेदैकदृष्टयः शिवाहंभावनाहीनाः कर्मैकरताः प्रथमाः। सपक्वमलकर्माणः सूक्ष्मपुर्यष्ट-सम्बन्धशालिनः कर्मज्ञानमार्गयोः साधारणा द्वितीयाः। निरस्तभेदाः सर्वत्र शिवैकदृष्टयस्तृतीयाः। तदुक्तम्–

अशुद्धमिश्रशुद्धानां प्रमातॄणां परं वपुः।
क्रोधीशस्त्रितयेनाऽस्य विद्यास्थेन प्रकाश्यते॥ इति *योगिनीहृदये,* २.४३

द्वितीयतृतीयवर्णौ हृलेखात्रयञ्च मुक्त्वाऽवशिष्टेषु दशाक्षरेषु अकारा दश भवन्ति। ते च जीवराशिबोधकाः। एकेनापि बोधसम्भवेऽपि दशभिरभिधानं जीवानामानन्त्यबोधनाय। विद्यायाः प्राणभूत एकादशस्वरः एकारः प्राणवाचकः, तदुक्तम्–

श्रीकण्ठदशकं तद्वदव्यक्तस्य हि वाचकम्।
प्राणभूतः स्थितो देवि तद्वदेकादशः स्वरः।
एकः सन्नेव पुरुषो बहुधा जायते हि सः। इति। *योगिनीहृदये,* २.४४-४५

इह श्रीकण्ठा अकाराः। अव्यक्तो जीवः। बिन्दुभिः त्रिभिः सरुद्रेश्वरसदाशिवा बोद्ध्यन्ते। रुद्रपदेनात्र तेजस्तत्त्वं बोध्यते। ततः पुरुषनियतिकालरागविद्या-कलामायानां परिग्रहः। 'पुरुषादिकमायान्तं तेजस्तत्त्वं महेश्वरि' इति *स्वच्छन्दसंग्रहोक्तेः॥* शान्तिःप्रकृतिः शुद्धविद्या च नादत्रितयेन बोध्यन्ते। अर्धचन्द्राद्युन्मनान्तं वर्णाष्टकं नादपदेनोच्यते। तत्राद्यत्रितयेन शान्तिः प्रकृतिः शुद्धिविद्या बोध्यन्ते। एवं व्योमबीजपञ्चकेन चतसृभिः कामकलाभिः द्वाभ्यां चन्द्रबीजाभ्यां त्रिभी रेफैस्त्रिभिर्लकारैः त्रिभिः ककारैः त्रिभिर्बिन्दुभिः त्रिभिर्नादैः श्रीकण्ठदशकेनैकेन एकादशस्वरेण इति संहत्य सप्तत्रिंशत् पदानि तेषां षट्त्रिंशत्तत्त्वानि तत्त्वातीतमेकं परं ब्रह्म चार्थः। तानि च तत्त्वानि शिवः, शक्तिः, सदाशिवः, ईश्वरः, शुद्धविद्या, माया, कला, अविद्या, रागः, कालः, नियतिः, पुरुषः, प्रकृतिः, अहङ्कारः, बुद्धिः, मनः, श्रोत्रं, त्वक्, चक्षुः, जिह्वा, घ्राणम्, वाक्, पाणिः, पादः, पायुः उपस्थः, शब्दः, स्पर्शः, रूप, रसः, गन्धः, आकाशः, वायुः,

तेजः, आपः, पृथ्वीत्येतानि। तत्र शिवशक्तिशुद्धविद्या प्रकृतयः बिन्द्वर्थाः। सदाशिवादि–पुरुषान्ताः नव नादार्थाः। शब्दादय आकाशादयश्च श्रोत्रादयो वागादयश्च पञ्च पञ्च हकारादेरर्थाः। अहङ्कारादित्रितयं तु ककारत्रयस्यार्थः। एकादशस्वरस्य तत्त्वातीतं ब्रह्मार्थः। यद्यपि हकारादेः शब्दाद्यर्थकत्ववत् इन्द्रियाद्यर्थकत्वं नोक्तम् तथापि स्वरव्यञ्जनभेदेन सप्तत्रिंशत्प्रभेदिनी–

सप्तत्रिंशत्प्रभेदेन षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपिणी।

तत्त्वातीतस्वभावाऽत्र विद्यैषा भाव्यते मया। –*योगिनीहृदये, २.३३–३४*

इति वचनबलात्तथा कल्पनीयम्।

यत्तु सप्तत्रिंशद्वर्णानां सप्तत्रिंशत्तत्त्वेषु क्रमेण शक्तिरस्त्वित्याहुस्तन्न, हकारादौ क्लृप्तशक्तित्यागस्य शक्त्यन्तरस्वीकारस्य चापत्तेः। एकस्याऽनेकार्थत्वं तु न दोषः, एकत्र शक्तिरन्यत्र लक्षणेति सुवचत्वात्। न च युगपद्वृत्तिद्वयविरोधः, एतद्वचनबलादेव सप्तत्रिंशत्तत्त्वस्य शक्ततावच्छेकत्वाङ्गीकारेण पूर्ववत्तस्यादोषत्वात्। प्रमाणप्रमितत्वाविशेषादनेकार्थत्वस्यापि हर्यादिपदवदविरोधाच्च। क्लृप्तशक्ति–परित्यागस्तु सर्वथाऽप्रामाणिकः। यद्यपि पूर्वविद्यायामष्टपञ्चाशद्वर्णा उक्ताः, कथमिह सप्तत्रिंशत्त्वेन गण्यन्त इति भवति आशङ्का, तथाप्यस्याः संख्यायाः पदगतत्वेनोपपत्तिर्वाच्या।

ननु विभक्त्यन्तस्यैव पदत्वात्कथमिह पदभाक्त्वमिति चेन्न, अर्थवत्त्वेन प्रत्यक्षरं प्रातिपदिकसंज्ञायां सुबुत्पत्तौ सुपां सुलुगिति लोपस्वीकारेण विभक्त्यन्तरूपपदसत्त्वात्। न चैवं ककारेषु जश्त्वापत्तिरिति वाच्यम्, किितिमिति इत्यादिज्ञापकैरेकाक्षरपदे तदनित्यताया ज्ञापनात्। एवञ्च सर्वतत्त्व–तत्त्वातीतवस्तुप्रतिपादकत्वात् सर्वस्वरूपेयं विद्या। यतो जन्यजनकयोर्भेदा–भावात् वाच्यस्य वाचकेनापि भेदाभाव इति ब्रह्मणि जगतोऽभेदः। जगति च विद्याभेद इति *सम्प्रदायार्थः।*

परमशिवस्य निष्कलता तदितरसर्वपदार्थाभावः, तदितरस्य सर्वस्यापि दुःखजनकत्वात्। 'द्वितीयाद्वै भयं भवती' ति श्रुतेरिति प्रथमकूटार्थः। तेन सह गुरोरभेदभावनादार्ढ्येन तदभेदः सिद्ध्यतीति द्वितीयकूटार्थः। तत्करुणातः स्वकृताव्यभिचरितभक्तिपूर्वकदृढतरसेवासम्पादितप्रसादजन्यगुरुकरुणाकरम्बि–

तकटाक्षनिरीक्षणबलात् स्वस्मिन्नपि साधके ब्रह्माभेदः सिध्यतीति तृतीयकूटार्थः। स्वस्य गुरुद्वारा शिवगर्भे प्रवेशसम्पादकत्वादेतज्ज्ञानस्य विषयः शिवगुर्वात्मैक्यं निगर्भार्थपदवाच्यम्।

गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।। – *नित्याषोडशिकार्णवे* १

भगवत्या गणेशादिषट्कात्मत्वमुक्तम्। तत्र निरुपमतेजोमय्याः स्वस्या मरीचिरूपाणामावरणदेवतानामीशत्वात् श्रीराजराजेश्वरी त्रिपुराम्बैव गणेशीत्युच्यते। ताश्च देवता एकादशोत्तरशतसंख्याकाः, तन्त्रभेदेनान्या अपि प्रतिपादिताः। इच्छाज्ञानक्रियेति शक्तित्रयसमष्टिरूपत्वात् गुणत्रयाढ्यत्वाद् अनिलेन्दुर-विनेत्रत्वान्नवभिर्योगात् पराम्बैव ग्रहरूपोच्यते। इन्द्रियदशकेनान्तः-करणचतुष्केण शब्दस्पर्शादिवचनादानादिविषयदशकेन गुणत्रयसाम्या-वस्थारूपया प्रकृत्या सुखदुःखमोहमूलैः सत्त्वरजस्तमोभिर्गुणैः पुरुषेण च सप्तविंशतिसंख्याकत्वान्नक्षत्ररूपत्वमप्यस्याः। इन्द्रियादिनिरुक्तसप्तविंशति-तत्त्वरूपेण पराम्बाया एव प्राकट्यम् इति सप्तविंशतिसंख्यातौल्येन नक्षत्ररूपत्वम्। अमृतादितत्तद्देवतोपलक्षकैः षोडशस्वरैः, कालरात्र्याद्युपलक्षकैः कादिठान्तैर्द्वादशवर्णैः डामर्य्याद्युपलक्षकैः डादिफान्तैर्दशवर्णैः, बन्धिन्याद्यु-पलक्षकैः बादिलान्तैः षड्भिः वरदाद्युपलक्षकैः वादिशान्तैश्चतुर्भिः, हंसवतीक्षमवत्योरुपलक्षकाभ्यां द्वाभ्यां हक्षाभ्यां वर्णाभ्यां वेष्टिताभिरमृता-द्यावृताभिर्डाकिनी–राकिनी–लाकिनी–काकिनी–साकिनी–हाकिनीभिस्त्वगसृङ्मां-समेदोऽस्थिमज्जाधिपतिभिर्विशुद्ध्यानाहतमणिपूरस्वाधिष्ठानमूलाधाराज्ञाचक्राणां तत्तद्देवतावर्णशक्तिसमानसंख्यातत्तदीयदलनिविष्टतावत्तावत्संख्याकदेवीसंवृत्तानां कर्णिकासु निविष्टाभिर्घटितविग्रहा त्रिपुराम्बायोगिनीत्युच्यते।

पञ्चभिर्नाग–कूर्म–कृकर–देवदत्त–धनञ्जयैः, पञ्चभिः प्राणापानव्यानोदान-समानैर्जीवात्मपरमात्माभ्याञ्च द्वादशात्मकत्वाद्राशिरूपिणी पराम्बापीठानां गणेशादिसमानसंख्याकत्वात्तदात्मकत्वोक्त्यैव तदात्मकत्वोक्तिः।

यथा भगवती श्रीगणेशादिरूपिणी तथैव श्रीविद्यापि गणेशादिरूपिणी। अकारादिषोडशस्वरात्मकं शक्तिकूटं, कादितान्ताक्षरात्मकं कामराजकूटम्,

थकारादिसान्ताक्षरात्मकं वाग्भवकूटम्। व्यष्टिसमष्टिभेदेन परादिवाक्चतुष्टयश्चैतत्। तथा च शब्दरूपस्य गणस्येशत्वाद् गणेशरूपिणी श्रीविद्या।

बिन्दुनादविनिर्मुक्तमेकं कूटम्, बिन्दुरूपश्चैकम्; नादरूपश्चैकम्। तथैव प्रतिकूटं त्रयं त्रयमिति बिन्दुत्रयनादत्रयतदन्यत्रयैः कूटत्रये नवत्वयोगाद् ग्रहत्वं विद्यायाः।

सम्प्रदायार्थप्रकरणे पञ्चदश्यां सप्तत्रिंशद्वर्णा उक्ताः। तेषु दशाकाराणां स्वव्यञ्जनैरपार्थक्येन गणनात् दशसंख्याया बाधे सप्तविंशतिरवशिष्यन्ते। तेन नक्षत्रात्मकत्वं सिद्धं विद्यायाः। तदुक्तम्-

हृल्लेखात्रयसंयुक्तैस्तिथिसंख्यैस्तथाऽक्षरैः।
अन्यैर्द्वादशभिर्वर्णैरेषा नक्षत्ररूपिणी।। इति *योगिनीहृदये* २.६५

हकाररेफकामकलाबिन्दुनादैर्हृल्लेखायाम् एकैकस्यां पञ्चाक्षराणि, तिसृषु पञ्चदशाक्षराणि-'क ए ई ल ह स क ह ल सकल' इति सम्मेलनेन सप्तविंशत्यक्षराणि सम्पद्यन्ते तिसृभिर्हृल्लेखाभिस्तद्रहितैस्त्रिभिः कूटैश्चेति षड्भिर्योगात् श्रीविद्या योगिनी सम्पद्यते। तिसृणां हृल्लेखानां त्रयाणां कूटानाञ्च योगाच्छ्रीविद्या योगिनीति हृदयम्। तिसृणां हृल्लेखानां पूर्ववर्णैर्लकारैरपार्थक्येन गणनात् द्वादशसंख्याकावयवशालित्वाद्राशिरूपाऽप्येषा। पञ्चदश्यां लत्रयनिष्कासनेन द्वादशसङ्ख्या एवं गणेशादिषट्कत्वस्य विद्यायां देव्यभेदसाधकत्वे स्थितेऽपि विद्यायां देवीरूपान्तरत्वस्य वचनबलात् सिद्धत्वेन तदभेदाद् गणेशादिरूपता।

एवं चक्रराजेऽपि गणेशादित्वम्। चतुरस्राभिस्तिसृभिर्वर्तुलाभिस्तिसृभिः रेखाभिश्चतुर्विंशतिदलैः पञ्चचत्वारिंशत्कोणैर्घटनाच्चक्रे गणेशत्वम्। त्रैलोक्यमोहनाद्यैः सर्वानन्दमयान्तैनवभिश्चक्रैर्ग्रहत्वं चक्रराजे। वृत्तत्रयधरणीत्रयमन्वस्राणां विभज्य १४ गणनेन विंशतिः, सप्तभिरितरैस्त्रैलोक्यमोहनसर्वसौभाग्यदायकातिरिक्तैश्चक्रराजे सप्तविंशतिसंख्यायोगान्नक्षत्ररूपत्वम्। बिन्दुत्रिकोणवसुकोणाः संहतिचक्रम्, द्वे दशारे चतुर्दशारञ्च स्थितिचक्रम्, अवशिष्टं सृष्टिचक्रमित्येतत्त्रिप्रकारत्वं चक्रसङ्केते स्पष्टम्। तथा च- स्थितिसंहतिचक्रे द्वे द्वे पद्मे वसुषोडशदले वृत्तमेकं, भूगृहञ्चैकमिति षड्भिर्योगाच्छ्रीचक्रं योगिनीरूपम्।

स्वाभिमुखाग्रत्रिकोणानि शक्तय उच्यन्ते। तानि पञ्च पराङ्मुखाग्रत्रिकोणान्यनला उच्यन्ते। तानि चत्वारि बिन्दुः पद्मद्वयगर्भितं वृत्तं भूगृहश्चेति द्वादशसंख्यैर्घटनाच्चक्रस्य राशिरूपताऽपि चक्रस्य विद्याक्षरजन्यत्वात्तदभेदस्य सिद्धत्वात्तेन हेतुनाऽपि चक्रराजस्य गणेशादिरूपत्वम्, देव्या रूपान्तरत्वाच्च तद्रूपता सिद्ध्यति। पीठरूपतापि गणेशादीनां पञ्चानां मेलनेन पञ्चपञ्चाशत् संख्यासम्पत्तेः। यदपि मातृकासंख्यानि पीठानि मातृकाश्चैकपञ्चाशत्- संख्याकाः, पीठानि कामरूपादिच्छायाच्छत्रान्तान्येकपञ्चाशत्संख्याकानि, तथापि ओ (ओड्याण) जा (जालन्धर) पू (पूर्णगिरि) का (कामगिरि) नां पीठानां प्राधान्येन पुनर्गणनात् पञ्चाशत्संख्याकानि पीठानि सम्पद्यन्ते। गणेशादीनाञ्च सम्मेलनेन पञ्चपञ्चाशत्संख्या सम्पद्यते। तत्र गणेशः एकः, ग्रहा नव, नक्षत्राणि सप्तविंशतिः, योगिन्यः षट्, राशयो द्वादशेति। *वरिवस्यारहस्ये* तदुक्तं विस्तरेण-

यावन्मातृकमुदितान्येकसमेतानि पञ्चाशत्।
पीठानि पुनर्गणितान्यो, जा, पू, कानि चत्वारि।।
गणपग्रहभादीनां शशि-निधितारर्तुसूर्यसंख्यानाम्।
मेलनतः पीठानि ज्ञेयान्येतेषु पञ्चपञ्चाशत्।

– *वरिवस्यारहस्ये*, ९७-९८

चक्रराजस्य विद्याक्षरजन्यत्वं कथमित्युच्यते-कत्रितयात् ईकाराच्च महाबिन्दुमयं सदाशिवासनं जायते। तदुक्तम्-

इच्छाज्ञानक्रियारूपमादनत्रयसंयुतम् ।
सदाशिवासनं देवि महाबिन्दुमयं परम्।।

– *योगिनीहृदये*, २.५५-५६

तदर्थस्तु-इच्छादयस्तिस्रः शक्तयो रूप्यन्ते यस्मात् स ईकारः मादनान्तककाराणां त्रयश्चेत्येताभ्यां संयुतं जनितं महाबिन्दुमयं सदाशिवासनं ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वराः पादाः, फलकं सदाशिवः, तादृशसर्वानन्दमयं चक्रम्। अथवा, इच्छाज्ञानक्रियारूपाश्च ते मादनाश्च त्रयश्चेति द्वन्द्वः। अत्र त्रयशब्देन बिन्दुत्रयात्मकत्वादीकारो ग्राह्यः। सर्वथाऽपि ककारत्रयात् ईकाराच्च बिन्दूत्पत्तिः सर्वसिद्धिप्रदसर्वरोगहराख्यचक्रद्वयमपि मिलित्वा नवयोन्यात्मकं भवति। तच्च

तिसृभिर्लज्जाभिर्जातम्। अत्र यद्यपि हकाररेफईकारबिन्दुनादैश्च हृल्लेखात्रयस्य सम्मेलने पञ्चदशाक्षराणि भवन्ति। तथापि बिन्द्वादीनां ईकारैः सह मेलने प्रतिहृल्लेखं हकारो रेफ ईकारश्चेति त्रयमेवेति नवाक्षरसमूहेनैव नवयोन्यात्मकस्य चक्रद्वयस्य जनिः सर्वरक्षाकरसर्वार्थसाधकसर्वसौभाग्यदायकाख्यं स्थितिचक्रत्रितयं तिसृभिः शक्तिभिः त्रिभिरनलैर्हकारद्वयेनैकादशस्वरेण च समुत्पन्नम्। तदुक्तम्-

मण्डलत्रययुक्तन्तु चक्रं शक्त्यनलात्मकम्।
व्योमबीजत्रयेणैव प्रमातृत्रितयान्वितम्।।

— *योगिनीहृदये*, २.५४-५५

अथ मण्डलत्रयेति दशारद्वयं चतुर्दशारश्चेत्यभिप्रेतम्। व्योमबीजत्रयेण इत्यत्र व्योमबीजे त्रयश्चेति विग्रहः। त्रयपदेन कोणत्रयात्मकत्वात् एकारः, बीजपदेन हकारौ ग्राह्यौ। अथवा, व्योमनी च बीजश्चेति विगृह्य व्योमनीति हकारद्वयं, बीजपदेन एकारः, तस्य ब्रह्माण्डकटाहं प्रति बीजभूतत्वात्। हादिपक्षे तु व्योमबीजत्रयेणेति हकारत्रयमेव ग्राह्यम् इति न व्याख्याक्लेशः। सर्वसंक्षोभणसर्वाशापरिपूरके सकाराभ्यां जनिते। उक्तञ्च सरोरुहद्वयञ्च शाक्तैः। शाक्तैः सकाराभ्यामित्यर्थः। अक्षीणि इतिवत् बहुवचनम् लकारैश्चतुरस्राणि जनितानि इति विद्याक्षरैश्चक्रजनिः। देवताविद्याचक्रत्रितयेन गुरोरभेदः। तेन गणेशादिषड्रूपः श्रीगुरुः तत्प्रसादेन स्वयं साधकोऽपि षड्रूपः।

देव्या देहो यथा प्रोक्तो गुरुदेहस्तथैव च।
तत्प्रसादाच्च शिष्योऽपि तद्रूपः सम्प्रकाशते।।

— *योगिनीहृदये*, २.६७-६८

इत्युक्तत्वात्। अत्र यद्यपि गणपदस्य समुदायार्थकस्य समुदायिसापेक्षत्वेन समुदायिना देवगणाक्षररेखाणां भेदे तद्भेदस्यावश्यकत्वं नक्षत्रत्वादेरपि संख्यामात्रस्यानुगमकत्वेऽपि संख्यावतां विरुद्धधर्माधिकरणत्वेन भेदस्य संख्यावतां सम्मतत्वेन भिन्नाभिन्नत्वात्तेन च नैकस्यापि धर्मस्याभेदव्यापकतेति कथमभेदः स्यादितीयं शङ्का समुदेति, तथापि वचनबलादेव समुदायिनां सङ्ख्यावताञ्च-भेदस्य सिद्धत्वात् समाधानम्। उपक्रमादिनिर्णीततात्पर्य्यकस्य शब्दस्य प्रत्यक्षादिनिखिलप्रमाणेभ्योऽपि बलवत्तायाश्चन्द्रप्रादेशिकत्वप्रमादावन्यत्र

चौपनिषदैर्बहुतरं साधितत्वात्। इत्थं त्रिपुराम्बा विद्या चक्रं गुरुः स्वयञ्चेति पञ्चानामपि भेदभावो मन्त्रस्य **कौलिकोऽर्थः**।

सर्वरहस्यार्थ उच्यते–ककारादिभिर्द्वादशभिरानुलोम्येन मकारादिभिः प्रातिलोम्येन द्वादशभिश्च युक्ताः सूर्यस्य तापिन्यादयो द्वादश कलाः, षोडशभिः स्वरैर्युक्ताः सोमस्यामृतादयः षोडश कलाः, यकारादिभिर्दशवर्णैर्युक्ता वह्नेर्धूम्रार्चिरादिकलाः। एवं, रविशशिवह्निकलाभिराकीर्णैः पञ्चाशद्भिर्वर्णैरभिन्ना कुलकुण्डलिनी विसतन्तुतनीयसी विद्युत्पुञ्जप्रख्या मूलाधारस्थपद्मकर्णिकास्थशृङ्गाटरूपा त्रिकोणादुपरि बिन्दुरूपं ज्योतिर्लिङ्गमावेष्ट्य सार्धत्रिवलयाकारेणाधोमुखी समुपविष्टा योगमर्य्यादया योगिभिरूर्ध्वमुखतयोत्थाप्यते। सा चोत्थिता मूलाधारानाहताज्ञाचक्रेषु वह्निसूर्यसोमण्डलानि भित्वा व्योम्नि ललाटोर्ध्वप्रदेशे विद्यमानस्य चिच्छशिमण्डलस्याधोमुखसहस्रारकर्णिकारूपस्य मध्ये स्थितयाऽकुलकुण्डलिन्या सङ्गम्य ततोऽमृतपूरं स्रावयित्वा डाकिन्यादिमण्डलान्याप्लावयन्ती स्वयमपि तत्पानमत्ता भूत्वा पुनस्तेनैव सुषुम्नामार्गेण परावृत्य स्वस्थाने सुखं स्वपिति। सर्वमेतद्योगगम्यम्। अन्येषान्तु परोक्षज्ञानगोचर एव ईदृश्याः कुण्डलिन्याः मातुर्विद्यायाः स्वस्य चाभेद इति **रहस्यरूपोऽर्थः**।

महातत्त्वार्थः प्रोच्यते–जातिगुणक्रियासम्बधादिशून्ये वाचामगोचरे सर्वेन्द्रियागम्ये मनसोऽप्यविषये वेदान्तमहातात्पर्यविषये शिवादिक्षित्यन्तषट्त्रिंशत्तत्त्वातीते महतो महीयसि तथैवाणोरणीयसि निरुक्तलक्षणव्योम्नोऽप्युपरि स्थितिमति उपासनार्थकल्पितस्थानविशेषेणोपलक्षिते विश्वाधिष्ठाने स्वप्रकाशे चित्सुखस्वरूपे परे ब्रह्मणि स्वात्मा नियोज्यः, प्रत्यक्चैतन्याभिन्नपरब्रह्मावबोधेन भेदकाज्ञाननिवर्तनद्वारा तदात्मनावस्थितिर्विधेया, 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' इति श्रुतेः। सकलतत्त्वमूलभूतत्वादयं महातत्त्वार्थ उच्यते।

नामार्थशब्दरूपार्थौ चोच्येते–तत्तद्वर्णार्थत्वात्तत्तद्वर्णस्वरूपा च श्रीविद्येत्येव नामार्थशब्दरूपार्थौ। विद्यायामष्टपञ्चाशद्वर्णाः सप्तत्रिंशद्वर्णाः पञ्चाशद्वर्णा विभिन्नरीत्या गृह्यन्ते। सर्वेषां ब्रह्मवाचकत्वेन सामानाधिकरण्येनान्वयः, पक्षत्रयेऽपि ककारादीनामन्यतमस्य ब्रह्मवाचकत्वाद् अन्येषां वर्णानां

वैयर्थ्यपरिहारस्तु विश्वप्रकाशकोशादिरीत्या तत्तदक्षराणामनेकार्थवाचकत्वेन योग्यतानुसारेणार्थकरणात्कार्यः। भूयोऽपि पथ्यं वक्तव्यम् इति रीत्या केषुचित्स्थलेषु पौनरुक्त्यं न दोषः। एवञ्च सर्वेषामक्षराणां तत्तद्वाचकत्वेन रूढ्यैव प्रत्यक्षरं सोर्लोपस्यावश्यकत्वेन प्रातिपदिकमात्रावशेषाद्वोपासकजनेषु प्रसिद्धत्वाद्वा सम्भाव्यत्वाद्वा परिभाषिकार्थरूपत्वाद्वा परिपक्वार्थरूपत्वाद्वा नामार्थ इति संज्ञा।

ननु ककारादिस्वरूपत्वं नामतः शब्दाभिन्नत्वम्। तथा च स ककारस्यार्थः शब्दस्वरूपे शक्त्यभावात्। न हि घटमानय इत्यादौ घटशब्दस्यानयनक्रियान्वयः। अत एव न शब्दार्थयोरभेदपक्षोऽपि युज्यते वह्न्यादिशब्दोच्चारणे मुखदाहाद्यापत्तेश्चेति चेन्न, शब्दस्य स्वरूपेऽपि शक्तेस्तन्त्रवार्त्तिकादावुक्तत्वात्। भर्तृहरिणाऽप्युक्तम्-

ग्राह्यत्वं ग्राहकत्वञ्च द्वे शक्ती तेजसो यथा।
तथैव सर्वशब्दानामेते पृथगवस्थिते।। – *वाक्यपदीयम्, ब्रह्मकाण्डे*

तथा ककारादिवर्णरूपेत्यादिमन्त्रार्थः। अत्र शब्दस्वरूपस्यैवार्थत्वेन वर्णनाच्छब्दरूपार्थोऽयमिति व्यपदिश्यते' इति।

नामैकदेशार्थे यथा 'ककाररूपा कल्याणी' इत्यादिना *त्रिशत्यां* पञ्चदशाक्षर्यां एकैकनामाक्षरमादितः कृत्वा तादृशनामानि प्रत्यक्षरं विंशतिरुक्तानि। तान्येव त्रीणि शतानि भवन्ति। तानि च मन्त्राक्षराणामर्थ- प्रकाशनार्थं प्रवृत्तानि। तथा च ककारस्य 'ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशीलिनीत्यादयो विंशतिरर्थाः। तेषु प्रसिद्धकोषव्याकरणादिरीत्या शक्तेरभावादेतद्बलादेव कल्पनस्यार्थापत्तिशरणत्वात् नामैकदेशे नामग्रहणमिति भीमो भीमसेनः, सत्या सत्यभामा इत्यादौ प्रसिद्धम्। तत्र च ककारादिनाम्नामानन्त्यात्ककारस्याप्यनन्तार्थत्वे प्राप्तेऽयं नियमः-एत एवार्था नान्य इति। तेषु च प्रत्यक्षरं प्रथमनाम्नां नामार्थशब्दार्थरूपार्थाभ्यां पौनरुक्त्यादिहैकोनविंशतिरेवार्था विवक्षिताः। तथा च नामैकदेशार्थोऽप्येकोनविंशतिविधः सम्पन्नः।

शाक्तार्थो द्विविधः—अवयवार्थः शक्तिसमूहार्थश्चेति। तत्रावयवार्थो नाम देव्या अवयवानां वर्णनम्। विद्यायां वाक्कूटेन किरीटमारभ्य कण्ठाधः-पर्यन्तविग्रहः प्रतिपाद्यः, कामराजकूटेन कण्ठाधः कटिपर्यन्तविग्रहः प्रतिपाद्यः शक्तिकूटेन कट्यधःपादाग्रान्तो देहः प्रतिपाद्यः। तत एव वाच्यवाचकयोरभेदविवक्षयोक्तं ललितासहस्रनामसु—

श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजा।
कण्ठाधः—कटिपर्य्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी।
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिणी।
मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रयकलेवरा।। ३३-३५

शक्तिसमूहार्थः—वेधोभारत्यौ, माधवलक्ष्म्यौ, रुद्रपार्वत्यौ रेफान्तवर्णषट्-कस्यार्थाः। हृल्लेखायां हकाररेफयोर्विभज्य गणनात् प्रथमकूटे कामकलायाः प्राक् षड्वर्णाः भवन्ति, ब्रह्माद्याः सकला अपि कामकला एव, न ततः पृथक्। तत एव ईकारेण सामानाधिकरण्यं, प्रत्यक्षरं विद्यमानानां सुपां लोपः, वाक्ये संहिताया अविवक्षणात् ईकारेण सह न सन्धिः। प्रथमकूटस्य यावानर्थः तावानेव द्वितीय-तृतीयकूटयोरप्यर्थः। परं द्वितीयकूटमध्यस्थो हकारः तृतीयकूटस्य प्रथमभागे सकारात्पूर्वं योजनीयः। तेन तयोरपि कूटयोः प्रातिस्विकं रेफान्ता वर्णाः षडेव भवन्ति। ततश्चोक्तरीत्यैवार्थवर्णनम्। अत्र प्रत्यक्षरमेकैकत्र शक्तिः, तेन शक्तानामक्षराणामर्थः शाक्तार्थः।

कादिविद्यायां ककारास्त्रयः, हकारौ द्वौ, तेषां शिव एवार्थः, लकारास्त्रयः, सकारौ द्वौ तेषां शक्तिरर्थः। अत एव कामबीजे ककारलकारयोर्योगः, पराप्रासादे हकारसकारयोर्योगः। शुद्धयोरचोः द्वितीय-तृतीययोरपि शक्तिरर्थः। हृल्लेखाया उभयसामरस्यात्मकं परब्रह्मैवार्थः। तत्रत्यव्योमाग्नितुरीयस्वरबिन्दुभिः क्रमेण प्रकाशविमर्शसामरस्यतादात्म्यापन्नब्रह्मैवार्थो बोध्यः। *त्रिशत्यां* तथैवोक्तम्—

कत्रयं हद्वयञ्चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः।
शक्त्यक्षराणि शेषाणि ह्रीङ्कार उभयात्मकः।। ९६-९७

समस्तार्थः– कन्यते प्रकाश्यतेऽनेनेति कं प्रकाशकत्वं ककारस्यार्थः। औणादिकडप्रत्ययेन निष्पन्नम्। ईयते अधीयतेऽनेनेति ए बुद्धिः। 'इङ् अध्ययने' इति धातुरधिपूर्वोऽपि। प्रकृत आर्षत्वाद् तद्विमोकः, क्विपि कृते कित्त्वेऽपि गुणः, अध्ययनकरणं बुद्धिः। कर्मधारयेण प्रकाशमाना बुद्धिरिति तयोरर्थः। ईयते व्याप्नोतीति ई। सर्वत्रासन्धिरार्षः। तस्य लहरी आधिक्यम्। हकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य लोपे ल्ह्री। माङ्माने इति धातोः क्विपि णिचि टिलोपे म् इति रूपम्। तथा च तन्निर्माणम् मकारार्थः। प्रकाशमानसूक्ष्ममतिव्यापनाधिक्यनिर्माणं प्रथमकूटार्थः। हन्यतेऽनेनेति हं शौर्यम्। सीयते सूयते इति वा सं द्रव्यम्, स्यतेः सुनोतेर्वा। काम्यते इति कम् स्रक्चन्दनवनितादिकम्। हानं हः। हसकानां हः। 'ओहाङ्गतौ।' तस्य लहर्याधिक्यम्। ईयते इति ई कीर्त्तिः। ल्ह्री इत्यनेन प्रश्लिष्टः। तन्निर्मातीति म्। तथा च शौर्यधनस्रक्चन्दनवनितादिप्राप्त्यतिशयस्य कीर्तेश्च निर्माणमिति द्वितीय– कूटार्थः। कूटद्वयस्य द्वन्द्वः। एते निर्माणे सम्यक् कलयतीति सकला। समिति मकारलोपः। हरति निखिलं जगदिति ह्र सर्वजगतसंहर्त्री। ई दीप्तौ इति दीप्त्यर्थक ईकारश्च तत्र प्रश्लिष्टः। सृष्टिस्थितिदीप्तिकर्तृत्वं तदर्थः। ह्रकारेकारयोः कर्मधारये यणि ह्रीः उपलक्षण–विधया पञ्चकृत्यकर्त्रीत्यर्थः। अथवा हरति सर्वं विषयीकरोतीति ह्र। क्विप् आगमस्थानित्वात् न तुक्। तच्च दहराकाशम्। तत्र ईयते प्रकाशते इति ह्रीं निर्माणार्थकः मकारः। तेन ह्रीकारपदान्तस्य कर्मधारयः। मकारास्यानुस्वारत्वम्। चरमकूटे त्वनुस्वार एव विशेष्यः। ततश्च प्रकाशमानसूक्ष्मबुद्धिव्यापन–शौर्यधनस्त्रीयशसामाधिक्यकर्तृ, निखिलजगत्सृष्ट्यादिकर्तृ, दहराकाशवर्ति, नादरूपं, चिद्रूपं, ब्रह्मेति समस्तमन्त्रार्थः सिद्धः।

स्यतेरन्तकर्मवाचकत्वेऽप्यत्रोपभोगार्थकत्वम्। अध्ययनार्थकस्येङोऽत्राधे–र्विमोकः। हरीत्यत्राकारलोपः। निर्माणार्थकस्य माङ्माने इत्यस्यानुस्वारत्वादिकम्। धातोर्बह्वर्थत्वात् बाहुलकत्वात् पृषोदरादित्वात् आकृतिगणत्वात् उणादिकल्पनात् छान्दसत्वात् सर्वमुपपादनीयम्। तदुक्तं *वरिवस्यारहस्ये*

धातोर्बह्वर्थत्वाद्बहुलग्रहणात् पृषोदरादित्वात्।
आकृतिगणपाठेन स्वेच्छानुगुणादिकल्पनतः।।

छन्दसि सर्वविधीनां वैकल्पिकतावशादमुष्य मनोः।
सिद्धैःकथितेऽर्थेऽस्ति वैयाकरणानुशासनानुमतिः।। (१३१-१३२)

अयमेवार्थः किञ्चिद्विस्तरेणान्यैराचार्यैरुक्तः। तथा हि-

कन्यन्ते प्रकाश्यन्ते शब्दार्थजालानि अनेनेति क। कनयतीति वा क। कन् दीप्तौ इति स्मरणात् आर्षत्वात् प्रगृह्यत्वेन प्रकृतिभावः। ईयते स्मर्यते अधीयते वा सर्वा वेदशास्त्रादिकला अनेनेति ए। 'इक्स्मरणे इङ् अध्ययने' इत्यस्मादौणादिके विचि वेरपृक्तस्येति वलोपे गुणे निपातत्वात् प्रगृह्यत्वेन प्रकृतिभावः। क च ए च कए। शब्दार्थजालावभासिनी वेदादिशास्त्राध्ययन-स्मरणप्रयोजिका बुद्धिः। ईयते व्याप्नोतीति ई। ईङ् गताविति क्विपि नियतत्वात् प्रकृतिभावः। व्यापिनीत्यर्थः। लहरीत्यस्य परोक्षतया लह्रीत्युक्तम्। 'परोक्षप्रिया हि देवाः' इति श्रुतेः। सर्वप्रकाशकबुद्धिव्यापिनी लहरी लह्रीत्याधिक्यमर्थः। मीयते इति माङ्ज्ञाने शब्दे च इत्यस्मात् क्विपि परोक्षश्रुत्या लुप्ताकारत्वेन वा अनुस्वारत्वम्। तस्य निर्माणमर्थः। तथा च, क ए ई ल ह्रीं शब्दार्थव-द्योतकवेदादिशास्त्राध्ययनस्मरणप्रयोजकबुद्धिव्यापनाधिक्ययुक्ता स्वप्रकाशा संवित्। अनेन धर्मात्मकपुरुषार्थसाधनब्रह्मवर्चसा असमृद्धिनिवृत्तिः सम्यग्बुद्धिनिर्मितिरुक्ता। एतेनैव वाक्प्रवृत्तिजालनिमित्तत्वात् वाग्भवकूटत्वं ब्राह्मणवर्णोपास्यगायत्री-सारत्वञ्चोक्तम्। इष्टदेवताप्रकाशनात्मकत्वेन वाग्जालप्रवर्तकत्वादृग्वेदात्मकत्वम्।

हन्यते तापत्रयमनेनेति हः। तथा च शत्रुरोगादिलौकिकस्य दुष्टकृतजन्य-स्यामुष्मिकस्य च चापस्य निवृत्तिरुक्ता। सीयन्ते उपभुज्यन्ते सर्वधनकनक-वाहनभूम्यादिसम्पत्प्रचया अनेनेति सः। स्यतेः सुनोतेर्वा अन्प्रत्यये सकलराजपरिच्छदजालमुच्यते। काम्यन्ते स्रकचन्दनवनितादिविषयभोगा अनेनेति क ऐहिकामुष्मिकसकलविषयभोग उक्तः। हीयते प्राप्यते इति हः ओहाङ्गतावित्यस्य रूपम्। हसानां हः। हसकहः तापनिवृत्त्यर्थकामभोगानां प्राप्तिः तस्या लहरी आधिक्यम्। ईयते प्रकाश्यते कीर्तिजालं दिगन्तेषु अनेनेति ईः। गुणसन्ततिः। ई दीप्तावित्यस्य रूपम्। हसकहलह्रीश्च इश्च हसकहलह्र्यः। तासां निर्मात्री स्वप्रकाशा संवित्। धातूनामनेकार्थत्वात्। निर्माणार्थकान्मा-

धातोरनुस्वारस्य निष्पतिः। अनेनार्थकामपुरूषार्थनिर्मितिरुच्यते। तस्मादेवास्य कामराजकूटत्वं क्षत्रियवर्णोपास्यमानत्रिष्टुप्छन्दःसारत्वम्। स्वकीयाभीष्टसाधक-कर्मजातविधायकत्वाद्यजुर्वेदात्मकत्वम्। सकलह्रीं सकलाभिरवयैः शिवादितत्त्वैः चतुःषष्टिकलाभिर्वा सहिता सकला। सम्यक्कलयतीति वा सकला। हरतीति ह्रीः संहृतिशक्तिः। हृञ् हरणे धातोः इ प्रत्यये बाहुल्याद् गुणाभावेन यणादेशः। ईयते प्रकाश्यते सर्वं जगत् अनयेति ई सृष्टिशक्तिः। इन्दति सर्वेषां नियन्तृत्वे वर्तते इति इः स्थितिशक्तिः। इदि परमैश्वर्ये इत्यस्मात्क्विपि व्यञ्जनलोपे रूपसिद्धिः। ह्रीश्च ईश्च इश्च ह्रीः सवर्णदीर्घः। संहृतिसृष्टिस्थितिशक्तिः। अथवा हरति विहरति इति ह्रीः। धातूनामनेकार्थत्वात् हरतेर्विहरणार्थात् इन् प्रत्यये ह्रीः। यद्वा हृ इति क्विबन्तः लुप्तसकारशब्दः प्रपञ्चसंहृतिवाचकः। ई प्रकाशः आत्मैक्यगमनम्। ह्री सकलप्रपञ्चदेहेन्द्रियादिकं द्रवीकृत्य प्रकाशरूपैक्यगमकमित्यर्थः।

अथवा ई इत्यनेन हृत्पुण्डरीकदहराकाशस्थदीपशिखामध्ये स्थितो बोधात्मकप्रकाशस्वरूपपरमात्मैव विवक्षितः। 'तस्याः शिखायाः मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः'। सकला च सा ह्री च सकलह्री। इष्यते अत्यन्ताभीष्टत्वेन विरिञ्चादिचेतनवर्गैरिति ई। निरतिशयानन्दरूपा चितिः। व्यञ्जनलोपादिभिः सिद्धिः। तस्य प्रमितिरनुस्वाररूपेण लुप्ताकारेण मकारेण माधातुनिष्पन्नेन बोध्यते। तथा च स्वप्रकाशनिरतिशयानन्दस्वरूपब्रह्मात्मसाक्षात्कारजननीत्यर्थः। लक्षणया स्वप्रकाशप्रकाशपरमानन्दरूपिणीत्यपि। सकल ह्रीं शिवादिसर्व-तत्त्वात्मिकाभिः कलाभिः चतुःषष्टिकलाभिश्च सहिता सृष्टिस्थितिसंहृतिकारिणी सर्वनियामिका सर्वेश्वरी निरतिशयानन्दरूपिणी राजराजेश्वरी श्रीमत्सिंहासनेश्वरी त्रिपुराम्बा विवक्षिता। अथवा ह्री च तत् ई च ह्रीं। सकलश्च तत्ह्रीश्च सकलह्रीं। सकलहृदाकाशवर्तिदीपशिखान्तर्गतनिरतिशयानन्दानुभवप्रकाशिका नादात्मिका चिच्छक्तिः। अथवा म् इति नादानुकारि अव्ययम्। अनेन नादात्मकशुद्ध-चैतन्यरूपता उच्यते। अनेन मोक्षसाधनादिलययोगानन्दानुभवः उक्तः। तस्मादेव शक्तिकूटत्वम्। चित्तनिरोधप्रधानत्वं वैश्योपास्यजगतीच्छन्दःसारत्वञ्च। सामवेदस्य गानप्रधानत्वेन नादविलीनचित्तत्वाद् योगस्य सामवेदात्मकत्वम्।

मन्त्रार्थः- क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीश्च सम्यक्कलयतीति कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।

सर्वस्य मन्त्रस्यायमर्थः- शब्दार्थप्रकाशकवेदादिशास्त्राध्ययनस्मरण-प्रयोजकबुद्धिव्यापनलहरीयुक्तया स्वप्रकाशसंविदा, अनिष्टनिवारणभोगभोग्या-दिप्राप्त्याधिक्यकीर्तिजालप्रयोजकगुणसन्ततिरचयित्री सर्वतत्त्वसर्वकलाधिष्ठात्री विश्वोत्पत्तिस्थितिसंहृतिजनकसर्वैश्वर्योपेतनिरतिशयानन्दानुभवप्रकाशिका निरतिशयानन्दात्मकदहराकाशस्थपरमात्मस्वरूपिणी स्वप्रकाशा चिच्छक्तिः।

श्रयति-शक्तिरूपेण शिवमिति श्रीः। श्रीयते सर्वैर्गुणैरिति वा। श्रीयते सेव्यते परशिवेनापि या सा श्रीः। तां माति बोधयतीति। ह्रीं इति मायाबीजं हृल्लेखाया बोधकम्। क्लीं इति कामबीजं सर्वार्थप्रापकम्। ऐं इति वाग्भवबीजं सर्वार्थाविद्योतकम्। सौरिति ब्रह्मविद्यास्वरूपिण्याः परायाः बोधकम्। प्रणवः वाच्यार्थलक्ष्यार्थभेदेन सगुणनिर्गुणवेदान्तवेद्यपरतत्त्वबोधकः। पुनश्च ह्रीं इति सर्वशक्तिसर्वाधिष्ठानब्रह्मबोधकम्। श्रीमिति सर्वैश्वर्यसर्वमाधुर्यतदधिष्ठान-बोधकम्। प्रतिलोमक्रमेणेमान्येव बीजानि पञ्चदश्याः परस्तात् सान्तिबीजैः सहितं कूटत्रयं षोडशी सम्पद्यते। सगुणार्थश्च कः प्रजापतिः, एकारो विष्णुः। तदुत्तरवर्तिनमकारं प्रश्लिष्य ईशस्तदर्थो ग्राह्यः। ईड्यते इति इड्। एतस्य ऋग्वेदात्मकत्वात् अज्द्वयमध्यगतस्य डकारस्य स्थाने लकार आदेशः। 'अग्निमीळे पुरोहितमित्यादि'वत्। द्वयोश्चास्य स्वरयोर्मध्यमेत्य सम्पद्यते स डकारो लकार इति प्रातिशाख्यम्। तत एव द्वितीयतृतीयकूटयोर्यजुः-सामात्मकत्वञ्च। यद्यपि कामो योनिः कमला वज्रपाणिरित्यत्र वज्रपाणिशब्देन लकार एवोद्धृतस्तथापि डलयोरभेदाभिप्रायेणादोषः। क्वचिच्च त्रिखण्डी-गतास्त्रयोऽपि मोहार्णपदेन-लकारा एवोद्धृताः। ह्रीं इति विशेष्यम्। नपुंसकं नाम ब्रह्मलक्षकम्। तेन विधिहरिगिरिशैरीड्यं ब्रह्मेति प्रथमकूटार्थः। हसः हास्यम् अर्थ आदित्यादचि हसो हास्ययुक्तः को मुखं यस्य, अथवा हासस्यानन्दजन्यत्वात् आनन्दे हसपदस्य लक्षणा। कश्च हश्च कहौ चन्द्रौ सूर्यौ लौ नेत्रे यस्य तत् कहलम्। 'मुखे सूर्येऽपि कः स्मृतः' 'हः कोपे वरुणे चन्द्रे' 'इन्द्रे लोचने लः स्यात्' *इत्येकाक्षरनिघण्टुः* हसकहलपदयोः कर्मधारयः। प्रकाशकत्वाच्चिद्रूपता। ततो हसद्वदनरवीन्दुनेत्रम् आनन्दचिद्रूपं वा विधिहरि-गिरिशेड्यत्वे तेनामितानन्दं चिद्ब्रह्मेतिद्वितीयकूटार्थः। अतः प्रसन्नवदनं रवीन्दुनेत्रम् आनन्दचिद्रूपं ब्रह्मातो विरिञ्च्यादिवन्द्यम् सकलकलाभिः सहितं

ह्रीं ब्रह्मेति तृतीयकूटार्थः। गुणगणकथनाद्विद्यायाः *सगुणार्थः।*

महावाक्यार्थः–विधिहरिशिवबोधकाः कए अ (प्रश्लिष्टाकारः) एते वर्णाः सृष्टिस्थितिभङ्गजनकदेवतावाचकत्वात् तल्लक्षकाः। नामैकदेशन्यायेन ईश्वरवाचीकारः सदाशिववाचको डकारः (लकारः) ताभ्यां तिरोधानानुग्रहौ लक्षितौ। एतेन 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' इत्यादिश्रुतिषूक्तं ब्रह्मण-स्तटस्थलक्षणमिहोक्तम्। तेन सृष्टिस्थितिलयतिरोधानानुग्रहपञ्चकृत्यकारणं ब्रह्मेति प्रथमकूटार्थः। हस आनन्दः कं सत्यं हं अनन्तं लं ज्ञानं, 'सखा कश्च बुधैः प्रोक्तः' इति कोशात्। सखिवाचकस्य ककारस्य सखित्वमाप्तत्वं यर्थाथवक्तृत्वमिति रीत्या सत्यमर्थः। हकारस्य व्योमबीजत्वात्तस्यानन्त-त्वादानन्त्यमर्थः। लोचनवाचित्वाल्लकारस्य ज्ञानमर्थः। एतेन स्वरूपलक्षणं ब्रह्मद्वितीयकूटार्थः। एवं ब्रह्म तटस्थस्वरूपलक्षणयुगेन निर्णीय तदभेदो जीवगणे तृतीयकूटेनोच्यते। सकलपदं जीवपरम्। शक्तिबीजं ब्रह्मपरम्। सामानाधिकरण्यात् लक्षिताशुद्धयोरभेदो बोध्यते। यथा 'तत्त्वमसीति' महावाक्ये तत्त्वंपदार्थयोरेकविभक्तिकत्वरूपसामानाधिकरण्याद् अभेदो बोध्यते स च वाच्यार्थयोरसम्भवात् भागत्यागलक्षणया लक्ष्यपदार्थयोरभेदो बोध्यते। तथैवात्र तत्पदवाच्यः सृष्ट्यादिकृत्यपञ्चकजनकः स एव यतो वा इमानीति श्रुत्युक्तः। लक्ष्यार्थस्तु सर्वकृत्यातीतं निर्विशेषं ब्रह्म। तदपि 'सत्यं ज्ञानमनन्तं' ब्रह्मेत्यत्रोक्तम्। एवं त्वंपदवाच्यार्थो जाग्रदाद्यवस्थापञ्चकविशिष्टः। स च तद्यथास्मिन्नाकाशे श्येनो वा सुपर्णो वा विपरिपत्य श्रान्तः संहत्य पक्षौ संलयायैव ध्रियत एवमेवायं पुरुषं एतस्मा अन्नाय धावति तद्यथा महामत्स्य इत्यादिभिरुक्तः। लक्ष्यार्थस्तु अवस्थातीतं ब्रह्म तदपि योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः, न दृष्टेर्द्रष्टारं पश्येः इत्याद्युक्तम्। एवम-वान्तरवाक्यैर्वाच्यार्थलक्ष्यार्थयोनिर्णये सति महावाक्ये लक्ष्यार्थयोरभेदबोधः। प्रकृते तृतीयकूटस्थसकलपदेन कलाभिरवस्थाभिः सहितः इत्यर्थकेन वाच्यार्थस्योक्तावपि लक्ष्यार्थानुक्तेर्न्यूनता भाति तथापि कूटद्वयवृत्त्या त्वंपदस्य वाच्यार्थलक्ष्यार्थपरत्वेनादोषात्। तृतीयकूटेन सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति श्रुत्यर्थो वा बोध्यते। सर्वं जगत् देवीरूपमित्यर्थः। एवं *वरिवस्यारहस्ययोगिनीहृदयस्व-च्छन्दसंग्रहकामकलाविलासादिरीत्या* पञ्चदश्याः षोडश्याश्च संक्षेपेणार्था उक्ता इति। तेन श्रीराजराजेश्वरी सुप्रीताऽस्तु।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते

श्रीविद्यारत्नाकरे परिशिष्टे श्रीविद्यामन्त्रभाष्यं सम्पूर्णम्।

वाञ्छाकल्पलता

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीक्षेत्रपालाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। (मूलमुच्चार्य)। तालत्रयं कृत्वा। मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा।

ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलताविद्यागणेशस्य मनोर्नानासूक्तसमूहस्य, आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवनना ऋषयः देवीगायत्री-निचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुर-सुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रा देवताः, श्रीः बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम श्रीमहागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रप्रसाद-वाञ्छितार्थफलप्रसिद्ध्ये वाञ्छाकल्पतलोपस्थाने विनियोगः। (इति सङ्कल्प्य)।

आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवसिष्ठविश्वामित्रसंवननऋषिभ्यो नमः (शिरसि),
देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्-निचृत्त्रिष्टुप्जगतीछन्दोभ्यो नमः (मुखे),
श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रदेवताभ्यो नमः (हृदये),
श्रीं बीजाय नमः (नाभौ),
ह्रीं शक्तये नमः (गुह्ये),
क्लीं कीलकाय नमः (आधारे) इति न्यस्य मूलेन व्यापकं चरेत्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं क ए ई ल ह्रीं गणपतये हसकहलह्रीं वरवरद सकलह्रीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। 'मूलं' (इति त्रिचत्वारिंशदर्णो मनुः)।

ऐं क्लीं सौः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ११ ह्रीं सर्वज्ञायै ह्रां गां ब्रह्मात्मने
(अङ्गुष्ठाभ्यां नमः)

ऐं ११ ह्रीं नित्यतृप्तायै ह्रीं गीं विष्ण्वात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ऐं ११ ह्रीं अनादिबोधितायै ह्रूं गूं रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट्।
ऐं ११ ह्रीं स्वतन्त्रायै ह्रैं गैं ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम्।
ऐं ११ ह्रीं नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ऐं ११ ह्रीं अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

(एवं हृदयादिन्यासं विधाय पुनर्मूलेन त्रिर्व्याप्य ध्यायेत्।) यथा-

हेमाद्रौ हेमपीठस्थितममरगणैरीड्यमानां विराजत्-
पुष्पेष्विक्ष्वासिपाशाङ्कुशकरकमलां रक्तवेषातिरक्ताम्।
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमयकलशैः पञ्चशक्त्यैकविद्यां,
स्वस्थां क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे।।१।।
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाऽऽश्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ।। २।।
धवलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णं, करधृतवरपाशं साभयं साङ्कुशञ्च।
अमृतवपुषमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रं, प्रणमत सुरवन्द्यं मञ्जु संवादयन्तम्।।३।।
स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा-गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम्।
स्वकरकलितमुद्रा-वेदपाशाक्षमालं, स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि।।४।।

(इति ध्यात्वा, सर्वसंक्षोभिण्यादिदशमुद्राः प्रदर्श्य)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। (इति अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्याम्)।

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः (इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारं समर्पयामि नमः (इति संहताभिः सर्वाङ्गुलीभिर्दद्यात्)।

एवं मानसोपचारैः संपूज्य, गुरुदेवतात्मनामैक्यं भावयित्वा रात्रौ अन्त्ययामे सूर्योदयात्पूर्वं शनैः शनैः जपेत्।

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'ई',

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं 'परोरजसे सावदोम्',

(३) ॐ ऐं श्रीं ह्रीं 'हसकल हसकहल सकलह्रीं', (प्रत्येकं दशवारं जपित्वा)

(पुनः) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुगुरीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐं क्लीं सौः २९। यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगा। अभिसूर्य सर्वं तदिन्द्र ते वशे २३। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वर वरद आं ह्रीं क्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ३६।। १।।

ॐ ऐं.....सौः २९। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् २३। गं......ऐं ३६।। २।।

ॐ ऐं ....सौः २९। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ३२। गं.....ऐं ३६।। ३।।

ॐ ऐं ....सौः २९। जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ४३। गं...ऐं। ३६।। ४।।

ॐ ऐं ....सौः २९। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ४४। गं.....ऐं ३६।। ५।।

ॐ ऐं ....सौः २९। सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ३०। गं.......ऐं ३६।। ६।।

ॐ ऐं ....सौः २९। समानो.....जुहोमि४४। गं.....ऐं ३६।।७।।
ॐ ऐं ....सौः २९। जात....त्यग्निः४३। गं.....ऐं ३६।।८।।
ॐ ऐं ....सौः २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३३। गं.....ऐं ३६।।९।।
ॐ ऐं ....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।।१०।।
ॐ ऐं ....सौः २९। यदद्य....वशे २३। गं...ऐं ३६।।११।।

ॐ ऐं .. सौः २९। गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुप-श्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ४८ गं...ऐं ३६।। १२।।

ॐ भूः भद्रं नो अपि वातयः मनः। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।। १३।।

दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति प्रथमः पर्यायः

ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।। १।।
ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।। २।।
ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ३।।
ॐ ऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४४। गं...ऐं ३६।। ४।।
ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ५।।
ॐ ऐं....सौः २९। संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ३२।। गं........ऐं ३६।। ६।।
ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ७।।
ॐ ऐं....सौः २९। जात.....त्यग्निः ४३। गं...ऐं ३६।। ८।।
ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ९।।
ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।।१०।।
ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।।११।।
ॐ ऐं....सौः २९। अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम्। प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् ४३।। गं...ऐं ३६।। १२।।

ॐ भुवः मरुतामोजसे स्वाहा।। ॐ ह्रीं श्रीं वं ठं अमृतरुद्राय ।।१३।। आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।।

दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति द्वितीयः पर्यायः

ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।। १।।

ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।। २।।

ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ३।।

ॐ ऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३। गं...ऐं ३६।। ४।।

ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ५।।

ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ६।।

ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ७।।

ॐ ऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३। गं...ऐं ३६।। ८।।

ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ९।।

ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।। १०।।

ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।। ११।।

ॐ ऐं....सौः २९। यो मामग्ने भागिनं सन्तमथाभागं चिकीर्षति। अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु स्वाहा ३५। गं....ऐं ३६ ।। १२।।

ॐ स्वः इन्द्रो विश्वस्य राजति।। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।।१३।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति तृतीयः पर्यायः

ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।। १।।

ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।। २।।

ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ३।।

ॐ ऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३। गं...ऐं ३६।। ४।।

ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ५।।

ॐ ऐं....सौः २९। समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३१।। गं......ऐं ३६।। ६।।

ॐ ऐं....सौः २९। समा.....होमि ४४। गं...ऐं ३६।। ७।।

ॐ ऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३। गं...ऐं ३६।। ८।।

ॐ ऐं....सौः २९। त्र्यम्ब...मृतात् ३२। गं...ऐं ३६।। ९।।

ॐ ऐं....सौः २९। तत्स.....यात् २३। गं...ऐं ३६।। १०।।

ॐ ऐं....सौः २९। यदद्य.....वशे २३। गं...ऐं ३६।। ११।।

ॐ ऐं....सौः २९। अजैष्माद्यासनामचा भूमा नागसो वयम्। जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ४०।। गं...ऐं ३६।। १२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।। १३।।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे।।

इति चतुर्थः पर्यायः

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु देवेशि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।।

इति जपं निवेदयेत्।

एवं प्रत्यहं निशान्ते चतुर्वारं पठेत्। सर्वैश्वर्यं भवति। सर्ववेदान्त-फलमश्नुते। इति शम्।

।। इति वाञ्छाकल्पलताप्रयोगः समाप्तः।।

श्रीवाञ्छाकल्पलता–विधानम्

प्रजपेदिष्टसिद्ध्यर्थं विद्याग्रहणसंयुतः।
तद्भवेद् वैदिको मन्त्रो भेदेनेत्यर्थविद्यया।। १।।
अष्टवारं जपेन्नित्यं सर्वाभीष्टमवाप्नुयात्।
जपेत् षोडशसाहस्रं तर्पणाहुतियोगतः।। २।।

श्रीविद्यायास्तु साधर्म्यं साधयेत्साधितो मनुः।
पुरश्चर्याविधानेन साधकः सर्वदा जपेत्।। ३।।
तत्सर्वं लभते नित्यं वाञ्छाकल्पलतामनोः।
इत्येतत्कथितं गुह्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।। ४।।
जपेत्षोडशसाहस्रं षट्साहस्रमथापि वा
पायसेन हुनेद्देवि नारिकेलफलैस्तिलैः।। ५।।
असाध्यं साधयेल्लोके अवश्यं वशमाप्नुयात्।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वान् कामानवाप्नुयात्।। ६।।

(इति कुमारसंहितायाम्)

(तन्त्रान्तरे)

वाञ्छाकल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम्।
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत्।। १।।
एकावृत्त्या वशे लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत्।
दशावृत्त्या तथा विष्णुरुद्रशक्तिर्भवेदिह ।। २।।
सार्वभौमः शतावृत्त्या भवत्येव न संशयः।

(प्रयोगपारिजाते)

आवर्तनत्रयाल्लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत्।
दशावृत्त्या शिवादीनां देवानां शक्तिभाग्भवेत्।। १।।
लक्षावृत्त्या सार्वभौमो दरिद्रोऽपि न संशयः।
नार्थवादोऽथर्वणस्य वसिष्ठवचनं यथा ।। २।।
एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ यामत्रयावधि।
रात्रेश्चतुर्थप्रहरात् तथा सूर्योदयावधि ।। ३।।

दैवात् प्रमादाद्वा एकस्मिन् दिने जपलोपे सति अनशनेन वाञ्छाकल्पलतामन्त्रस्य अष्टोत्तरशतावृत्तिपाठः कर्तव्याः।

इति श्रीवाञ्छाकल्पलताविधानं सम्पूर्णम्।

पूर्णाभिषेकविधानम्

अथ श्रीविद्यार्णवादिरीत्या पूर्णाभिषेकः

विरच्य विपुलं चक्रं मण्डपेऽतिमनोरमे ।
खारीतोयभृतं कुम्भं स्थापयेच्चक्रमध्यतः।।
अन्येषु कलशानन्यान् रत्नवस्त्रसमन्वितान्।
दलेषु विधिवत्स्थाप्य तत्राऽऽवाह्येष्टदेवताम्।।
अभ्यर्च्य मध्ये चान्येषु साङ्गावरणदेवताः।
शिष्यस्य जन्मनक्षत्रे प्राग्वत्तैरभिषेचयेत् ।।

विहितकालेषु प्रातःस्नातः कृतनित्यक्रियः समलङ्कृतः पञ्चवाद्यघोष-पुरःसरं ब्राह्मणैः कृतस्वस्त्ययनो गुरुगृहं गत्वा प्रणम्य मधुपर्कादिनाऽभ्यर्च्य धौतोत्तरीयप्रच्छदस्वर्णाङ्गुलीयादिभूषणयज्ञोपवीतशय्यादिसम्पन्नां वरणसामग्रीं निधाय पुरतो देशकालाद्युच्चार्य्यामुकोहं गुरुत्वेन त्वां वृणे इति गुरुं वृणुयात्। गुरुश्च वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं दद्यात्। ततश्च स्वेष्टोपासकान् ऋत्विजो वृणुयात्। तैः सार्द्धं भूतोत्सादनादिपूर्वकं चन्दनसर्षपदूर्वाभस्माक्षतलाजान् अस्त्रमन्त्रेण सप्तधाभिमन्त्रितान् मण्डपान्तर्विकीर्य्य अस्त्रमन्त्रेण कुशमुष्टिना सम्मार्ज्य पुण्याहवाचनं ब्राह्मणैः कारयित्वा सर्वतोभद्रमण्डलादिकं कारयेत्।

सप्तविंशतिभिः कुशैरेकीकृताग्रविरचितब्रह्मग्रन्थिकं कूर्चं निधाय श्रीचक्रं विपुलसिन्दूरादिभिर्निर्माय तत्र मध्ये वक्ष्यमाणविधिना शालिपुञ्जोपरि वह्निमण्डलं वह्निकलाश्च सम्पूज्य स्वर्णादिनिर्मितं त्रिगुणीकृतसूत्रवेष्टितसर्वाङ्गं चन्दनागुरुकर्पूरधूपधूपितं मुख्यं कुम्भं प्रणवमुच्चरन् संस्थाप्य तत्रैवाष्टदलेषु रत्नवस्त्र- समन्वितानन्यान्कलशान् पूर्वादिदिक्षु चतुरः कलशान् स्थापयेत् साङ्गावरणदेवतासङ्ख्याकान्वा कलशान्स्थापयेत्। सर्वतोभद्रमण्डलोपरि वा षडस्त्रचतुरस्त्रेषु तदतिरान् स्थापयेत्। तत्राऽष्टगन्धचूर्णं नवरत्नानि सप्तमृत्तिका गङ्गादिसप्ततीर्थजलमेकपञ्चाशदक्षरौषधक्काथञ्च निःक्षिपेत्, अश्वत्थन्यग्रोधप्लक्षाशो-कोदुम्बराम्रपल्लवान् कल्पलताबुद्ध्या निधाय नारिकेलफलानि चोपरि विन्यसेत्।

तन्त्रोक्ताष्टगन्धवस्तूनि

यथा –

चन्दनागुरुकर्पूरकाश्मीरै रोचनान्वितैः।
ससिह्लकं जटामांसी सटीभिः शक्तिसम्भवम्।
गन्धाष्टकं शुभं वश्यं शक्तिमन्त्रेषु योजयेत्।

काश्मीरं–कुङ्कुमम्। सिह्लकं–शिलारसः। सटी–कचोरः।

ह्रीबेरं चन्दनं कुष्ठमगरुं कुङ्कुमं मुरम्।
सेव्यकं च जटामांसी वैष्णवं तदुरीरितम्।

ह्रीबेरं–वालकम्। सेव्यकमुशीरम्। मुरं–मोहरीति प्रसिद्धम्।

मुरागन्धवती दैत्या गन्धाढ्या गन्धमादिनी।
सुरभिर्भूतगन्धा च कुटी गन्धकुटी स्मृता।

मुरा–एकाङ्गी 'छर्व्यु' इति लोके प्रसिद्धा।

जलकाश्मीरकुष्ठैस्तु रक्तचन्दनचन्दनैः।
तमालागरुकर्पूरैः शाम्भवं चाष्टगन्धकम्।। जल–वालकम्।
गन्धाष्टकस्य संयोगात्सामर्थ्याद्देशिकस्य च।
सशक्तिकं जलं कुम्भं भवेदेव न संशयः।। (*श्रीविद्यार्णवतन्त्रे* २९६)

मन्त्रवर्णौषधिनिर्मितमन्त्रवर्णसमसंख्याकानां गुटिकानां धारणं तद्भक्षणं विलेपनम्। ताभिः पूजा। तत्क्वाथजलैः स्नानं तद्भस्मधारणं कुर्यात् तेन मन्त्रसिद्धिः। *प्रपञ्चसारे* ३५। ५३ श्लोकः।

एकपञ्चाशदक्षरौषधयः

यथा–चन्दन–रक्तचन्दन–अगरु–कर्पूर–उशीर–कुष्ठ–वाल–कुङ्कुम–केशर–कङ्कोल–जातीफल–जटामांसी–मुरा–चोरग्रन्थि–गोरोचना–पत्रा–पिप्पल–बिल्व–पृश्निपर्णी–चित्रक–लवङ्ग–कत्तृण–कट्फल–वन्द्रि–उदुम्बर–पाषाणभेदपद्म–शङ्खपुष्पी–रोहिण–स्योनाक–बृहती–पाटल–मूषकपर्णी–तुलसी–अपामार्ग–इन्द्रवल्ली–भृङ्गराज–अपराजिता–तालमूली–कृताञ्जलि–दूर्वा–श्रीदेवी–कुमारी–भारङ्गी–भद्रमुस्ता, इत्येकपञ्चाशदोषधयः क्रमादकारादि क्षकारैकपञ्चाशदक्षरवर्णानाम्।

चन्दनकुचन्दनागरुकर्पूरोशीररोगजलघुसृणाः ।
कङ्कोलजातिमांसी मुराचोरग्रन्थिरोचनापत्राः।।१।।
पिप्पलबिल्वगुहारुणतृणका लवङ्गाह्वकुम्भिवन्दिनः।
सोदुम्बरकाश्मीरिकास्थिराब्जदरपुष्पिका मयूरशिखा।। २।।
प्लाक्षाग्निमन्थसिंही कुशाह्वदर्भाश्च कृष्णदरपुष्पी।
रोहिणटुण्डुकबृहतीपाटलचित्रातुलस्यपामार्गाः।। ३।।
शतमूलिलता द्विरेफा विष्णुक्रान्ता मुषल्यथाञ्जली।
दूर्वाश्रीदेवीसहे तथैव लक्ष्मी सदाभद्रे ।। ४।।
आदीनामितिकथिता वर्णानां क्रमवशादथौषधयः।
गुटिका कषायभसितप्रभेदतो निखिलसिद्धिविधायिन्यः।।५।।
(*श्रीविद्यार्णवे* षोडशे श्वासे ४०८)

कुण्डमण्डपनिर्माणम्

तत्र देवता आवाह्य वक्ष्यमाणप्रकारेण षोडशोपचारैः साङ्गावरणं तत्तत्कल्पोक्तविधिना सम्पूज्य वेद्या दक्षिणभागे हस्तमात्रायामविस्तारमङ्गुष्ठ-पर्वमात्रोच्चं बालुकाभिः समचतुरस्रं स्थण्डिलं कृत्वा वक्ष्यमाणनित्यहोम-प्रोक्तविधिना वह्निं संस्थाप्य चरुं श्रपयित्वा तत्र देवतामावाह्य सम्पूज्य, नित्यहोमोक्तविधिना साज्येन तेन चरुद्रव्येण हुत्वा पुनर्देवं सम्पूज्य कुम्भस्थमूर्तौ संयोज्य तथैव वह्निं सम्पूज्य विसृज्य वक्ष्यमाणविधिना सर्वभूतबलिं तत्तत्कल्पोक्तबलिदानं च विधाय प्राणायामत्रयऋष्यादिकरण-षडङ्गन्यासपूर्वकं मूलमन्त्रमष्टोत्तरसहस्रं जपित्वा देवाय वक्ष्यमाणविधिना जपं समर्प्य, पूर्वमण्डपस्येशानकोणे स्थापितविकिरपुञ्जोपरि सुवर्णगर्भवस्त्रयुग्मवेष्टितं जलपूरितं करकं विन्यस्य, तत्रास्त्रदेवतां सिंहरूपां दक्षवामकरयोः खड्गखेट-कधारिणीं घोररूपां पश्चिमाभिमुखां ध्यात्वा, तिष्ठन् गन्धादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य, नमस्कृत्य, तं करकं कराभ्यामुद्धृत्य मण्डपाभ्यन्तरे प्रदक्षिणं भ्रमन् करकं स्वस्थाने निवेश्योपविश्यास्त्रमन्त्रेण पुनस्तामस्त्रदेवतां पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, ततः प्राकृतेषु कुण्डेषु इन्द्रेशानयोर्मध्यगताचार्यकुण्डे गुरुरुपविश्यासनं कुर्यात्।

मण्डपनिर्माणं प्राचीसाधनं द्वारशाखानिर्माणं कुण्डनिर्माणञ्च कुण्डसंस्कारः, प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यासान् विधाय देवतां ध्यात्वा मानसोपचारैरभ्यर्च्य कुण्डं मूलमन्त्रेण वीक्ष्यास्त्रमन्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेणैव कुशैस्त्रिः सन्ताड्य कवचेनाभ्युक्ष्यास्त्रेण कुण्डमध्ये किञ्चित्खात्वाऽस्त्रमन्त्रेण तां मृदमङ्गुष्ठानामिकाभ्यामुद्धृत्य बहिस्त्यक्त्वा व्याहृतिमन्त्रेण शुद्धमृत्तिकया खातमापूर्य्य समीकृत्य कवचमन्त्रेण जलैः संसिच्यास्त्रमन्त्रेण काष्ठादिना कुट्टयित्वा दृढीकृत्य, कवचमन्त्रेण कुशैः कुण्डं सम्मार्ज्य कवचेनैव गोमयाद्भिः संलिप्य, कवचेनैवाग्निसूर्यसोमानामष्टात्रिंशत्कलारूपं सञ्चिन्त्य, कवचेनैव मेखलात्रयेऽपि त्रिगुणीकृतसूत्रेण प्रतिमेखलं त्रिस्त्रिः समवेष्ट्य, 'ॐ अमुककुण्डाय एतदासनं नमः' इत्याद्यासनादिदीपान्तैरुपचारैः प्रथमचतुरस्रादितत्तत्कुण्डनाम्ना चतुर्थीनमोऽन्तेन सम्पूज्य तथैव नाभिं च सम्पूज्य मेखलात्रयं तथैव हृन्मन्त्रेण सम्पूज्यास्त्रमन्त्रेण कुण्डं वज्रवद् दृढं सञ्चिन्त्य, हृन्मन्त्रेण कुशैः कुण्डस्य चतुर्दिक्षु वह्निज्वालाविलासाय चतुष्पथं मार्गचतुष्टयं परिकल्प्य; कवचमन्त्रेणाच्छिन्नाग्रैः कुशैरस्त्रमन्त्राभिमन्त्रितैः कुण्डभित्तिगणं सर्वमाच्छादयन् अक्षपाटनं कुर्यात्, *इत्यष्टादश संस्काराः।*

अग्निस्थापनविधिः

अशक्तौ प्रथमोदितैश्चतुर्भिरेव संस्कारैः कुण्डं संस्कृत्य, तत्र हृन्मन्त्रेणास्त्रमन्त्रेण वा दक्षिणमध्योत्तरेषु प्रागग्राः पश्चिममध्यपूर्वेषूदगग्राः इति तिस्रस्तिस्रो रेखाः कुशमूलेन विलिख्य प्रणवेनाभ्युक्ष्य, प्रागग्रासु रेखासु दक्षिणरेखायां विष्णवे नमः। मध्यरेखायां रुद्राय नमः। उत्तरस्याम् इन्द्राय नमः। उदगग्रासु रेखासु पश्चिमस्यां ब्रह्मणे नमः। मध्यमायां सूर्याय नमः। पूर्वरेखायां सोमाय नमः इति सम्पूज्य तत्र वक्ष्यमाणयोगपीठक्रमेण मण्डूकादि परतत्त्वान्तं योगपीठं सम्पूज्य, तत्र पद्मकेसरेषु त्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन मध्यान्तं ॐ जयायै नमः। विजयायै नमः। अजितायै नमः। अपराजितायै नमः। नित्यायै नमः। विलासिन्यै नमः। दोग्ध्र्यै नमः। अघोरायै नमः। मङ्गलायै नमः इति सम्पूज्य "ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः" इति मध्ये पुष्पाञ्जलिं निक्षिप्य, तत्र भुवनेश्वरीं तत्तन्मन्त्रेणावाह्यावाहनादिपरमीकरणान्तं तत्तन्मुद्रया विधायासनादिषोडशोपचारैराराध्य, तत्र श्रीशिवं ध्यात्वा मूलमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य,

देवीमृतुस्नातां देवञ्च कामोन्मत्तं विचिन्त्य स्वर्णादिपात्रेण मृत्पात्रं चेत् नूतनेन सूर्यकान्तादिभवमरणिभवं श्रोत्रियगृहाद्वानीतमग्निमस्त्रमन्त्रेण पात्रे कृत्वा कवचमन्त्रेण सजातीयेन पात्रान्तरेण पिधाय, कन्यया सुवासिन्या वा समानीतं गुरुरादायास्त्रमन्त्रेणैकमङ्गारं तन्मध्यात् क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यकोणे परित्यज्य, देवांशं मूलेन वीक्ष्यास्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेण कुशैः सन्ताड्य कवचेनाभ्युक्ष्य तत्र स्वमूलाधारस्थ-वह्निमण्डलगतपरमात्मस्वरूपाग्नीषोमात्मकाद्विन्दोःसकाशाद् वह्निं, मणिपूरगतजाठरानलेन सह सुषुम्नामार्गेण वहन्नासापुटाध्वना निष्कास्य, रमितिवह्नि-बीजमुच्चरन् पुरतः पात्रस्थिते वह्नौ वह्निचैतन्यं संयोज्य औदर्यबैन्दवपार्थिववह्नीनामैक्यं विभावयन्, प्रणवेनाभिमन्त्र्य वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्याऽस्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुण्ठ्य 'ॐ रं वह्नये नमः' इति गन्धादिभिः सम्पूज्य जानुभ्यामवनिं गतस्तत्पात्रं कराभ्यामादाय कुण्डोपरि त्रिः प्रदक्षिणं परिभ्राम्य, देव्या योनौ शिवबीजमिति ध्यायन् स्वाभिमुखं कुण्डमध्ये प्रणवमुच्चरन् तमग्निं निक्षिप्य, मैथुनधिया देवदेव्योराचमनं दत्त्वा ॐ चित्पिङ्गल हन हन पच पच दह दह सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा इति मन्त्रमुच्चरन् मुखेन फुत्कृत्य कुशैरग्निं प्रज्वाल्य काष्ठैः फट्कृत्य कृताञ्जलिस्तिष्ठन्-

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्।

इति ज्वलन्तं वह्निमुपस्थाय वक्ष्यमाणवह्निमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा,
शिरसि भृगुऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः।
हृदये अग्नये देवतायै नमः। गुह्ये रं बीजाय नमः।
पादयोः स्वाहा शक्तये नमः, इति विन्यस्य दीक्षाङ्गहोमे विनियोग इति कृताञ्जलिर्वदेत्।
लिङ्गे सरयूं हिरण्यायै नमः। गुदे षरयूं कनकायै नमः।
शिरसि शरयूं रक्तायै नमः। मुखे यरयूं कृष्णायै मनः।
नासिकायां लरयूं सुप्रभायै नमः। नेत्रयो ररयूं रक्तायै नमः।
सर्वाङ्गे यरयूं बहुरूपायै नमः। इति सप्तजिह्वा विन्यस्य,
ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।
उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्।

धूमव्यापिने कवचाय हुं।

सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्।

धनुर्धरायास्त्राय फट्।

इति षडङ्गानि विन्यस्य शिरसि अग्नये जातवेदसे नमः।

वामांसे अग्नये सप्तजिह्वाय नमः। वामपार्श्वे अग्नये हव्यवाहनाय नमः।

वामकट्यां अग्नये अश्वोदराय नमः। लिङ्गे अग्नये वैश्वनराय नमः।

दक्षकट्यां अग्नये कौमारतेजसे नमः। दक्षपार्श्वे अग्नये विश्वमुखाय नमः।

दक्षांसे अग्नये देवमुखाय नमः।

इति मूतीर्विन्यस्यवह्निरूपं स्वात्मानं ध्यात्वा सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य।

कुशकण्डिकाकरणम्

कुण्डस्योत्तरभागे कुशान्तरे स्रुक्स्रुवौ प्रोक्षणीपात्रे आज्यस्थाली चरुस्थाली, परिधित्रयं समित्पञ्चात्मकमिध्मं लूनमूलसाग्रकुशमुष्टिरिति पात्राण्यधोमुखानि संस्थाप्य, अन्यान्यपि दध्यक्षतादिबलिद्रव्याणि गन्धपुष्पादिपूजाद्रव्याणि च यथायथं संस्थाप्याधोमुखानि स्रुक्स्रुवादीनि सपवित्राधोमुखहस्तसेकरूपावेक्षण-पूर्वकमुत्तानीकृत्य, प्रणीतापात्रं प्रक्षाल्य स्वपुरतः कुशान्तरे निधाय शुद्धजलैरापूर्य तत्र गन्धाक्षतान् निक्षिप्य, प्रादेशमात्रं साग्रं कुशद्वयं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुतं जलाग्रे उत्तराग्रं पवित्रं निधाय करद्वयानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं मूलाग्रे विधृत्यास्त्रमन्त्रमुच्चरन् पवित्रमध्येन जलं पात्राद्बहिस्त्रिवारं भूमौ निक्षिपेत्। इत्युत्पवनं विधाय तन्मध्ये किञ्चिद्घृतं निक्षिप्य तत्पात्रं कराभ्यामामस्तकमुद्धृत्य कुण्डस्योत्तरभागे कुशास्तरे निधाय तदुपरि प्रागग्रान् दर्भान् निक्षिपेत्। इति प्रणीतापात्रं संस्थाप्य, प्रोक्षणीपात्रं प्रक्षाल्य शुद्धजलैरापूर्य तन्मध्ये प्रणीतापात्रजलं पात्रान्तरेणोद्धृत्य किञ्चिद् दत्त्वा, तेन जलेन मूलमन्त्रेण सर्वाणि पात्राणि होमद्रव्याणि पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्। इति द्रव्यासादनं विधाय, प्रोक्षणीजलेनाग्निं परिषिच्य गर्भैश्चतुर्भिर्दर्भैः प्राचीदिशमारभ्य प्राच्यामुत्तराग्रैरीशानाद्याग्नेयान्तं परिस्तीर्य, पुनर्दक्षिणस्यां प्रागग्रैः पूर्वपरिस्तरणमूलं मूलेनाच्छादयन्, पुनरुत्तरस्यां प्रागग्रैः पश्चिमपरिस्तरणाग्रं पूर्वपरिस्तरणाग्रमग्रेण

च परिस्तीर्य, परिधित्रयमादाय सर्वतः स्थूलं पश्चिम उत्तराग्रं ततः कनिष्ठं दक्षिणे पूर्वाग्रं, पश्चिमपरिधेर्मूलोपरि मूलं यथा भवति तथा, पुनस्ततोऽपि कनिष्ठमुत्तरस्यां पूर्वाग्रं, पश्चिमपरिधेरग्रोपरि मूलमिति कुण्डस्य मध्यमेखलोपरि परिस्तरणोपरि परिधित्रयं निक्षिपेत्। अत्र पश्चिममेखलायां तु परिस्तरणपरिधि-स्थापनं योनिनालोर्ध्वमेखलयोरन्तराले कार्यमिति। पश्चिमपरिधौ ॐ ब्रह्मणे नमः। दक्षिणपरिधौ ॐ विष्णवे नमः। उत्तरपरिधौ ॐ रुद्राय नमः। इति सम्पूज्य स्वेष्टदेवतादीक्षितं ब्राह्मणमाहूय, कुण्डस्य दक्षिणे भागे कुशासने समुपवेश्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकगोत्रममुकवेदान्तर्गतामुकशाखा-ध्यायिनममुकशर्माणं ममेष्टदीक्षाङ्गभूतहोमकर्मणि कृताकृतवेक्षणाय ब्रह्मत्वेन त्वां वृणे, इति वस्त्रालङ्कारादिभिर्वृणुयात्। ततस्तं गन्धादिभिः सम्पूज्य, ब्राह्मणालाभे कुशवटुं वा सम्पूज्य वह्निमन्त्रेणार्घ्यपाद्याचमनीयमधुपर्कपात्राणि संस्थाप्य, संस्कृत्य, कुण्डमध्ये षट्कोणगर्भितकर्णिकं सकेसरं चतुर्द्वारयुक्तचतुर-स्रत्रयवेष्टितमष्टदलकमलं वह्नेःपूजापीठं विभाव्य, तत्र प्रागुक्तविधिना, मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं योगपीठं समभ्यर्च्य अष्टदलकेसरेषु स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पीतायै नमः, श्वेतायै नमः, अरुणायै नमः, कृष्णायै नमः, धूम्रायै नमः, तीव्रायै नमः, विस्फुल्लिङ्गिन्यै नमः, रुचिरायै नमः, ज्वालिन्यै नमः।

इति मध्यान्तं नवशक्तीः सम्पूज्य, "रं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः" इति समस्तं पीठं सम्पूज्य।

करैर्वरस्वस्तिकशक्त्यभीतीर्दधानमम्भोजगतं त्रिनेत्रम्।
सिन्दूरवर्णं तपनीयभूषणं वह्निं जटाभूषितमौलिमीडे।

इति ध्यात्वा सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य ॐ वैश्वानर जातवेद लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, अग्नये नमः इत्यग्निं त्रिःपुष्पाञ्जलिना सम्पूज्य पुनर्वह्निमन्त्रमुच्चार्याग्नये एतदासनं नमः, एवमग्ने एष ते अर्घ्यः स्वाहा, एतत्ते पाद्यं नमः एतत्ते आचमनीयं स्वधा, एतत्ते मधुपर्कः स्वधा एतत्ते-पुनराचमनीयं स्वधा, एतत्ते स्नानं नमः, इति पुरश्चरणमुखमूर्धादिसर्वाङ्गोद्देशेन मेखलाया बहिः पात्रान्तरे अर्घ्यपाद्यादिस्नानान्तां वह्नेस्तत्तद्भावनां परिकल्प्य

पुनराचमनीयं दत्त्वा वह्नावेव वस्त्रं दत्त्वा पुनराचमनीयं दत्त्वा यज्ञोपवीतं निवेद्य बहिःपुनराचमनीयं दत्त्वा गन्धपुष्पे वह्नावेव निवेदयेत्। इति वह्नि-मन्त्रेणाऽऽसनादि पुष्पान्तानुपचारानुपचर्य षट्कोणेषु देवताग्रादिकोणमारभ्य सरयूं हिरण्यायै नमः। शरयूं कनकायै नमः। षरयूं रक्तायै नमः। वरयूं कृष्णायै नमः। लरयूं प्रभायै नमः। ररयूं अतिरक्तायै नमः। यरयूं बहुरूपायै नमः इति सम्पूज्य अष्टदलकेसरेषु अग्नीशासुरवायव्यदेवता चतुर्दिक्षु

ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः।

ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा नमः।

ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् नमः।

ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुं नमः।

ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् नमः।

ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् नमः। इति षडङ्गानि सम्पूज्य, अष्टदलेषु देवाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ अग्नये जातवेदसे नमः। एवं अग्नये सप्तजिह्वाय नमः अग्नये हव्यवाहनाय नमः अग्नयेऽश्वोदराय नमः अग्नये वैश्वनराय नमः अग्नये कौमारतेजसे नमः अग्नये विश्वमुखाय नमः अग्नये देवमुखाय नमः इति प्रादक्षिण्येनाऽष्टमूर्तीः सम्पूज्य तद्बहिश्चतुरस्रे इन्द्रादीन् सायुधान् सम्पूज्य पुनर्वह्निमन्त्रेण वह्निं सम्पूज्य धूपदीपादि दत्त्वा नैवेद्यमुत्सृज्याग्नौ प्रक्षिप्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा ततःस्रुक् स्रुवौ प्राश्चावधोमुखावग्नौ सन्ताप्य तयोरग्रं कुशाग्रैर्मध्यं मध्यैर्मूलं मूलैरिति त्रिःस्मृत्याऽग्नौ तान् प्रक्षिप्य, स्रुक्स्रुवौ स्वदक्षिणभागे कुशास्तरे निधाय, तदुपर्युत्तराग्रप्रादेशमात्रं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुतं कुशद्वयरूपं पवित्रं निधाय, पात्रान्तरस्थं, शुद्धं गोघृतं दुर्गन्धादिदूषणरहितं वीक्षणादिचतुःसंस्कारैः संस्कृतं 'वमिति' धेनुमुद्रयामृतीकृतं मूलेनाष्टधाभिमन्त्रित-माज्यस्थाल्यां निक्षिप्य, कुण्डादङ्गारानुद्धृत्य मेखलाया बर्हिभूमौ वायव्यकोणे निक्षिप्य तेष्वाज्यस्थालीं हृन्मन्त्रेण निधाय कुशद्वयं प्रज्वाल्य हृन्मन्त्रेणाज्ये निक्षिप्य शेषमग्नौ निक्षिप्य पुनर्दर्भद्वयं प्रज्वाल्य कवचमन्त्रेणाज्यस्थालीमभितः परिभ्राम्य दग्धशेषमग्नौ निक्षिप्य पुनः कुशान् प्रज्वाल्य हृन्मन्त्रेणाज्ये प्रदर्श्य दग्धशेषमग्नौ निक्षिप्य, आज्यस्थालीमुद्धृत्य प्रादक्षिण्येन कुण्डं परितो भ्रामयन् आनीय स्वपुरतः कुशास्तरे निधाय बाह्यस्थानङ्गारान् कुण्डमध्ये निक्षिप्य,

आपः संस्पृश्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां करद्वयेन पवित्रं मूलाग्रे धृत्वा मन्त्रमुच्चरन् पवित्रमध्येन स्वाभिमुखं घृतं त्रिःसंप्लाव्य तत्पवित्रमाज्यस्थाल्यां प्रागग्रं मध्ये निवेश्य, भागद्वयं कृत्वा दक्षिणभागं शुक्लपक्षं वामभागं कृष्णपक्षं परिकल्प्य, पुनस्तथैव वामभागेडां दक्षिणभागे पिङ्गलां मध्ये सुषुम्नामिति नाडीत्रयं सञ्चिन्त्य स्रुवेण दक्षिणभागात् हृन्मन्त्रेणाज्यमादाय ''अग्नये स्वाहा'' इति वह्नेर्दक्षिणनेत्रे हुत्वा अग्नये इदं न मम इत्युद्देशत्यागं विधाय पुनर्हृन्मन्त्रेण वामभागादाज्यं गृहीत्वा ''सोमाय स्वाहा'' इति वह्नेर्वामनेत्रे हुत्वा सोमाय इदं न मम, इत्युद्देशत्यागं विधाय पुनर्हृदयमन्त्रेण मध्यादाज्यं गृहीत्वा ''ॐ अग्निषोमाभ्यां स्वाहा'' इति वह्नेर्ललाटलोचने हुत्वा इदमग्नीषोमाभ्यां न मम इत्युद्देशत्यागं कृत्वा पुनर्दक्षिणभागाद्घृताज्यं गृहीत्वा ''अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा'' इति वह्नेर्वक्त्रे हुत्वा अग्नये हुत्वा अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम इत्युद्देशत्यागं विधाय ''ॐ भूः स्वाहा'' अग्नये इदं न मम, ''ॐ भुवः स्वाहा'' वायवे इदं न मम ''ॐ स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम'' ''ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न ममः, ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा'' इति वह्निमन्त्रेण वारत्रयं हुत्वा अग्नये इदं न मम इत्युद्देशत्यागं कृत्वा ''ॐ अग्नेगर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा'' एवं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनम् इति प्रतिकर्माज्याहुत्यष्टकं हुत्वा वागीश्वराज्जातं वह्निं प्रागुक्तरूपं ध्यायन् ''अग्नेर्जातकर्म सम्पादयानि'' इत्याष्टावाज्याहुतीर्हुत्वा, वह्नेर्नालच्छेदं कृत्वा सूतकं संशोध्य वह्नेर्नामकरणं सम्पादयामि इत्यष्टावाज्याहुतीर्हुत्वा शिवाग्निरिति तस्य नाम कृत्वा।

ॐ वह्नेरुपनिष्क्रमणं सम्पादयानि अग्नेरन्नप्राशनं सम्पादयानि, अग्नेश्चोलं सम्पादयानि, अग्नेरुपनयनं सम्पादयानि, अग्नेर्महानाम्न्यं सम्पादयानि, अग्नेर्महाव्रतं सम्पादयानि, अग्नेरौपनिषदं सम्पादयानि, अग्नेर्गोदानं सम्पादयानि, अग्नेःसमावर्तनं सम्पादयानि, अग्नेरुद्वाहं सम्पादयामि स्वाहा'' इति प्रतिकर्माष्टावाज्यार्हुतीर्हुत्वा वह्नेर्गर्भाधानाद्युद्वाहान्तान् संस्कारान् विधाय वह्नेःपितरौ देवदेव्यौ प्राग्वत्सम्पूज्य विसृज्य, मूलाग्रेषु घृतसंसिक्ताः पञ्चसमिधस्तूष्णीमेकदैवाञ्जलिना वह्नौ समर्प्य ॐ सरयूं हिरण्यायै स्वाहा, एवं षरयूं कनकायै स्वाहा, शरयूं रक्तायै स्वाहा, वरयूं कृष्णायै स्वाहा, लरयूं

सुप्रभायै स्वाहा, ररयूं अतिरक्तायै स्वाहा, यरयूं बहुरूपायै स्वाहा। ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय स्वाहा, एवं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा, उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै स्वाहा, धूमव्यापिने कवचाय स्वाहा, सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय स्वाहा, धनुर्द्धराय अस्त्राय स्वाहा। ॐ अग्नये जातवेदसे स्वाहा। एवं अग्नये सप्तजिह्वाय स्वाहा, अग्नये हव्यवाहनाय स्वाहा, अग्ने अश्वोदराय स्वाहा, अग्नये वैश्वानराय स्वाहा, अग्नये कौमारतेजसे स्वाहा, अग्नये विश्वमुखाय स्वाहा अग्नये देवमुखाय स्वाहा इति जिह्वाङ्गमूर्तिमन्त्रैरेकैकमाहुतिं दत्त्वा ॐ लं इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राय नमः एवं अग्नये स्वाहा, यमाय स्वाहा, निर्ऋतये स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, कुबेराय स्वाहा, ईशानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा, वज्राय स्वाहा, शक्तये स्वाहा, दण्डाय स्वाहा, खड्गाय स्वाहा, पाशाय स्वाहा, अङ्कुशाय स्वाहा, गदायै स्वाहा, शूलाय स्वाहा, पद्माय स्वाहा, चक्राय स्वाहा। एवं तत्तन्नामभिः एकैकामाहुतिं हुत्त्वा सर्वत्र तत्तन्नामोद्देशत्यागं कुर्यात्। ततः स्रुवेणाज्यमादाय चतुर्वारं निक्षिप्याधोमुखं स्रुचो मुखे निधायोत्थाय च, प्रागुक्तवह्निमन्त्रमुच्चार्य स्वाहास्थाने वौषडित्यग्नौ तिष्ठन् स्रुचा हुत्वोपविश्य ॐ स्वाहा, ॐ श्रीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा इति दशधाविभक्तेन महागणपतिमन्त्रेण दशाहुतीर्हुत्वा ''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा'' इति समस्तव्यस्तमन्त्रेण चतस्र आज्याहुतीर्जुहुयात्। *इत्यग्निस्थापनविधिः।*

चरुनिर्माणम्

इत्थमग्निस्थापनं विधाय नूतनताम्रादिपात्रमस्त्रमन्त्रेण प्रक्षाल्य, तत्र मूलमन्त्रेणाष्टधाभिमन्त्रितांस्तण्डुलान् पञ्चदशप्रसृतिमितान् त्रिः प्रक्षालितानस्त्रमन्त्रं जपन्निक्षिप्य तत्र गोदुग्धं वाष्पं यावत्तावत् पक्कं भवति तावन्निक्षिप्य प्रक्षालितेन पात्रेण कवचमन्त्रमुच्चरन् तत्पात्रवदनं पिधाय तदा

तद्दुग्धं वाष्पवशादुपर्यायाति तदा प्रोक्षणेन प्रदक्षिणमूर्ध्वमवघट्टयन् मूलमन्त्रं स्मरन् प्राङ्मुखो गुरुश्चरुं पक्त्वा, शृते तस्मिन् मूलमन्त्रेणाज्यं स्रुवेण निक्षिप्य कवचमन्त्रेण तत्पात्रमवतार्य अस्त्रमन्त्रेणाभिमन्त्रितं कुशास्तरे चरुं निक्षिप्य त्रिधा विभज्यैकं भागं देवाय कुम्भस्थाय निवेद्य, मण्डपं परितः पूर्वमङ्कुरार्पणकर्मणि कृताङ्कुरमार्जनानि निक्षिप्य, घृतपूर्णान्, पिष्टमयदीपांश्च निधाय, कुण्डसमीपं गत्वा स्वासने समुपविश्य, तत्र वक्ष्यमाणविधिना मूलमन्त्रेणार्घ्यादिपात्रस्थापनं विधाय, कुण्डमध्ये वह्नेर्मध्ये वह्नेर्मुखे पूजाचक्रं विभाव्य, तत्र वक्ष्यमाणविधिना साङ्गं सावरणं सर्वोपचारैः पूजयेत्। अत्रार्घ्यादिस्नानान्तमग्निपूजावदेव कुण्डाद्बहिः पात्रान्तरे देवमुद्दिश्य कल्पयेत्। अन्यत्सर्वं कुण्डमध्य एव कल्पयेत्। ततो मूलमन्त्रेण वह्निदेवतयोर्वक्त्रैकी-करणार्थं पञ्चविंशत्याज्याहुतीर्हुत्वा स्वात्माग्निदेवतानामैक्यं विभावयन् मूलेन नाडीसन्धानार्थमेकादशवारं घृतैर्हुत्वा षडङ्गावरणदेवतानामेकैकामाहुतिं हुत्वा प्रागादिदिक्स्थकुण्डेषु ऋत्विग्भिः प्रागुक्तविधिनाऽष्टादशसंस्कारैः संस्कृतेषु गुरुः स्वकुण्डादग्निमुद्धृत्योद्धृत्य निक्षिपेत्। ऋत्विजश्च स्वस्वकुण्डवह्निं प्रागुक्तविधिना प्रज्वाल्योपस्थाय परिषेचनपरिस्तरणपरिधिप्रक्षेपणपूजादिभिः सम्यक् परितोष्य समिद्धे तस्मिन् स्वेष्टदेवतानित्यपूजोक्तविधिना देवमावाह्य ताम्बूलान्तैरुपचारैः सम्यक् सम्पूज्य वक्त्रैकीकरणनाडीसन्धानावरणहोमान्ते मूलमन्त्रेण गुरुणा विभज्य दत्तेन घृतमिश्रेण पायसेन पञ्चविंशतिधा स्वस्वकुण्डे जुहुयुः।

पायसबलिदानविधिः

अथ गुरुः सर्वतोभद्रमण्डलस्य, पूर्वादिवीथिचतुष्टये मेषादिराशिस्थानेषु प्राच्यां मेषवृषौ, आग्नेय्यां मिथुनं, दक्षिणे कर्कटसिंहौ, नैर्ऋते कन्यां, पश्चिमे तुलावृश्चिकौ, वायव्ये धनुः, उत्तरे मकरकुम्भौ, ईशाने मीन इति विभक्तेषु राशिस्थानेषु राश्यधिनाथेभ्यो ग्रहेभ्यो नक्षत्रेभ्यः करणेभ्यश्च हुतशेषेण पायसेन बलिं दद्यात्। यथा–मेषवृश्चिकस्थानयोः कं खं गं घं ङं मेषवृश्चिकराश्यधिपतये मङ्गलाय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः।

चं छं जं झं ञं वृषतुलाराश्यधिपतये शुक्राय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायस बलिर्नमः।

टं ठं डं ढं णं मिथुनकन्याराश्यधिपतये बुधाय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः।
यं....क्षं० १० कर्कटराश्यधिपतये सोमाय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः।
अं १६ सिंहराश्यधिपतये सूर्याय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः। तं थं दं धं नं धनुर्मीनाधिपतये गुरवे एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः।
पं फं बं भं मं मकरकुम्भाधिपतये शनैश्चराय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नमः।

पुनः क्रमेण मेषादि स्थानेषु मेषराश्यंशभूताश्विनीभरणीकृत्तिकापादनक्षत्र-देवताभ्यो दिवानक्तंचरेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नम इत्यादिप्राग्वत्। एवं वृषराश्यंशभूतकृत्तिकापादत्रयरोहिणीमृग-शिरोऽर्धनक्षत्र- देवताभ्यो०। मिथुनराश्यंशभूतमृगशिरउत्तरार्धार्द्रापुनर्वसुपाद-त्रयनक्षत्रदेवताभ्यो०। एवम- ग्रेऽपि मन्त्राः ऊह्याः। ततो मीनमेषयोरन्तराले ववकरणाय एष० इत्यादि एवं वृषमिथुनयोरन्तराले वालवाय एष०। मिथुनकर्कयोर्मध्ये कौलवाय०। सिंहकन्ययोर्मध्ये तैतिलाय० कन्यातुलयोर्मध्ये गराय० वृश्चिकधन्वोर्मध्ये वणिजे०। धनुर्मकरयोर्मध्ये विष्टये एष गन्धाक्षतपुष्पयुक्तपायसबलिर्नमः इति बलिं दद्यात्। अत्र राशिद्वयाधिपतिभ्यो राशिद्वयस्थानेऽपि बलिर्देयः, इति सम्प्रदायः। ततो गुरुः कुम्भस्थाय देवायोत्तरापोशानादिनीराजनान्तं वक्ष्यमाण- विधिना कृत्वा प्रणम्य क्षमापयेत्। ततस्तृतीयभागं शिष्येण सह गुरुर्भुक्त्वा स्वयमाचान्तः स्वाचान्ताय शिष्याय षडङ्गन्यासयोगेन सकलीकृताय प्रादेशमात्रं यथोक्तहृन्मन्त्रेणाष्टधाभिमन्त्रितं दन्तकाष्ठं दद्यात्। शिष्योऽपि तेन दन्तधावनं विधाय दन्तकाष्ठं प्रक्षाल्य पुरतः परित्यज्याचम्य गुरोः समीपं गच्छेत्। ततो गुरुः शिष्यं शिखाबन्धनेन मूलमन्त्राभिमन्त्रितेन संरक्ष्य, तेन सार्धं वेद्यां कुशास्तरणे तस्यां रात्रौ शयनं *कुर्यादित्यधिवासः।*

अत्र प्राक्प्रोक्तविधिनोर्ध्वाम्नायाद्याम्नायदेवतानां दीक्षायां तत्तमन्त्रहोम-स्तद्देवतापूजनक्रम ऋत्विग्भिर्विधेयः। नवग्रहपूजा तु आगमोक्तैर्वैदिकमन्त्रैर्वा विधेया। ईशानकोणवेद्यां पृथगेवेति सम्प्रदाय। "पञ्चषट्कूटविद्याभ्यां शोधितं

बहुवासरैः" इतिक्रमे प्रोक्तक्रमेणैव दीक्षाप्रयोगक्रमः साधीयान् तत्राङ्गत्वेनान्य-मन्त्राकथनात्। षड्दर्शनाङ्गभूतप्रधानदीक्षाविधौ तु षड्दर्शनेष्वङ्गत्वेन ये ये मन्त्रा अभिहितास्तदूरीकृत्यैव ऋत्विक्सामयिकैर्होमजपपूजादयो विधेयाः। गुरुणाऽपि तथैव साङ्गोपाङ्गपूर्णरूपेणोपदेशः कार्यः। वैदिकदर्शनप्राधान्येन यत्रोपदेशस्तत्र श्रुतिस्मृत्युक्तविधिनैव विशेषो बोद्धव्यः, अन्यत्साम्यम्।

वैदिकदर्शनदीक्षायां गणाधिपपूजादिमण्डपपूजाप्रयोगः

अथ वैदिकदर्शनदीक्षायां आदौ गणाधिपपूजादिमण्डपपूजाप्रयोगः। तत्रादौ गणेशपूजा। यजमान आसनोपर्य्युपविश्याऽऽचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा, कुशाक्षतान् हस्ते गृहीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा अद्येत्यादिमासपक्षाद्युल्लेखानन्तरं करिष्यमाणामुकदेवतामन्त्रदीक्षाकर्मणि प्रत्यूहशान्तये गणपतिपूजनमहं करिष्ये, इति सङ्कल्प्यावाहनादिषोडशोपचारैः "गणानां त्वा" इति मन्त्रेण गणपतिं सम्पूज्य बद्धाञ्जलिः प्रार्थयेत्।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।। १।।
पूजा सम्पूर्णतां यातु वाचयित्वा विसर्जयेत्। इति।

ततः पीठेऽक्षतपुञ्जेषु गौर्यादिषोडशमातृका ब्राह्म्यादिसप्तमातृकाश्च पूजयेत्। तास्तु

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिस्तुष्टिस्तथा पुष्टिरात्मनः कुलदेवताः। इति।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।।
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्तमातरः।।

पूजाप्रकारस्तु–पूजोपकरणान्युपकल्प्य प्राङ्मुख उपविश्य कुशयवतिलान्यादाय, अद्येहेत्यादि० करिष्यमाणमन्त्रदीक्षाङ्गभूततया गौर्यादिषोडशमातृपूजनं ब्राह्म्यादिसप्तमातृकापूजनं च करिष्ये इति सङ्कल्प्य अक्षतैः "ॐ भूर्भुवः स्वः गौरीहागच्छ, इह तिष्ठेत्यावाह्य स्वशाखोक्तमन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य गौर्यै नमः

इदमासनमित्यादिरीत्या पदार्थानुसमयेन सर्वाः प्रत्येकमुत्तरसंस्था पूज्या। एवं ब्राह्म्यादिष्वपि। यदा तु मातॄणां गणदेवतात्वं तदा प्रत्येकं नाम गृहीत्वा गौर्यादिभ्य इति चोक्त्वा युगपत् पूजयेत् एवं ब्राह्म्याद्या अपि। ततःस्वाचारतो "वसोः पवित्रमसी" ति कुड्याभग्नाः पञ्च सप्त वा घृतेन धाराः कुर्यात्। तत्पूजनमपि केचिदाहुः। ततःशान्तिपाठः। ततो यथाचारं वृद्धिश्राद्धं सङ्कल्पपूर्वकं स्वशाखोक्तं कुर्यात्।

ततः पुण्याहवाचनम्। तच्चावनिकृतजानु–मण्डल इति पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रीन् ब्राह्मणान् श्रावयेत्। ते च पुण्याहमिति त्रिःप्रतिब्रूयुः। ॐ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रिः ॐ स्वस्ति इति त्रिः प्रतिवचनम्। ॐ ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रिः। ॐ ऋद्ध्यतामिति त्रिः प्रतिवचनम्। ततो मण्डपाद्बहिः पश्चिमदेशे उपलिप्ते यजमानः प्राङ्मुखः उपविश्याचम्य प्राणानायम्य अद्येहेत्यादि अमुकदेवतामन्त्रदीक्षाकर्मकर्तुमाचार्यर्त्विजां वरणमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य आचार्यमुदङ्मुखमुपवेश्य सिताम्बरहेमकुण्डलसूत्रकेयूरकण्ठाभरण्याऽभिरामं कृत्वा बद्धाञ्जलिः "दीक्षादाने त्वं मे गुरुर्भव" इति प्रार्थ्य "भवानि" इति तेनोक्ते अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रममुकवेदान्तर्गतामुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणममुक-प्रवरान्वितामुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं एभिर्गन्धपुष्पाक्षतताम्बूलहेमाभरणाङ्गुलीय-कवासोभिरमुकमन्त्रदीक्षाग्रहणे गुरुत्वेन त्वां वृणे। वृतोऽस्मीति स वदेत्। एवं पूर्वकुण्डे गायत्रीहोमार्थमेकमाग्नेयदक्षिणनैरृत्तपश्चिमवायव्यसौम्येशानकुण्डेषु होमार्थं सप्तब्राह्मणान् एवं नवब्राह्मणान् वृणुयात्। ततःपूर्वद्वारपालनार्थं द्वावृग्वेदिनौ, दक्षिणद्वारपालनार्थं द्वौ यजुर्वेदिनौ पश्चिमद्वारपालनार्थं द्वौ सामगौ, उत्तरद्वारपालनार्थ द्वावथर्वणिकौ एवमष्टौ पृथक् पृथक् वृणुयात्। वरणवाक्यं प्राग्वदेव। एवं पुस्तकाचार्यं वृणुयात्। अत्र द्वारपालकास्तु सर्वदर्शनसाधारणाः। ततः शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनः सपत्नीकः सशिष्यर्त्विक् आचार्यो मङ्गलघोषे जायमाने सम्पूर्णकलशहस्तो "भद्रं कर्णेभिः" इत्यादिमन्त्रघोषेण मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्य मण्डपान्तः पश्चिमदेशे उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाणदीक्षादानाङ्गतया अद्य गणेशपूजामण्डपदेवतास्थापनादि करिष्ये इति सङ्कल्प्य षोडशोपचारैर्गणेशं प्रपूज्य गौरसर्षपान् सर्वतो मण्डपान्ते विकिरेत्। तत्र मन्त्रः रक्षोघ्नाः-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।। १।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाःसर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।।२।।

इति पञ्चगव्येन कुशैः सर्वत्र सर्वतः प्रोक्षयेत्। "शुचि वो हव्ये" ति "आपोहिष्ठे" ति ऋचः। ततः कृताञ्जलिः 'स्वस्त्ययनं' 'तार्क्ष्यं' मिति मन्त्रद्वयं जपेत्। ततः पूर्वस्यां दिशि मण्डपद्वाराद्बहिर्हस्तमात्रे वटतोरणमश्वत्थं वा सुदृढनामकं सुशोभननामकं वा शङ्खाङ्कितं"अग्निमीळे पुरोहित" मिति विधाय नाम्ना सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा राहुं बृहस्पतिं तत्र न्यसेत्। तत्रैकः कलशः स्थाप्यः। तत्र मन्त्रा–'महीद्यौ' रिति भूमिस्पृशनं प्रार्थ्य "ओषधयः स मिति यवान् क्षिप्त्वा "आकलशेष्वि' ति "आजिघ्रकलश" मिति वा कलशं निधाय "इमं मे गङ्गे" इति जलेनापूर्य यवान् 'गन्धद्वारा' मिति गन्धं 'या औषधोरीति' सर्वौषधीः 'औषधयः स'मिति यवान्, 'काण्डात्काण्डा' दिति दूर्वाः "अश्वत्थे वो" इति पञ्चपल्लवान् "स्योना पृथिवि" इति पञ्चमृदः "याः फलिनी" रिति फलम् "स हि रत्नानी' ति पञ्चरत्नानि "हिरण्यरूप" मिति हिरण्यं क्षिप्त्वा "युवा सुवासा" इति वस्त्रेण रक्तसूत्रेण च मुखे वेष्टयेत्। "पूर्णा दर्वी" त्युपरि धान्यपूर्णशरावं निधाय तत्र ध्रुवमावाह्य पूजयेत्। ततो दक्षिणे औदुम्बरं वा सुभद्रं विकटम्वा चक्राङ्कितं तोरणं "इषेत्वोर्जेत्वा" इति निधाय नाम्ना पूर्ववत् सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा सूर्यमङ्गारकं च न्यसेत्। ततः पूर्ववत् कलशं स्थापयित्वा तत्र धरामावाह्य पूजयेत्।। ततः पश्चिमे प्लक्षमौदुम्बरं वा सुहोत्रं सुप्रभं पद्माङ्कितं तोरणं "शन्नोदेवी" इति निधाय नाम्ना पूर्ववत् सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा शुक्रं बुधं च तत्र न्यसेत्। पूर्ववत्कलशं निधाय वाक्पतिमावाह्य पूजयेत्। तत उत्तरे वाटमाश्वत्थं पालाशम्वा पूर्णसुकर्मसु भीमं वा गदाङ्कितं तोरणं "अग्नआयाहि' इति निधाय नाम्ना सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा "सोमकेतुशनींस्तत्र" न्यसेत्। ततः पूर्ववत् कलशं निधाय तत्र विघ्नेशमावाह्य पूजयेत्। ततः पूर्वद्वारे द्वारशाखाद्वये

कलशद्वयं दध्यक्षतभूषितं पूर्ववन्मन्त्रैः स्थापयेत्। प्रतिकलशं मन्त्रावृत्तिः। ऐरावतकलशद्वयं न्यस्य पूजयेत्। तत्र ऋग्वेदिनौ ऋत्विजौ–

ऋग्वेदः पद्मपात्रो गायत्र्यः सोमदैवताः।
अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखे कुरु।। १।।

इति प्राथ्र्य प्रत्येकं "अग्निमीले" इति गन्धादिना पूजयेत् ततः।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन्नमस्ते।। १।।

भो इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठेति इन्द्रं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं द्वारकलशे आवाह्य तत्र "त्रातारमिन्द्र" मितीन्द्रं सम्पूज्य "आशुःशिशान" इति पीतां पताकां पीतं च ध्वजद्वयमपि पञ्चहस्तदण्डमुच्छ्रयेत्। "इन्द्रं वो विश्वतस्परि" इति वा मन्त्रः तत्र सहस्राक्षं मत्तैरावतस्थितं पीतकिरीटकुण्डलधरं दक्षिणवामकरस्थवज्रोत्पलमिन्द्रं ध्यात्वा–

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः।

इति नत्वा इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्।। तत आचम्याग्नये गत्वा पूर्ववत् कलशं निधाय पुण्डरीकं पूजयित्वाऽमृतं च प्रपूज्य–

एह्येहि वैश्वानर हव्यवाह! मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्ट।
तेजोवतालोकगणेन सार्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते।।२।।

भो अग्ने इहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमग्निं कलशे आवाह्य "त्वं नो अग्ने" इत्यग्निं गन्धादिना प्रपूज्य "अग्निदूतं" इति रक्तां पताकां रक्तध्वजं पञ्चहस्तदण्डमुच्छ्रयेत्। ततश्छागस्थं रक्तं दक्षिणवामकरधृतरक्तकमण्डलुं यज्ञोपवीतिनमग्निं ध्यात्वा–

आग्नेयः पुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादिकमुक्त्वा अग्नये एतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्। तत आचम्य दक्षिणे गत्वा प्रतिद्वारशाखं पूर्ववत् कलशद्वयं संस्थाप्य वामनगजं तत्र न्यस्य पूजयेत् ततो यजुर्वेदविदावृत्विजौ–

कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः।
काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र! शान्तिपाठं मखे कुरु।। १।।

इति प्रत्येकं प्रार्थ्य गन्धादिना ''इषेत्वोर्जेत्वा'' इति पूजयेत्। ततः–

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।
शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखे नमस्ते।। ३।।

भो यमेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं यममावाह्य ''यमाय सोम'' मिति गन्धादिभिः पूजयित्वा कृष्णां पताकां कृष्णं च ध्वजं पञ्चहस्तायतं दण्डं ''आयं गौ'' रिति उच्छ्रयेत्। ततो महिषारूढं धृतदण्डपाशदक्षिणवामकरद्वयं कृष्णाञ्जनचयनिभमग्निसमनयनं यमं ध्यात्वा

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजां मे प्रतिगृह्यताम्।। १।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि यमायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्। तत आचम्य नैर्ऋत्यां पूर्ववत्कलशं स्थापयित्वा कुमुदगजं दुर्जयञ्च पूजयित्वा

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः।
ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ! लोकेश्वरस्त्वं भगवन्नमस्ते।।४।।

भो निर्ऋते! इहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टमावाह्य ''मोषण'' इति ''असुन्वन्त'' मिति वा निर्ऋतिं गन्धादिभिः पूजयित्वा नीलां पताकां ध्वजं च पञ्चहस्तदण्डं ''मोषुण'' इत्युच्छ्रयेत्। ततो नरारूढं खड्गहस्तं नीलवर्णं नीलाभरणं निर्ऋतिं ध्यात्वा,

नरारूढं महाकायं खड्गहस्तं महाबलम्।
नीलं रक्षोगणैर्जुष्टं नीलाभरणभूषितम्।। १।।
निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकनायकम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजां मे प्रतिगृह्यताम्।। २।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि निरृतये एतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्। तत आचम्य पश्चिमद्वारे प्रतिशाखं कलशद्वयं पूर्ववत् स्थापयित्वा अञ्जनं दिग्गजं न्यस्य पूजयेत्। ततः सामवेदविदावृत्विजौ-

सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जगतः शुक्रदैवतः।
भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र! शान्तिपाठं मखे कुरु।। १।।

इति प्रार्थ्य गन्धादिना "अग्न आयाहि" इति पूजयेत्।। ततः

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते।। ५।।

भो वरुणेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं वरुणमावाह्य "तत्त्वायामि" इति गन्धादिभिः पूजयित्वा श्वेतां पताकां ध्वजं च "इमं मे वरुण" इत्युच्छ्रयेत्। ततो मकरस्थं पाशहस्तं शुक्लवर्णं किरीटधारिणं वरुणं ध्यात्वा

पाशहस्तं च वरुणमर्णसां निधिमीश्वरम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्वरुणाय नमो नमः।। १।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि वरुणायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्। तत आचम्य वायव्यां पूर्ववत् कलशं निधाय पुष्पदन्तं सिद्धार्थं च सम्पूज्य-

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय! गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।६।।

भो वायो इहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं वायुमावाह्य "तव वायवृतस्पतये" इति गन्धादिना पूजयित्वा धूम्रां पताकां ध्वजं च "वायोशत" मित्युच्छ्रयेत्। ततो मृगाधिरूढं चित्राम्बरध्वजधरदक्षवामहस्तं वायुं ध्यात्वा

वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगवाहनम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम्।। १।।
अनाकारो महौजाश्च पशुदृष्टिगतिर्दिवि।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च।।२।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि वायवे एतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात्।

तत आचम्य द्वारे प्रतिद्वारशाखं कलशद्वयं प्राग्वत् स्थापयित्वा सार्वभौमं दिग्गजं न्यस्य प्रपूज्य, अथर्वणविदावृत्विजौ।

बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो गुरुदैवतः।
वैशम्पायन विप्रेन्द्र! शान्तिपाठं मखे कुरु।। १।।

इति प्रार्थ्य "शन्नोदेवी" रिति गन्धादिना प्रपूज्य ततः

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम्।
सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।७।।

भो सोमेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं सोममावाह्य "सोमो धेनुं" "वयं सोमे" ति वा पूजयित्वा हरितां श्वेतां पताकां ध्वजं च "आप्यायस्व" इति न्यस्य नरयुतविमानस्थं कुण्डलहारकेयूररुचिरं वरगदाधरदक्षिणवामभुजद्वयं मुकुटिनं महोदरं महाकारं हरितवर्णं कुबेरं ध्यात्वा,

सर्वनक्षत्रमध्ये तु सोमो राजा व्यवस्थितः।
तस्मै सोमाय देवाय नक्षत्रपतये नमः।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि सोमायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात्।।

तत आचम्य ऐशान्यां पूर्ववत् कलशं निधाय सुप्रतीकं मङ्गलं च तत्र संम्पूज्य,

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलखट्वाङ्गधारिन् स्वगणेन सार्धम्।
लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।८।।

भो इशानेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टमीशानमावाह्य "तमीशान" मिति गन्धादिना प्रपूज्य श्वेतां सर्ववर्णाम्वा पताकां ध्वजं च "अभित्वा-देवसवितः' इत्युच्छ्रयेत्। ततो वृषारूढं दक्षिणवामहस्तधृतवरत्रिशूलं त्रिनेत्रं शुक्लवर्णमीशानं ध्यात्वा,

वृषस्कन्धसमारूढं शूलहस्तं त्रिलोचनम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजां मे प्रतिगृह्यताम्।। १।।
सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः।
शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः।। १।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि ईशानायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात्।। तत आचम्य ईशानपूर्वयोर्मध्येऽधः–

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र! नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसभ्यैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्।। ९।।

भो अनन्तेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टमनन्तमावाह्य "आयंगौ" रिति। गन्धादिभिरभ्यर्च्य मेघवर्णां श्वेतां पताकां ध्वजं च "आयंगौ" रित्युच्छ्रयेत्।

अनन्तशयनासीनं फणासप्तकमण्डितम्।
पद्मशङ्खधरोर्ध्वाधोदक्षभागकरद्वयम्।
चक्रगदाधरोर्ध्वाधो वामभागकरद्वयम्।

इति नीलवर्णमनन्तं ध्यात्वा

योऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम्।
पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमोनमः।। १।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि अनन्तायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात्। ततः आचम्य पश्चिमनैर्ऋतमध्ये ऊर्ध्वम्

एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्धं पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धाताऽस्यमितप्रभावो विशाध्वरं नः सततं शिवाय।। १०।।

भो ब्रह्मन्निहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं ब्रह्माणमावाह्य "ब्रह्मजज्ञान" मिति गन्धादिभिरभ्यर्च्य रक्तां पताकां स्रुवकमण्डलुधरोर्ध्वाधोवामकरद्वयं चतुर्मुखं श्मश्रुजटिलं लम्बोदरं रक्तवर्णं ब्रह्माणं ध्यात्वा–

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदावासः पितामहः।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।१।।

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि ब्रह्मणे एतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात्। तत आचम्य मण्डपमध्ये चामरकिङ्किणीयुतात्युच्चदण्डान् दशषोडशहस्तदण्डे वा दशहस्तदीर्घस्त्रिहस्तविस्तारः पञ्चहस्तदीर्घो हस्तविस्तारो वा महाध्वजो विचित्रवर्णः "इन्द्रस्य वृष्णो" इति संस्थाप्य "ब्रह्मजज्ञान" मिति च तत्रैव ब्रह्मपूजनं कार्यम्। ततो मण्डपषोडशस्तम्भेषु सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः। ततः पूर्वस्यां दिशि किञ्चिद्भूमिमुपलिप्योपविश्य।

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।

ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।। १।।

देवदानवगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः।
ऋषयो मानवो गावो देवमातर एव च।। २।।
सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैःसह।। ३।।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः। इति।

त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः, शिवाय नमः, देवेभ्यो नमः, गन्धर्वेभ्यो नमः दानवेभ्यो नमः, यक्षेभ्यो नमः, राक्षसेभ्यो नमः, पन्नगेभ्यो नमः, ऋषिभ्यो नमः, मानुषेभ्यो नमः, गोभ्यो नमः, देवमातृभ्यो नमः, इति प्रत्येकं सम्पूज्य पुष्पादियुतं पूर्ववन्मन्त्रैरेव तस्यां भूमावेवैतेभ्य एव माषभक्तबलिं दद्यात्।।

ततः आचार्यः सर्त्विकः प्रक्षालितपादपाणिराचान्तः प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविश्य दक्षिणद्वारपश्चिमदेशे उपविश्याचम्य "भो ब्राह्मणा यथाविहितं कर्म कुरुध्वमिति ब्रूयात्'। ततो गुरुर्महावेद्युपरि पुष्पाणि विकीर्य उपरि च वितानं पञ्चवर्णं फलपुष्पोपशोभितं वेदिमानं बध्नीयात्। ग्रहवेद्याश्च तन्मानं बध्नीयात् सर्वतोभद्रं च लिखेत्। पूर्णाभिषेकदीक्षायां तु नवहस्तपरिमितवेद्यां श्रीचक्रं तत्तदिष्टदेवताचक्रं वा रचयेत्।

नवहस्तं त्रिहस्तम्वा श्रीचक्रमभिषेचने।
स्थण्डिले नित्यपूजायां हस्तमात्रं प्रशस्यते।। १।।

इति तन्त्रराजवचनात्। तस्मिन्पक्षे ग्रहवेदी सर्वतोभद्रमण्डलवेदी चैशान्यां क्रियेते। गुरुमण्डलवेदी वायव्ये मिथुनपूजावेदी आग्नेये तद्दिननित्यापूजावेदी वास्तुमण्डलसमीपे इति सम्प्रदायः। तथाऽत्रावसरे आचार्यः स्वगृह्योक्तविधिना ऋत्विजोऽग्निस्थापनं कुर्युः। गुरुश्च सर्वकर्माध्यक्षस्तिष्ठेत्।

सर्वतोभद्रमण्डलपूजनम्

एवमग्निषु प्रणीतेषु गुरुर्ग्रहवेद्यां सर्वतोभद्रे च अद्येहेत्यादि दीक्षादानाख्यकर्माङ्गतया मण्डपदेवतास्थापनं करिष्ये, इत सङ्कल्प्य ब्रह्मादीन् स्थापयेत्। मध्ये ब्रह्मा "ब्रह्मजज्ञानं" गौतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मस्थापने पूजने च विनियोगः। एवमुत्तरत्र। "ॐ ब्रह्मजज्ञानं"।। १।। उत्तरे सोमः 'वयं

सोम'।।२।। ऐशान्याम् ईशानः "ॐ अभित्वादेव सवितः"।।३।। पूर्वे इन्द्रः "इन्द्रं वो" मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री।।४।। आग्नेये अग्निः "अग्नि" काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री "अग्निं दूतं वृणीमहे"।।५।। दक्षिणे यमः "यमाय सोमं" वैवस्वतो यमो यमोऽनुष्टुप्।।६।। नैर्ऋत्यां निर्ऋतिः "मो षुणो" घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री।।७।। पश्चिमे वरुणः "तत्त्वायामि" शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप्।।८।। वायव्यां वायुः वायोशतं गौतमो वामदेवो वायुरनुष्टुप्।।९।। वायुसोममध्येऽष्टौ वसवः "ज्मया अत्र" मैत्रावरुणो वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप्।।१०।। सोमेशानमध्ये एकादशरुद्राः "आ रुद्रासः" श्यावाश्वस्यैकादशरुद्रा जगती "आ रुद्रासः" ईशानेन्द्रमध्ये द्वादशादित्याः "त्यान्नु क्षत्रियान" सांमदो (मत्स्यो)।।११।। मध्ये द्वादशादित्या गायत्री।।१२।। इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ "अश्विना" राहूगणो गौतमोऽश्विनौ उष्णिक्।।१३।। अग्नियममध्ये विश्वेदेवाः सपैतृकाः "ओमासः मधुच्छन्दाविश्वेदेवा गायत्री।।१४।। यमनिर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षाः "अभित्यं" वामदेवः सप्तयक्षाः प्रकृतिः "ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योकविक्रतुमर्चामि सत्यसवं रत्नधामभिः प्रियं मतिं कविं मतिम्। ऊर्ध्वा यस्या मतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीतः सुक्रतुः प्रियास्वः।।१५।। निर्ऋतिवरुणमध्ये भूतनागाः सर्पाः "आयं" गौ सार्पराज्ञी सार्पा गायत्री "आयंगौः"।।१६-१७।। वरुणवायुमध्ये गन्धर्वाप्सरसः "अप्सरसां" एतश ऋष्यशृङ्गो गन्धर्वाप्सरसोऽनुष्टुप् "ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां"।।१८।। ब्रह्मसोममध्ये स्कन्दनन्दीश्वरशूलमहाकालाः "कुमार" कुमारः स्कन्दस्त्रिष्टुप् ऋषभं मा नन्दी 'प्रैतुव्वाजी', ईश्वरः 'ईशानः', शूलः, महाकालश्च।।१९-२३।। ब्रह्मेशानमध्ये दक्षादि सप्तकोणे वा "अदितिः" लोक्यो बृहस्पतिर्दक्षोऽनुष्टुप् "ॐ अदितिर्ह्यजनिष्ट" ।।२४।। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गा विष्णुश्च "ताग्निवर्णा" सौभरिदुर्गा त्रिष्टुप्। ॐ तामग्निवर्णाम्"।।२५।। "इदं विष्णुः" काण्वो मेधातिथिर्गायत्री "ॐ इदं विष्णुः।।२६।। ब्रह्माग्नेयःमध्ये स्वधा "उदीरतां" शङ्खः स्वधा त्रिष्टुप् "उदीरतामवर"।।२७।। ब्रह्मयममध्ये विष्णुमृत्युरोगाः "परंमृत्यो" सङ्कसुको मृत्युरोगास्त्रिष्टुप्।।२८।। ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिः "गणानां त्वा" गृत्समदा गणपतिर्जगती।।२९।। ब्रह्मवरुणमध्ये

आपः "शन्नो" अम्बरीषः सिन्धुद्वीप आपो गायत्री।।३०।। ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः "मरुतो यस्य" राहूगणां गौतमामरुता गायत्री।।३१।। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथ्वी "स्योना" मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री।।३२।। तत्रैव गङ्गादिनद्यः "इमंमे" सिन्धुक्षित प्रैयमेधो,, गङ्गायमुनासरस्वत्यो जगती।।३३।। तत्रैव सप्तसागराः "धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुण नो मुञ्च। यदापो अघ्न्या इत वरुणेति शपामहे ततो वरुणो नो मुञ्च। मयि गयो मोषधीर्हि सरितो विश्वव्यचाभूस्त्वेतो वरुण नो मुञ्च।।३४।। तदुपरि मेरुं नाम्ना पूजयेत्।।।३५।। बाह्ये सोमादिसमीपे क्रमेणायुधानि- गदा० त्रिशूल० वज्र० शक्ति० दण्ड० खड्ग०, पाश० अङ्कुश० च प्रतिष्ठाप्य। तद्बाह्ये उत्तरादितः गौतमः, भरद्वाजः, विश्वामित्रः, कश्यपः, जमदग्निः, वसिष्ठः, अत्रिः, अरुन्धतीति।।८।। तद्बाह्ये पूर्वादित ऐन्द्री, कौमारी, ब्राह्मी, वाराही, चामुण्डा, वैष्णवी, माहेश्वरी, वैनायकी, इत्यष्टौ शक्तयः एतान् स्वस्वमन्त्रैः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सह वा पूजयेत्। एवमग्निं प्रणीय देवतास्थापनवेद्यां ग्रहादिपञ्चाशीतिदेवतास्थापनं कुर्यात्।

ग्रहादिपीठदेवतास्थापनम्

तत्राऽयं प्रयोगः। अद्येहेत्यादिदीक्षादानाख्यकर्मणि ग्रहादिपीठदेवतास्थापनमहं करिष्ये। प्रणवस्य परब्रह्मऋषिः परमात्मा देवता देवीगायत्रीछन्दः व्याहृतीनां क्रमेण जमदग्निभरद्वाजभृगवो ऋषयः अग्निवायुसूर्या देवताः देवीगायत्रीदेवी-उष्णिक्देवीबृहत्यश्छन्दांसि सूर्याद्यावाहने विनियोगः। तत्र ग्रहपीठमध्ये वर्तुले द्वादशाङ्गुले मण्डले प्राङ्मुखं सूर्यं रक्तपुष्पाक्षतैः आकृष्णेति हरिण्यस्तूपऋषिः सवितादेवता त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यावाहने विनियोगः। "आकृष्णेन०" ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र सूर्येहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्। तत आग्नेये चतुरस्रे चतुर्विंशत्यङ्गुले मण्डले प्राङ्मुखं सोमं श्वेतपुष्पाक्षतैः आप्यायस्वेति गौतमः होमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः "ॐ आप्यायस्व०" ॐ भूर्भुवः स्व० यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र सोमेहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।२।। ततो दक्षिणे त्रिकोणे त्र्यङ्गुले मण्डले दक्षिणमुखं भौमं रक्तपुष्पाक्षतैः अग्निर्मूर्धेतिविरूपः अङ्गिरसोऽङ्गारको गायत्री अङ्गारकावाहने विनियोगः। "ॐ अग्निर्मूर्धा०" ॐ भूर्भुवः स्वः

सरस्वतीसमुद्भव भारद्वाजसगोत्र भौमेहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।३।। तत ऐशान्ये बाणाकारे चतुरङ्गुले मण्डले उदङ्मुखं बुधं पीतपुष्पाक्षतैः उद्बुध्यस्वमिति बुधःसौम्यो बुधस्त्रिष्टुप् बुधावाहने विनियोगः। "ॐ उद्बुध्यस्व०" ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुधेहा-गच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।४।। तत उत्तरतो दीर्घचतुरस्रे षडङ्गुले उदङ्मुखं बृहस्पतिं पीतपुष्पाक्षतैः बृहस्पतये इत गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् बृहस्पत्यावाहने विनियोगः। "बृहस्पतेऽतिय०" ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु-देशोद्भवाङ्गिरससगोत्र बृहस्पते इहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।५।। ततः पूर्वे पञ्चकोणे नवाङ्गुले मण्डले प्राङ्मुखं शुक्रं शुभ्रपुष्पाक्षतैः शुक्र इति पाराशरः शुक्रो द्विपदाविराट् शुक्रावाहने विनियोगः। "ॐ शुक्र शुशुक्कान्" ॐ भूर्भुवः स्वः भोजराड्देशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्रेहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।६।। ततः पश्चिमे धनुषि द्व्यङ्गुले प्रत्यङ्मुखं शनिं कृष्णपुष्पाक्षतैः शमग्निरिति इरिंबिठिः शनैश्चरउष्णिक् शन्यावाहने विनियोगः। "ॐ शमग्निः" ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र शने इहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति संस्थापयेत्।।७।। ततः कृष्णशूर्पमण्डले दक्षिणमुखं राहुं धूम्रपुष्पाक्षतैः 'कयान' इति वामदेवो राहुर्गायत्री विनियोगः। "ॐ कयानः" ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वदेशोद्भव पाटलिसगोत्र राहो इहागच्छेत्यावाह्येह तिष्ठेति स्थापयेत्।।८।। ततो वायव्ये ध्वजाकारे मण्डले दक्षिणमुखान् केतून् कृष्णपुष्पाक्षतैः" केतुं कृण्वन्निति मधुच्छन्दाः केतवो गायत्री केत्वावाहने विनियोगः। "ॐ केतुं कृण्वन्" ॐ भूर्भुवः स्वः मध्यदेशोद्भवा जैमिनिसगोत्राः केतव इहागच्छतेत्यावाह्येह तिष्ठतेति स्थापयेत्।। ९।।

अथाधिदेवताः—श्वेतपुष्पाक्षतैः क्रमात् सूर्यादीनां दक्षिणतः स्थाप्याः। "त्र्यम्बकं" वशिष्ठो रुद्रोऽनुष्टुप्। विनियोगः सर्वत्र देयः। "त्र्यम्बकं" ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वरः।। १।। "गौरीर्मिमाय" दीर्घतमा उमा जगतीसोम दक्षिणे।।२।। "यदक्रन्दो" दीर्घतमा स्कन्दस्त्रिष्टुप्।।३।। "विष्णो" दीर्घतमा विष्णुस्त्रिष्टुप्।।४।। "ब्रह्मजज्ञानं" गौतमी वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप्।।५।। "इन्द्रं वो" मधुछन्दा इन्द्रो गायत्री।।६।। "यमायसोमं" यमो यमोऽनुष्टुप्।।७।। "मोषुणो" घोरः कण्वो गायत्री।।८।।

"उषोवाजं" प्रस्कण्विश्चात्रगुप्तो बृहती।।९।। "एवमेव" शुक्लपुष्पाक्षतैर्ग्रहाणां नमो मन्त्रान्ते व्याहृतीरुक्त्वा इहागच्छेह तिष्ठेति चोक्त्वा प्रत्यधिदेवताः स्थापयेत्।

प्रत्यधिदेवताः–"अग्निं" काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री, "अग्निदूतं"।। १।। "अप्सुमे- धातिथिरापोऽनुष्टुप्।।२।। "स्योना" मेधातिथिर्भूमिगायत्री।।३।। "इदं विष्णुः" मेधातिथिर्विष्णुगायत्री।।४।। "इन्द्रः श्रेष्ठानि" गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्।।५।। "इन्द्राणी" वृषाकपिरिन्द्राणीपङ्क्तिः।।६।। "प्रजापते न" हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्।।७।। "अयं गौः" सार्पराज्ञी सार्पा गायत्री।।८।। "ब्रह्म जज्ञानं" गौतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप्।।९।।

लोकपालाः–ततः शुक्लपुष्पाक्षतैर्विनायकादीन् पञ्चलोकपालान् स्थापयेत्। "गणानां त्वा०" गृत्समदो गणपतिर्जगती, राहोः (वामे) विनायकम् ।। १।। "जातवदसे" काश्यपो दुर्गात्रिष्टुप्, शनेरुत्तरतो दुर्गा०।।२।। "तव वामवृतस्पते" आङ्गिरसो वायुर्गायत्री, रवेरुत्तरतो वायु०। एतान् मन्त्रान्पठन्ति साम्प्रदायिकाः।।३।। "आदित्प्रत्नस्य" वत्सआकाशो गायत्री राहोर्दक्षिणे आकाशम्।।४।। "एषो उषा" प्रस्कण्वोऽश्विनौ गायत्री अश्विनाविहागच्छतमिहतिष्ठतमिति केतोर्दक्षिणेऽश्विनौ।।५।।

दिग्पालाः–"इन्द्रं विश्वजेता मधुच्छन्दस् इन्द्रोऽनुष्टुप्, इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठेति पूर्वे इन्द्रं। एवमुत्तरत्र।। १।। "अग्नि" मेधातिथिरग्नि- र्गायत्री।।२।। "यमाय सोमं" यमो यमोऽनुष्टुप्।।३।। "मोषुणो" घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री।।४।। "त्वन्नो अग्ने" वामदेवो वरुणस्त्रिष्टुप्।।५।। "तववायो" व्यश्व्योवायुर्गायत्री।।६।। "सोमो धेनुं" गौतमः सोमस्त्रिष्टुप्।।७।। "तमीशानं" गौतमःसोम ईशानो गायत्री।।८।। "सहस्रशीर्षः" नारायणोऽनन्तोऽनुष्टुप्, ईशानपूर्वयोर्मध्येऽनन्त०।।९।। नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये ब्रह्माणम्० "ब्रह्मजज्ञानं" गौतमो वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप्।।१०।।

ततः उत्तरे "क्षेत्रस्य" वामदेवः क्षेत्रपालोऽनुष्टुप्। "वास्तोष्पते" वसिष्ठो वास्तोस्पतिस्त्रिष्टुप्। ततः

सामवनिशशीरस्त्वं गहनं परमेष्ठिनः।

विषयापहरो नित्यमतःशान्तिं प्रयच्छ मे ।।१।।

इत्यनेन चोत्तरे गरुत्मन्तमावाह्य। रवेः पूर्वे शेषं, सोमस्याग्रे वासुकिं, भौमाग्रे तक्षकं, बुधोत्तरे कर्कोटकं, बृहस्पतेरग्रे पद्मकं, शनिपश्चिमे शङ्खपालं, राहोःपुरः कम्बलं, केतोः पुरः कुलिकम्। पीठान् प्राच्यामश्विन्यादिसप्तनक्षत्राणि, विष्कुम्भादिसप्तयोगान्, बववालवकरणे, सप्तद्वीपानि ऋग्वेदं च। दक्षिणे पुष्यादिसप्तनक्षत्राणि, धृत्यादिसप्तयोगान् कौलवतैतिले करणे, सप्तसागरान्, यजुर्वेदश्च। पश्चिमे स्वात्यादिसप्तनक्षत्राणि वज्रादिसप्तयोगान्, गणवणिजे करणे, सप्तपातालानि, सामवेदश्च। उत्तरेऽभिजिदादिसप्तनक्षत्राणि, साध्यादिषड्योगान्, विष्टिकरणं भूरादिसप्तलोकान् अथर्ववेदश्च। वायव्ये ध्रुवं सप्तर्षींश्च। अथ यथावकाशं गङ्गादिसप्तसरितः सप्त कुलाचलान्, अष्टौ वसून, द्वादशादित्यान्, एकादशरुद्रान् एकोनपञ्चाशन्मरुतः, षोडशमातॄः, षड्ऋतून्, द्वादशमासान्, द्वे अयने पञ्चदशतिथीः, षष्टिसम्वत्सरान्, नागान्सर्पान्, यक्षान्, गन्धर्वान्, विद्याधरान्, अप्सरसः, रक्षांसि भूतानि मनुष्यान् इति। ततो ऐशान्यां कलशं स्थाप्य तत्र वरुणमावाह्य सम्पूज्याभ्यर्च्चयेत्।

कलशाभिमन्त्रणम्

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।। १।।
कुक्षौ तु सागराःसर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।। २।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।। ३।।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः।
देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ ।। ४।।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि, देवाःसर्वे त्वयि स्थिताः।। ५।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवःस्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।। ६।।

आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।। ७।।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव !।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। ८।। इति।

ततः फलपुष्पमालोल्लसितं वितानं बृहस्पतिदैवतं सूर्यादिभ्य इदं न ममेत्युत्सृज्य ग्रहवेद्युपरि बध्नीयात्। एवं वेदोक्तमण्डपप्रतिष्ठादिकं विदध्यादिति। अन्यत्सर्वं प्रागुक्तविधिना विधेयम्। ततो गुरुः शूद्रव्यतिरिक्तं शिष्यं पञ्चगव्यं पाययित्वा पीठन्यासं कारयेत्।

योगपीठन्यासः

(तत्रांसद्वयोरुद्वयकल्पितपादचतुष्टयं मुख-नाभि-पार्श्वद्वयकल्पितगात्रचतुष्टयं योगपीठं निजदेहे ध्यात्वा न्यसेत्।)

(मूलाधारे)-ऐं ह्रीं श्रीं महाकालाय ३ रक्तवर्णाय मण्डूकाधाराय नमः।

(उपरि स्वाधिष्ठान-पर्यन्तं)-३ पञ्चवक्त्र-दशभुजाय रक्तकृष्णवर्ण-वाम-दक्षिणपार्श्वाय कालाग्निरुद्राय नमः।

(तदुपरि नाभिपर्यन्तं)-३ बन्धूकरुचिरायै मूलप्रकृतये नमः।

(तदुपरि हृदयपर्यन्तं)-३ शरच्चन्द्रप्रभायै पङ्कजद्वयधारिण्यै आधार-शक्त्यै नमः।

(तदुपरि हृदय एव)-३ कूर्माय नमः। ३ अनन्ताय नमः। ३ वराहाय नमः। ३ पृथिव्यै नमः। अमृतार्णवाय नमः। ३ (अं आं इत्यादि-क्षान्तं मातृकामुच्चार्य) नवखण्डविराजिताय नवरत्नमयद्वीपाय नमः।

(तत्रैव नवखण्डेषु ईशानादिमध्यान्तं प्रादक्षिण्यक्रमेण नवरत्नानि न्यसेत्)-३ अं १६ पुष्परागरत्नाय नमः, ३ कं ५ नीलरत्नाय नमः, ३ चं ५ वैडूर्यरत्नाय नमः, ३ टं ५ विद्रुमरत्नाय नमः, ३ तं ५ मौक्तिकरत्नाय नमः, ३ पं ५ मरकतरत्नाय नमः, ३ यं ४ वज्ररत्नाय नमः, ३ शं ४ गोमेदरत्नाय नमः, (मध्ये) ३ लं क्षं पद्मरागरत्नाय नमः।

(तत्रैव)-३ सुवर्णपर्वताय नमः, ३ नन्दनोद्यानाय नमः, ३ कल्पकोद्यानाय नमः।

(तत्रैव)-३ वसन्तादिषड्ऋतुभ्यो नमः। (पश्चिमे) ३ इन्द्रियाश्वेभ्यो नमः (पूर्वे)-३ इन्द्रियार्थगजेभ्यो नमः, ३ विचित्ररत्नभूमिकायै नमः।

(तत्र पश्चिमादि-मध्यान्तं विलोमेन नव चक्राणि न्यसेत्।) ३ काल-चक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ३ मुद्राचक्रेश्वरी नमः। ३ मातृकाचक्रेश्वरी नमः। ३ रत्नचक्रेश्वरी नमः। ३ देशचक्रेश्वरी नमः। ३ गुरुचक्रेश्वरी नमः। ३ तत्त्वचक्रेश्वरी नमः। ३ ग्रहचक्रेश्वरी नमः। (मध्ये) ३ मूर्तिचक्रेश्वरी नमः। (३ कारणतोयपरिधये नमः। ३ माणिक्यमण्डपाय नमः)। (तस्य नैर्ऋत्यादि कोणेषु)-३ देशरूपिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ३ कालरूपिणीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ३ आकाररूपिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ३ शब्दरूपिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। (मध्ये) ३ सङ्गीतयोगिनीरूपिणीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(तन्मध्ये) ३ समस्तगुप्त-प्रकटयोगिनीचक्ररूपिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः नमः (तन्मध्ये)३ कल्पतरुभ्यो नमः। (तदधः) ३ रत्नवेदिकायै नमः, (तदुपरि) ३ श्वेतच्छत्राय नमः, (तस्याधः) ३ रत्नसिंहासनाय नमः।

(एतत्सर्वं मानसपङ्कजे विन्यस्य यथायथं तत्तत्स्थानान्यध्यवस्य रत्नसिंहासनत्वेनात्मदेहं ध्यायेत्। तत्र सिंहासनदेवता न्यसेत्।)

(दक्षांसे)-३ रक्तवर्णाय ऋषभरूपाय धर्माय नमः।

(वामांसे)-३ श्यामवर्णाय सिंहरूपाय ज्ञानाय नमः।

(वामोरौ)-३ पीतवर्णाय भूताकाराय वैराग्याय नमः।

(दक्षोरौ)-३ इन्द्रनीलप्रभाय गजरूपाय ऐश्वर्याय नमः।

(एते सिंहासन-पादरूपिणः।)

(मुखे)-३ अधर्माय नमः। (वामपार्श्वे)-३ अज्ञानाय नमः।

(नाभौ)-३ अवैराग्याय नमः। (दक्षपार्श्वे)-३ अनैश्वर्याय नमः।

(एते सिंहासनगात्ररूपिणः।)

(मध्ये)–३ मायायै नमः। ३ विद्यायै नमः। (तदुपरि) ३ आनन्दकन्दाय नमः। ३ संविन्नालाय नमः। ३ प्रकृतिमयपत्रेभ्यः नमः। ३ विकारमयकेसरेभ्यः नमः। ३ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः।

(तस्यां)–३ अं सूर्यमण्डलाय नमः। ३ उं सोममण्डलाय नमः।

३ मं वह्निमण्डलाय नमः। ३ सं सत्त्वाय नमः। ३ रं रजसे नमः। ३ तं तमसे नमः। ३ आं आत्मने नमः। ३ अं अन्तरात्मने नमः। ३ पं परमात्मने नमः। ३ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। तदुपरि पूर्वादिचतुर्दिक्षु मध्ये च ३ ज्ञानतत्त्वात्मने ३ मायातत्त्वात्मने नमः ३ कलातत्त्वात्मने नमः ३ विद्यातत्त्वात्मने नमः ३ परतत्त्वात्मने नमः।

(ततः केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च श्रीचक्राधारपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत्।)

३ दूतर्यम्बाश्री.। ३ सुन्दर्यम्बाश्री.। ३ सुमुख्यम्बाश्री.। ३ विरू-पाम्बाश्री.। ३ विमलाम्बाश्री.। ३ अन्तर्यम्बाश्री.। ३ बदर्यम्बाश्री.। ३ पुरन्दर्यम्बाश्री.। (मध्ये कर्णिकायां) ३ पुष्पमर्दन्यम्बाश्री.।

(एता वराभयधारिण्यो रक्तवर्णा ध्येयाः। तदुपरि–)

३ क्लीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। (इति सिंहासनमन्त्रं विन्यस्य तदुपरि श्रीचक्रं ध्यात्वा)–

३ (मूलं) समस्त–प्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्ण–निगर्भरहस्याति–रहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनी–श्रीचक्रपादुकाभ्यो नमः।

(इति व्यापकेन विन्यस्य, हृदि त्रिकोणं विभाव्य तन्मध्ये) ३ (मूलं) ॐ ह्रीं क्लीं भगवति ब्लूं नित्याकामेश्वरि स्त्रीं सर्वसत्त्ववशङ्करि सः त्रिपुरभैरवि, ऐं विच्चे ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्री. (इति विन्यस्य प्रणवादि नमोऽन्तं मूलविद्यां च विन्यस्य श्रीचक्रं पुरत्रयात्मकं ध्यात्वा तत्रारोहणक्रमेण) ३ वाग्भवमुच्चार्य चतुरस्रषोडशदलाष्टदलात्मने शरीरात्मकाय प्रथमपुराय नमः (इति व्यापकं न्यसेत्)।

(ततः) ३ कामराजमुच्चार्य चतुर्दशारद्विदशारात्मने बुद्ध्यात्मकाय द्वितीयपुराय नमः। (इति व्यापकम्)।

३ शक्तिकूटमुच्चार्याष्टार–त्रिकोण–बिन्दुचक्रात्मने प्राणात्मकाय तृतीयपुराय नमः (इति व्यापकं विन्यस्य–)

४ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्त्यादिसमस्तत्रितयात्मने श्रीचक्रस्य पुरत्रयाय नमः (इत्यपि व्यापकम्)।

(ततो) हृदयत्रिकोणस्याग्रादिकोणत्रयमपि पुरत्रयात्मकं वाग्भवादिपुरत्रयात्मकं च ध्यात्वा, तत्र प्रणवादिनमोऽन्तं वाग्भवादिकूटत्रयं न्यसेत्।

(ततो) नादबिन्दुकलाज्येष्ठारौद्रीवामाविषघ्नीदूतरीसर्वानन्दाभ्यः श्रीचक्रस्य त्रैलोक्यमोहनादिनवचक्रशक्तिभ्यो नमः (इत्यनेन व्यापकं कुर्यात्।)

(ततः हृदयकमलकेसरेषु कामेश्वरीपीठस्य नव शक्तीर्न्यसेत्।)

३ मोहिन्यै नमः। ३ क्षोभिण्यै नमः। ३ वशिन्यै नमः। ३ स्तम्भिन्यै नमः। ३ आकर्षिण्यै नमः। ३ द्राविण्यै नमः। ३ आह्लादिन्यै नमः। ३ क्लिन्नायै नमः।

(मध्ये) ३ क्लेदिन्यै नमः। (इति विचिन्त्य, त्रिकोणमध्ये) ३ बालामूलं पञ्चदशीं चोच्चार्य, त्रिकोणरक्तवर्णोड्डियानपीठश्री.।

(त्रिकोणाग्रे) ३ बालामूलयोर्वाग्भवद्वयमुच्चार्य चतुरस्रपीतवर्णकामरूपपीठश्री.।

(दक्षिणकोणे) ३ कामराजद्वयमर्धचन्द्रनिभश्वेतवर्णजालन्धरपीठश्री.।

(वामकोणे) ३ शक्तिबीजद्वयं षड्बिन्दुलाञ्छितवृत्तधूम्रवर्णपूर्णगिरिपीठश्री.। (इति पीठचतुष्टयं विन्यस्य, पुनर्बैन्दवे आग्नेयादिकोणेषु)

३ लां ह्रां ब्रह्मणे पृथिव्यधिपतये नमो ब्रह्मप्रेतासनश्री.।

३ वां ह्रीं विष्णवेऽपामधिपतये नमो विष्णुप्रेतासनश्री.।

३ रां ह्रूं रुद्राय तेजोऽधिपतये नमो रुद्रप्रेतासनश्री.।

३ यां ह्रैं ईश्वराय वाय्वधिपतये नम ईश्वरप्रेतासनश्री.।

३ ह्सौः वियदधिपतये पञ्चवक्त्राय सदाशिवाय प्रेतपद्मासनाय नमः। सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति पञ्चप्रेतासनं न्यस्य, तदुपरि रक्तपद्मकर्णिकायां चतुरस्रगर्भित-षट्कोणपीठे षडासनानि विन्यसेत्।)

३ अं आं सौः त्रिपुरासुधार्णवासनाय नमः।

३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीपीताम्बुजासनाय नमः

३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय नमः।

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीसर्वचक्रासनाय नमः।

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नमः।

३ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीसाध्यसिद्धासनाय नमः।

(इति विन्यस्य, मध्ये चतुरस्रे चतुरासनं न्यसेत्।)

(ऐशाने)–३ (वाग्भवद्वयमुच्चार्य) अग्निचक्रे कामगिर्यालये मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मक–रुद्रात्मक–शक्तिकामेश्वरीदेवी ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय नमः।

(वायव्यकोणे)–३ (कामराजद्वयमुच्चार्य) सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मकविष्ण्वात्मकशक्ति–श्रीवज्रेश्वरी देवी हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नमः।

(नैर्ऋते)–३ शक्तिद्वयमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मकशक्तिश्रीभगमालिनीदेवी ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नमः।

(आग्नेये)–३ (समस्तद्वयमुच्चार्य) ब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे श्रीचर्यानाथत्मके तुर्यतुर्यातीतदशाधिष्ठायके परब्रह्मशक्त्यात्मकश्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवी ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीसाध्यसिद्धासनाय नमः।

(मध्ये)–३ ऐं क्लीं सौः क १५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसर्वमन्त्रासनाय नमः।

(इति विन्यस्य) ३ अं ५१ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्या–रागकालनियतिपुरुषप्रकृतिअहङ्कारबुद्धिमनःश्रोतत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्–पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या योगपीठासनाय नमः।

(इति व्यापकं कुर्यात्। ततो मूलमुच्चार्य)

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मके देहमये महायोगपीठे निजेष्टदेवतां हृदि न्यसेत्।)

इति देहमये पीठे चिन्तयेत् परदेवताम्।

इतियोगपीठन्यासः।

आचार्यः प्राङ्मुखो भूत्वा नव्यं ताम्रादिपात्रमादायास्त्रमन्त्रितजलेन प्रक्षाल्य तस्मिन् पात्रे तण्डुलानुसारेण गोक्षीरं निधाय साधारं तत्पात्रं वह्नौ संस्थाप्य, पञ्चदशप्रसृतिपरिमितान् शालितण्डुलान् मूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्य तस्मिन् पात्रे क्षिप्त्वा पिधानपात्रमादायास्त्रमन्त्रितजलेन प्रक्षाल्य–

हुं इति कवचमन्त्रमुच्चरँस्तेन पात्रेण पाकपात्रमुखं पिधाय मूलमन्त्रंमुच्चरँश्चरुं पचेत्।

ततः स्रुवेणाज्यमादाय स्विन्नं चरुं मूलमन्त्रमुच्चरन्नभिघारयेत्।

ततः–हुं इति कवचमन्त्रेण तत्पात्रमवतार्यास्त्रमन्त्राभिमन्त्रितकुशा-स्तीर्णमण्डले स्थापयेत्।

ततश्चरुं त्रिधा विभज्य भागमेकं पात्रान्तरे निधाय देवतायै समर्पयेत्, द्वितीयभागं वक्ष्यमाणहोमार्थं तृतीयभागं भोजनार्थं स्थापयेत्।

ततो वह्नौ देवताया आधारशक्त्यादिपीठमन्त्रान्तं सम्पूज्य तत्रेष्टदेवता-मावाह्योपचारैः सम्पूज्यावरणदेवता अभिपूजयेत्।

ततो देव्या मूलमन्त्रेण स्वाहान्तेन पञ्चविंशत्याज्याहुतीर्वह्निमुखे जुहुयात्। इदमेव वह्नीष्टदेवतयोर्वक्त्रैकीकरणमित्युच्यते। तत आत्माग्निदेवतानामैक्यं विचिन्त्य एकादशाहुतीर्मूलेनैव दद्यात्। इदं च "नाडीसन्धान" मित्युच्यते।

तत आवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दत्त्वा ऋत्विग्भिरुक्तप्रकारेण संस्कृतेषु पूर्वादिकुण्डेषु क्रमेणाचार्यो वह्निं विहरेत्।

ततः सर्वे ऋत्विजः स्वस्वकुण्डाग्नौ सावरणामिष्टदेवतामुपचारैः सम्पूज्य मूलमन्त्रेणाज्येन पञ्चविंशत्याहुतीर्हुत्वाऽऽवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दद्युः।

ततोः गुरुः पूर्वोक्तचरोर्द्वितीयभागं नवधा विभज्य भागमेकं स्वयं गृहीत्वा एकैकं भागं सर्वेभ्य ऋत्विग्भ्यो दद्यात्।

ततस्तस्मिंश्चरौ घृतं निधाय सघृतेन चरुणाऽऽचार्य ऋत्विजश्च स्वे स्वे कुण्डे मूलमन्त्रेण प्रत्येकं पञ्चविंशत्याहुतीर्जुहुयुः।

तत आवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दत्त्वा मूलमन्त्रेणाज्येन दश दशाहुतीर्हुत्वा वह्निरूपामिष्टदेवतां प्रणमेयुः।

तत आचार्यश्चरोस्तृतीयभागं द्विधा विभज्य पलाशपत्रे पिप्पलपत्रे वा भागमेकं स्वयं गृहीत्वापरं भागं शिष्याय दद्यात्। ततो गुरुः शिष्यंश्च नमः इति हृन्मन्त्रमुच्चरन् ग्रासत्रयं ग्रासाष्टकं वा दन्तस्पर्शं विना भुक्त्वा मन्त्रपूतेन जलेनाऽऽचमनं कुर्यात्।

दन्तकाष्ठविधिः

ततो गुरुः कृताचमनं शिष्यं मूलमन्त्रेण सकलीकृत्य तस्मै पूर्वोक्तलक्षणं हृन्मन्त्रितं दन्तकाष्ठं दद्यात्।

ततः शिष्यस्तेन दन्तकाष्ठेन दन्तान् विशोध्य जलेन प्रक्षाल्य दन्तकाष्ठं विमृज्याऽऽचमनं कुर्यात्।

अस्मिन्नेव समये पूर्वोक्तदन्तकाष्ठपरीक्षां केचित् कुर्वन्ति। ततः सायं सन्ध्योपासनं कृत्वा गुरुर्मूलमन्त्रेण स्वकल्पोक्तमन्त्रान्तरेण वा शिष्यस्य शिखां बद्ध्वा मण्डपाद् बहिर्देवताया दक्षिणभागे वेदिकान्तरोपरि कुशशय्यायां पूर्वशिरस्कः शिष्येण सार्धं शयनं कुर्यात्।

शिष्यश्च शयनसमये स्वप्नमाणवमन्त्रेण शुभस्वप्नं प्रार्थयेत्।

स्वप्नमाणवमन्त्रः

यथा– भगवन् देवदेवेश! शूलभृद् वृषवाहन!।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतम्।।

यद्वा–ॐ हिलि हिलि शूलपाणये ठः ठः।

नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरः!।।

वैष्णवे तु– ॐ नमः सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे।
विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।।

यद्वा– परब्रह्मस्वरूपस्त्वमन्तश्चरसि विश्वधृक्।
शुभाशुभगतिं देव! स्वप्ने मे विनिवेदय।।

इत्युच्चार्य जानुभ्यामवनीं स्पृष्ट्वा विष्णुं प्रणम्य प्रसन्नो वाग्यतो निजेष्टं विचिन्त्य शयनं कुर्यात्।

शुभाशुभस्वप्ननिर्णयः

ततः स्वप्नं दृष्ट्वा समुत्थायाचम्य पुष्पं धृत्वा गुरुं प्रणम्य गुरवे स्वप्नं निवेदयेत्। ततो गुरुः शुभमशुभं वा स्वप्नं निर्णीय स्वप्नो यदि शुभस्तदा देवतां प्रसन्नां जानीयात्। स्वप्नो यद्यशुभस्तदा शान्तिं कुर्यात्।

दुःस्वप्नशान्तिस्तु

फट् दुःस्वप्नदोषान् जहि जहि फट् स्वाहा– इति मन्त्रेण।

ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः स्वाहा–इति सिंहमन्त्रेण वा तद्देवतागायत्र्या वा पलाशसमिच्छतमाज्याहुतिशतं वा जुहुयात्।

कालनित्याविद्याभिः पूर्णकलशाभिमन्त्रणम्

तत्र गुरुर्मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा अद्येहेत्यादि० करिष्यमाणपूर्णाभिषेकाख्ये कर्मणि षट्त्रिंशदुत्तरसप्तशताधिकविंशतिसहस्रङ्ख्याककालनित्याविद्याभिः पूर्णकलशाभिमन्त्रणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, मस्तकदक्षबाहुमूलादिषट्त्रिंशत्स्थानेषु प्रतिस्थानं षोडशदलपद्मं विभाव्य, तेष्वकारादिक्षकारान्तान् षट्त्रिंशत्तत्त्ववर्णान् प्रत्येकं षोडशस्वरसंयुक्तान् विभाव्य, मध्ये तत्प्रथमाक्षरं विन्यस्य, पूर्वादिदलेषु तत्तदक्षरविकृतषोडशवर्णास्तदादिकान् विन्यसेदिति। एवं पूर्णमण्डलवर्णान् विन्यस्य पुनः सहितनित्यविद्यया प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः। मुखे पङ्क्तिच्छन्दसे नमः। हृदये कालनित्याविद्यारूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः, इति ऋष्यादिकं विन्यस्य, पूर्णकलशाभिमन्त्रणे विनियोगः, इति कृताञ्जलिरुक्त्वा, तत्तद्दिननित्याविद्याक्षरैस्त्रिभिर्द्विरावृत्त्या यथाविधि करषडङ्गन्यासं प्राक्प्रोक्तचतुरासनं न्यासं वाग्देवताष्टकन्यासं च विधाय,

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तस्रग्विभूषानुलेपनाम्।
पाशाङ्कुशेक्षुकोदण्डप्रसूनविशिखां स्मरेत्।

कालनित्याविद्याजपविधानम्

इति कालनित्यां हृदये ध्यात्वा वक्ष्यमाणविधिना हृदये श्रीचक्रं

कालचक्रमध्यागतं विभाव्य, तत्र देवीं सावरणां कालनित्याविद्याभिश्च

परिवृतां ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सम्पूज्य कालनित्याजपमारभेत। तत्रादावङ्गविद्यास्त्रिपुरार्णवोक्ताः प्रोच्यन्ते।। तत्र ॐ मूलं दि० अ ह्सौः हंसः। मू०दि० आ ह्सौः हंसः। मू०दि० इ ह्सौः हंसः। मू०दि० ई ह्सौः हंसः। मू०दि० उ ह्सौः हंसः। मू०दि० ऊ ह्सौः हंसः। मू०दि० ऋ ह्सौः हंसः। मू०दि० ॠ ह्सौः हंसः। मू०दि० लृ ह्सौः हंसः। मू०दि० ॡ ह्सौः हंसः। मू०दि० ए ह्सौः हंसः। मू०दि० ऐ ह्सौः हंसः। मू०दि० ओ ह्सौः हंसः। मू०दि० औ ह्सौः हंसः। मू०दि० अं ह्सौः हंसः। मू०दि० अः ह्सौः हंसः। एवं कादिक्षान्तम्। एवमेकपञ्चाशद्विद्याभिः सह मूलविद्यां जपित्वा केवलमूलविद्यां त्रिर्जपित्वा "ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः" इति दीपिनीविद्यामेकवारं जपित्वा, प्रागुक्तश्रीगुरुपादुकामेकवारं जपित्वा पुनश्चत्वारिंशद्विद्याभिः सह मूलविद्यां जपेत्। यथा, मूलं आ क्षा ह् सा ई हं सः। मूलं ई ळा ह् सा ई हं सः। मूलं ऊ हा ह् सा ई हं सः। मूलं ॠ सा ह् सा ई हंसः। मूलं ॡ षां ह् सा ई हं सः। मूलं ऐं शा ह् सा ई हं सः। मूलं औ वा ह् सा ई हं सः। मूलं अः ला ह् सा ई हंसः, इत्यष्टधा जपित्वा पुनः मूलं आ क्षा ई हं सः। मूलं अक्षाईहंसः। मूलं ईळाई हं सः। मूलं इ ळाई हं सः। मूलं ऊ हा ई हं सः। मूलं उ हा ई हं सः। मूलं ॠ षा ई हं सः। मूलं ऋ षा ई हं सः। मूलं ॡ षा ई हं सः। मूलं लृ षा ई हं सः। मूलं ऐ शा ई हं सः। मूलं ए शा ई हं सः। मूलं औ वा ई हं सः। मूलं ओ वा ई हं सः। मूलं अः ला ई हं सः। मूलं अं ला ई हं सः इति षोडशधा जपित्वा पुनः मूलं अकाई हं सः। इचा ई हं सः। उ टा ई हं सः। ऋ ताई हं सः। लृ पा ई हं सः। ए या ई हं सः। ओ शा ई हं सः। अं ळा ई हं सः' इत्यष्टधा जपित्वा पश्चात् कालनित्याविद्याभिः सह मूलविद्यां जपेत्। अयमङ्गविद्याजपो वर्गद्वयस्यादौ प्रत्यहं कार्यः। अथ श्रीगुरुर्ब्रह्मकूर्चेन कुम्भं संस्पृशन् कालनित्यां जपेत्।

कालनित्याजपः।

२ मू०अ आ ई हंसः। २ मू०अ का ई हंसः। २ मू०अ खा ई हंसः।

२ मू०अ गा ई हं सः।२ मू० अ घा ई हंसः। २ मू०अ ङा ई हंसः।

२ मू०अ चा ई हंसः। २ मू०अ छा ई हंसः। २ मू०अ जा ई हंसः।
२ मू०अ झा ई हंसः। २ मू०अ ञा ई हंसः। २ मू०अ टा ई हंसः।
२ मू०अ ठा ई हंसः। २ मू०अ डा ई हंसः। २ मू०अ ढा ई हंसः।
२ मू०अ णा ई हंसः। २ मू०अ ता ई हंसः। २ मू०अ था ई हंसः।
२ मू०अ दा ई हंसः। २ मू०अ धा ई हंसः। २ मू०अ ना ई हंसः।
२ मू०अ पा ई हंसः। २ मू०अ फा ई हंसः। २ मू०अ बा ई हंसः।
२ मू०अ भा ई हंसः। २ मू०अ मा ई हंसः। २ मू०अ या ई हंसः।
२ मू०अ रा ई हंसः। २ मू०अ ला ई हंसः। २ मू०अ वा ई हंसः।
२ मू०अ शा ई हंसः। २ मू०अ षा ई हंसः। २ मू०अ सा ई हंसः।
२ मू०अ हा ई हंसः। २ मू०अ ळा ई हंसः। २ मू०अ क्षा ई हंसः।

इति जपित्वा, पुनः २ मूलं आ का ई हं सः।

एवं बीजद्वयमूलविद्या सर्वत्र योज्या। आ खा ई। आ गा ई। आ घा ई। आ ङा ई। आ चा ई। आ छा ई। आ जा ई। आ झा ई। आ ञा ई। आ टा ई। आ ठा ई। आ डा ई। आ ढा ई। आ णा ई। आ ता ई। आ था ई। आ दा ई। आ धा ई। आ ना ई। आ पा ई। आ फा ई। आ बा ई। आ भा ई। आ मा ई। आ या ई। आ रा ई। आ ला ई। आ वा ई। आ शा ई। आ षा ई। आ सा ई। आ हा ई। आ ळा ई। आ क्षा ई। इति जपित्वा पुन० २मूलम् इ आ ई। इ का ई। इ खा ई। इ गा ई। इ घा ई। इ ङा ई। इ चा ई। इ छा ई। इ जा ई। इ झा ई। इ ञा ई। इ टा ई। इ ठा ई। इ डा ई। इ ढा ई। इ णा ई। इ ता ई। इ था ई। इ दा ई। इ धा ई। इ ना ई। इ पा ई। इ फा ई। इ बा ई। इ भा ई। इ मा ई। इ या ई। इ रा ई। इ ला ई। इ वा ई। इ शा ई। इ षा ई। इ सा ई। इ हा ई। इ ळा ई। इ क्षा ई।

हं सः इति जपित्वा पुनः ३ मूलम्। ई आ ई। ई का ई। ई खा ई। ई गा ई। ई घा ई। ई ङा ई। ई चा ई। ई छा ई। ई जा ई। ई झा ई। ई ञा ई।

ई टा ई। ई ठा ई। ई डा ई। ई ढा ई। ई णा ई। ई ता ई। ई था ई।
ई दा ई। ई धा ई। ई ना ई। ई पा ई। ई फा ई। ई बा ई। ई भा ई।
ई मा ई। ई या ई। ई रा ई। ई ला ई। ई वा ई। ई शा ई। ई षा ई।
ई सा ई। ई हा ई। ई ळा ई। ई क्षा ई। **हंस इति जपित्वा, पुनः २ मूलम्।**
उ आ ई। उ का ई। उ खा ई। उ गा ई। उ घा ई। उ ङा ई। उ चा ई।
उ छा ई। उ जा ई। उ झा ई। उ ञा ई। उ टा ई। उ ठा ई। उ डा ई।
उ ढा ई। उ णा ई। उ ता ई। उ था ई। उ दा ई। उ धा ई। उ ना ई।
उ पा ई। उ फा ई। उ बा ई। उ भा ई। उ मा ई। उ या ई। उ रा ई।
उ ला ई। उ वा ई। उ शा ई। उ षा ई। उ सा ई। उ हा ई। उ ळा ई।
उ क्षा ई। **हंस इति जपित्वा पुनः २ मूलम्।** ऊ आ ई। ऊ का ई।
ऊ खा ई। ऊ गा ई। ऊ घा ई। ऊ ङा ई। ऊ चा ई। ऊ छा ई। ऊ जा ई।
ऊ झा ई। ऊ ञा ई। ऊ टा ई। ऊ ठा ई। ऊ डा ई। ऊ ढा ई। ऊ णा ई।
ऊ ता ई। ऊ था ई। ऊ दा ई। ऊ धा ई। ऊ ना ई। ऊ पा ई। ऊ फा ई।
ऊ बा ई। ऊ भा ई। ऊ मा ई। ऊ या ई। ऊ रा ई। ऊ ला ई। ऊ वा ई।
ऊ शा ई। ऊ षा ई। ऊ सा ई। ऊ हा ई। ऊ ळा ई। ऊ क्षा ई।
इति जपित्वा पुनः २ मूलम् ऋ आ ई हंसः। ऋ का ई। ऋ खा ई।
ऋ गा ई। ऋ घा ई। ऋ ङा ई। ऋ चा ई। ऋ छा ई। ऋ जा ई। ऋ झा ई।
ऋ ञा ई। ऋ टा ई। ऋ ठा ई। ऋ डा ई। ऋ ढा ई। ऋ णा ई। ऋ ता ई।
ऋ था ई। ऋ दा ई। ऋ धा ई। ऋ ना ई। ऋ पा ई। ऋ फा ई। ऋ बा ई।
ऋ भा ई। ऋ मा ई। ऋ या ई। ऋ रा ई। ऋ ला ई। ऋ वा ई। ऋ शा ई।
ऋ षा ई। ऋ सा ई। ऋ हा ई। ऋ ळा ई। ऋ क्षा ई। **इति जपित्वा। पुनः २ मूलम्।** ॠ आ ई। ॠ का ई। ॠ खा ई। ॠ गा ई। ॠ घा ई।
ॠ ङा ई। ॠ चा ई। ॠ छा ई। ॠ जा ई। ॠ झा ई। ॠ ञा ई।
ॠ टा ई। ॠ ठा ई। ॠ डा ई। ॠ ढा ई। ॠ णा ई। ॠ ता ई।
ॠ था ई। ॠ दा ई। ॠ धा ई। ॠ ना ई। ॠ पा ई। ॠ फा ई।

ॠ बा ई। ॠ भा ई। ॠ मा ई। ॠ या ई। ॠ रा ई। ॠ ला ई।

ॠ वा ई। ॠ शा ई। ॠ षा ई। ॠ सा ई। ॠ हा ई। ॠ ळा ई।

ॠ क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः २ मूलम्। लृ आ ई। लृ का ई। लृ खा ई। लृ गा ई। लृ घा ई। लृ ङा ई। लृ चा ई। लृ छा ई। लृ जा ई। लृ झा ई। लृ ञा ई। लृ टा ई। लृ ठा ई। लृ डा ई। लृ ढा ई। लृ णा ई। लृ ता ई। लृ था ई। लृ दा ई। लृ धा ई। लृ ना ई। लृ पा ई। लृ फा ई। लृ बा ई। लृ भा ई। लृ मा ई। लृ या ई। लृ रा ई। लृ ला ई। लृ वा ई। लृ शा ई। लृ षा ई। लृ सा ई। लृ हा ई। लृ ळा ई। लृ क्षा ई इति जपित्वा, पुनः २ मूलम्। लॄ आ ई। लॄ का ई। लॄ खा ई। लॄ गा ई। लॄ घा ई। लॄ ङा ई। लॄ चा ई। लॄ छा ई। लॄ जा ई। लॄ झा ई। लॄ ञा ई। लॄ टा ई। लॄ ठा ई। लॄ डा ई। लॄ ढा ई। लॄ णा ई। लॄ ता ई। लॄ था ई। लॄ दा ई। लॄ धा ई। लॄ ना ई। लॄ पा ई। लॄ फा ई। लॄ बा ई। लॄ भा ई। लॄ मा ई। लॄ या ई। लॄ रा ई। लॄ ला ई। लॄ वा ई। लॄ शा ई। लॄ षा ई। लॄ सा ई। लॄ हा ई। लॄ ळा ई। लॄ क्षा ई। इति जपित्वा पुनः मूलम्।

ए आ ई। ए का ई। ए खा ई। ए गा ई। ए घा ई। ए ङा ई। ए चा ई। ए छा ई। ए जा ई। ए झा ई। ए ञा ई। ए टा ई। ए ठा ई। ए डा ई। ए ढा ई। ए णा ई। ए ता ई। ए था ई। ए दा ई। ए धा ई। ए ना ई। ए पा ई। ए फा ई। ए बा ई। ए भा ई। ए मा ई। ए या ई। ए रा ई। ए ला ई। ए वा ई। ए शा ई। ए षा ई। ए सा ई। ए हा ई। ए ळा ई। ए क्षा ई। इति जपित्वा पुनः मूलं २ – ऐ आ ई। ऐ का ई। ऐ खा ई। ऐ गा ई। ऐ घा ई। ऐ ङा ई। ऐ चा ई। ऐ छा ई। ऐ जा ई। ऐ झा ई। ऐ ञा ई। ऐ टा ई। ऐ ठा ई। ऐ डा ई। ऐ ढा ई। ऐ णा ई। ऐ ता ई। ऐ था ई। ऐ दा ई। ऐ धा ई। ऐ ना ई। ऐ पा ई। ऐ फा ई। ऐ बा ई। ऐ भा ई। ऐ मा ई। ऐ या ई। ऐ रा ई। ऐ ला ई। ऐ वा ई। ऐ शा ई। ऐ षा ई। ऐ सा ई। ऐ हा ई। ऐ ळा ई। ऐ क्षा ई। इति जपित्वा पुनः मूलम् २। ओ आ ई। ओ का ई। ओ खा ई। ओ गा ई। ओ घा ई। ओ ङा ई। ओ चा ई।

ओ छा ई। ओ जा ई। ओ झा ई। ओ ञा ई। ओ टा ई। ओ ठा ई।

ओ डा ई। ओ ढा ई। ओ णा ई। ओ ता ई। ओ था ई। ओ दा ई।

ओ धा ई। ओ ना ई। ओ पा ई। ओ फा ई। ओ बा ई। ओ भा ई।

ओ मा ई। ओ या ई। ओ रा ई। ओ ला ई। ओ वा ई। ओ शा ई।

ओ षा ई। ओ सा ई। ओ हा ई। ओ ळा ई। ओ क्षा ई। इति जपित्वा पुनः मूलं २–औ आ ई। औ का ई। औ खा ई। औ गा ई। औ घा ई। औ ङा ई। औ चा ई। औ छा ई। औ जा ई। औ झा ई। औ ञा ई। औ टा ई। औ ठा ई। औ डा ई। औ ढा ई। औ णा ई। औ ता ई। औ था ई। औ दा ई। औ धा ई। औ ना ई। औ पा ई। औ फा ई। औ बा ई। औ भा ई। औ मा ई। औ या ई। औ रा ई। औ ला ई। औ वा ई। औ शा ई। औ षा ई। औ सा ई। औ हा ई। औ ळा ई। औ क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः मूलम्। अं आ ई। अं का ई। अं खा ई। अं गा ई। अं घा ई। अं ङा ई। अं चा ई। अं छा ई। अं जा ई। अं झा ई। अं ञा ई। अं टा ई। अं ठा ई। अं डा ई। अं ढा ई। अं णा ई। अं ता ई। अं था ई। अं दा ई। अं धा ई। अं ना ई। अं पा ई। अं फा ई। अं बा ई। अं भा ई। अं मा ई। अं या ई। अं रा ई। अं ला ई। अं वा ई। अं शा ई।

अं षा ई। अं सा ई। अं हा ई। अं ळा ई। अं क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः २ मूलम् अः आ ई। अः का ई। अः खा ई। अः गा ई। अः घा ई। अः ङा ई। अः चा ई। अः छा ई। अः जा ई। अः झा ई। अः ञा ई।

अः टा ई। अः ठा ई। अः डा ई। अः ढा ई। अः णा ई। अः ता ई। अः था ई। अः दा ई। अः धा ई। अः ना ई। अः पा ई। अः फा ई। अः बा ई। अः भा ई। अः मा ई। अः या ई। अः रा ई। अः ला ई। अः वा ई। अः शा ई। अः षा ई। अः सा ई। अः हा ई। अः ळा ई। अः क्षा ई। हंस इत्यन्तं जपेत्।

श्रीत्रिपुरार्णवोक्तवर्गान्तस्तोत्रम्

क्ष्माम्ब्वग्नीरणखार्केन्दुयष्टृप्राययुगाक्षरैः।
मातृभैरवगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।१।।
कादिवर्गाष्टकाकारसमस्ताष्टकविग्रहाम्।
अष्टशक्त्यावृतां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।२।।
स्वरषोडशकानां तु षट्त्रिंशद्भिः परापरैः।
षट्त्रिंशत्तत्त्वगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।३।।
षट्त्रिंशत्तत्त्वसंस्थाप्यशिवचन्द्रकलास्वपि।
कादिक्षान्तगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।४।।

आ ई माया द्वयोपाधिविचित्रेन्दुकलावतीम्।
सर्वात्मिकां परां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।५।।
षडध्वपिण्डयोनिस्थां मण्डलत्रयकुण्डलीम्।
लिङ्गत्रयातिगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।६।।
स्वयम्भूहृदयां बाणभ्रूकामान्तःस्थितेतराम्।
प्राच्यां प्रत्यक्चितिं वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।७।।
अक्षरान्तर्गताशेषनामरूपां क्रियापराम्।
शक्तिं विश्वेश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्।।८।।
वर्गान्ते पठितव्यं स्यात् स्तोत्रमेतत्समाहितैः।
सर्वान् कामानवाप्नोति अन्ते सायुज्यमाप्नुयात्।।९।।

इतिस्तुत्वा; प्राग्वत्प्राणायामत्रयं कृत्वा

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थिरा।।

इति देव्यै जपं समर्प्य, द्वितीयवर्गजपस्यारम्भो विधेयः। यथा मू० दि० क आ ई हंसः। एवं सर्वत्र। क का ई। क खा ई। क गा ई। क घा ई। क ङा ई। क चा ई। क छा ई। क जा ई। क झा ई। क ञा ई। क टा ई। क ठा ई। क डा ई। क ढा ई। क णा ई। क ता ई। क था ई। क दा ई। क धा ई। क ना ई। क पा ई। क फा ई। क बा ई। क भा ई। क मा ई। क या ई। क रा ई। क ला ई। क वा ई। क शा ई। क षा ई। क सा ई। क हा ई। क ळा ई। क क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः– का आ ई। हं स इत्यादि का क्षा ई हंसः इत्यन्तं जपित्वा, कि आ ई हं सः इत्यादि कि क्षा ई इत्यन्तं जपित्वा पुनः कू आ ई हं सः। एवं समस्तां मातृकां जपेत्।

गणपतिललिताश्यामावार्तालीपरादेवतासावचरणार्चनम्

तत आचार्य्यः क्रमेण गणपतिललिताश्यामावार्तालीपरादेवताः सावरणाः यथाविधि यथाकालं सम्पूज्य तद्यन्त्राणि पूर्वमध्यदक्षिणादिक्रमेण कलशेष्व-धिवासयेत्। तत्रैव च षोडशोपचारैः कलशेष्वेव पूजयेत्।

ततः शिष्यमाहूय नूतनेन वाससा तस्य मुखं प्रावृत्यावद्ध्य गणपत्यादि-मूलमन्त्रानुच्चरन् सामान्यार्घ्योदकबिन्दुभिः सम्प्रोक्ष्य-

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

कलशाधिवासनं गुरोः कर्तृकं न्यासादिकञ्च

इति कुम्भे पुष्पाञ्जलिं प्रदाप्य नेत्रमुखबन्धनमुन्मोचयेत्। ततः श्रीक्रमोक्तान् भूशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठामातृकादिन्यासान् लघुषोढान्यासान् महाषोढान्यासाँश्च शिष्यस्य कारयेत्।

शिष्यस्य षडध्वशोधनम्

ततः शिष्यं कुण्डसमीपं नीत्वा दिव्यदृष्ट्या विलोक्य तस्य हृदयारविन्दात् जीवात्मानं भूतशुद्ध्युक्तपरिपाट्या तद्देहाद् ब्रह्मरन्ध्रमार्गात् निःसार्य स्वात्मनि गुरूक्तयुक्त्या योगबलेन संयोज्य शिष्यषडध्वशोधनं कुर्यात्। तत्र शिष्यस्य पादयोः कलाध्वनि निवृत्ति-प्रतिष्ठा-विद्या-शान्ति-शान्त्यतीताश्चेति पञ्चकलात्मकं कला-ध्वानं संचिन्त्य ततस्तस्य लिङ्गप्रदेशे शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकला-विद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणि-पादपायूपस्थ-शब्द-स्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलपृथिव्यात्मकं षट्त्रिं-शत्तत्त्वरूपं शिवतत्त्वाध्वानं ध्यायेत्। *इति शैवदीक्षायाम्।*

वैष्णवदीक्षायां तत्त्वानि तु जीवप्राणधियोमन-इन्द्रियदशकं तन्मात्राः भूतानां पञ्चकमपि हृत्पद्मतेजसां त्रितयं तद्वच्च वासुदेवप्रमुखाश्चत्वार उपदिष्टा इति। इन्द्रियदशकं प्रागुक्तं श्रोत्रादयो वागादयश्च तन्मात्राश्च शब्दादयः भूतपञ्चकमाकाशादि। तेजसां त्रियतं सोमसूर्याग्निमयम्। वासुदेवप्रमुखाश्च वासुदेवसंकर्षण-प्रद्युम्नाऽनिरुद्धाश्चत्वारः।

सौरदीक्षायां तत्त्वानि तु-भूततन्मात्रेन्द्रियाणि मनोगर्वश्च बुद्धिश्च धीस्तथा प्रधानं चेति। इन्द्रियाणि दश ज्ञानकर्मभेदात्। गर्वोऽहङ्कारः। प्रधानं प्रकृतितत्त्वम्।

शक्तिदीक्षायान्तु तत्त्वानि (निवृत्त्याद्याः पञ्चकलाः बिन्दुः नादः शक्तिः सदाशिवः शिव इति दश तत्त्वानि) त्रिपुरदीक्षायान्तु आत्मविद्या शिवा एते

विपरीतास्त एव च सर्वतत्त्वश्चेति। विपरीताः शिवविद्यात्मानः इति क्रमेण त एव च आत्मविद्या शिवा एवेति सप्ततत्त्वानि। इत्थं तत्तद्दीक्षायां तत्तदध्वानं चिन्तयेदिति।

गाणपत्यदीक्षायां तत्त्वानि तु शैवतत्त्वानि ज्ञातव्यानि।

ततः शिष्यस्य नाभौ अतलवितलसुतलमहातलतलातलरसातलपातालभूर्भुवःस्वर्महर्जनस्तपःसत्यलोकात्मकं चतुर्दश भुवनाध्वानं सञ्चिन्त्य (ततस्तस्य हृदये आदिक्षान्तार्णस्वरूपं वर्णाध्वानं भावयेत्) (ततः शिष्यललाटे वर्णसङ्घमयं पदाध्वानं विभावयेत्) ततः शिष्यशिरसि पदसमुदायमयं मूलमन्त्रस्वरूपं मन्त्राध्वानं भावयेत्, इति शिष्यशरीरेऽध्वषट्कं सञ्चिन्त्य, तं कूर्चेन स्पृशन् गुरुः स्वकुण्डे 'ॐ अमुकस्य कलाध्वानं शोधयामि स्वाहा' घृततिलैरष्टधा हुत्वा कलाध्वानं तत्त्वाध्वनि विलीनं विभाव्य "ॐ अमुकस्य तत्त्वाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा भुवनाध्वानं वर्णाध्वनि विलीनं विभाव्य पुनः "अमुकस्य वर्णाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा तं पदाध्वनि विलीन विभाव्य पुनः "ॐ अमुकस्य पदाध्वानं शोधयामि स्वाहा' इत्यष्टधा तं मन्त्राध्वनि विलीनं विभाव्य पुनः "ॐ अमुकस्य मन्त्राध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा तं ब्रह्मरन्ध्रस्थपरशिवे लीनं विभाव्य पुनः संहृतप्रतिलोमेन परमशिवस्य सकाशान्मन्त्राध्वानं सृष्ट्वा ततः पदाध्वानं तस्माद्वर्णाध्वानं ततो भुवनाध्वानं तस्मात्तत्त्वाध्वानं ततः कलाध्वानं च सृष्ट्वा तत्तत्थाने संस्थाप्य शिष्यं दिव्यदृष्ट्या विलोक्य, स्वस्मिन् स्थितं शिष्यचैतन्यं ततो हृदयारविन्दे आवाहनोक्तप्रकारेण तद् ब्रह्मरन्ध्रे नियोजयेत्। अत्र शूद्रसङ्करजातीनामध्वशोधनं न कार्यम्। तेषां पादोदकप्रदानेन शोधनं कुर्यात्। ततः पूर्ववत् स्वेष्टदेवताया अङ्गावरणदेवतानां घृतेनैकैकामाहुतिं दत्वा, ॐ भूरग्नये च महते च स्वाहा, भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा, स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा, इत्याहुतिचतुष्टयं हुत्वा, इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारितो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा, (इत्यष्टवाज्याहुतीर्हुत्वा), महाशक्तिन्यासं शिष्यस्य कुर्यात्।

महाशक्तिन्यासः

यथा– योनिरित्युच्यते शक्तिरेषा ब्रह्माण्डभेदिनी।
लेपं विलीनयेद्देहे रेफो बिन्दुरिति स्मृतः।। १।।
द्वासप्ततिसहस्रेषु नाडीभेदेषु पञ्जरम्।
व्याप्यमाना महाशक्तिः कामिनीनामृतुक्रमे।।२।।
नाडीचक्रागतं रक्तं योनिमार्गे निपातितम्।
पुष्पीभूते भगे पुष्पं मासपक्षादिषु क्रमात्।
ऐङ्कारोऽपि स्वयं योनिर्नात्र कार्या विचारणा।
न्यस्तं वाप्यत्र देवेशि! त्रैलोक्यं सचराचरम्।।४।।

इत्यन्तं श्लोकसमुदायस्याऽर्थं चिन्तयन् महाकामकलायां ब्रह्मरन्ध्रस्थायां लयं भावयित्वा ब्रह्मरन्ध्रे ॐ ३। ॐ ३ नमः। नादमध्ये ॐ ३। ॐ ३ नमः। नादान्ते ॐ ३। ॐ ३ नमः कण्ठे ॐ ३। ३ अः नमः। हृदि ॐ ३। ३ कं नमः। एवं मस्तके खं नमः। जङ्घयोः गं नमः। स्तनयोः घं नमः। नासिकान्ते ङं नमः। आज्ञायां चं नमः। वामकुक्षौ छं नमः। दक्षिणकुक्षौ जं नमः। उरुमूलयोः झं नमः। दन्तपङ्क्त्योः ञं नमः। जिह्वाग्रे टं नमः। मुखे ठं नमः। कक्षयोः डं नमः। अस्थिसन्धिषु ढं नमः। चित्ते णं नमः। नाभौ तं नमः। ललाटे थं नमः। कर्णरन्ध्रयोः दं नमः। कपालयोः धं नमः। नयनयोः नं नमः। श्वेतसहस्रदलकमले पं नमः। हृत्पद्मे फं नमः। स्कन्धयोः बं नमः। भ्रूमध्ये भं नमः। हनुमूले मं नमः। तालुमूले यं नमः। लिङ्गगुदयोर्मध्ये रं नमः। जिह्वायां लं नमः। सर्वाङ्गे वं नमः। वामादिदक्षिणशिरः– पर्यन्तमापादतलवेष्टत्वेन शं नमः। तालुमूलेषु षं नमः। सर्वाङ्गे सं नमः। ब्रह्मरन्ध्रे हं नमः। हस्तपादयोः सर्वाङ्गुलीषु क्षं नमः।

प्रागुक्तमूलाधारस्थितकुण्डलिन्याम् ३ ॐ। ३ॐ इति विन्यस्य ॐ ३। ३ समस्तमातृकामुच्चरन् तां कुण्डलिनीं सुषुम्नावर्त्मना षट्चक्रभेदक्रमेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा तत्रस्थाकुलसहस्रदलकमलकर्णिकामध्यस्थितपरमात्मनि शिवे विलीनां विभाव्य "ॐ ३। ३ रक्षरक्ष शूलिनि त्रैलोक्यानन्ददायिनि त्रिपुरे देवि! रक्ष मां त्रिपुरेश्वरि! रक्ष रक्ष महादेवि अस्मदीयमिदं वपुः ऐं ह्रीं श्रीं हस्फ्रें ह्सौः २ हस्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीं समयिनि मदिरानन्दसुन्दरि समस्तसुरासुरवन्दिते

भुजङ्गभूपालमौलिमालालङ्कृतचरणकमले विकटदन्तच्छटाटोपनिवारिणि मदीयं शरीरं रक्ष रक्ष परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा नरान्त्रमालाभरणभूषिते महाकौलिनि महाब्रह्मवादिनि महाधनोन्मादनकारिणि महाभोगप्रदे अस्मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनान् हन हन दुष्टमहीपालान् भक्षय भक्षय परचक्रं भञ्जय भञ्जय जयङ्करि गगनगामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि यमलवरयूं भमलवरयूं वमलवरयूं शमलवरयूं श्रीभैरवि प्रसादय स्वाहा।

कुलाङ्गना कुलं सर्वं मदीयं त्रिपुरेश्वरि!।
देवी रक्षतु दिव्याङ्गी दिव्यात्मा भोगदायिनि!।। १।।
रक्ष रक्ष महादेवि! शरीरं परमेश्वरि!
मदीयं मदिरानन्दे आपादतलमस्तकम्।।२।।

इत्यात्मरक्षां कृत्वा,

त्रिपुराख्या महादेवी भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
न गुरोः सदृशं वस्तु न देवः शङ्करोपमः।।३।।
न च कौलात्परो योगो न विद्या त्रैपुरीसमा।
न च शान्तेः परं ज्ञानं न च क्षान्तेः परं सुखम्।।४।।
न च शक्तिसमो न्यासो न विद्या त्रैपुरीसमा।
दर्शनेषु समस्तेषु पाखण्डेषु विशेषतः।। ५।।
दिव्यरूपा महादेवी सर्वत्र परमेश्वरी।

इति मन्त्रविद्ययोर्महिमानं स्मृत्वा "पीठोपपीठशिरःस्था गगनगिरिभुवन-गिरिभुवनगोकुलनिवासिनी जयति कुलशक्तिमहीतलपातालनिवासिनी कुलकौल-विभेदिनी सकलजनमनआनन्दकारिणी करोतु मम चिन्तितं कार्यं भैरवीशतमेकं पुनातु परमेश्वरी मदनमण्डलालम्बिनी सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां परमेश्वरी" इति मन्त्रं सकृज्जपित्वा, "ऐं नमो भगवति त्रिकोणे त्रिधावर्ते महालिङ्गालङ्कृते त्रैलोक्योत्पत्तिस्थितिप्रलयकारिणि सहल ह्रीं कन्दर्पानन्ददायिनि सहह्रीं ब्रह्मदण्डरेखे सहह्रीं चित्स्वरूपेण पाशाङ्कुशालङ्कृते वद वद वाग्वादिनि श्रीं

मूष्टपालराज्यपदे ऐं वं वरदाशिवहस्ते समस्तजनानन्दकारिणि क्लीं क्लीं कामराजबीजाश्रये द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षोभय क्षोभय क्षोभिणि ह्सौः हसः ह्सौः मथ मथ अभयप्रदायिनि चतुर्भुजे त्रिनेत्रे प्रेतासनोच्चारिणि महाकपालमालालङ्कृते चन्द्रशेखरे भुक्तिमुक्तिफलप्रदे ॐ ऐं ॐ नमः सिद्धं अं ५१ क्षमित्यादिविलोमेनाकारान्तं ५१ सिद्धं मनः ॐ ऐं ॐ सर्वबीजमातः श्रीसमयिनि मम मनोरथं देहि देहि स्वाहा।।" एवं जपित्वा "ऐं ईं सौः श्रीमन्त्रराजाय नमः" इति त्रैपुरमन्त्रस्य पूजां विधाय त्रिपुरादिमहानाम्ना त्रयोदशविद्याः पूजयेत्। (१) ॐ ऐं स हौ स ह ल ह्रीं स ह ह्रौः ऐं स ह ह्रीं स ह हूं कामत्रिपुरायै नमः। (२) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह सौः त्रिपुरभैरव्यै नमः। (३) ॐ ३ ऐं ह्रीं सः वाक्त्रिपुरायै नमः। (४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः महालक्ष्म्यै त्रिपुरायै नमः। (५) ॐ ऐं प्रें क्लीं मोहिन्यै त्रिपुरायै नमः। (६) ॐ ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं भ्रामरीत्रिपुरायै नमः। (७) ॐ ३ ऐं ह्रीं श्रीं प्रें ह सौः त्रैलोक्यस्वामिन्यै त्रिपुरायै नमः। (८) ॐ ऐं डां डीं डूं डैं डौं डः हंस्यै त्रिपुरायै नमः। (९) ऐं ऐं ऐं सौः कौलिकायै त्रिपुरायै नमः। (१०) ऐं ऐं सौः षण्डिकायै त्रिपुरायै नमः। (११) ऐं ऐं सौः तालुमध्यमायै त्रिपुरायै नमः। (१२) ऐं ऐं सौः कपालाङ्कुरवासिन्यै त्रिपुरायै नमः। (१३) ठः ठः ठः।। यथाशक्ति जपित्वा, रक्तपुष्पैः शिरसि ऐं ईं सौः आत्मदेहाय नमः इति गन्धाक्षतैश्च सप्तधा सम्पूज्य, धूपदीपौ, निवेद्य, तस्मिन्नेव त्रिपुरे देहे "एं ईं सौः" इति वनिताक्षोभकरीं महाकामकलां ध्यायेत्। ततः श्लोकशतकं न्यासानुसन्धानेन पठेत्।

शक्तिन्यासश्लोकशतकम्

शक्तिरुद्रमयं देहं मदीयं त्रिपुरे कुरु।
देहि मे देवदेवेशि! वरं नित्यमभीप्सितम्।। १।।
मस्तकं मङ्गला देवी ललाटं कुलसुन्दरी।
नेत्रयुग्मं महाकाली कर्णौ रक्षतु कुण्डली।। २।।
कपाली कर्णगर्भं तु कपोलौ कमलावती।
दन्तान् रक्षतु चामुण्डा चिबुके मेरुवासिनी।। ३।।

भ्रूमध्यं कण्ठदेशं च रक्ष मे भुवनेश्वरी।
जिह्वां सरस्वती रक्षेत् तालुकं तालुवासिनी।। ४।।
स्थातु मे कपिला स्कन्धे स्कन्धां (वामां) से कुलमालिनी।
कुक्षौ विनायकी स्थातु जयानन्दा स्तनद्वये।। ५।।
कण्ठकूपे महालक्ष्मीर्हृदये चण्डभैरवी।
ब्रह्माणी नाभिदेशे तु स्थातु ज्वालावती गुदे।। ६।।
लिङ्गे लिङ्गप्रभा चैव मुण्डिनी मेदमण्डले।
नाडीचक्रे महायोगा उद्भटा दक्षिणे करे।। ७।।
वामहस्ते महामाया विद्या हस्ताङ्गुलीषु च।
वैष्णवी वामपादे च स्थातु चक्रायुधान्विता।। ८।।
तथा दक्षिणपादान्ते एकपादा सुरेश्वरी।
पादाङ्गुलीषु कौबेरी रोमकूपे महोद्भटा।। ९।।
मण्डली नस्यमूले तु वाराही मेदमण्डले।
जालन्धरी जलस्थाने कामाक्षी काममध्यगा।। १०।।
उद्भटा नाभिलिङ्गान्ते नासाग्रे पूर्णपीठगा।
पृष्ठवंशे जया देवी अस्थिसन्धिषु चर्चिता।। ११।।
चर्मधारी त्वचायां तु स्थातु नित्यं महाशयाः।
रक्तमध्ये मनोऽन्ते च स्थातु मे हिंसनी शुभा।। १२।।
माहेश्वरी च कौमारी द्वे चैते स्थातु जङ्घयोः।
वामदक्षिणयोश्चैव वीराली कटिसन्धिषु।। १३।।
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलकामिनी।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।। १४।।
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम्।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री पूजां चैव प्रजावती।। १५।।
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने।। १६।।
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम्।
समया समयं रक्षेद्विद्या विद्या कुलागमे।। १७।।

साधकानां जगन्नाथा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
प्राणा करोतु मे सिद्धिं त्रैलोक्यविजया सुखम्।। १८।।
घण्टाली या महाविद्या सा मे यच्छतु मङ्गलम्।
सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां नायिका तु या।। १९।।
सा मे सुरेश्वरी देवी सदा सिद्धिं प्रयच्छतु।
उल्कामुखा मुखे स्थातु मार्जारी देहसन्धिषु।। २०।।
भद्रकाली तु या विद्या सा मे स्थातु शिवामये।
त्रिकोणं च त्रिधावर्तं त्रैपुरं चक्रमुत्तमम्।। २१।।
मस्तके स्थातु मे नित्यं तस्यान्ते बहुरूपिणी।
पूर्वोक्ता त्रैपुरी शक्तिः स्थातु मे मन्मथोत्थिता।।२२।।
क्षोभावती जगत्सर्वं मदिरानन्दविह्वला।
निवासं कुरु मे देहे साम्प्रतं दिव्ययोगिनी।। २३।।
एह्येहि त्वं महादेवि सिद्धयोगिनि मे कुले।
शत्रूणां घातनार्थाय जेतॄणां भोगदायिनी।। २४।।
महायोगिनि देहेऽस्मिन् सर्वदा निलयं कुरु।
माहेन्द्री च शिखां स्थातु योनिमध्ये गणेश्वरी।। २५।।
प्रेताशी नाम विख्याता करोतु कुशलं मम।
डाकिनी पूर्वभागे च मम सौख्यं प्रयच्छतु।। २६।।
शाकिनी पश्चिमाङ्गेषु दक्षिणे चाऽपि रा (क्षसी?)[1] किणी।
वामभागे महामाया करोतु कुशलं मम।। २७।।
साऽस्मदीयं शिरः पातु सदा तिष्ठतु भैरवी।
या विशाला विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता।। २८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या कालकल्पिता काली कालरात्री तु कथ्यते।। २९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या निशाचरराजन्यपूजिता च निशाचरी।। ३०।।

1. टि. 'राकिणी' इति साधीयान्। 'क्षसी' इत्यपपाठः। (सं.)

सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या चोर्ध्वकेशिका नाम मुक्तकेशी महाभया।। ३१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या वीरेति समाख्याता वीराणां जयदायिनी।। ३२।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या मालिनी समाख्याता नासाग्रे विद्रुमाजिनी।। ३३।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या कङ्कालकरालाङ्गी चण्डकङ्कालकुण्डला।। ३४।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रचण्डा च विरूपाक्षी विरूपा विश्वरूपिणी।। ३५।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
खट्वाङ्गी कथ्यते या च रौद्रीरूपेण पूजिता।। ३६।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कलियोगिनी प्रसिद्धा च या लोके श्रूयते कलौ।।३७।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रेताक्षी कथ्यते या च फेत्कारोत्कटवर्जिता(?)।। ३८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
धूम्राक्षी या समाख्याता शास्त्रेऽस्मिन् योगिनीमते।। ३९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
घोररूपा महादेवी कथ्यते या कुलागमे।। ४०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
विश्वरूपा विशेषेण करोति च जगत्त्रयम्।। ४१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
भयङ्करी समादिष्टा या चोक्ता वै कुलागमे।। ४२।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।

कपालमालिका प्रोक्ता या देवी मुण्डधारिणी।। ४३।।

सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
भीषणा भैरवी नाम या देवी भीमविक्रमा।। ४४।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
न्यग्रोधवासिनी या च कथ्यते तु सुरार्चिता।। ४५।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
भैरवी भीषणा या च भैरवाष्टकवन्दिता।। ४६।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
प्रोच्यते दीर्घलम्बोष्ठी महामाया महाबला।। ४७।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
खड्वाङ्गी या महाशक्तिः संसारार्णवतारिणी।। ४८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या समस्तेषु मन्त्रेषु प्रोच्यते मन्त्रवादिनी।। ४९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कालघ्नी कथ्यते या च युगान्ते परमेश्वरी।। ५०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
ग्राहिणीति समाख्याता सुरासुरमहोरगैः।। ५१।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
चक्रिणी गद्यते या च एकपादा त्रिलोचना।। ५२।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
या विश्वबाहुका देवी विश्वनाथप्रिया सदा।। ५३।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
दर्शनेषु समस्तेषु विदिता परमेश्वरी।। ५४।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
कण्टकोच्छेदनार्थाय शास्त्रे या कण्टकी स्मृता।। ५५।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।

कीलकी कथ्यते या च सप्तहस्ता महाबला।। ५६।।

सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
संग्रामे या महादेवी महामारीति कथ्यते।।। ५७।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
यमदूतीति विख्याता या सुरासुरपूजिता।। ५८।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
करालिनीति या देवी महाविद्या महाबला।। ५९।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
ललिताम्बा महाराज्ञी सर्वचक्रैकनायिका।। ६०।।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।
नासाग्रे कौलिकी स्थातु मदनस्था तथा मुखे।। ६१।।
व्योमजङ्घे कपोले च गोलके चापहारिणी (–धारिणी)।
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीर्मस्तके मम।।६२।।
द्राविणी क्षोभिणी चैव स्तम्भिनी मोहिनी तथा।
रौद्रकर्मा महाघण्टा चमरी त्वरिता मतिः।। ६३।।
रौद्री च कुलमाता च काकदृष्टिरधोमुखी।
कपाली कुण्डली दीर्घा कपाली कुलगामिनी।। ६४।।
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलमालिनी।
भूमिरापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।। ६५।।
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम्।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री प्रजां चैव प्रजावती।। ६६।।
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने।। ६७।।
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम्।
समया समये रक्षेद् विद्यां विद्या कुलागमे।। ६८।।
साधकानां जगन्नाथा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।

द्विजटी त्रिजटी प्रोक्ता कन्दली ललिताखिला।। ६९।।

गायत्री चाम्बिका तारा पार्वती कमलप्रभा।
मादिनी मदनोन्मादा मन्दारी मदनातुरा।। ७०।।
भीषणा भीषणी नाम प्रेतसिद्धा विभीषणा।
क्षुत् तृष्णा तथा निद्रा कान्तिर्बुद्धिस्तथा द्युतिः।। ७१।।
सन्ध्या धृती रतिः क्षान्तिर्ह्रीर्निशं परिपठ्यते।
सुरनाथेति विख्याता नगरेतरदेवता।। ७२।।
ग्रामदेवी ह्यधिष्ठात्री पीठे पीठेश्वरीं विदुः।
कावेरी नर्मदा चैव गङ्गेति यमुनोच्यते।। ७३।।
गोदावरी महापुण्या प्रोच्यते चाप्यरुन्धती।
त्रैलोक्येऽपि महादेवी स्त्रीनाम्नी या प्रकाशिता।। ७४।।
सा देवीरूपलक्षे तु स्थातु श्रीर्हृदये नम।।
सुवर्णरेखिणी प्रोक्ता विद्या या प्रोच्यते किल।। ७५।।
निर्मूलिनी भुजङ्गानां सा करोतु सुखं मम।
कुरुकुल्लेति विख्याता पक्षिराजमुखोद्भवा।। ७६।।
या विद्या सा महारूपा जिह्वाग्रे स्थातु मे सदा।
ॐ कारिणीति विख्याता देहे स्थातु सदा मम।। ७७।।
विद्यापहारिणी नाम कलिरूपविदारिणी।
भेरुण्डा स्थातु मे कण्ठे तोरला स्थातु मस्तके।। ७८।।
तथा शवलरेखाऽपि मूले स्थातु सदा मम।
जाङ्गली विषनाशाय वाचां सिद्धिं करोतु मे।। ७९।।
सर्वसिद्धिकरी विद्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
अहं ब्रह्मा अहं विष्णुरहं देवो महेश्वरः।। ८०।।
सर्वभूतनिवासोऽहं लोके श्रीशक्तिचिन्तकः।
शक्तिन्यासेन पूतेन शरीरेण सुरासुराः ।। ८१।।
प्रधानदेशमात्रेण आशां (ज्ञां) कुर्वन्तु मे सदा।

यत्किञ्चिद् योगिनीरूपं त्रैलोक्ये चास्ति शङ्करः।। ८२।।

तत्सर्वं तिष्ठते देहे शक्तिन्यासे उपासिते।
कामिनी कुरुते चापि या न्यासं भक्तिनिर्मितम्।। ८३।।
तां देवीं दिव्यरूपस्थां संसारे त्रिपुरां विदुः।
नमोऽस्तु ते जगन्मातर्नमोऽस्तु भुवनेश्वरी ।। ८४।।
नमो भोगप्रदे देवि! नमस्तुभ्यं महेश्वरि!।
प्रकटा गोपिताः सर्वा निर्वाणभैरवी शिवा।। ८५।।
सम्भ्रमा विजया हंसा शुभा चानलदेवता।
यक्षिणी चूडकन्या च तथा चाकाशगामिनी।। ८६।।
भूचरी चरिता कुम्भी सर्वागमनिवासिनी।
चतुष्षष्ट्याश्रया देवी योगिन्यो येन चिन्तिताः।। ८७।।
आधारे लीयमानास्तु स योगी योगविद्भवेत्।
ललाटे मण्डला स्थातु विरजा स्थातु मस्तके।। ८८।।
एकाक्षी दक्षिणस्कन्धे वामे चैव त्रिलोचना।
जयन्ती स्थातु मे कुक्षौ कट्यां कन्दर्पकुण्डली।। ८९।।
मालिनी लिङ्गसन्धौ च हृदि स्थातु समाधिनी।
अम्बिका पृष्ठवंशे च पार्श्वयोः स्थातु मेदिनी।। ९०।।
दिग्गजाङ्गी कराग्रे च नागेन्द्री नखसन्धिषु।
व्याघ्री चक्री च जङ्घायां स्थातु पादतले मही।। ९१।।
अमृताशङ्खिनी रन्ध्रे लोचने च विलासिनी।
कालिन्दी मूलजिह्वां च रक्तं रक्षतु रक्तिनी।। ९२।।
लाङ्गली जङ्गले रक्षेदस्थिनी चाऽस्थिसन्धिषु।
मज्जिनी देहमज्जां तु शुक्रं शुक्रेश्वरी तथा।। ९३।।
त्वचं रक्षतु वेताली मम रोगप्रणाशिनी।
रुद्धटा कुरुते शान्तिं सदैव मम विग्रहे।। ९४।।
पादा पादतले स्थातु पथि रक्षतु पृथिवी।
चोराग्निराजसर्पेभ्यो भयाद्रक्षतु भैरवी ।। ९५।।

दुष्टानां दृष्टिबन्धं तु सदा करोतु बन्धिनी।
चापेटी नाम या विद्या सा मे करोतु मङ्गलम्।। ९६।।
मर्कटी घण्टकर्णी च हनुमन्ती च रावणी।
धर्धुरा कीर्तिविख्याता वन्दे विद्याचतुष्टयम्।। ९७।।
चेटका ज्ञानदा विद्या कौमारी चरणावली।
विघ्नराजैस्तता नाम तुष्टा सन्तानरूपिणी।। ९८।।
मूलाधारस्थिता हंसी पातकी दलनोद्धता।
दशैता मन्त्रविद्यास्तु तिष्ठन्तु मम मस्तके ।। ९९।।
शुभा मे चाग्रतः स्थातु लोहिता स्थातु दक्षिणे।
वामाङ्गं रतिकाले च पश्चिमे स्थातु शृङ्खला।। १००।।
शिखायां शङ्खिनी रक्षेद् वस्त्रे वस्त्रवती शुभा।
कवचे कवचाङ्गी च नेत्रे नेत्रकृतोत्सवा।। १०१।।
तिष्ठन्ति योगिनीरूपास्त्रैलोक्ये सचराचरे।
योगिन्यो याः स्तुताः सर्वा गेहं कुर्वन्तु मे वपुः।।१०२।।
पुत्राणां च सदा देयं भक्तानां तु विशेषतः।
शक्तिन्यासमिदं देयं न देयं यस्य कस्यचित्।। १०३।।
मनुष्याणां महीलोके चिन्तितार्थफलप्रदम्।
यः करोति महान्यासं षोढान्यासादिकं विभो!।। १०४।।
स जीवन् शक्तिरूपी वै त्रैलोक्योन्मूलनक्षमः।
शक्तिन्यासे कृते जीवेद् यः कश्चिच्छेदको भवेत्।। १०५।।
कर्मणा मनसा वाचा तस्य घातो भविष्यति।।

इति शक्तिन्यासः।

शिष्यस्य अन्तर्यागः

एवं महाशक्तिन्यासं स्वयं कृत्वा शिष्यस्य कारयित्वाऽन्तर्यागं कुर्यात्।
तद्यथा–मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा सामान्यार्घ्योदकेन स्वपुरतश्चतुरस्रं

कृत्वा "ॐ ह्रीं हं सः सोऽहं स्वाहा" इत्यात्ममनुना साधारं कलशोदक-

मात्मपात्रं संस्थाप्य स्वदेहञ्च शिष्यदेहञ्च श्रीचक्ररूपं विचिन्त्य, अं-कं-क्षं३६ शिवशक्ति-सदाशिवेश्वर-शुद्धविद्यामायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्य-हङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्नेत्रजिह्वाघ्राण-वाक्-पाणि-पादपायूपस्थ-शब्दस्पर्श-रूप-रसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलभूमि-जीवसर्वात्मने षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकाय श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीयोगपीठाय नमः" इति पीठसमष्टिविद्यया हृदि पुष्पाञ्जलिं प्रक्षिप्य गन्धमाल्यादिभिर्भूषयित्वा देवीं सम्मुखीं हृदि ध्यात्वाऽऽवाह्यादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽसनाद्युपचारान् समर्प्य ध्यानपूर्वकं हृदि साङ्गमित्यादिना त्रिः सम्पूज्य प्रसन्तर्प्य, मूलेन गन्धादिताम्बूलान्तानुपचारान् समर्प्य तत्त्वचतुष्टय-शोधनं कुर्यात्। यथा-

ऐं अं १६ अः भूमिजीवसर्वात्मने अं आं १६ ऐं "इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाँसुरे स्वाहा।।" (१।२२।१७)

इदन्तापात्रसम्भूतमहन्तापरमामृतम्।
पराहन्तामये वह्नौ जुहोमि शिवरूपतः।

मूलं० आत्मतत्त्वात्मने स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।" इत्यात्मपात्रान्तरेण किञ्चित् स्वीकृत्य

क्लीं कं खं इत्यादि २५ शिवशक्ति-सदाशिवेश्वर-शुद्धविद्यामाया-कलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्नेत्र जिह्वाघ्राण-वाक्पाण्यात्मने कं २५ क्लीं

सुरावन्तं वर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिन्वन्ति महिषा नभोभिः।
दधानाः सोमं दिवि देवतासु मादेदमेन्द्रं यजमानः स्वर्काः।

अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमाने मोहान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिंश्चिदद्भुतमरीचिविकासभूमौ विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्।।

मूलं० विद्यातत्त्वात्मने सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा, इति। पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य,

सौः यं रं १० पादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्नि-सलिलात्मने यं १० वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवे दिवे वाममस्मभ्यं सावीः। वामस्य हि क्षयस्य देव भूरे रया धिया वामभाजः स्याम। (यजुः, ८/६)

तृप्यन्तु मातरः सर्वाः भैरवाः सविनायकाः।
क्षेत्रपालाश्च योगिन्यो मम देहव्यवस्थिताः

मूलं० शिवतत्त्वात्मने कारणदेहं शोधयामि स्वाहा, इति पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य;

ऐं क्लीं सौः अं० ५१ भूमिजीवसर्वात्मने शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्या-मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्नेत्रजिह्वाघ्राण-वाक्पाणिपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलात्मने अं ५१ ऐं क्लीं सौः

धर्माधर्महविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्॥

मूलं० सर्वतत्त्वात्मने स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा, इति पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य पुनराधारे (कुण्डे) अनादिवासनेन्धनज्वलिते आत्मचतुष्काकारचतुरस्रे कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निं ध्वात्वा, मूलं० "हं सः चिदग्निमण्डलाय नमः" इति मनसा सम्पूज्य, मनसैव "पुण्यं जुहोमि स्वाहा।" एवं पापं० कृत्यं० अकृत्यं० सङ्कल्पं विकल्पं० धर्मं० अधर्मं० चेति हुत्वाऽऽत्मपात्रं हस्ते संगृह्य मूलं० हंसः "इतः पूर्वं प्राणबुद्धिमनोऽहङ्कारदेह-धर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं गुरुदेवतायै समर्पितमस्तु स्वाहा।" इति सर्वं समर्प्य, पात्रमाधारे संस्थाप्य, आधारादि ब्रह्मरन्ध्रगां बिसतन्तुतनीयसीं विद्युत्कोटिप्रभामशेषजगदुत्पत्तिस्थिति-संहारकारिणीं कुण्डलिनीं देवीरूपां ध्यात्वा, यथाशक्ति मूलमक्षमालया सञ्जप्य, निवेद्य,

मायान्ततत्त्वे सदहं शिवोऽहं शक्त्यन्ततत्त्वे चिदहं शिवोऽहम्।
शिवान्ततत्त्वे सुखदः शिवोऽहमतःपरं पूर्णमनुत्तरोऽहम्।

दैशिकवागुपदेशविनश्यद्देहमरुन्मयशून्यविकल्पः।
अद्वयबोधविमर्शसुखः सन्नद्य शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि॥

इत्यनुसन्धाय, प्रणम्य, शिष्यस्याऽपि बालाबीजत्रयस्थाने कूटत्रयं संयोज्य संशोध्य तथैव षोडशार्णायाः खण्डत्रयं विधाय संशोध्य, श्रीपूर्णपीठे चन्दनादिपीठे वा सिन्दूरकुङ्कुमादिना दीक्षाप्रसङ्गोक्तविधिना मातृकायन्त्रं विलिख्य, तत्र शिष्यं निवेश्य, कलशस्थपल्लवान् शिष्यशिरसि कल्पवृक्षबुद्ध्या निधाय, कुम्भाम्भोभिरङ्गोपाङ्गविद्याभिरावरणदेवतामन्त्रैर्देयमूलविद्यया चाभिषिञ्चेत्। ऋत्विक्सामयिकैः सुवासिनीभिश्चाभिषेचयेत्।

आचार्यस्ततः कुम्भस्था देवताः षोडशोपचारैरुपचर्य पुनश्च तास्तत उद्धृत्य सम्पूज्य, यथास्थानं संस्थाप्य, अभिषिञ्चेत्।

अभिषेकप्रकारः

यथा–अभिषेकस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः शक्तिर्देवता सर्वसिद्ध-सङ्कल्पसिद्धये विनियोगः।

ॐ राजराजेश्वरी शक्तिर्भैरवी कालभैरवी।
श्मशानभैरवी देवी त्रिपुरानन्दभैरवी ।।
त्रिपुरा त्रिपुरा देवी तथा त्रिपुरसुन्दरी ।
त्रिपुरेशी महादेवी तथा त्रिपुरमालिका ।।
नित्या च नित्यरूपा च वज्रप्रस्तारिणी तथा।
सर्वचक्रेश्वरी देवी तथा नीलसरस्वती ।।
सर्वसिद्धिकरी देवी सिद्धगन्धर्व–सेविता।
उग्रतारा महादेवी तथा दक्षिणकालिका ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।। इति
उग्रदंष्ट्रा महादंष्ट्रा शुभदंष्ट्रा कपालिनी।।
भीमनेत्रा विशालाक्षी मङ्गला विजया जया।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।। इति
मङ्गला नन्दिनी भद्रा लक्ष्मीःकीर्त्तिर्यशस्विनी।
पुष्टिर्मेधा शिवा साध्वी यशः शोभा उमा धृतिः।।
श्रीनन्दा च सुनन्दा च नन्दिन्यानन्दपूजिता।
एतास्त्वाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।। इति
विजया मङ्गला भद्रा स्मृतिःशान्तिःक्षमा धृतिः।

सिद्धिस्तु परमापुष्टिः श्रीरृद्धिश्च रतिस्तथा॥
दीप्ता कान्तिर्यशो लक्ष्मीरीश्वरी बुद्धिरेव च।
शक्तिर्मायावती ब्राह्मी जयन्ती चाऽपराजिता॥
अजिता मानवी श्वेता दितिस्त्वदितिरेव च।
माया चैव महामाया मोहिनी क्षोभिणी तथा॥
कमला विमला गौरी लावण्याम्बुधिसुन्दरी।
दुर्गा क्रियाऽरुन्धती च घण्टाकर्णा कपालिनी॥
चर्चिका चापरा ज्ञेया तथैव सुरपूजिता।
वैवस्वती च कौमारी तथा माहेश्वरी परा।
वैष्णवी च महालक्ष्मीः कार्त्तिकी कौशिकी तथा।
शिवदूती च चामुण्डा मुण्डमालाविभूषणा॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा। इति
इन्द्रो वह्निर्यमश्चैव नैरृतो वरुणस्तथा॥
पवनो धनदेशानौ ब्रह्माऽनन्तो दिगीश्वराः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥ इति
संवत्सरश्चायनौ च मासपक्षदिनानि च।
तिथयश्चाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥ इति
रविःसोमः कुजबुधौ गुरुःशुक्रःशनैश्चरः।
राहुः केतुश्च सततमभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः॥ इति
नक्षत्रं करणं योगोऽमृतसिद्धिस्ततः परम्॥
दग्धाः पापास्तथा भद्रा योगो वाराः क्षणास्तथा।
वारवेला कालवेला दण्डा ऋक्षादयस्तथा।
अभिषिञ्चन्तु सततं मन्त्रपूतेन वारिणा। इति
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्त एव च॥
कपाली भीषणाख्यश्च संहारश्चाष्टभैरवाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा॥ इति
द्राविणी पुत्रिकाश्चैव डाकिनी पुत्रिकास्तथा॥
शाकिनी पुत्रिकाश्चान्या काकिनी पुत्रिका पराः।
लाकिनी पुत्रिका भूयो हाकिनी पुत्रिकास्तथा।

ततश्च राकिणी पुत्री देवपुत्री ततः परम्।
मातृणाञ्च तथा पुत्री चोर्ध्वमुख्याः सुतास्तथा।।
अधोमुख्याः सुताश्चैव ज्वालामुख्याः सुताः पराः।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।। इति
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।। इति
पुरुषः प्रकृतिश्चैव विकाराश्चैव षोडश।
आत्मा परमात्मा ज्ञानात्मा ध्यानात्मा परमात्मनः।।
आत्मनश्चात्मनश्चैव स्थूलसूक्ष्मौ च ये पराः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।। इति
वेदादिबीजं हुंबीजं स्त्रीबीजं तन्निकेतनम्।
शक्तिबीजं रमाबीजं मायाबीजं सुधाकरम्।।
चिन्तारत्नं महाबीजं नारसिहं च तारकम्।
मार्तण्डभैरवं दौर्गं बीजं स्त्रीपौरुषोत्तमम्।।
गाणपत्यञ्च वाराहं कालबीजं भयापहम्।
एतानि त्वाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।। इति
गङ्गा गोदावरी रेवा यमुना च सरस्वती।
आत्रेयी भारती चैव सरयू गण्डकी तथा।।
करतोया चन्द्रभागा श्वेतगङ्गा च कौशिकी।
भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा । इति
भैरवी भीमरूपा च शोणः सुमुख एव च।।
सिन्धुश्चैव ह्रदः पुण्यस्तथा पातालसम्भवः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।। इति
यानि कानि च तीर्थानि पुण्यापुण्यतराणि च।
तानि त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।। इति

जम्बूद्वीपादयो द्वीपाः सागरा लवणादयः।

अनन्ताख्यास्तथा नागाः सर्पा ये तक्षकादयः।।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।। इति
तारश्च वह्निजाया च वषट्कूर्चमतः परम्।।
वौषट्कारस्तु फट्कारो ह्यभिषिञ्चन्तु सर्वदा।
नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा राक्षसा दानवाश्च ये।।
पिशाचा गुह्यका भूत्वा अभिषेकेण ताडिताः।
अलक्ष्मीः कालकर्णी च पापानि सुमहान्ति च।।
नश्यन्तु चाभिषेकेण तारबीजेन ताडिताः।
रोगाः शोकाश्च दारिद्र्यं दौर्बल्यं चित्तविक्रिया।।
नश्यन्तु चाऽभिषेकेण वाग्बीजेनैव ताडिताः।
लोकानुरागत्यागाश्च दौर्भाग्यमपि दुर्यशः।।
नश्यन्तु चाभिषेकेण मन्मथेनैव ताडिताः।
तेजोह्रासः शक्तिह्रासो बुद्धिह्रासस्तथैव च।।
नश्यन्तु चाभिषेकेण शक्तिबीजेन ताडिताः।
विषाणि च महारोगा डाकिन्यो भीतयस्तथा।।
घोराभिचाराः क्रूराश्च ग्रहा नागास्तथैव च।
नश्यन्तु चाभिषेकेण कालबीजेन ताडिताः।
नश्यन्तु विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः।
अभिषेकेण शाक्तानां पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।

मन्त्रदानं त्रैपुरसिद्धान्तश्रावणम्

ततो वस्त्रमाल्याद्यलङ्कृतं श्रीचक्रे समुपवेश्य मातृकायन्त्रमये पीठे

पराप्रासाद- श्रीषोडशार्ण-विद्याभेदषट्शाम्भवक्रम-चरणविद्याम्नाय-समया-पञ्चसिंहासनषड्दर्शन-पञ्चपञ्चिकागण-पञ्चायतनविद्याः श्रीविद्या-वृन्दभेदादिदशमहाविद्याः षडाम्नायमन्त्रान् शैववैष्णवगाणपत्यसौरशाक्तविद्या-गुरुपादुकाविद्या-षोडशनित्याविद्या-महाषोढोक्तविद्या उपदिशेत्, स्वक्रममपि चोपदिशेत्। दीक्षाप्रकरणोक्तं त्रैपुरं सिद्धान्तञ्च श्रावयेत्।

आनन्दनाथशब्दान्तनामकरणम्

स्वाङ्गेषु किमप्यङ्गं स्पर्शयित्वा तदङ्गैर्मातृकावर्णादि द्व्यक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा आनन्दनाथशब्दान्तं तस्य नाम दिशेत्। ततः समयाचारपालनं शास्त्राज्ञापालनञ्च दीक्षाप्रसङ्गोक्तमुपदिशेत्।।

वर्णदीक्षाविधिः

अथ प्रकृते क्रियादीक्षाशक्तानां वर्णदीक्षादिविधिर्लिख्यते–तत्र पुंस्प्रकृत्यात्मकानकारादिक्षकारान् मातृकावर्णान् पुंस्प्रकृत्यात्मके शिष्यदेहे यथाविधि विन्यस्य पुनः संहारक्रमेण मूर्धादिहृदयान्तस्थं क्षकारं नाभ्यन्तःस्थलकारे संहरामि, हृदादिनाभिपर्यन्तस्थलकारं हृदादिवामपादाग्रस्थे हकारे संहरामि, हृदादिवामपादाग्रपर्यन्तस्थं हकारं हृदादिदक्षिणापादाग्रपर्यन्तस्थे सकारे संहरामि, हृदादिदक्षिणपादाग्रपर्यन्तस्थं षकारं हृदादिदक्षिणपाण्यग्रावधिस्थे शकारे संहरामि एवं युक्त्या वर्णान् संहृत्य, पुनस्तच्चैतन्यसकलग्रामतत्त्वसमेतं परमात्मनि संयोज्य विलीनतत्त्वसकलसमूहं विगतनिखिलकलुषं दिव्यतनुं शिष्यं विचिन्त्य, पुनः परमात्मनः सकाशादकारादिक्षकारान्तान् वर्णानुत्पाद्य वक्ष्यमाणसृष्टिन्यासक्रमेण शिष्यदेहे मातृकावर्णान् विन्यस्य, पुनस्तच्चैतन्यं तत्त्वग्रामसमेतं तस्मिन् संयोज्योक्तविधिनोपदेशं कुर्यात्। इति वर्णात्मदीक्षा।

कलादीक्षाविधिः

अथ कलादीक्षा–तत्र पादतलतो जानुपर्यन्तं निवृत्तिकलां, जानुतो नाभिपर्यन्तं प्रतिष्ठाकलां, नाभितः कण्ठपर्यन्तं विद्याकलां, कण्ठतो ललाटपर्यन्तं शान्तिकलां, ललाटतः ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं शान्त्यतीताकलां शिष्यदेहे सञ्चिन्त्य, निवृत्तिकलां प्रतिष्ठाकलायां संहरामि, प्रतिष्ठाकलां शान्त्यतीताकलायां संहरामि, इति क्रमात् संहृत्य वेधयित्वा, तां परमात्मनि संहृत्य, प्राग्वत्तस्य शरीरं संशोध्य समुत्पाद्य, परमात्मनः सकाशाच्छान्त्यतीताकलां ततः शान्तिं ततो विद्या ततःप्रतिष्ठां ततो निवृत्तिश्च सृष्टिक्रमेण शिष्यदेहे तत्तत्स्थाने संयोज्योपदेशादिकं कुर्यादिति। एवमष्टत्रिंशत्कलाभिर्वोक्तयुक्त्या संहार-सृष्टिन्यासक्रमेण शिष्यं संस्कृत्य दीक्षां दद्यात्, इति कलादीक्षा।

अथ स्पर्शदीक्षाविधिः-तत्र गुरुः स्वहस्ततले शिवरूपं स्वगुरुं ध्यायन् षडङ्गमातृकां च जपन् शिष्यस्य शिरसि स्वदक्षिणकरं निधायोपदिशेत्, इति स्पर्शदीक्षा।

अथ स्त्रीणां वाग्दीक्षाः-तत्र गुरुः परचिद्रूपे शिवे चित्तं निधाय तदुद्भूतान् समस्तमन्त्रान् ध्यायंस्तन्मनाः स्वयं शिष्यायोपदिशेन्मन्त्रान्। इति वाग्दीक्षा।

अथ दृग्दीक्षा-तत्र गुरुः स्वनेत्रे निमील्य परमात्मस्वरूपिणीं देवतां ध्यात्वा प्रसन्नचित्तो दिव्यचक्षुषा शिष्यं निरीक्ष्य मन्त्रोपदेशं कुर्यात्, इति दृग्दीक्षा। पश्चादुक्तमेतत् दीक्षात्रयं विरक्तानां शिष्याणां तत्त्वविदा गुरुणा कर्तव्यमिति। स्त्रीणां तु वाग्दीक्षैव विहिता नान्या।

अथ वेधदीक्षा-तत्र गुरुः शिष्यस्य मूलाधारे चतुर्दलपङ्कजमध्यत्रिकोणमध्ये यथोक्तरूपां कुण्डलिनीं ध्यात्वा तत्पात्रचतुष्टयमध्यस्थवादिसान्ताक्षरचतुष्टयं तन्मध्यस्थिते कमलासने संहृत्य तं ब्रह्माणं तदूर्ध्वगं स्वाधिष्ठानाख्यषट्पत्रकमलमध्यस्थिते विष्णौ संयोज्य, तत्पत्रषट्कमध्यस्थबादिलान्तवर्णषट्कं विष्णौ संयोज्य, तदूर्ध्वे नाभिमण्डले दशदलकलात्मके मणिपूराख्ये विष्णुं संयोज्य तत्पत्रदशकमलमध्यस्थडादिफान्तवर्णदशकसहितं विष्णुं तत्पङ्कजमध्ये रुद्रे संयोज्य वेधयित्वा तं रुद्रमनाहताख्ये हृत्पद्मे कादिफान्तद्वादशवर्णाढ्यद्वादशदलसंयुक्ते संयोज्य तैरक्षरैः सार्धं तं रुद्रं तन्मध्यस्थिते स्वरे संयोज्य वेधयित्वा, कण्ठदेशे षोडशस्वराढ्यषोडशदलकमले विशुद्धचक्रे तमीश्वरं संयोज्य तैः स्वरैः सार्धम् ईश्वरं तन्मध्यस्थे सदाशिवे संयोज्य वेधयित्वा, तं सदाशिवं भ्रूमध्यद्विदलपङ्कजमाज्ञाचक्रं नीत्वा तत्पत्रद्वयहक्षवर्णद्वयसहितं सदाशिवं तन्मध्यवर्तिनि बिन्दौ संयोज्य वेधयित्वा तं बिन्दुं तदूर्ध्वस्थितायां कलायां संयोज्य तां पुनर्नादे तं नादान्ते तमुन्मन्यां तां विष्णुचक्रे विष्णुचक्रं गुरुवक्त्रं चेत्युत्तरोत्तरं संयोज्य वेधयित्वा जीवात्मना सह तां कुण्डलिनीं परशिवे संयोज्य वेधयेत्। एवं कृते शिष्यो गुर्वाज्ञया छिन्नसंसारपाशो विसंज्ञः सद्यः क्षितितले पतति। ततो गुरुः संहृतविपरीतक्रमेण परशिवात् कुण्डलिनीमुत्पाद्य तथा हृतमखिलं सृष्टिक्रमेण शिष्यदेहे तत्तच्चक्रे तां तां देवतां संयोज्य हृदये जीवं मूलाधारे कुण्डलिनीं संयोज्योपदेशादिकं कुर्यात्। ततः

सञ्ज्ञातदिव्यबोधो भूतभविष्यद्वर्तमानज्ञः सदाशिवो भवति। प्रायः कलौ वेधदीक्षाकरो गुरुस्तद्योग्यः शिष्यश्च दुर्लभ इत्याहुराचार्याः। प्रसङ्गादत्राऽपि लिखितेयमिति शिवम्।

द्वितीयपूर्णाभिषेकः

अथैवं दीक्षितानां सद्भक्तियुक्तानां गुरुतःशास्त्रतश्चाधिगताशेषरहस्य-परमार्थानां गुरुः शिष्याणां पूर्णाभिषेकाख्यं द्वितीयमभिषेकं कुर्यात्। तत्र प्रागुक्ते मण्डपे वेदकायां वक्ष्यमाणं विपुलं तत्पूजाचक्रं निर्माय, प्राग्वत्पञ्चरजोभिः कर्णिकादलकेसरकोणादिकमापूर्य तस्य मध्ये खारीतोयपूर्णकुम्भं प्रागुक्तविधिना संस्थाप्यान्येषु दलेषु कोणेषु चतुरस्रेषु च सर्वावरणदेवतापूजास्थानेषु प्रस्थद्वयजलपूर्णकलशान् संस्थाप्य, तत्र मध्यकुम्भे देवतामावाह्य, प्रागुक्तविधिना षोडशोपचारैः सम्पूज्यान्येषु कलशेषु तथैवाङ्गावरणदेवताः सम्पूज्य, दीक्षोक्तविधिना शिष्यजन्मनक्षत्रे प्राग्वत्पञ्चवाद्यघोषपुरःसरं स्वेष्टदेवताभक्तैर्ब्राह्मणैः सह तं सम्यगभिषिञ्चेत्।

॥ इति पूर्णाभिषेकविधिः॥

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे पूर्णाभिषेकः सम्पूर्णः

॥ श्रीविद्यासुप्रसन्नाऽस्तु॥

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम्

श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्यरचितम्

मम न भजनशक्तिः पादयोस्ते न भक्ति-
र्न च विषयविरक्तिर्ध्यानयोगे न शक्तिः।
इति मनसि सदाऽहं चिन्तयन्नाद्यशक्ते
रुचिरवचनपुष्पैरर्चनं सञ्चिनोमि ॥ १॥

व्याप्तं हाटकविग्रहैर्जलधरैरारूढदेवव्रजैः
पोतैराकुलितान्तरं मणिधरैर्भूमीधरैर्भूषितम्।
आरक्तामृतसिन्धुमुद्धुरचलद्वीचीचलद्व्याकुल-
व्योमानं परिचिन्त्य सन्ततमहो चेतः कृतार्थीभव॥ २॥

तस्मिन्नुज्ज्वलरत्नजालविलसत्कान्तिच्छटाभिः स्फुटं
कुर्वाणं वियदिन्द्रचापनिचयैराच्छादितं सर्वतः।
उच्चैः शृङ्गनिषण्णदिव्यवनितावृन्दाननप्रोल्लसद्-
गीताकर्णननिश्चलाखिलमृगं द्वीपं नमस्कुर्महे ॥ ३॥

जातीचम्पकपाटलादिसुमनस्सौरभ्यसम्भावितं
ह्रीङ्कारध्वनिकण्ठकोकिलकुहूप्रोल्लासिचूतद्रुमम्।
आविर्भूतसुगन्धिचन्दनवनं दृष्टिप्रियं नन्दनं
चञ्चच्चञ्चलचञ्चरीकचटुलं चेतश्चिरं चिन्तय ॥ ४॥

परिपतितपरागैः पाटलक्षोणिभागो
विकसितकुसुमोच्चैः पीतचन्द्रार्करश्मिः।
अलिशुकपिकराजीकूजितैः श्रोत्रहारी।
स्फुरतु हृदि मदीये नूनमुद्यानराजः ॥ ५॥

रम्यद्वारपुरप्रचारतमसां संहारकारिप्रभ-
स्फूर्जत्तोरणभारहारकमहाविस्तारहारद्युते।
क्षोणीमण्डलहेमहारविलसत्संसारपारप्रद-

प्रोद्यद्भक्तमनोविहारकनकप्राकार तुभ्यं नमः॥ ६॥

उद्यत्कान्तिकलापकल्पितनभःस्फूर्जद्वितानप्रभः
सत्कृष्णागुरुधूपवासितवियत्काष्ठान्तरे विद्युतः।
सेवायातसमस्तदैवतगणैरासेव्यमानोऽनिशं
सोऽयं श्रीमणिमण्डपोऽनवरतं मच्चेतसि द्योतताम्॥ ७॥

क्वाऽपि प्रोद्भटपद्मरागकिरणव्रातेन सन्ध्यायितं
कुत्राऽपि स्फुटविस्फुरन्मरकतद्युत्या तमिस्रायितम्।
मध्यालम्बिविशालमौक्तिकरुचा ज्योत्स्नायितं कुत्रचित्
मातः श्रीमणिमन्दिरं तव सदा वन्दामहे सुन्दरम्॥ ८॥

उत्तुङ्गालयविस्फुरन्मरकतप्रोद्यत्प्रभामण्डला-
न्यालोक्याङ्कुरितोत्सवैर्नवतृणाकीर्णस्थलीशङ्कया।
नीतो वाजिभिरुत्पथं वत रथस्सूतेन तिग्मद्युते-
र्वल्गावल्गितहस्तमस्तशिखरं कष्टैरितः प्राप्यते॥ ९॥

मणिसदनसमुद्यत्कान्तिधारानुरक्ते
वियति चरमसन्ध्याशङ्किनो भानुरथ्याः।
शिथिलितगतकुप्यत्सूतहुङ्कारनादैः
कथमपि मणिगेहादुच्चकैरुच्चलन्ति॥ १०॥

भक्त्या किन्नु समर्पितानि बहुधा रत्नानि पाथोधिना
किं वा रोहणपर्वतेन सदनं यैर्विश्वकर्माऽक्रोत्।
आज्ञातं गिरिजे कटाक्षकलया नूनं त्वया तोषिते
शम्भौ नृत्यति नागराजफणिना कीर्णा मणिश्रेणयः॥ ११॥

विदूरमुक्तवाहनैर्विनम्रमौलिमण्डलै-
र्निबद्धहस्तसम्पुटैः प्रयत्नसंयतेन्द्रियैः।
विरिञ्चिविष्णुशङ्करादिभिर्मुदा तवाऽम्बिके
प्रतीक्ष्यमाणनिर्गमो विभाति रत्नमण्डपः॥ १२॥

ध्वनन्मृदङ्गकाहलः प्रगीतकिन्नरीगणः
प्रनृत्तदिव्यकन्यकः प्रवृत्तमङ्गलक्रमः।
प्रकृष्टसेवकव्रजः प्रहृष्टभक्तमण्डलो
मुदे ममाऽस्तु सन्ततं त्वदीयरत्नमण्डपः॥ १३॥

प्रवेशनिर्गमाकुलैः स्वकृत्यरत्नमानसै-
बर्हिःस्थितामरावलीविधीयमानभक्तिभिः।
विचित्रवस्त्रभूषणैरुपेतमङ्गनाजनैः
सदा करोतु मङ्गलं ममेह रत्नमण्डपः॥ १४॥
सुवर्णरत्नभूषितैर्विचित्रवस्त्रधारिभिः
गृहीतहेमयष्टिभिर्निरुद्धसर्वदैवतैः।
असंख्यसुन्दरीजनैः पुरः स्थितैरधिष्ठितो
मदीयमेतु मानसं त्वदीयतुङ्गतोरणः॥ १५॥
इन्द्रादींश्च दिगीश्वरान्सहपरीवारानथो सायुधान्
योषिद्रूपधरान्स्वदिक्षु निहितान् सञ्चिन्त्य हृत्पङ्कजे।
शङ्खे श्रीवसुधारया वसुमतीयुक्तश्च पद्मं स्मरन्
कामं नौमि रतिप्रियं सहचरं प्रीत्या वसन्तं भजे॥ १६॥
गायन्तीः कलवीणयाऽतिमधुरं हुङ्कारमातन्वती-
र्द्वाराभ्यासकृतस्थितीरिह सरस्वत्यादिकाः पूजयन्।
द्वारे नौमि मदोन्मदं सुरगणाधीशं मदेनोन्मदां
मातङ्गीमसिताम्बरां परिलसन्मुक्ताविभूषां भजे॥ १७॥
कस्तूरिकाश्यामलकोमलाङ्गीं कादम्बरीपानमदालसाङ्गीम्।
वामस्तनालिङ्गितरत्नवीणां मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि॥ १८॥
विकीर्णचिकुरोत्करे निगलिताम्बराडम्बरे
मदाकुलितलोचने विमलभूषणोद्भासिनी।
तिरस्करिणि! तावकं चरणपङ्कजं चिन्तयन्
करोमि पशुमण्डलीमलिकमोहमुग्धाशयाम्॥ १९॥
प्रमत्तवारुणीरसैर्विघूर्णमानलोचनाः
प्रचण्डदैत्यसूदनाः प्रविष्टभक्तमानसाः।
उपोढकज्जलच्छविच्छटाविराजिविग्रहाः
कपालशूलधारिणीः स्तुवे त्वदीयदूतिकाः॥ २०॥

स्फूर्जन्नव्ययवाङ्कुरोपलसिताभोगैः पुरः स्थापितैः
दीपोद्भासिशरावशोभितमुखैः कुम्भैर्नवैः शोभिता।
स्वर्णाबद्धविचित्ररत्नपटलीचञ्चत्कपाटश्रिया
युक्तं द्वारचतुष्टयेन गिरिजे वन्दे मणीमन्दिरम्।। २१।।
आस्तीर्णारुणकम्बलासनयुतं पुष्पोपहारान्वितं
दीप्तानेकमणिप्रदीपसुभगं राजद्वितानोत्तमम्।
धूपोद्गारिसुगन्धिसम्भ्रममिलद्भृङ्गावलीगुञ्जितं
कल्याणं वितनोतु मेऽनवरतं श्रीमण्डपाभ्यन्तरम्।। २२।।
कनकरचिते पञ्चप्रेतासनेन विराजिते
मणिगणचिते रक्तश्वेताम्बरास्तरणोत्तमे।
कुसुमसुरभौ तल्पे दिव्योपधानसुखावहे
हृदयकमले प्रादुर्भूतां भजे परदेवताम्।। २३।।
सर्वाङ्गस्थितिरम्यरूपरुचिरां प्रातः समभ्युत्थितां
जृम्भामञ्जुमुखाम्बुजां मधुमदव्याघूर्णदक्षित्रयाम्।
सेवायातसमस्तसन्निधिसखीस्सम्मानयन्तीं दृशा
सम्पश्यन् परदेवतां परमहो मन्ये कृतार्थं जनुः।। २४।।
उच्चैस्तोरणवर्तिवाद्यनिवहध्वाने समुज्जृम्भिते
भक्तैर्भूमिविलग्नमौलिभिरलं दण्डप्रणामे कृते।
नानारत्नसमूहनद्धकथनस्थालीसमुद्भासितां
प्रातस्ते परिकल्पयामि गिरिजे नीराजनामुज्ज्वलाम्।। २५।।
पाद्यं ते परिकल्पयामि पदयोरर्घ्यं तथा हस्तयोः
सौधीभिर्मधुपर्कमम्ब मधुरं धाराभिरास्वादय।
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गाङ्गेन मत्कल्पितं
साष्टाङ्गप्रणिपातमीशदयिते दृष्ट्या कृतार्थीकुरु।। २६।।
मातः पश्य मुखाम्बुजं सुविमले दत्ते मया दर्पणे
देवि स्वीकुरु दन्तधावनमिदं गङ्गाजलेनान्वितम्।
सुप्रक्षालितमाननं विरचयास्मिन्धाम्बरप्रोञ्छनं
द्रागङ्गीकुरु तत्त्वमम्ब मधुरं ताम्बूलमास्वादय।। २७।।

निधेहि मणिपादुकोपरि पदाम्बुजं मज्जना-
लयं व्रज शनैः सखीकृतकराम्बुजालम्बनम्।
महेशि करुणानिधे तव दृगन्तपातोत्सुकान्
विलोकय मनागमूनुभयसंस्थितान्दैवतान् ॥ २८॥

हेमरत्नवरणेन वेष्टितं विस्तृतारुणवितानशोभितम्।
सज्जसर्वपरिचारिकाजनं पश्य मज्जनगृहं मनो मम॥ २९॥

कनककलशजालस्फाटिकस्नानपीठाद्युपकरणविशालं गन्धमत्तालिमालम्।
स्फुरदरुणवितानं मञ्जुगन्धर्वगानं परमशिवमहेले मज्जनागारमेहि॥ ३०॥

पीनोत्तुङ्गपयोधराः परिलसत्सम्पूर्णचन्द्रानना
रत्नस्वर्णविनिर्मिताः परिलसत्सूक्ष्माम्बरप्रावृताः।
हेमस्नानघटीस्तथा मृदुपटीरुद्वर्तनं कौसुमं
तैलं कङ्कतिकां करेषु दधतीर्वन्देऽम्ब ते दासिकाः॥ ३१॥

तत्र स्फाटिकपीठमेत्य शनकैरुत्तारितालङ्कृति-
र्नीचैरुज्झितकञ्चुकोपरिहितारक्तोत्तरीयाम्बरा।
वेणीबन्धमपास्य कङ्कतिकया केशप्रसादं मना-
क्कुर्वाणा परदेवता भगवती चित्ते मम द्योतताम्॥ ३२॥

अभ्यङ्गं गिरिजे गृहाण मृदुना तैलेन सम्पादितं
काश्मीरैरगुरुद्रवैर्मलयजैरुद्वर्तनं कारय ।
गीते किन्नरकामिनीभिरभितो वाद्ये मुदा वादिते
नृत्यन्तीमिह पश्य देवि पुरतो दिव्याङ्गनामण्डलीम्॥ ३३॥

कृतपरिकरबन्धास्तुङ्गपीनस्तनाढ्या
मणिनिवहनिबद्धा हेमकुम्भीर्दधानाः।
सुरभिसलिलनिर्यद्गन्धलुब्धालिमालाः
सविनयमुपतस्थुस्सर्वतः स्नानदास्यः॥ ३४॥

उद्गन्धैरगुरुद्रवैस्सुरभिणा कस्तूरिकावारिणा
स्फुर्जत्सौरभयक्षकर्दमजलैः काश्मीरनीरैरपि।
पुष्पाम्भोभिरशेषतीर्थसलिलैः कर्पूरपाथोभरैः
स्नानं ते परिकल्पयामि गिरिजे भक्त्या तदङ्गीकुरु॥ ३५॥

प्रत्यङ्गं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्छनं
कुर्वे केशकलापमायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम्।
आलीवृन्दविनिर्मितां यवनिकामास्थाय रत्नप्रभं
भक्तत्राणपरे महेशगृहिणि स्नानाम्बरं मुच्यताम्।। ३६।।
पीतं ते परिकल्पयामि निविडं चण्डातकं चण्डिके
सूक्ष्मं स्निग्धमुरीकुरुष्व वसनं सिन्दूरपूरप्रभम्।
मुक्तारत्नविचित्रहेमरचनाचारुप्रभाभास्वरं
नीलं कञ्चुकमर्पयामि गिरिशप्राणप्रिये सुन्दरि।। ३७।।
विलुलितचिकुरेणच्छादितांसप्रदेशे मणिनिकरविराजत्पादुकान्यस्तपादे।
सुललितमवलम्ब्य द्राक्सखीमंसदेशे गिरिशगृहिणि भूषामण्डपाय प्रयाहि।।३८।।
लसत्कनककुट्टिमस्फुरदमन्दमुक्तावलीसमुल्लसितकान्तिभिःकलितशक्रचापव्रजे।
महाभरणमण्डपे निहितहेमसिंहासनं सखीजनसमावृतं समधितिष्ठ कात्यायनि।।३९।।
स्निग्धं कङ्कतिकामुखेन शनकैस्संशोध्य केशोत्करं
सीमन्तं विरचय्य चारु विमलं सिन्दूररेखान्वितम्।
मुक्ताभिर्ग्रथितालकां मणिचितैस्सौवर्णसूत्रैः स्फुट-
प्रान्ते मौक्तिकगुच्छकोपलतिकां ग्रथ्नामि वेणीमिमाम्।। ४०।।
विलम्बिवेणीभुजगोत्तमाङ्गस्फुरन्मणिभ्रान्तमुपानयन्तम्।
स्वरोचिषोल्लासितकेशपाशं महेशि चूडामणिमर्पयामि।।४१।।
त्वामाश्रयद्भिः कबरीतमिस्रैर्बन्दीकृतं द्रागिव भानुबिम्बम्।
मृडानि! चूडामणिमादधानं वन्दामहे तावकमुत्तमाङ्गम्।। ४२।।
स्वमध्यनद्धहाटकस्फुरन्मणिप्रभाकुलं विलम्बिमौक्तिकच्छटाविराजितं समन्ततः।
निबद्धलक्षचक्षुषा भवेन भूरि भावितं समर्पयामि भास्वरं भवानि फालभूषणम्।।४३।।
मीनाम्भोरुहखञ्जरीटसुषमाविस्तारविस्मारके
कुर्वाणे किल कामवैरिमनसः कन्दर्पबाणप्रभाम्।
माध्वीपानमदारुणेऽतिचपले दीर्घे दृगम्भोरुहे
देवि! स्वर्णशलाकयोर्जितमिदं दिव्याञ्जनं दीयताम्।। ४४।।

मध्यस्थारुणरत्नकान्तिरुचिरां मुक्ताफलोद्भासितां
दैवाद्भार्गवजीवमध्यगरवेर्लक्ष्मीमधः कुर्वतीम्।
उत्सिक्ताधरबिम्बकान्तिविसरैर्भौमीभवन्मौक्तिकां
मद्दत्तामुररीकुरुष्व गिरिजे नासाविभूषामिमाम्।। ४५।।

उडुकृतपरिवेषस्पर्द्धया शीतभानोरिव विरचितदेहद्वन्द्वमादित्यबिम्बम्।
अरुणमणिसमुद्यत्प्रान्तविभ्राजिमुक्तं श्रवसि परिनिधेहि स्वर्णताटङ्कयुग्मम्।४६।।

मरकतवरपद्मरागहीरोत्थितगुलिकात्रितयावनद्धमध्यम्।
विततविमलमौक्तिकञ्च कण्ठाभरणमिदं गिरिजे समर्पयामि।। ४७।।

नानादेशसमुत्थितैर्मणिगणप्रोद्यत्प्रभामण्डल-
व्याप्तैराभरणैर्विराजितगलां मुक्ताच्छटालङ्कृताम्।
मध्यस्थारुणरत्नकान्तिरुचितां प्रान्तस्थमुक्ताफल-
व्रातामम्ब चतुष्किकां परशिवे वक्षःस्थले स्थापय।। ४८।।

अन्योन्यं प्लावयन्ती सततपरिचलत्कान्तिकल्लोलजालैः
कुर्वाणा मज्जदन्तःकरणविमलतां शोभितेव त्रिवेणी।
मुक्ताभिः पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्यमानै-
र्नित्यं हारत्रयी ते परशिवरसिके चेतसि द्योततां नः।। ४९।।

करसरसिजनाले विस्फुरत्कान्तिजाले विलसदमलशोभे चञ्चदीशाक्षिलोभे।
विविधमणिमयूखोद्भासितं देवि दुर्गे कनककटकयुग्मं बाहुयुग्मे निधेहि।।५०।।

व्यालम्बमानसितपट्टकगुच्छशोभि स्फूर्जन्मणीघटितहारविरोचमानम्।
मातर्महेशमहिले तव बाहुमूले केयूरकद्वयमिदं विनिवेशयामि।। ५१।।

विततनिजमयूखैर्निर्मितामिन्द्रनीलैः विजितकमलनालालीनमत्तालिमालाम्।
मणिगणखचिताभ्यां कङ्कणाभ्यामुपेतां कलय वलयराजीं हस्तमूले महेशि।।५२।।

नीलपट्टमृदुगुच्छशोभितां बद्धनैकमणिजालमञ्जुलाम्।
अर्पयामि वलयात्पुरःसरे विस्फुरत्कनकतैतृपालिकाम्।। ५३।।

आलवालमिव पुष्पधन्वना बालविद्रुमलतासु निर्मितम्।
अङ्गुलीषु विनिधीयतां शनैरङ्गुलीयकमिदं मदर्पितम्।। ५४।।

विजितहरमनोभूमत्तमातङ्गकुम्भस्थलविलुलितकूजत्किङ्किणीजालतुल्याम्।
अविरतकलनादैरीशचेतो हरन्तीं विविधमणिनिबद्धां मेखलामर्पयामि।।५५।।
व्यालम्बमानवरमौक्तिकगुच्छशोभि विभ्राजिहाटकपुटद्वयरोचमानम्।
हेम्ना विनिर्मितमनेकमणिप्रबन्धं नीवीनिबन्धनगुणं विनिवेदयामि।।५६।।
विनिहतनवलाक्षापङ्कबालातपौघे मरकतमणिराजीमञ्जुमञ्जीरघोषे।
अरुणमणिसमुद्यत्कान्तिधाराविचित्रस्तव चरणसरोजे हंसकः प्रीतिमेतु।।५७।।

निबद्धशितिपट्टकप्रवरगुच्छसंशोभितां
कलक्वणितमञ्जुलां गिरिशचित्तसम्मोहिनीम्।
अमन्दमणिमण्डलीविमलकान्तिकिर्मीरितां
निधेहि पदपङ्कजे कनकघुङ्घुरूमम्बिके!।। ५८।।
विस्फुरत्सहजरागरञ्जिते शिञ्जितेन कलितां सखीजनैः।
पद्मरागमणिनूपुरद्वयीमर्पयामि तव पादपङ्कजे।। ५९।।
पादाम्बुजमुपासितं परिगतेन शीतांशुना।
कृतां तनुपरस्परामिव दिनान्तरागारुणाम्।
महेशि नवयावकद्रवभरेण शोणीकृतां
नमामि नखमण्डलीं चरणपङ्कजस्थां तव।। ६०।।
आरक्तश्वेतपीतस्फुरदुरुकुसुमैश्चित्रितां पट्टसूत्रै-
र्देवस्त्रीभिः प्रयत्नादगुरुसमुदितैर्धूपितां दिव्यधूपैः।
उद्यद्गन्धान्धपुष्पन्धयनिवहसमारब्धझङ्कारगीतां
चञ्चत्कह्लारमालां परशिवरसिके कण्ठपीठेऽर्पयामि।। ६१।।
गृहाण परमामृतं कनकपात्रसंस्थापितं
समर्पय मुखाम्बुजे विमलवीटिकामम्बिके।
विलोकय मुखाम्बुजं मुकुरमण्डले निर्मले
निधेहि मणिपादुकोपरि पदाम्बुजं सुन्दरि।। ६२।।
आलम्ब्य स्वसखीं करेण शनकैस्सिंहासनादुत्थिता
कूजन्मन्दमरालमञ्जुलगतिप्रोल्लासिभूषाम्बरा।
आनन्दप्रतिपादकैरुपनिषद्वाक्यैःस्तुता वेधसा
मच्चित्ते स्थिरतामुपैतु गिरिजा यान्ती सभामण्डपम्।। ६३।।

चलन्त्यामम्बायां प्रचलति समस्ते परिजने
सवेगं संयाते कनकलतिकालङ्कृतिभरे।
समन्तादुत्तालस्फुरितपदसम्पातजनितै-
र्झणत्कारैस्तारैर्झणझणितमासीन्मणिगृहम् ॥ ६४॥
चञ्चद्वेत्रकराभिरङ्गविलसद्भूषाम्बराभिः पुरो
यान्तीभिः परिचारिकाभिरमरव्राते समुत्सारिते।
रुद्धे निर्जरसुन्दरीभिरभितः कक्षान्तरे निर्गतं
वन्दे नन्दितशम्भुनिर्मलचिदानन्दैकरूपं महः ॥ ६५॥
वेधाः पादतले पतत्ययमसौ विष्णुर्नमत्यग्रतः
शम्भुर्देहि दृगञ्चलं सुरपतिं दूरस्थमालोकय।
इत्येवं परिचारिकाभिरुदिते सम्माननां कुर्वती
दृग्द्वन्द्वेन यथोचितं भगवती भूयाद्विभूत्यै मम॥ ६६॥
मन्दं चारणसुन्दरीभिरभितो यान्तीभिरुत्कण्ठया
नामोच्चारणपूर्वकं प्रतिदिशं प्रत्येकमावेदितान्।
वेगादक्षिपथं गतान् सुरगणानालोकयन्ती शनै-
र्दित्सन्तो चरणाम्बुजं पथि जगत्पायान्महेशप्रिया॥ ६७॥
अग्रे केचन पार्श्वयोः कतिपये पृष्ठे परे प्रस्थिताः
आकाशे समवस्थिताः कतिपये दिक्षु स्थिताश्चाऽपरे।
सम्मर्दं शनकैरपास्य पुरतो दण्डप्रणामान्मुहुः
कुर्वाणाः कतिचित्सुराः गिरिसुते दृक्पातमिच्छन्ति ते॥ ६८॥
अग्रे गायति किन्नरी कलपदं गन्धर्वकान्ताश्शनै-
रातोद्यानि च वादयन्ति मधुरं सव्यापसव्यस्थिताः।
कूजन्नूपुरवादमञ्जु पुरतो नृत्यन्ति दिव्याङ्गनाः
गच्छन्तः परितः स्तुवन्ति निगमस्तुत्यां विरिञ्च्यादयः॥ ६९॥
कस्मैचित्सुचिरादुपासितमहामन्त्रौघसिद्धिं क्रमात्
एकस्मै भवनिःस्पृहाय परमानन्दस्वरूपां गतिम्।
अन्यस्मै विषयानुरक्तमनसे दीनाय दुःखापहं
द्रव्यं द्वारसमाश्रिताय ददतीं वन्दामहे सुन्दरीम्॥ ७०॥

नम्रीभूय कृताञ्जलिप्रकटितप्रेमप्रसन्नानने
मन्दं गच्छति सन्निधौ सविनयात्सोत्कण्ठमोघत्रये।
नानामन्त्रगणं तदर्थमखिलं तत्साधनं तत्फलं
व्याचक्षाणमुदग्रकान्ति कलये यत्किञ्चिदाद्यं महः।। ७१।।

तव दहनसदृक्षैरीक्षणैरेव चक्षु-
र्निखिलपशुजनानां भीषयद्भीषणास्यम् ।
कृतवसति परेशप्रेयसि द्वारि नित्यं
शरभमिथुनमुच्चैर्भक्तियुक्तो नतोऽस्मि ।। ७२।।

कल्पान्ते सरसैकदासमुदितानेकार्कतुल्यप्रभां
रत्नस्तम्भविबद्धकाञ्चनगुणस्फूर्जद्वितानोत्तमाम् ।
कर्पूरागुरुगर्भवर्तिकलिकाप्रासप्रदीपावलीं
श्रीचक्राकृतिमुल्लसन्मणिगणां वन्दामहे वेदिकाम्।। ७३।।

स्वस्थानस्थितदेवतागणवृते बिन्दौ मुदा स्थापितं
नानारत्नविराजिहेमविलसत्कान्तिच्छटादुर्दिनम् ।
चञ्चत्कौसुमतूलिकासनयुतं कामेश्वराधिष्ठितं
नित्यानन्दनिदानमम्ब! सततं वन्दे च सिंहासनम्।। ७४।।

वदद्भिरभितो मुदा जय जयेति वृन्दारकैः
कृताञ्जलिपरम्परा विदधती कृतार्था दृशा।
अमन्दमणिमण्डलीखचितहेमसिंहासनं
सखीजनसमावृतं समधितिष्ठ दाक्षायणि!।। ७५।।

कर्पूरादिकवस्तुजातमखिलं सौवर्णभृङ्गारकं
ताम्बूलस्य करण्डकं मणिमयं चैलाञ्चलं दर्पणम्।
विस्फूर्जन्मणिपादुके च दधतीः सिंहासनस्याभितः
तिष्ठन्तीः परिचारिकास्तव सदा वन्दामहे सुन्दरि।। ७६।।

त्वदमलवपुरुद्यत्कान्तिकल्लोलजालैः
स्फुटमिव दधतीभिर्बाहुविक्षेपलीलाम्।
मुहुरपि च विधुते चामरग्राहिणीभिः
सितकरकरशुभ्रे चामरे चालयामि ।। ७७।।

प्रान्तस्फुरद्विमलमौक्तिकगुच्छजालं
चञ्चन्महामणिविचित्रितहेमदण्डम्।
उद्यत्सहस्रकरमण्डलचारुहेम –
च्छत्रं महेशमहिले विनिवेशयामि।। ७८।।

उद्यत्तावकदेहकान्तिपटलीसिन्दूरपूरप्रभा–
शोणीभूतमुदग्रलोहितमणिच्छेदानुकारिच्छवि।
दूरादादरनिर्मिताञ्जलिपुटैरालोक्यमानं सुर–
व्यूहैः काञ्चनमातपत्रमतुलं वन्दामहे सुन्दरम्।। ७९।।

सन्तुष्टां परमामृतेन विलसत्कामेश्वराङ्कस्थितां
पुष्पौघैरभिपूजितां भगवतीं त्वां वन्दमाना मुदा।
स्फूर्जत्तावकदेहरश्मिकलनाप्राप्तस्वरूपाभिदाः
श्रीचक्रावरणस्थितास्सविनयं वन्दामहे देवताः।। ८०।।

आधारशक्त्यादिकमाकलय्य मध्ये समस्ताधिकयोगिनीञ्च।
मित्रेशनाथादिकमत्र नाथ–चतुष्टयं शैलसुते नतोऽस्मि।। ८१।।

त्रिपुरासुधार्णवासनमारभ्य त्रिपुरमालिनीं यावत्।
आवरणाष्टकसंस्थितमासनषट्कं नमामि परमेशि!।। ८२।।

ईशाने गणपं स्मरामि विचरद्विघ्नान्धकारच्छिदं
वायव्ये वटुकञ्च कज्जलरुचिं व्यालोपवीतान्वितम्।
नैरृत्ये महिषासुरप्रमथिनीं दुर्गाञ्च सम्पूजयन्
आग्नेयेऽखिलभक्तरक्षणपरं क्षेत्राधिनाथं भजे।। ८३।।

उड्ड्याणजालन्धरकामरूपपीठानिमान्पूर्णगिरिप्रसक्तान्।
त्रिकोणदक्षाग्रिमसव्यभागमध्यस्थितान् सिद्धकरान्नमामि।। ८४।।

लोकेशः पृथिवीपतिर्निगदितो विष्णुर्जलानां प्रभु–
स्तेजोनाथ उमापतिश्च मरुतामीशस्तथा चेश्वरः।
आकाशाधिपतिस्सदाशिव इति प्रेताभिधामागता–
नेतांश्चक्रबहिः स्थितान्सुरगणान् वन्दामहे सादरम्।। ८५।।

तारानाथकलाप्रवेशनिगमव्याजाद् गतासुप्रथं
त्रैलोक्ये तिथिषु प्रवर्तितकलाकाष्ठादिकालक्रमम्।
रत्नालङ्कृतिचित्रवस्त्रललितं कामेश्वरीपूर्वकम्
नित्याषोडशकं नमामि लसितं चक्रात्मनोरन्तरे।। ८६।।
हृदि भावितदैवतं प्रयत्नाभ्युपदेशानुगृहीतभक्तसङ्गम्।
स्वगुरुक्रमसंज्ञचक्रराजस्थितमोघत्रयमानतोऽस्मि मूर्ध्ना।। ८७।।
हृदयमथ शिरःशिखाखिलाद्ये कवचमथो नयनत्रयञ्च देवि!।
मुनिजनपरिचिन्तितं तथास्त्रं स्फुरतु सदा हृदये षडङ्गमेतत्।। ८८।।

त्रैलोक्यमोहनमिति प्रथिते तु चक्रे
चञ्चद्विभूषणगणत्रिपुराधिवासे।
रेखात्रये स्थितवतीरणिमादिसिद्धी-
र्मुद्रा नमामि सततं प्रकटाभिधास्ताः।। ८९।।

सर्वाशापरिपूरके वसुदलद्वन्द्वेन विभ्राजिते
विस्फूर्जत्त्रिपुरेश्वरीनिवसतो चक्रे स्थिता नित्यशः।
कामाकर्षिणिकादयो मणिगणभ्राजिष्णुदिव्याम्बराः
योगिन्यः प्रदिशन्तु काङ्क्षितफलं विख्यातगुप्ताभिधाः।। ९०।।
महेशि! वसुभिर्दलैर्लसति सर्वसंक्षोभणे
विभूषणगणस्फुरत्त्रिपुरसुन्दरीसद्मनि ।
अनङ्गकुसुमादयो विविधभूषणोद्भासिता
दिशन्तु मम काङ्क्षितं तनुतराश्च गुप्ताभिधाः।। ९१।।
लसद्युगदशारके स्फुरति सर्वसौभाग्यदे
शुभाभरणभूषितत्रिपुरवासिनीमन्दिरे ।
स्थिता दधतु मङ्गलं सुभगसर्वसंक्षोभिणी
मुखास्सकलसिद्धयो विदितसम्प्रदायाभिधाः।। ९२।।
बहिर्दशारे सर्वार्थसाधके त्रिपुराश्रयाः।
कुलकौलाभिधाः पान्तु सर्वसिद्धिप्रदायिकाः।। ९३।।

अन्तःशोभिदशारकेऽतिललिते सर्वादिरक्षाकरे
मालिन्या त्रिपुराद्यया विरचितावासे स्थितं नित्यशः।
नानारत्नविभूषणं मणिगणभ्राजिष्णुदिव्याम्बरं
सर्वज्ञादिकशक्तिवृन्दमनिशं वन्दे निगर्भाभिधम् ॥ ९४॥
सर्वरोगहरेऽष्टारे त्रिपुरासिद्धयान्विते ।
रहस्ययोगिनीर्नित्यं वशिन्याद्याः नमाम्यहम् ॥ ९५॥
चूताशोकविकासिकेतकरजःप्रोद्भासिनीलाम्बुज-
प्रस्फूर्जन्नवमल्लिकासमुदितैः पुष्पैः शरान्निर्मितान्।
रम्यं पुष्पशरासनं सुललितं पाशं तथा चाङ्कुशम्
वन्दे तावकमायुधं परशिवे चक्रान्तराले स्थितम् ॥ ९६॥
त्रिकोणे उदितप्रभे जगति सर्वसिद्धिप्रदे
युते त्रिपुरयाम्बया स्थितवती च कामेश्वरी।
तनोतु मम मङ्गलं सकलशर्म वज्रेश्वरी
करोतु भगमालिनी स्फुरतु मामके चेतसि॥ ९७॥
सर्वानन्दमये समस्तजगतामाकाङ्क्षिते बैन्दवे
भैरव्या त्रिपुराद्यया विरचितावासे स्थिता सुन्दरी।
आनन्दोल्लसितेक्षणा मणिगणभ्राजिष्णुभूषाम्बरा
विस्फूर्जद्वदना परापररहः सा पातु मां योगिनी॥ ९८॥
उल्लसत्कनककान्तिभासुरं सौरभस्फुरणवासिताम्बरम्।
दूरतः परिहृतं मधुव्रतैरर्पयामि तव देवि चम्पकम्॥ ९९॥
वैरमुद्धतमपास्य शम्भुना मस्तके विनिहितं कलाच्छलात्।
गन्धलुब्धमधुपाश्रितं सदा केतकीकुसुममर्पयामि ते॥ १००॥
चूर्णीकृतं द्रागिव पद्मजेन त्वदाननस्पर्धि सुधांशुबिम्बम्।
समर्पयामि स्फुरमञ्जलिस्थं विकासिजातीकुसुमोत्करं ते॥ १०१॥
अगरुबलधूपाजस्रसौरभ्यरम्यां
मरकतमणिराजीराजहारिस्रगाभाम्।
दिशि विदिशि विसर्पद्गन्धलुब्धालिमालां
बकुलकुसुममालां कण्ठपीठेऽर्पयामि॥ १०२॥

ईकारोदूर्ध्वगबिन्दुराननमधो बिन्दुद्वयञ्च स्तनौ
त्रैलोक्ये गुरुगम्यमेतदखिलं हार्दञ्च रेखात्मकम्।
इत्थं कामकलात्मिकां भगवतीमन्तस्समाराधय-
न्नानन्दाम्बुधिमज्जने प्रलभतामानन्दथुं सज्जनः।। १०३।।
धूपं तेऽगुरुसम्भवं भगवति! प्रोल्लासिगन्धोद्धुरं
दीपं चैव निवेदयामि महसा हार्दान्धकारच्छिदम्।
रत्नस्वर्णविनिर्मितेषु परितः पात्रेषु संस्थापितं
नैवेद्यं विनिवेदयामि परमानन्दात्मिके सुन्दरि।। १०४।।
जातीकोरकतुल्यमोदनमिदं सौवर्णपात्रे स्थितं
शुद्धान्नं शुचि मुद्गमाषचणकोद्भूतास्तथा सूपकाः।
प्राज्यं माहिषमाज्यमुत्तममिदं हैयङ्गवीनं पृथक्
पात्रेषु प्रतिपादितं परशिवे तत्सर्वमङ्गीकुरु ।। १०५।।
शिम्बीसूरणशाकबिम्बबृहतीकूष्माण्डकोशातकी-
वृन्ताकानि पटोलकानि मृदुना संसाधितान्यग्निना।
सम्पन्नानि च वेसवारविसरैर्दिव्यानि भक्त्या कृता-
न्यग्रे ते विनिवेदयामि गिरिजे सौवर्णपात्रव्रजे।। १०६।।
निम्बूकार्द्रकचूतकन्दकदली कोशातकीकर्कटी-
धात्रीबिल्वकरीरकैर्विरचितान्यानन्दचिद्विग्रहे ।
राजीभिः कटुतैलसैन्धवहरिद्राभिः स्थितान्पातये
सन्धानानि निवेदयामि गिरिजे भूरिप्रकाराणि ते।। १०७।।
सितयाञ्चितलड्डुकव्रजान्मृदुपूपान्मृदुलाश्च पूरिकाः
परमान्नमिदं च पार्वति! प्रणयेन प्रतिपादयामि ते।। १०८।।
दुग्धमेतदनले सुसाधितं चन्द्रमण्डलनिभं तथा दधि।
फाणितं शिखरिणीं सितासितां सर्वमम्ब विनिवेदयामि ते।। १०९।।
अग्रे ते विनिवेद्य सर्वममितं नैवेद्यमङ्गीकृतं
ज्ञात्वा तत्त्वचतुष्टयं प्रथमतो मन्ये सुतृप्तां ततः।
देवीं त्वां परिशिष्टमम्ब कनकामत्रेषु संस्थापितं

शक्तिभ्यः समुपाहरामि सकलं देवेशि शम्भुप्रिये।। ११०।।

वामेन स्वर्णपात्रीमनुपमपरमान्नेन पूर्णां दधाना-
मन्येन स्वर्णदर्वीं निजजनहृदयाभीष्टदां धारयन्तीम्।
सिन्दूरारक्तवस्त्रां विविधमणिलसद्भूषणामेचकाङ्गीं
तिष्ठन्तीमग्रतस्ते मधुमदमुदितामन्नपूर्णां नमामि ॥ १११॥
पङ्क्त्योपविष्टान्परितस्तु चक्रे शक्त्या स्वयालिङ्गितवामभागान्।
सर्वोपचारैः परिपूज्य भक्त्या तवाम्बिके पारिषदान्नमामि॥ ११२॥
परमामृतमत्तसुन्दरीगणमध्यस्थितकर्मभासुरम् ।
परमामृतघूर्णितेक्षणं किमपि ज्योतिरुपास्महे परम्॥ ११३॥
दृश्यते तव मुखाम्बुजं शिवे श्रूयते स्फुटमनाहतध्वनिः।
अर्चने तव गिरामगोचरे न प्रयाति विषयान्तरं मनः॥ ११४॥
त्वन्मुखाम्बुजविलोकनोल्लसत्प्रेमनिश्चलविलोचनद्वयीम्।
उन्मनीमुपगतां सभामिमां भावयामि परमेशि तावकीम्॥ ११५॥
चक्षुः पश्यतु नेह किञ्चन परं घ्राणां न वा जिघ्रतु
श्रोत्रं हन्त शृणोतु न त्वगपि न स्पर्शं समालम्बताम्।
जिह्वा वेत्तु न वा रसं मम परं युस्मत्स्वरूपामृते
नित्यानन्दविघूर्णमाननयने नित्यं मनो मज्जतु ॥ ११६॥
यस्त्वां पश्यति पार्वति प्रतिदिनं ध्यानेन तेजोमयीं
मन्ये सुन्दरि तत्त्वमेतदखिलं वेदेषु निष्ठां गतम्।
यस्तस्मिन्समये तवार्चनविधावानन्दसान्द्राशयो
यातोऽहं तदभिन्नतां परशिवे सोऽयं प्रसादस्तव॥ ११७॥
गणाधिनाथं वटुकञ्च योगिनीः क्षेत्राधिनाथञ्च विदिक्चतुष्टये।
सर्वोपचारैःपरिपूज्य भक्तितो निवेदयामो बलिमुक्तयुक्तिभिः॥ ११८॥
वीणामुपान्ते खलु वादयन्त्यै निवेद्य शेषं खलु शेषिकायै।
सौवर्णभृङ्गारविनिर्गतेन जलेन शुद्धाचमनं विधेहि॥ ११९॥
ताम्बूलं विनिवेदयामि विलसत्कर्पूरकस्तूरिका-
जातीपूगलवङ्गचूर्णखदिरैर्भक्त्या समुल्लासितम्।
स्फूर्जद्रत्नसमुद्गकप्रणिहितं सौवर्णपात्रे स्थितै-
दीपैरुज्ज्वलमन्नचूर्णरचितैरारात्रिकं गृह्यताम्॥ १२०॥

काचिद् गायति किन्नरी कलपदं वाद्यं धुनानोर्वशी
रम्भा नृत्यति केलिमञ्जुलपदं मातः पुरस्तात्तव।
कृत्यं प्रोज्झ्य सुरस्त्रियो मधुमदव्याघूर्णमानेक्षणं
नित्यानन्दसुधाम्बुधिं तव मुखं पश्यन्ति हृष्यन्ति च।। १२१।।
ताम्बूलोद्भासिवक्त्रैस्त्वदमलवदनालोकनोल्लासिनेत्रै-
श्चक्रस्थैः शक्तिसङ्घैः परिहृतविषयासङ्गमाकर्ण्यमानम्।
गीतज्ञाभिः प्रकामं मधुरसमधुरं वादितं किन्नरीभि-
र्वीणाझङ्कारनादं कलय परशिवानन्दसन्धानहेतोः।। १२२।।
अर्चाविधौ ज्ञानलवोऽपि दूरे दूरे तदापादकवस्तुजातम्।
प्रदक्षिणीकृत्य ततोऽर्चनं ते पञ्चोपचारात्मकमर्पयामि।। १२३।।
यथेप्सितमनोगतप्रकटितोपचारार्चितां
निजावरणदेवतागणवृतां सुरेशस्थिताम्।
कृताञ्जलिपुटो मुहुः कलितभूमिरष्टाङ्गकै-
र्नमामि भगवत्यहं त्रिपुरसुन्दरि त्राहि माम्।। १२४।।
विज्ञप्तीरवधेहि मे सुमहता यत्नेन ते सन्निधिं
प्राप्तं मामिहं कान्दिशीकमधुना मातर्न दूरीकुरु।
चित्तं त्वत्पदभावने व्यभिचरेद्दृग्वाक्च मे जातु चेत्
तत्सौम्ये स्वगुणैर्बधान न यथा भूयो विनिर्गच्छति।। १२५।।
क्वाहं मन्दमतिः क्व चेदमखिलैरेकान्तभक्तैःस्तुतं
ध्यातं देवि तथापि ते स्वमनसा श्रीपादुकापूजनम्।
कादाचित्कमदीयचिन्तनविधौ सन्तुष्टया शर्मदं
स्तोत्रं देवतया तया प्रकटितं मन्ये मदीयानने।। १२६।।
नित्यार्चनमिदं चित्ते भाव्यमानं सदा मया।
निबद्धं विविधैः पद्यैरनुगृह्णातु सुन्दरी ।। १२७।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे शङ्कराचार्यकृतं महात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी–मानसपूजास्तोत्रम्

श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्यविरचितम्

उषसि मागधमङ्गलगायनैर्झटिति जागृहि जागृहि जागृहि।
अतिकृपार्द्रकटाक्षनिरीक्षणैर्जगदिदं जगदम्ब सुखीकुरु ।। १।।

कनकमयवितर्दिशोभमानं दिशि दिशि पूर्णसुवर्णकुम्भयुक्तम्।
मणिमयमण्डपमध्यमेहि मातर्मयि कृपया हि समर्चनं गृहीतुम्।। २।।

कनककलशशोभमानशीर्षं जलधरचुम्बिसमुल्लसत्पताकम्।
भगवति तव सन्निवासहेतोर्मणिमयमन्दिरमेतदर्पयामि।। ३।।

तपनीयमयी सतूलिका कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा।
नवरत्नविभूषिता मया शिविकेयं जगदम्ब तेऽर्पिता।। ४।।

कनकमयवितर्दिस्थापिते तूलिकाढ्ये,
विविधकुसुमकीर्णे कोटिबालार्कवर्णे।
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मिन्,
उपविश पदयुग्मं हेमपीठे निधेहि।। ५।।

मणिमयमौक्तिकनिर्मितं महान्तं कनकस्तम्भचतुष्टयेन युक्तम्।
कमनीयतमं भवानि तुभ्यं नवमुल्लोचमहं समर्पयामि।। ६।।

दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम्।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः।। ७।।

गन्धपुष्पयवसर्षपदूर्वासम्मितं तिलकुशाक्षतमिश्रम्।
हेमपात्रनिहितं सह रत्नैरर्घ्यमेतदुररीकुरु मातः ।। ८।।

जलजद्युतिनाकरेण जातीफलकक्कोललवङ्गगन्धयुक्तैः।
अमृतैरमृतैरिवाहृतैर्भगवत्याचमनं विधीयताम् ।। ९।।

निहितः कनकस्य सम्पुटे पिहितो रत्नपिधानकेन सः।
तदयं भवतीकरेऽर्पितो मधुपर्को भवति प्रगृह्यताम्।। १०।।

एतच्चम्पकतैलमेव विविधैः पुष्पैर्मुहुर्वासितम्
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृङ्गैर्भ्रमद्भिर्वृतम्।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरभितो हस्तैर्धृतं यन्मया,
केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकलेष्वङ्गेषु चालिप्यताम्।। ११।।
मातः कुङ्कुमपङ्कनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनं,
भक्त्याऽहङ्कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केशरम्।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकाद्यन्वितं,
स्नानं ते नवरत्नकुम्भसहितैः संवासितोष्णोदकैः ।। १२।।
दधिदुग्धघृतैः समाक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः।
स्नपयामि तवाहमादृतो जननि! त्वां पुनरुष्णवारिभिः।। १३।।
एलोशीरसुवासितैः सुकुसुमैर्गङ्गादितीर्थोदकै-
र्माणिक्यामलमौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः।
मन्त्रान् वैदिकतान्त्रिकान् परिपठन् सानन्दमत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमङ्गीकुरु।। १४।।
बालार्कद्युति दाडिमीयकुसुमप्रस्पर्धि सर्वोत्तमं,
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम्।
मुक्ताभिर्ग्रथितं सकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभं,
तप्तस्वर्णसमानवर्णबहुलं प्रावर्णमङ्गीकुरु ।। १५।।
नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके।
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि! तयोर्निधीयताम्।। १६।।

बहुभिरगुरुधूपैः सादरं धूपयित्वा,
भगवति! तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा।
सुरभिभिरविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा,
झटिति कनकसूत्रैर्जूटमावेष्टयामि।। १७।।

सौवीराञ्जनमिदमम्ब! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत्।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यैरभिलषणीयतामियाय।। १८।।

मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरे विन्यस्य काञ्चीं कटौ,
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीः करेषु क्रमात्,
ताटङ्के तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम्।। १९।।
धम्मिल्ले तव देवि हेमकुसुमान्याधाय भालस्थले,
मुक्ताराजिविराजिहेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम्।
मातर्मौक्तिकजालिकाञ्च कुचयोः सर्वाङ्गुलीषूर्मिकाः,
कट्यां काञ्चनकिङ्किणीर्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ।। २०।।
मातर्भालतले तवातिविमले काश्मीरकस्तूरिका,
कर्पूरागुरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसैः सिक्ताञ्च पुष्पद्रवैः,
पादौ कुङ्कुमलेपनादिभिरहं सम्पूजयामि क्रमात्।।२१।।
रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैश्चारुरुचैर्विचित्रैः।
अखण्डितैर्देवि! यवादिभिर्वा काश्मीरपङ्काङ्किततण्डुलैर्वा।।२२।।
जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम्।।२३।।
सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत्
सिन्दूरं मे हृदयकमले देवि हर्षं तनोतु।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्ति–
रन्तर्ध्वान्तं हरतु सकलं चेतसा चिन्तयामि।।२४।।
मन्दारकुन्दकरवीरलवङ्गपुष्पै–
स्त्वां देवि सन्ततमहं परिपूजयामि।
जातीजपावकुलचम्पककेतकादि–
नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि।।२५।।
मालतीबकुलहेमपुष्पिकाकाञ्चनारकरवीरचम्पकैः ।
कर्णिकारगिरिकर्णिकादिभिः पूजयामि जगदम्ब ते वपुः।।२६।।

पारिजातशतपत्रपाटलैर्मल्लिकाबकुलचम्पकादिभिः।
अम्बुजैश्च कुसुमैश्च सादरं पूजयामि जगदम्ब! ते वपुः।।२७।।

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवाससम्मिश्रितैः,
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषालोडितैः।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलुप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः,
धूपं ते परिकल्पयामि जननि! त्वं धूपमङ्गीकुरु।।२८।।

रत्नालङ्कृतहेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै–
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः।
आताम्रज्ज्वलदुज्ज्वलज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः।।२९।।

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्,
डमरुसदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान्।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै–
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारात्रिकन्ते।। ३०।।

सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य।
मुखकमलसमीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं,
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः।। ३१।।

मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसन्तानकान्,
सूपापूपसिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्ररम्भाफलैः।
एलाजीरकहिङ्गुनागरनिशाकौस्तुम्बरीसंयुतैः,
शाकैः साकमहं सुधाधिकरसैः सन्तर्पयाम्यर्पयन्।।३२।।

सापूपसूपदधिदुग्धसिताघृतानि,
सुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरःसराणि।
साकोल्लसन्मरिचजीरकवल्लिकानि,
भक्ष्याणि भुङ्क्ष्व जगदम्ब मयार्पितानि।।३३।।

क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु।
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः॥३४॥
उष्णोदकैः पाणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन॥ ३५॥
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम्।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब पीयताम्॥ ३६॥
आताम्ररम्भाफलसंयुतानि द्राक्षाफलाक्षोटसमन्वितानि।
सबीजपूराणि सदाडिमानि फलानि ते देवि! समर्पयामि॥ ३७॥
कलिङ्ग–कोषातक–संयुतानि जम्बीर–नारङ्ग–समन्वितानि।
सनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि॥ ३८॥
कर्पूरेण युतैर्लवङ्गसहितैः कङ्कोलचूर्णान्वितैः,
सुस्वादुक्रमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजातीफलैः।
मातः! केतकिपत्रपाण्डुरुचिरैस्ताम्बूलवल्लीदलैः,
सानन्दं मुखमण्डनार्थमतुलं ताम्बूलमङ्गीकुरु॥ ३९॥
एलालवङ्गादिसमन्वितानि कङ्कोलकर्पूरविमिश्रितानि।
ताम्बूलवल्लीदलसंयुतानि फलानि ते देवि समर्पितानि॥४०॥
ताम्बूलवल्लिदलनिर्जितहेमवर्ण–
स्वर्णाक्तपूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम्।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं,
ताम्बूलमम्ब वदनाम्बुरुहे! गृहाण॥ ४१॥
अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवनकमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां,
जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि॥ ४२॥
मातः काञ्चनदण्डमण्डितमिदं पूर्णेन्दुविम्बप्रभं,
नानारत्नविशोभिहेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम्।
भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतं,
छत्रं ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम्॥४३॥

शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णैर्मणियुक्तैर्विलसत्सुवर्णदण्डैः।
जगदम्ब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण बीजयामि।।४४।।

मार्त्तण्डमण्डलनिभो जगदम्ब! योऽयं,
भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते।
पूर्णेन्दुबिम्बरुचिरं वदनं स्वकीय-
मस्मिन् विलोकय विलोलविलोचने त्वम्।। ४५।।

इन्द्रादयो नतिनतैर्मुकुटप्रदीपै-
र्नीराजयन्ति सततं तव पादपीठम्।
तस्मादहं तव शरीरमशेषमेतन्,
नीराजयामि जगदम्ब सहस्रदीपैः।। ४६।।

प्रियगतिरतितुङ्गो रत्नपल्लाणयुक्तः,
कनकमयविभूषः स्निग्धगम्भीरघोषः।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते
तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरङ्गः।। ४७।।

मधुकरवृतकुम्भो न्यस्तसिन्दूररेणुः,
कनककलितघण्टः किङ्किणीशोभिकण्ठः।
श्रवणयुगलचञ्चच्चामरो मेघतुल्यो
जननि तव मुदे स्यान्मत्तमातङ्ग एषः।। ४८।।

द्रुततरतुरगैर्विराजमानं, मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम्।
कनकमयमहं वितानवन्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि।। ४९।।

हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुन्दुभिमेघनादयुक्तम्।
अभिनवचतुरङ्गसैन्यमेतत् भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि।। ५०।।

परिधीकृतसप्तसागरं बहुसम्पत्सहितं मयाम्ब ते।
विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गमिदं समर्पितम्।। ५१।।

शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः।
भ्रमरीमुखरीकृतैरनेकैर्व्यजनैस्त्वां जगदम्ब बीजयामि।। ५२।।

भ्रमविलुलितलोलकुन्तलालिर्विगलितमाल्यविकीर्णरङ्गभूमिः।
इयमतिचतुरा नटी नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः!।। ५३।।

मुखचलनविलासलोलवेणीविलसितनिर्जितलोलभृङ्गमालाः।
युवजनसुखकारिचारुलीला भगवति! ते पुरतो नटन्ति बालाः।।५४।।

रुचिरकुचतटीनां नाट्यकाले नटीनां
प्रतिगृहमथ तत्र प्रत्यहं प्रादुरासीत्।
धिमिक धिमिकि धिद्धी धिद्धि धिद्धेति धिद्ध–
धिकिति धिकिति तत्थै त्थै यथेथेति शब्दः।। ५५।।

भ्रमदलिकुलतुल्यालोलधम्मिल्लभारा स्मितमुखकमलोद्यद्दिव्यलावण्यपूरा।
अभिनवनववेषा वारयोषा नटन्ती परभृतकलकण्ठी देवि मोदन्तनोतु।।५६।।

डमरुडिण्डिमझर्झरझल्लरी मृदुरवार्द्रघटार्द्रघटादयः।
झटितिझङ्कृतिभिर्जगम्बिके बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते।। ५७।।

विपञ्चीषु सप्तस्वरान् वादयन्त्य–
स्तव द्वारि गायन्ति गन्धर्वकन्याः।
क्षणं सावधानेन चित्तेन मातः,
समाकर्णय त्वं मया प्रार्थिताऽसि।। ५८।।

अतिशयकमनीयैर्नर्त्तनैर्नर्त्तकीनां,
झटिति च रमयित्वा चेत एवं त्वदीयम्।
स्वयमहमपि चित्रैर्नृत्यवादित्रगीतै–
र्भगवति भवदीयं मानसं रञ्जयामि।। ५९।।

तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादयः।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्त्तुमीश्वरः ।। ६०।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।। ६१।।

रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानीपदपङ्कजाभ्याम्।। ६२।।

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा,
कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते–
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु ।। ६३।।

अथ मणिमयमञ्चकाभिरामे द्युतिमति पुष्पवितानराजमाने।
प्रसरद्गुरुधूपितेऽस्मिन् भगवति वासगृहेऽस्तु ते निवासः।। ६४।।
एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रैलोक्याभयवरदौ निधाय पादौ।
विस्तीर्णे मृदुलतरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्के कनकमये निषीद मातः।।६५।।
तव देवि सरोजचिह्नयोः पदयोर्निर्जितपद्मरागयोः ।
अतिरक्ततरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्तताम्।। ६६।।
अथ मातरुशीरवासितं निजताम्बूलरसेन राजितम्।
तपनीयमये हि पात्रके मुखगण्डूषजलं विधीयताम्।। ६७।।
क्षणमथ जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुतरतूलिकया विराजमाने।
अतिमहति मुदा निजेच्छया त्वं सुखशयनं कुरु मां हृदि स्मरन्ती।।६८।।
मुक्ताकुन्देन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटङ्कयुक्ता-
मक्षस्रक्पुष्पहस्तामभयवरकरां चन्द्रचूडां त्रिनेत्राम्।
नानालङ्कारयुक्तां सुरमुकुटलसद्द्योतितस्वर्णपीठां,
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवनजननीं चेतसा चिन्तयामि।।६९।।
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व।
न्यूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः।।७०।।
पूजामिमां पठेत् प्राज्ञः पूजाकर्तुमनीश्वरः।
पूजाफलमवाप्नोति वाञ्छितार्थांश्च विन्दति।।७१।।
प्रत्यहं भक्तियुक्तो यो देवीपूजामिमां पठेत्।
वाग्वादिन्याः प्रसादेन वत्सरात्स कविर्भवेत्।।७२।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे भगवत्पादश्रीशङ्कराचार्यविरचितं श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीविद्यासर्वस्वभूताः षडाम्नायमन्त्राः

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्व्यष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।
वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः।।

गुरुपादुकामनुमुच्चार्य सुमुखादिपञ्चमुद्राः प्रदर्श्य गणपतिमूलेन महागणपतिं प्रणमेत्।

पूर्वाम्नायः

तत्र त्रैलोक्यमोहनसर्वाशापरिपूरकसर्वसंक्षोभणाख्ये सृष्टिचक्रे पूर्वाम्नायदेवतां मुक्तातपत्रच्छायायामुपविष्टां पद्मरागारुणां मुक्ताभरणवस्त्रमाल्यानुलेपनां पाशाङ्कुशवराभयकरां रत्नमुकुटार्पितचन्द्रलेखां ध्यात्वा–

गुरुमण्डलम्

१. गुरुः–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंस शिवः सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, हंसः शिवः सोहं, स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः। अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२. परमगुरुः–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोहं हंस शिवः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीगुरवे नमः। अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३. परमेष्ठिगुरुः– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंस शिवः सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, हंसः शिवः सोहं हंसः, स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः। अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४. गणपतिः– ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। महागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि।

५. पीठत्रयम्–

(क) ४ ऐं क्लीं सौः अं आं सौः कामगिरिपीठब्रह्मात्मशक्त्यै नमः। कामगिरिपीठब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

(ख) ४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः पूर्णगिरिपीठविष्ण्वात्मशक्त्यै नमः। पूर्णगिरिपीठविष्ण्वात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

(ग) ४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं ऐं जालन्धरपीठरुद्रात्मशक्त्यै नमः। जालन्धरपीठरुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

देवताः

६. शुद्धविद्या–४ ऐ ईं औ। शुद्धविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।[1]

७. बाला – ४ ऐं क्लीं सौ सौः क्लीं ऐं। बालात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. द्वादशार्धा– ४ हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः। द्वादशार्धाम्बा–श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. मातङ्गिनीमन्त्राः–

(क) ४ ॐ ह्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके। मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठ ठ हुं फट् स्वाहा। मातङ्गी–श्रीहसन्तीश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोक–वशङ्करि त्रैलोक्यं (राजानं) मे वशमानय स्वाहा। सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। श्रीराजश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

1. श्रीपादुकां पूजयामि – इति सर्वत्र योजनीयम्।

(ग) ४ ॐ नमो भगवते महाशुकाय त्रिभुवनालङ्काराय राजमदमर्दनाय शीघ्रं राजानं मे वशमानय स्वाहा। श्रीशुकश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ ऐं ॐ नमो भगवति शां शारिके सकलकलाकोविदे विद्यां बोधय बोधय स्वाहा। श्रीशारिकाश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ ॐ नमो भगवत्यै वीं वीणायै मम संगीतविद्यां प्रयच्छ स्वाहा। श्रीवीणाश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ॐ भगवते व्यं वेणवे मम साहित्यविद्यां प्रयच्छ स्वाहा। श्रीवेणुश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्वजनवशङ्करि स्वाहा। श्रीलघुश्यामलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

१०. गायत्री–

४ ॐ भूर्भुवःस्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं–प्रचोदयात्। गायत्र्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. गणपतिमन्त्राः–

(क) ४ ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गणपतये सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। क्षिप्रगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ श्रीं ह्रीं सर्वकार्यविघ्नप्रशमनाय सर्वराजवश्यकराय सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय सर्वलोकवशीकरणाय आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा। सिद्धगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ ग्लौं नवनीतगणपतये सर्वजनान् वशमानय स्वाहा। नवनीतगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं वद वद वाग्वादिनि सिद्धगणतये गीं भगवति स्वाहा। शक्तिगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टाय महात्मने आं क्रों ह्रीं क्लीं ग्लौं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा। उच्छिष्टगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ॐ गं ॐ। एकाक्षरीगणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२. कार्तिकेयमन्त्राः–

(क) ४ ॐ ऐं क्षं क्षं कुमाराय नमः। कुमारश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ ह्रीं श्रीं सं सुब्रह्मण्याय वैरिधैर्यं चलय चलय स्वाहा। सुब्रह्मण्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौः स्कन्दाय नमः। स्कन्दश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३. मृत्युञ्जयमनुः – ४ ॐ हौं जुं सः। मृत्युञ्जयश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४. नीलकण्ठमनुः – ॐ फ्रों व्रीं ठः। नीलकण्ठश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१५. त्र्यम्बकमनुः–

४ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
त्र्यम्बकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१६. जातवेदोमनुः–

४ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। जातवेदश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१७. प्रत्यङ्गिरामनुः–

(क) ४ ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ नमः कृष्णवसने सिंहवदने महाभैरवि ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रों। ॐ नमो नारायणाय। घृणिस्सूर्य आदित्योम्। सहस्रार हुं फट्। अव ब्रह्मद्विषो जहि। ब्राह्मीप्रत्यङ्गिराश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ ह्रीं खें फ्रें भक्षज्ज्वालाजिह्वे करालवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे क्षों क्ष्म्रौं ह्रीं नमस्तुभ्यं हन हन, मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा। नारायणीप्रत्यङ्गिराश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ श्रीं ह्रीं ॐ नमः कृष्णवसने सहस्रसिंहिनि सहस्रवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेहान्बन्ध बन्ध सर्वविद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परतन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः। रौद्रीप्रत्यङ्गिराश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव।
तां ब्रह्मणापनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु।
उग्रकृत्याप्रत्यङ्गिराश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे प्रत्यङ्गिरे क्षीं ह्रीं हुं फट्।
अथर्वणभद्रकालीप्रत्यङ्गिराश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१८.४ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
अकाररूपाय सृष्टिकर्त्रे ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१९.४ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः। पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२०.४ मूलं गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्यादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्त-चतुर्विंशतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इति पूर्वाम्नायः

दक्षिणाम्नायः

चतुर्दशारद्विदशारात्मके स्थितिचक्रे दक्षिणाम्नायदेवतामुद्यत्सूर्यसहस्राभां नानालङ्कारभूषितां रक्तवस्त्रानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वयोस्तदाद्यधःस्थयो करयोः पाशाङ्कुशपुस्तकाक्षमालाधरां ध्यात्वा-

गुरुमण्डलम्।

१. भैरवः

(क) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं महामन्थानभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं खचक्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ग) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं फट्कारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(घ) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं एकात्मानन्दभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ङ) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं रविभक्षणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(च) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(छ) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं नभोनिर्मलभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ज) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं डमरभास्करभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२. सिद्धौघः
(क) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं महादुर्मनाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं सुन्दर्यम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ग) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं विश्वदलनाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(घ) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं कपालिकाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ङ) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं बडवाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(च) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं श्रीभीमाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(छ) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं कराल्यम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ज) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं खराननाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(झ) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं शालिनाम्बासिद्धश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३. वटुकत्रयम्
(क) ४ ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् स्कन्दवटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख) ४ ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् चित्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ग) ४ ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् विरिञ्चिवटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४. पदयुगम्–
(क) ४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। प्रकाशश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख) ४ हसकल हसकहल सकलह्री। विमर्शश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

देवताः

५. सौभाग्यविद्या–
३ ऐं क–५ क्लीं ह–६ सौः स–४। सौभाग्यविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

६. बगलामनुः–
४ ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

७. वाराहीमनुः–
४ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः। रुन्धे रुन्धिनि नमः। जम्भे जम्भिनि नमः। मोहे मोहिनि नमः। स्तम्भे स्तम्भिनि नमः। सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां

सर्ववाक्चित्त–चक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट्। श्रीवाराह्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. वटुकमनुः–

४ ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु वं वटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा। आपदुद्धारणवटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. तिरस्करिणीमनुः–

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुश्श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। तिरस्करिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१० .महामाया–

४ ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत्क्षोभिणि वर वरदे सर्वजनं मोहय मोहय ईं ह्रीं ॐ स्वाहा। श्रीमहामायाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. अघोरमनुः–

४ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।
ह्रैं ह्रौं ह्रः अघोराय स्वाहा।
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा।

कं कं हं क्षं सं हं ग्रीं ग्रीं प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष ह्रूं ह्रीं ह्रां सं हुं फट् स्वाहा। अघोरश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२. शरभमनुः–

(क) ४ ॐ नमो भगवते प्रलयकालाग्निरुद्राय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाशरभाय मम शत्रुच्छेदनं कुरु कुरु स्वाहा। श्रीशरभेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ खें खां खं फट् प्राणग्रहसि प्राणग्रहसि हुं फट्। सर्वशत्रुसंहारकाय शरभसाल्वाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। शरभेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३ भेतालमनुः -

४ छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः ऐं ह्रीं क्लीं झां परेतभूताधिपतये महापिशा-चकापालाय झां झोटिंगदमनाय अधिपाय भो भो भेतालाय तुभ्यं नमस्स्वाहा। भेतालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४.खड्गरावणमनुः-

४ ॐ ह्रीं क्लीं खं भूतेश ह्रीं ह्रां खड्गरावणाय नमः। खड्गरावण-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१५.वीरभद्रमनुः-

४ ॐ क्लीं ग्रीं वीरभद्र जय जय नमः स्वाहा। वीरभद्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१६. रौद्रमनुः-

४ ॐ नमो भगवते रुद्राय। रुद्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१७. शास्तृमनुः-

४ ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्रलाभाय शत्रुनाशाय मदराजवाहनाय महाशास्त्रे प्रत्यक्ष-वेलायुधाय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। श्रीशास्तृश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१८. पाशुपतास्त्रमनुः-

४ ॐ श्लीं पशु हुं फट्। पाशुपतास्त्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१९. ब्रह्मास्त्रमनुः -

४ ॐ आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं बगलामुखि आवेशयावेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणी एह्येहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवहावह संनिधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये सुखं चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा। ब्रह्मास्त्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२०. वायव्यास्त्रमनुः-

४ आवायव्ययावायव्या व्यायवाया व्ययवाआ। औवर्यिव्ययावायव्या व्यायवायाव्ययर्वाऔ। ॐ हन हन हुं फट् स्वाहा। वायव्यास्त्रमनुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२१. भैरवमन्त्राः-

(क) ४ ॐ नमो भगवते उग्रभैरवाय सर्वविघ्नान्नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा। उग्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ ह्रीं आं अङ्गभैरव (अमुकस्य) कोपशमनं कुरु कुरु स्वाहा। अङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ह्रूं ह्रीं क्लीं अघोरभैरवाय (देवदत्तं) मोहय स्वाहा। अघोरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ नमो भगवते महाभीमभैरवाय लोकभयङ्कराय सर्वशत्रु-संहारकाय हुं (देवदत्तं) ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा। भीमभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ वं रं ह्रूं ॐ नमो भगवते विजयभैरवाय सर्वशत्रुविनाशनाय विबुधवाहनाय नररुधिरमांसभक्षणाय (देवदत्तं) उच्चाटयोच्चाटय हुं ताडय ताडय भस्मीकुरु भस्मीकुरु स्वाहा। विजयभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ह्रीं स्प्रं रक्तभैरवाय शवकपालमालालङ्कृताय नवाम्बुदश्यामाय एह्येहि शीघ्रं एहि मां पाहि एं ऐं आगामिकार्यं वद वद अखिलोपाधिं हर हर सौभाग्यं देहि मे स्वाहा। रक्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवते स्वर्णाकर्षणभैरवाय प्रणताभीष्टपरिपूरणाय एह्येहि करुणानिधे मह्यं हिरण्यं दापय दापय शीघ्रं दापय दापय श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा। स्वर्णाकर्षणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२२. दक्षिणामूर्तिमन्त्राः –

(क) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा। मेधादक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं श्रियं प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा। लक्ष्मीदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ अः नमः शिवाय अः ॐ। कीर्तिदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ ज्ञां नमश्चिन्मयमूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा। ज्ञानदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ ॐ श्रीं सौः श्रीसाम्बशिवाय तुभ्यं स्वाहा। साम्बदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ॐ ह्रीं ॐ दक्षिणामूर्तये सर्वसाध्यमेधां समुत्कर्षय स्वाहा। वीरदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ ओङ्कारसंहारमूर्तये नमः। संहारदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये त्रिनेत्राय त्रिकालज्ञानाय सर्वशत्रुघ्नाय सर्वापस्मारविदारणाय दारय दारय मारय मारय भस्मीकुरु भस्मीकुरु एह्येहि हुं फट्। अपस्मारनिवर्तकदक्षिणामूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२३. ४ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।
उकाररूपाय स्थितिकर्त्रे विष्णवे नमः। विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२४. ४ ॐ आं ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः। दक्षिणाम्नायसमयविद्येश्वरी-भोगिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ मूलं भैरवाष्टकनव-सिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्यादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरिपीठस्थायै दक्षिणाम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इति दक्षिणाम्नायः

पश्चिमाम्नायः

नवयोनिचक्रे सहस्राराख्ये पश्चिमाम्नायाधिदेवतां पञ्चमुण्डासनां बालार्कसहस्रप्रभां मुण्डमालाधरां रक्तवस्त्राभरणानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वतदाद्यधः पाशाङ्कुशाभयवरकरां त्रिनेत्रां ध्यात्वा–

गुरुमण्डलम्

१. दूत्यः–

(क) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः योन्यम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः योनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः महायोन्यम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः महायोनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः दिव्ययोन्यम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः दिव्ययोनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः शङ्खयोन्यम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः शङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(झ) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः पद्मयोन्यम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ञ) ४ अं आं सौः ह्रींश्रींसौः पद्मयोनिसिद्धनाथाम्बादूतीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२. मण्डलम्–

(क) ४ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रींश्रींसौः वह्निमण्डलश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रींश्रींसौः सूर्यमण्डलश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रींश्रींसौः सोममण्डलश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३. वीरद्व्यष्टकम्–

(क) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें सृष्टिवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें स्थितिवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें संहारवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें रक्तवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें यमवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें मृत्युवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें भद्रवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें परमार्कवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(झ) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें मार्तण्डवीरभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ञ) ४ ह्रीं श्रीं फट् फांफें कालाग्निरुद्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चतुःषष्टिसिद्धाः

४ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं मङ्गलानाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः। एवमेव

४–९ चौण्डिकानाथ०
ज्येष्ठानाथ०
कन्तुकिनाथ०
पटहानाथ०
कूर्मानाथ०
धनदानाथ०
गन्धानाथ०
गगनानाथ०
मातङ्गनाथ०
चम्पकानाथ०
कैवर्तानाथ०
मातङ्गगमनानाथ०
सूर्यभक्षानाथ०
नभोभक्षानाथ०
स्रौतिकानाथ०
रूपिकानाथ०
दंष्ट्रानाथ०

४–९ धूम्राक्षानाथ०
ज्वालानाथ०
गान्धारानाथ०
गगनेश्वरानाथ०
मायानाथ०
महामायानाथ०
नित्यानाथ०
शान्तानाथ०
विश्वानाथ०
कामानाथ०
उमानाथ०
श्रियानाथ०
सुभगानाथ०
विद्यानाथ०
महाविद्यानाथ०
अमृतानाथ०
चन्द्रानाथ०

४-९ अन्तरिक्षानाथ०
सिद्धानाथ०
श्रद्धानाथ०
अनन्तानाथ०
शम्बरानाथ०
उल्कानाथ०
त्रैलोक्यानाथ०
भीमानाथ०
राक्षसीनाथ०
मलिनानाथ०
प्रचण्डानाथ०
अनङ्गानाथ०
त्रिविधानाथ०
अनभिहितानाथ०
नन्दिनाथ०

४-९ महामनानाथ०
सुन्दरानाथ०
विश्वेश्वरानाथ०
कालानाथ०
महाकालानाथ०
अभयानाथ०
विकारानाथ०
महाविकारानाथ०
सर्वगानाथ०
सृगालानाथ०
पूतनानाथ०
शर्वरीनाथ०
व्योमानाथ०
पूर्णानाथ०
(चतुःषष्टिनाथाः)

देवताः

५. लोपामुद्रामनुः-४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। लोपामुद्राम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

६. भुवनेश्वरीमनुः-४ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

७. अन्नपूर्णामनुः-४ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवत्यन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा। अन्नपूर्णाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. कामकलामनुः-४ अं आं - - ळं क्षं ईं। कामकलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. सुदर्शनमनुः-(क) ४ ॐ सहस्रार हुं फट्। सुदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख)३ श्रीं ह्रीं ॐ सुदर्शनचक्राय रिपुचित्तं भ्रामय स्वाहा। सुदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१०. वैनतेयमनुः- (क) ॐ क्षिं क्षिप स्वाहा। महागरुडश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ नमो भगवते श्रीमन्महागरुडाय अमृतकोशोद्भवाय वज्रनखवज्र-तुण्डपक्षालङ्कृतशरीराय श्रीमन्महागरुड विषं हुं फट् स्वाहा। गरुडश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ वं क्षं क्षिप स्वाहा। गरुडश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. कार्तवीर्यमनुः- ४ ॐ फ्रों छ्रीं क्लीं ब्लूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् स्वाहा। कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। कार्तवीर्यार्जुनश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२. नृसिंहमनुः-४ ॐ क्ष्रौं ईं हं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्। हं ईं क्ष्रौं ॐ। मन्त्रराजनृसिंहश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३. नामत्रयमनुः-४ अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः। नामत्रयश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४. राममन्त्राः- (क) ४ ॐ रां रामाय नमः। रामश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(ख) ४ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं नित्यशुद्धबुद्धाय रामाय परब्रह्मणे नमः। रामश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१५. सीतामन्त्रः-४ ॐ श्रीं ह्रीं सीतायै स्वाहा। सीतादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१६. गोपालमन्त्राः-

(क) ४ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। राजगोपाल-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ अन्नरूप रसरूप नमो नमः। अन्नाधिपतये ममान्नं प्रयच्छ स्वाहा। गोपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ क्लीं कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे। रमारमण विश्वेश विद्यामाशु प्रयच्छ मे क्लीं ॐ। गोपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण शरणागतवत्सल। सन्तानगोपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ क्लीं कृष्ण क्लीं। गोपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१७. सौरमनुः-४ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों। सूर्यश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१८. धन्वन्तरिमनुः-४ ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृतकलशहस्ताय सर्वामयविनाशनाय त्रिलोकनाथाय विष्णवे स्वाहा। धन्वन्तरिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१९. इन्द्रजालिमनुः-

(क) ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत्क्षोभिणि वर वरदे सर्वजनं मोहय मोहय ईं ह्रीं स्वाहा। इन्द्रजालिमायामहादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ वं सं झ्रं झ्रं जुं रं ह्रीं श्रीं मों भगवति चित्रविद्ये महामाये अमृतेश्वरि एह्येहि प्रसन्नवदने अमृतं प्लावय अनलं शीतलं कुरु कुरु सर्वविषं नाशय ज्वरं हन हन पैत्योन्मादं मोचय मोचय आज्योष्णं शमय शमय सर्वजनं मोहय मोहय मां पालय पालय मों श्रीं ह्रीं रं जुं झ्रं झ्रं वं सं वं स्वाहा। इन्द्रजालिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२०. इन्द्रादिसुरमन्त्राः-

(क) ४ ॐ लं यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि।। लं ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ रं इद्धादुलूक आपप्तत्तु हिरण्याक्षो अयोमुखः। रक्षसां दूत आगतः तमितो नाशयाग्ने।। रं ॐ अग्नये नमः। अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ क्रों ह्रीं आं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः। यमश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधारिणे यमलवरयूं जन्मसम्पत्प्रलयं कथय स्वाहा। चित्रगुप्तश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ वं वरुणाय नमः। वरुणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ यं वायवे नमः। वायुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज)(१) ४ ॐ क्रीं यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा। कुबेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(२)४ ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः। कुबेरश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(झ) ४ ॐ हं ॐ नमो भगवते रुद्राय हं ॐ। रुद्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२१. इन्द्राक्षीमनुः-

(क)४ ॐ ऐं घ्रीं ह्रीं हुं दुं लं श्रीं ईं इन्द्राक्षि रक्ष रक्ष मम शत्रून् दुःखग्रन्थिं स्फोटय स्फोटय मम अरीन् भञ्जय भञ्जय मम मनोग्रन्थिं शरीरग्रन्थिं घातय घातय हुं फट् स्वाहा। सुरनायिकाइन्द्राक्षीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख)४ ॐ श्रीं छ्रां ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति इन्द्राक्षि भूतभविष्य-द्वर्तमानकालवादिनि प्रपञ्चकारिणि (अमुकं) मे कार्यं कथय सौः क्लीं ऐं छ्रां श्रीं ॐ स्वाहा। सर्ववादिनीइन्द्राक्षीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२२. दत्तात्रेयमन्त्राः-

(क) ४ आं ह्रीं क्रों ऐं क्लीं सौः श्रीं ग्लौं द्रां। दत्तात्रेयश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेयाय नमः द्रां ह्रीं ॐ। दत्तात्रेयश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्ददायक।

दिगम्बर मुने बालपिशाचज्ञानसागर द्रां ह्रीं ॐ। दत्तात्रेयश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२३. द्वादशाक्षरीमनुः-४ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२४. अष्टाक्षरीमनुः-४ ॐ नमो नारायणाय। नारायणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२५. रुद्रमनुः- ४ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।

मकाररूपाय संहारकर्त्रे रुद्राय नमः। रुद्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२६.४ ह्स्त्रैं ह्स्त्रीं ह्स्त्रौः ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्त्रौः ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौः पश्चिमाम्नायसमयविद्येश्वरीकुब्जिकादेव्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ मूलं दशदूतीमण्डलत्रयवीरदशकचतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमा-माम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इति पश्चिमाम्नायः।

उत्तराम्नायः

समष्टिचक्रे उत्तराम्नायदेवतां कुब्जकालीं पञ्चमुण्डासनां बन्धूककुसुमारुणां तादृशवस्त्राभरणानुलेपनां चन्द्रचूडां मुण्डमालाधरां त्रिनेत्रां वामोर्ध्वादि तदधोऽन्तं पुस्तकाक्षमालावराभयकरां ध्यात्वा–

गुरुमण्डलम्

१. नवमुद्राः–

४ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राश्री०। ४ द्रीं सर्वविद्रावणीमुद्रा०। ४ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रा०। ४ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रा०। ४ सः सर्वोन्मादिनीमुद्रा०। ४ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रा०। ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्रा०। ४ ह्सौः सर्वबीजामुद्रा०। ४ ऐं सर्वयोनिमुद्रा०।

२. वीरावलीपञ्चकमनुः–

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लं ब्रह्मवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वं विष्णुवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः रं रुद्रवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः यं ईश्वरवीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हं सदाशिववीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

देवताः

३. तुरीयमनुः– ४ हसकल हसकहल सकलह्रीं। तुरीयाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४. महार्घमनुः- ४ ऐं ईं औः क-५-ह-६-स-४ सं सृष्टिनित्ये स्वाहा हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा। महार्घाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

५. अश्वरुढामनुः- ४ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा। अश्वरूढाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

६. मिश्राम्बामनुः- ४ ऐं। मिश्राम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

७. वाग्वादिनीमनुः- ४ ऐं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। वाग्वादिन्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. दुर्गामनुः-

(क) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दुं उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा। वनदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्रौं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रह हुं फट् स्वाहा। शूलिनीदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ४ ॐ ह्रीं दुं जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्व नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। दुं ह्रीं ॐ। जातवेदोदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ ॐ ह्रीं दुं दुर्गादेवीं शरणमहं प्रपद्ये दुं ह्रीं ॐ। शान्तिदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ४ ॐ ह्रां ह्रीं सौः ऐं श्रीं क्षं दुं शबरिदुर्गायै क्रों अमलवरयूं आदिशक्तिस्वरूपिणि अक्षरमये रक्षःकुलनाशनि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् विदारय विदारय रोगान् भस्मीकुरु भस्मीकुरु कृत्रिमान् दह दह प्राणान् वह वह आभिचारिकान् नाशय नाशय सर्वं मां रक्ष रक्ष शबरिदुर्गायै हुं फट् स्वाहा। शबरीदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ह्रां ह्रीं सौः ग्लौं एं श्री ज्वलदुर्गे एह्येहि स्फुर प्रस्फुर आदिविष्णुसोदरि अस्त्रज्वलदुर्गे आवेशयावेशय। ज्वलदुर्गाय विद्महे जाज्वल्यमानाय धीमहि। तन्नो बडवानलः प्रचोदयात्। वमलवरयूं ज्वलदुर्गास्त्रे हुं फट् स्वाहा। ज्वलदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ खं चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि (अमुकं) मे वशमानय स्वाहा। लवणदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज) ४ ॐ क्रों ह्रीं आं दुं दुर्गे एह्येहि आवेशयावेशय ह्रीं दुं दुर्गे आं ह्रीं क्रों ॐ हुं फट् स्वाहा। दीपदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(झ) ४ ॐ श्रीं ह्रीं कटुके/कटुपत्रके असुभगे आसुरि रक्तवसने अथ- र्वणदुहिते अघोरे घोरकर्मकारिके (अमुकस्य) प्रस्थितस्य साध्यस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह प्रसुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच नामरूपं दह दह तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमागच्छति तावन्मे वशमानय स्वाहा। असुरदुर्गाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. कालीमनुः-

४ क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिकालिके ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। दक्षिणकालिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१०. चण्डीमनुः-

४ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। चण्डिकापरमेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. नकुलीमनुः-

४ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृताः पविः।
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्।
नकुलीवाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२. पुलिन्दिनीमनुः-

४ ॐ ईं नमो भगवति शारदादेव्यत्यन्तामलभोज्यं देहि देहि आगच्छ आगच्छ आगन्तुकं हृदि संस्थं कार्यं सत्यं ब्रूहि ब्रूहि पुलिन्दिनि ईं ॐ स्वाहा। पुलिन्दिन्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३. रेणुकामनुः–

४ क्लीं नमो भगवति रक्तपञ्चमि रेणुकादेवि हन हन पच पच अखिलजगन्मे वशं कुरु कुरु स्वाहा क्लीं। रेणुकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४. लक्ष्मीमनुः–

४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मि एह्येहि सर्वसौभाग्यं देहि मे स्वाहा। महालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१५. वागीशामनुः– ४ सं सरस्वत्यै नमः। वागीशश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१६. मातृकामनुः–

४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अं आं–लं क्षं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ। मातृकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१७. स्वयंवरामनुः–

४ ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगाभयङ्करि सकलस्थावरजङ्ग-ममुखहृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा। स्वयंबराम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१८. ४ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। अर्धमात्राकाराय तिरोधानकर्त्रे ईश्वराय नमः। ईश्वरश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१९. ४ ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नायसमयविद्येश्व-रिकालिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ मूलं नवमुद्रापञ्चवीरावलीसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्त-द्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

इत्युत्तराम्नायः।

पञ्चदशीपक्षे चतुराम्नायः षोडशीपक्षे तु षडाम्नायः

ऊर्ध्वाम्नायः

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे।।
नवरत्नमयश्रीमत्सिंहासनगताम्बुजे।
त्रिकोणान्तःसमासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम्।।
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम्।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम्।।
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम्।।
पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम्।।
महाषोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम्।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम्।।
पुंरूपं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम्।
सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम्।।

गुरुमण्डलम्

१. मालिनीमन्त्रः-
ऐं ह्रीं श्रीं अं आं--ळं क्षं श्रीं ह्रीं एं मालिन्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२. मन्त्रराजः- ४ ह्रां ह्रीं हुं फट्। मन्त्रराजश्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

देवताः

३. पराषोडशीः-४ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ सकलह्रीं हसकहलह्रीं कएईलह्रीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः। पराषोडश्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४. पराभट्टारिकामनुः– ४ सौः। पराभट्टारिकाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

५. पराशाम्भवमनुः–४ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं। पराशाम्भवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

६. पराशाम्भवी–४ हस्ख्फ्रें ह्रीं सौः श्रीं हुं। पराशाम्भव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

७. प्रासादः–

(क) ४ ह्सौः। प्रासादपराम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ स्हौः ९ँ। पराप्रासादाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. दहरम्– ४ हं सं रं ईं। दहरविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. हंसः– ४ हंसः। हंसश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१०. महावाक्यम्–

४ प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म।
महावाक्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. पञ्चाक्षरी–

(क) ४ ॐ नमः शिवाय। शिवपञ्चाक्षर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। शक्तिपञ्चाक्षर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२. तारकम्–४ ॐ ह्रीं। तारकश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१३.४ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।
मन्त्रातीतस्वरूपायानुग्रहकर्त्रे सदाशिवाय नमः। सदाशिवश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१४.मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर्। ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ मूलं श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्त-अशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।।

॥ इत्यूर्ध्वाम्नायः॥

अनुत्तराम्नायः

गुरुमण्डलम्

१. महापादुका–

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः। श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि नमः।

२. संप्रदायपादुका–

४ श्रीं ह्रीं क्लीं अमृतवर्षिणीपादुकापरमेश्वरी वौषट्। श्रीसम्प्रदायपादुकां पूजयामि नमः।

३. कादिविद्यागुरुपरम्परा–

४ परप्रकाशानन्दनाथ०	४ सहजानन्दनाथ०
४ परशिवानन्दनाथ०	४ गगनानन्दनाथ०
४ पराशक्त्याम्बा०	४ विश्वानन्दनाथ०
४ कौलेश्वरानन्दनाथ०	४ विमलानन्दनाथ०
४ शुक्लदेव्यम्बा०	४ मदनानन्दनाथ०
४ कुलेश्वरानन्दनाथ०	४ भुवनानन्दनाथ०
४ कामेश्वर्यम्बा०	४ लीलाम्बा०
४ भोगानन्दनाथ०	४ स्वात्मानन्दनाथ०
४ क्लिन्नानन्दनाथ०	४ प्रियानन्दनाथ०
४ समयानन्दनाथ०	

४. कामराजचरणाः–

४ ऐं ह्रीं श्रीं योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि सोहं। स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहाप्रकाशपरिपूर्णानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः

४ ऐं क–५ हंसः। रक्तचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ ऐं क–५ हंसः। रक्तचरणाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क्लीं ह–६ सोहं। शुक्लचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ क्लीं ह–६ सोहं। शुक्लचरणाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ सौः स–४ हंसःसोहं। मिश्रचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ सौः स–४ हंसःसोहं। मिश्रचरणाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं क–५ क्लीं ह–६ सौः स–४ हंसः शिव सोहं निर्वाणचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऐं क–५ क्लीं ह–६ सौः स–४ हंसः शिवः सोहं निर्वाणचरणाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

देवताः

५. पञ्चाम्बाः–

४ आदिनाथव्योमातीताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ आदिनाथव्योमेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ अनामयानन्दनाथव्योमगाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ अनन्तानन्दनाथव्योमचारिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ चिदाभासव्योमस्थाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

६. नवनाथमन्त्राः–

४ हं उन्मन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः
४ सं समाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ क्षं व्यापकाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ मं शक्त्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ लं ध्वन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ वं ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ रं इन्द्वाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ यं चिदाकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ ऊं व्यस्ताकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
४ हसक्षलवरयऊं समस्ताकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः

७. मूलविद्याः–

(क) ४ ह्रीं स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहासिद्धविद्याकुलयोगिनी ह्रीं। ह्रींमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख) ४ ह्सौः स्वात्मानं बोधय बोधय स्हौः ४। प्रासादपरामूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ग) ऐं ब्लूं क्लिन्ने क्लेदिनि महामदद्रवे क्लीं क्लेदय क्लां क्लीं मोहय मोहय क्लीं नमः स्वाहा। अतिरहस्योगिनीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(घ) ४ हंसः स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा ह्सौः ह्स्क्ष्म्र्यूं। शाम्भवीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ङ) ह्रीं नित्यस्फुरणचैतन्यानन्दमयी महाबिन्दुव्यापकमातृकास्वरूपिणी ऐं ह्रीं श्रीं ईं। हृल्लेखामूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(च) ४ ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छप्रकाशात्मिके ह्रीं कुलमहामालिनि ऐं कुलमहामातृके ह्रीं ऐं समयविमले श्रीं। समयविमलामूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(छ) ४ हंसः स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहाप्रकाशात्मिके कुलकुण्डलिनि आज्ञासिद्धिमहाभैरवि आत्मानं बोधय बोधय अम्बे भगवति ह्रीं हुं। परबोधिनीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ज) ४ ॐ मोक्षं कुरु कुरु। कौलपञ्चाक्षरीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(झ) ४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। चैतन्यमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ञ) ४ ऐं शुद्धसूक्ष्मनिराकारनिर्विकल्पपरब्रह्मस्वरूपिणी क्लीं परमानन्दशक्तिः सौः। शाम्भवानन्दनाथानुत्तरकौलिनीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ट) ४ हंसस्सोहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा। गुरूत्तमविमर्शि-नीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ठ) ४ अनामाख्यव्योमातीतानन्दनाथपरापरव्योमातीतव्योमेश्वर्यम्बायै नमः। अनामाख्यमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ड) ४ ऐं ईं ॐ। सङ्केतसारमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ढ) ४ ह्रीं भगवति विच्चे वाग्वादिनि क्लीं महाहृदयमातङ्गिनि ऐं क्लिन्ने ब्लूं स्त्रीं। अनुत्तरवाग्वादिनीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

८. पञ्चदशाक्षरी– ४ क-१५। पञ्चदशाक्षरीमूलविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

९. महाषोडशी–

४ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क–५ ह–६ स–४ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं महाषोडश्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१०. पूर्तिविद्या–

४ हसकल हसकहल सकलह्रीं सर्वानन्दमयवैन्दवचक्रे परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्ति–सर्वमन्त्रेश्वरी–सर्वयन्त्रेश्वरी–सर्वतन्त्रेश्वरी–सर्ववीरेश्वरी–सर्वयोगीश्वरी–सकलजगदधिष्ठानदेवतायै श्रीमहापूर्तिविद्यायै नमः। श्रीमहापूर्तिविद्याम्बा–श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

११. षडाधारविद्यामनुः–

४ सां हंसःमूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीमहितगणनाथस्वरूपपिण्यै नमः। गणनाथरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ लां हंसःसोहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ रां हंसश्शिवस्सोहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिव–स्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ डां सोहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वर–स्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ हां हंसश्शिवस्सोहं सोहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै हाकिनीसहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१२.(क) ४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क–५ ह–६ स–४ ह–५ ह–६ स–४ हसकल हसकहल सकलह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं प्रकाशचरणाभ्या नमः। प्रकाशचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(ख)४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क–५ ह–६ स–४ ह–५ ह–६ स–४ हसकल हसकहल सकलह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं विमर्शचरणाभ्यां नमः विमर्शचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

१ ३.४ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्सौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ मूलं परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्याद्यनुत्तर-शाङ्कर्यनन्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुर-सुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इत्यनुत्तराम्नायः।

।। इति षोडशानन्दनाथ श्रीकरपात्रस्वामिरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीविद्यासर्वस्वभूताः षडाम्नायमन्त्राः सम्पूर्णाः।।

सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला-मन्त्रः

अस्य श्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्य ऋषये नमः (शिरसि) गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे)। सात्त्विकककार-भट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः (हृदये)। ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), श्रीललितमहात्रिपुरासुन्दरीप्रीत्यर्थे (खड्गसिद्धौ) जपे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

ह्रां इत्यादि दीर्घषट्केन करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड् भोक्ता भविष्यति।।

(लमित्यादि पञ्चपूजा।)

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रेशमयि

षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि (२९६) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६५) कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि (४५९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्ग-वेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गल-कारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णयोगिनि (७१२) सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि

महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरी सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते (त्रिः) स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ १०३१॥

एकत्रिंशदधिकसहस्राक्षराणि।

अस्य श्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिवरुणादित्य ऋषये नमः (शिरसि) गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे)। सात्त्विककर्कारभट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः (हृदये)। ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), श्रीललितमहात्रिपुरासुन्दरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

ह्रां इत्यादि दीर्घषट्केन करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड् भोक्ता भविष्यति॥

(लमित्यादि पञ्चपूजा।)

इति सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला सम्पूर्णा।

चतुर्थ्यन्त–खड्गमालामन्त्रः

अस्य खड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्य–ऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे), ललितादेवतायै नमः (हृदये), ३ क ५ बीजाय नमः (गुह्ये), ३ ह ६ शक्तये नमः (पादयोः) ३ स ४ कीलकाय नमः (नाभौ), श्रीललिताप्रसादसिद्ध्यर्थे पूजने विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

कूटत्रयद्विरावृत्त्या करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनी,
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्॥

(इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य।)

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं हृदयदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिरोदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिखादेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कवचदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नेत्रदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्रदेव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं भगमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं भेरुण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वह्निवासिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महावज्रेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शिवदूत्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्वरितायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कुलसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नित्यायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नीलपताकायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विजयायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ज्वालामालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चित्रायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं महानित्यायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मित्रेशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं षष्ठीशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं उड्डीशमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चर्यानाथमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लोपामुद्रामय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अगस्त्यमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कालतापनमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं धर्माचार्यमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं दीपकलानाथमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्रभाकरदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं तेजोदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मनोजदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कल्याणदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रत्नदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वासुदेवमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरामानन्दमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लघिमासिद्ध्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं महिमासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ईशित्वसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वशित्वसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं इच्छासिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्राप्तिसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामसिद्ध्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कौमार्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं माहेन्द्र्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमहाङ्कुशायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वखेचर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वबीजायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वयोन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वत्रिखण्डायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रैलोक्यमोहनचक्र–
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं प्रकटयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अहङ्काराकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं स्पर्शाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रूपाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रसाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गन्धाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चित्ताकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं धैर्याकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं स्मृत्याकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं नामाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं बीजाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं आत्माकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अमृताकर्षिण्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं शरीराकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरक-
चक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गुप्तयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमेखलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनातुरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गरेखायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गवेगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गाङ्कुशायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वक्षोभणचक्र-
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गुप्ततरयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्मोहिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वस्तम्भिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वजृम्भिण्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरञ्जिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्रमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायक-
चक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सम्प्रदाययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वप्रियङ्कर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिन्यै
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननिवारिण्यै
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधकचक्र-
स्वामिन्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वशक्त्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिन्यै
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाधारस्वरूपायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वपापहरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमय्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितप्रदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं निगर्भयोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं वशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं मोदिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं विमलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अरुणायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं जयिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं कौलिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रहस्ययोगिन्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं बाणिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चापिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं पाशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अङ्कुशिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाकामेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महावज्रेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाभगमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महाश्रीसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदचक्र–
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं अतिरहस्ययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयचक्र–
स्वामिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं परापररहस्ययोगिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेश्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरवासिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराश्रियै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरमालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरासिद्धायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराम्बमहा-
त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहेश्वर्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाराज्ञ्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाशक्त्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहागुप्तायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाज्ञप्तायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहानन्दायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहास्पन्दाय नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाशयायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं महामहाश्रीचक्रनगर-
साम्राज्यै नमस्ते नमस्ते
नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरदेवतार्पणमस्तु।

इति चतुर्थ्यन्तखड्गमालामन्त्रः।

त्रिपुरारहस्योक्तं श्रीललितालक्षार्चनविधानम्

अथ लक्षप्रपूजादिविधानं शृणु वच्मि ते।
विशेषपर्वसु सदा शुक्रवारेऽपि वाऽऽरभेत्॥
सङ्कल्प्य पूज्य गणपं स्वस्ति विप्रैर्हि वाचयेत्।
ततः सम्पूज्य विधिना चाऽऽवृत्यन्तं महेश्वरीम्॥
पूजयेत्सावृतिं देवीमुपचारैस्तु पञ्चभिः।
तत्र पुष्पोपचारस्य स्थाने पूजां समाचरेत्।
सहस्राद्यैर्नामभिस्तु ततो धूपादिपूजनम्।
समापयेद्यथावत्तं प्रत्यहञ्चैवमर्चयेत्॥
समसङ्ख्याविधानेन प्रत्यहं पूजयेत्क्रमात्।
एकजातीयकैः पुष्पैर्यन्त्रे वै पूजयेत्पराम्॥
स्वयं वा पुत्रपत्न्याद्यैर्ब्राह्मणद्वारतोऽपि वा।
अन्ते तु सर्वतोभद्रे नवयोनिसमायुते।
कलशं सुप्रतिष्ठाप्य सौवर्णादिसमुद्भवम्।
अलङ्कृतं सूत्रवस्त्रैर्मध्ये तण्डुलपुञ्जके।
अलङ्कृतं धूपितञ्च निधाय मनुमुच्चरन्।

तमष्टगन्धतोयेन पूरयेत्पञ्चरत्नकम्॥

निक्षिप्य तस्मिंस्तत्क्रमादाच्छाद्य पञ्चपल्लवैः।
सतण्डुलं फलं पूर्णं पात्रञ्चापि मुखे न्यसेत्।।
तत्र प्रतिकृतिं देव्याः सर्वावयवशोभिताम्।
विन्यस्य तस्यामावाह्य पूजनन्तु समाचरेत्।।
तत्राऽऽदौ सर्वतोभद्रदेवताः क्रमतो यजेत्।
दशदिक्षु च दिक्पालान् शृङ्खलासु चतुर्षु च।।
धर्मादीन्मध्यभवने श्वेतेऽधर्मादिकान् यजेत्।
रक्तार्धभवने पूर्वात्प्रादक्षिण्येन पूजयेत्।।
असिताङ्गादिमिथुनं मेखलासु गुणत्रयम्।
एवं सम्पूज्य कलशे पीठपूजनपूर्वकम्।।
विधिनाऽऽवाह्य त्रिपुरां पूजयेदुपचारकैः।
तत्तत्पुष्पादिकं स्वर्णभवं वा रजतोद्भवम्।।
माषाद्वा कर्षतो वाऽपि कुर्यादन्यूनमुत्तमम्।
तदर्धं पादमपि वा कृत्वा तन्नवसंख्यकम्।।
पूजयेदुपचारेषु नामभिर्वशिनीमुखैः।
मध्ये च त्रिपुरां रात्रौ पूजयेच्चक्रनायकम्।।
कलशस्य पश्चिमतः सर्वतोभद्रमण्डले।
स्वयं वा पूजयेदाचार्येण वा क्रमवेदिना।।
पूजयित्वा यथाशास्त्रं कुमारीं वटुकं तथा।
गुरुं सुवासिनीञ्चापि ब्राह्मणादीनपि क्रमात्।।
उद्वासरहितां पूजां समाप्याऽखिलसंवृतः।
कथाभिर्गायनैर्नृत्यैः कुर्याज्जागरणं निशि।।
परेद्युःकृतकृत्योऽयं पूजयेच्चक्रनायकम्।
पूजाङ्गहोमतः पश्चादग्निं संसाध्य शास्त्रतः।।

यथावत्तत्र जुहुयात्तत्तत्पुष्पैः सहस्रकम्।
पूजां समाप्य चोद्वास्य कलशं वस्त्रसंयुतम्।।
दक्षिणाप्रतिमायुक्तं सुवासिन्यै निवेदयेत्।
ब्राह्मणानां षोडशकं सुवासिन्यष्टकं तथा।।
बटुकांश्च कुमारीश्च वित्तशाठ्यविवर्जितः।
भोजयेद्भक्ष्यभोज्याद्यैर्दक्षिणाद्यैश्च तोषयेत्।।
एवं पूजनमात्रेण सर्वपापैर्विमुच्यते।
प्रसन्ना त्रिपुरेशानी वाञ्छितार्थप्रदा भवेत्।।
सर्वसौभाग्यसंयुक्तो वंशपुत्रैर्युतस्तथा।
पितॄन्प्रोद्धरते सर्वानन्ते मोक्षं समश्नुते।।
राज्यप्राप्तिस्तु कमलैः करवीरैर्महच्छ्रियम्।
जपापुष्पैस्सन्ततिम्वै जातिपुष्पैर्गृहादिकम्।।
योनिपुष्पैर्वंशवृद्धिं वकुलैः सौमनस्यताम्।
किंशुकैः रोगनिहतिं कुटजैः शत्रुनाशनम्।।
एवमन्यैः सुगन्धाढ्यैः पुष्पैः पत्रैश्च भार्गव!।
पूजयित्वा विधानेन महाफलमवाप्नुयात्।।
फलैर्धान्यैरर्च्चयेच्च प्रोक्तमार्गानुसारतः।
लक्षवर्त्तिप्रदीपैर्वा पूजयेत्त्रिपुराम्बिकाम्।।
समर्थस्तत्र वर्तिभ्यां दीपानेव प्रकल्पयेत्।
दशेन शतेनापि सहस्रेणाऽपि वा तथा।।
पञ्चाशद्दशसाहस्रैः सहस्रशतमेव वा।
एकैकञ्च घृतापूर्णमर्पयेदेकनामभिः।।
सहस्रनामभिर्देयः शतनामभिरेव वा।
दशावर्तनकैर्वाऽपि चैकावर्तमकेन वा।।

तथा पञ्चशतावृत्या दीपं देव्यै समर्पयेत्।
अन्ते स्वर्णेन रौप्येण नवकं वर्तियुग्मकम्।।
कृत्वा ताम्रमये दीपे घृतवर्तिसमुज्ज्वले।
निवेदयेत्तु कलशे पायसेन हुनेत्तथा।।
श्रीसूक्तेनाऽभिषेकम्वै कुर्याच्छ्रीचक्रनायके।
आवृत्तीनां लक्षकेन सहस्रेण शतेन वा।।
स्वयम्वा ब्राह्मणैर्वापि क्षीरैरिक्षुरसैर्घृतैः
मधुभिर्वा फलरसैर्दधिभिर्वा सुगन्धिभिः।।
तोयैस्तीर्थोद्भवैर्वाऽपि राम! पूर्वोक्तवर्त्मना।
अन्ते दशांशतो वह्नौ पायसेन हुनेत्क्रमात्।।
प्रत्यृचं श्रीसूक्तकस्य पूर्ववत्तु समापयेत्।
रुद्राभिषेकतो वाऽपि महाफलमुदीरितम्।।
एवं भार्गव! सम्प्रोक्तं धनिनां सुखसाधनम्।।

श्रीललितालक्षार्चनविधानं सम्पूर्णम्।।

असामर्थ्ये-

अशक्तः कारयेत्पूजां दद्याद्वार्चनसाधनम्।
दानाशक्तः सपर्यान्तं पश्येत्तत्परमानसः।।

श्रीसूक्तमूलपाठः

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। १।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। २।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ।। ३।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।। ४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। ५।।

आदित्यवर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। ७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।। ९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। १०।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। ११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।। १२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। १३।।

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। १४।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥ १७॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विनौ। १८॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥ १९।

न क्रोधो न च मात्स्र्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥ २०॥

पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥ २१॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥ २२॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात् ॥ २३॥

पद्मानने पद्मनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्नि धत्स्व॥ २४॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च मयि श्रीर्देवीर्देवता॥ २५॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ २६॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ २७॥

फलश्रुतिसहितं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम्॥

त्रिपुरारहस्योक्तं ज्ञानकलिकास्तोत्रम्

शिवे देवि संवित्सुधासागराऽऽत्मस्वरूपाऽसि सर्वान्तराऽऽत्मैकरूपा।
न किञ्चिद् विना त्वत्कलामस्ति लोके तत सत्स्वरूपाऽसि सत्येऽप्यसत्ये।। १।।
असत्यं पुनः सत्यमन्ये द्विरूपं द्वयातीतमेके जगुः सर्वमेतत्।
न ते तां विदुर्मायया मोहितास्ते चिदानन्दरूपा त्वमेवाऽसि सर्वम्।। २।।
क्षणानां क्रमैर्भिन्नरूपां धराद्यैर्मितामाहुरेके तमोमात्ररूपाम्।
तमोदीप्तिसंभिन्नरूपाञ्च शान्तस्वरूपां महेशीं विदुस्त्वां न तेऽज्ञाः।। ३।।
शिवादिक्षितिप्रान्ततत्त्वावलिर्या विचित्रा यदीये शरीरे विभाति।
पटे चित्रकल्पा जले सेन्दुतारा नभोवत्परा सा त्वमेवाऽसि सर्वा।। ४।।
अभिन्नं विभिन्नं बहिर्वाऽन्तरे वा विभाति प्रकाशस्तमो वाऽपि सर्वम्।
ऋते त्वां चितिं येन नो भाति किञ्चित्ततस्त्वं समस्तं न किञ्चित्त्वदन्यत्।। ५।।
निरुध्याऽन्तरङ्गं विलाप्याऽक्षसङ्गं परित्यज्य सर्वत्र कामादिभावम्।
स्थितानां महायोगिनां चित्तभूमौ चिदानन्दरूपा त्वमेका विभासि।। ६।।
तथाऽन्ते मनः सेन्द्रियं सञ्चरच्चाप्यसंयम्य तन्मार्गके जागरूकाः।
स्वसंवित्सुधाऽऽदर्शदेहे स्फुरन्तं महायोगिनाथाः प्रपश्यन्ति सर्वम्।। ७।।
निरुक्ते महासारमार्गेऽतिसूक्ष्मे गतिं ये न विन्दन्ति मूढस्वभावाः।
जनान् तान् समुद्धर्तुमक्षावगम्यं बहिः स्थूलरूपं विभिन्नं विभर्षि।। ८।।
तदाराधनेऽनेकमार्गान् विचित्रान् विधायाऽथ मार्गेण केनानि यान्तम्।
नदीवारि सिन्धुर्यथा स्वीकरोति प्रदाय स्वभावं नु स्वात्मीकरोषि।। ९।।
तथा तासु मूर्तिष्वनेकासु मुख्या धनुर्बाणपाशाङ्कुशाढ्यैव मूर्तिः।
शरीरेषु मूर्धेव ये तां भजेयुर्जनास्त्रैपुरीं मूर्तिमत्युत्तमास्ते।। १०।।
जनान् दुःखसिन्धोः समुद्धर्तुकामा पथस्ताननेकान् प्रदिश्य प्रकृष्टान्।
दयार्द्रस्वभावेति विख्यातकीर्तिस्त्वमेकैव पूज्या पराशक्तिरूपा।। ११।।
सदा ते पदाब्जे मनःषट्पदो मे पिबन् तद्रसं निर्वृतः संस्थितोऽस्तु।
इति प्रार्थनां मे निशम्याऽऽशु मातर्विधेहि स्वदृष्टिं दयार्द्रामपीषत्।। १२।।
इति संस्तुत्य सा गौरी त्रिपुरां परमेश्वरीम्।
स्तोत्रेण ज्ञानकलिकाख्येन ध्यानं समास्थिता।। १३।।

इति माहात्म्यखण्डे त्रिंशेऽध्याये ज्ञानकलिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

सौन्दर्यलहरी

श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः

न्यासः

अस्य श्रीसौन्दर्यलहरीस्तोत्रस्य गोविन्दऋषिः। अनुष्टुप्च्छन्दः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता। शिवः शक्त्या युक्त इति बीजम्। सुधासिन्धोर्मध्ये इति शक्तिः। जपो जल्पः शिल्पमिति कीलकम्। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इत्यादि षडङ्गन्यासः।।

ध्यानम्

लौहित्यनिर्जितजपाकुसुमानुरागां पाशाङ्कुशे धनुरिषूनपि धारयन्तीम्।
ताम्रायतामरुणमाल्यविशेषशोभां ताम्बूलपूरितमुखीं त्रिपुरां नमामि।।
लमित्यादिपञ्चोपचाराः।

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति।। १।।

तनीयासं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः सिञ्चन्वन्विरचयति लोकानविकलम्।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां
हरः संक्षुभ्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम्।। २।।

अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी
जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दस्रुतिझरी।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां द्रंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति।। ३।।

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ।। ४।।

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत्।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम्।। ५।।

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्चविशिखा
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-
मपाङ्गात्ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते।। ६।।

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना।
धनुर्वाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका।। ७।।

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे।
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्।। ८।।

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विरहसे।। ९।।

सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि।। १०।।

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
चतुश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः।। ११।।

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ।। १२।।

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचयाः
हठात्त्रुट्यत्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः।। १३।।

क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले।
दिवि द्विष्षट्त्रिंशन्मनसि च चतुःषष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम्।। १४।।

शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकघटिकापुस्तककराम्।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां संनिदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः ।। १५।।

कवीन्द्राणां चेतःकमलवनबालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम्।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी-
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ।। १६।।

सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि-

वंशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः।

स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभि-

र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ॥ १७॥

तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभि-

र्दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनि मग्नां स्मरति यः।

भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः

सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः॥ १८॥

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो

हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम्।

स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु

त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम्॥ १९॥

किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरम्बामृतरसं

हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः।

स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव

ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाधारसिरया॥ २०॥

तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं

निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम्।

महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा

महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम्॥ २१॥

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-

मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।

तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं

मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ॥ २२॥

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा

शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत्।

यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं

कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम्।। २३।।

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते

तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति।

सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव-

स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः।। २४।।

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे

भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।

तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे

स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमुकुटाः।। २५।।

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं

विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।

वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि संमीलितदृशा

महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ।। २६।।

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना

गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।

प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा

सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम्।। २७।।

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं

विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः।

करालं यत्क्ष्वेलं कवलितवतः कालकलना

न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा।। २८।।

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमुकुटम्।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते।। २९।।
स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितः
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतः
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ।। ३०।।
चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं
स्थितस्तत्तित्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्।। ३१।।
शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेपु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्।। ३२।।
स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनोः
निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः।। ३३।।
शरीरं त्वं शम्भोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम्।
अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः।। ३४।।

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवतिभावेन बिभृषे।। ३५।।

तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शम्भुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता।
यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभुवने।। ३६।।

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम्।
ययोः कान्त्या यान्त्याः शशिकिरणसारूप्यसरणे-
र्विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसितचकोरीव जगती।। ३७।।

समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम्।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति-
र्यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमद्भ्यः पय इव।। ३८।।

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम्।
यदालोके लोकान्दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति।। ३९।।

तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम्।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम्।।४०।।

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम्।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम्।। ४१।।

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः।
स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम्।। ४२।।

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरुम्बं तव शिवे।
यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन्मन्ये बलमथनवाटीबिटपिनाम् ।। ४३।।

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्रोतःसरणिरिव सीमन्तसरणिः।
वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
द्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ।। ४४।।

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम्।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ।। ४५।।

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मुकुटघटितं चन्द्रशकलम्।
विपर्यासन्यासादुभयमपि सम्भूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः।। ४६।।

भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम्।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे।। ४७।।

अहस्सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम्।। ४८।।

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधाराऽऽधारा किमपि मधुराऽऽभोगवतिका।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ।। ४९।।

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरला-
वसूयासंसर्गादलिकनयनं किञ्चिदरुणम् ।। ५०।।

शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिस्सकरुणा।। ५१।।

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ।। ५२।।

विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते।
पुनस्स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजस्सत्त्वं बिभ्रत्तम इति गुणानां त्रयमिव।। ५३।।

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघम्।। ५४।।

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुस्सन्तो धरणिधरराजन्यतनये।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः।। ५५।।

तवापर्णे कर्णेजपनयनपैशुन्यचकिताः
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाश्शफरिकाः।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति।। ५६।।

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः।। ५७।।

अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम्।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलस-
न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम्।। ५८।।

स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलितताटङ्कयुगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम्।
यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते।। ५९।।

सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम्।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते।। ६०।।

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम्।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिःश्वासगलितं
समृद्ध्या यत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः।। ६१।।

प्रकृत्याऽऽरक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता।
न बिम्बं तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया।। ६२।।

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा।
अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमाम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया।। ६३।।

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा।। ६४।।

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभिः
निवृत्तैश्चण्डांशुत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकवलाः ।। ६५।।
विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः
त्वयाऽऽरब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने।
तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम्।। ६६।।
कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
करेग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम् ।। ६७।।
भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम्।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो हारलतिका।। ६८।।
गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते।। ६९।।
मृणाली मृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिस्सौन्दर्यं सरसिजभवस्स्तौति वदनैः।
नखेभ्यः संत्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया।। ७०।।

नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां
करांणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे।
कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम्।। ७१।।

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम्।
यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति।। ७२।।

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसङ्गरसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ।। ७३।।

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम्।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तश्शबलितां
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते।। ७४।।

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता।। ७५।।

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति।। ७६।।

यदेतत्कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किञ्चिज्जननि तव यद्भाति सुधियाम्।
विमर्दादन्योन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम्।। ७७।।
स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता-
कलावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ।। ७८।।
निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्तेनारीतिलक शनकैस्त्रुट्यत इव।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये।। ७९।।
कुचौ सद्यस्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता।
तव त्रातुं भङ्गादलमिति विलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव।। ८०।।
गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजान्
नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारस्स्थगयति लघुत्वं नयति च।। ८१।।
करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटली-
मुभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि।। ८२।।

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत।
यदग्रे दृश्यन्ते दशशरफलाः पादयुगली-
नखाग्रच्छद्मानस्सुरमुकुटशाणैकनिशिताः ॥ ८३॥

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातश्शिरसि दयया धेहि चरणौ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ॥ ८४॥

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः
तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ॥ ८५॥

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्त्तारं चरणकमले ताडयति ते।
चिरादन्तश्शल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा॥ ८६॥

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम्॥ ८७॥

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलाम्।
कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ॥ ८८॥

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः
तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ।
फलानि स्वस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ।। ८९।।

ददाने दीनेभ्यश्श्रियमनिशमाशानुसदृशी-
ममन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति।
तवास्मिन्मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन्मज्जीवः करणचरणष्षट्चरणताम्।। ९०।।

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति।
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते।। ९१।।

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्।। ९२।।

अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे।
भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये
जगत्त्रातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा।। ९३।।

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते।। ९४।।

पुरारातेरन्तःपुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः।। ९५।।

कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ।। ९६।।

गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।
तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि।। ९७।।

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम्।। ९८।।

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरंजीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्।। ९९।।

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना।
स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं
त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम्।। १००।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे
श्रीशङ्कराचार्यरचिता सौन्दर्यलहरी सम्पूर्णा।।

तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्

समस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये।।
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च।
चौरसिंहद्वीपिगजगवयादि भयानके ।।
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे।।
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्वं तरत्यसौ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो निःसपत्नो जितेन्द्रियः।।
शृणु तत्कवचं देवि! वक्ष्ये तव तदात्मकम्।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा।।
सर्वतः सर्वदाऽऽत्मानं ललिता पातु सर्वदा।
कामेशी पुरतः पातु भगमाला त्वनन्तरम्।।
दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा।
नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम।।
तथैव पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ।।
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः।
पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेन्मां कुलसुन्दरी।।
नित्या मामूर्ध्वतः पातु साऽधो मे पातु सर्वदा।
नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम्।।
करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला।
देहेन्द्रियमनःप्राणान् ज्वालामालिनिविग्रहा ।।
पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा।
कामात् क्रोधात् तथा लोभान्मोहान्मानान्मदादपि।।
पापान्मत्सरतःशोकात् संशयात्सर्वतः सदा।

स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ।।

असत्यात् क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा।
रक्षन्तु मां सर्वदा ताःकुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च।।
नित्याःषोडश मां पान्तु गजारूढाः स्वशक्तिभिः।
तथा हयसमारूढाः पान्तु मां सर्वतः सदा।।
सिंहारूढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि।
रथारूढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे।।
तार्क्ष्यारूढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः।
भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा।।
भूत–प्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान्।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ।।
गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारूढाखिलायुधाः।
असंख्याः शक्तयो देव्याः पान्तु मां सर्वतः सदा।।
सायं प्रातर्जपन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम्।
कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न शृणोति च तत्समः।।

षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे नित्याकवचं सम्पूर्णम्।।

श्रीललितासहस्रनामावलिः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य वशिन्यादिभ्यो वाग्देवताभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे) श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये)। ३ क. ५ बीजाय नमः (गुह्ये)। ३ स० ४ शक्तये नमः (पादयोः)। ३ ह० ६ कीलकाय नमः (नाभौ) श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थं पूजने विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)। (कूटत्रयं द्विरावृत्य बालाया वा षडङ्गद्वयम्।)

ध्यानश्लोकः

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्–
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।। १।।

(मानसैः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य)

श्रीललितासहस्रनामावलिः

(ऐं ह्रीं श्रीं)

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमात्रे नमः
३ श्रीमहाराज्ञ्यै नमः
३ श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै नमः
३ चिदग्निकुण्डसम्भूतायै नमः
३ देवकार्यसमुद्यतायै नमः
३ उद्यद्भानुसहस्राभायै नमः
३ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
३ रागस्वरूपपाशाढ्यायै नमः
३ क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै नमः
३ मनोरूपेक्षुकोदण्डायै नमः १०
३ पञ्चतन्मात्रसायकायै नमः
३ निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
३ चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचायै नमः
३ कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डितायै नमः
३ अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभितायै नमः
३ मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषकायै नमः
३ वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिकायै नमः
३ वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचनायै नमः
३ नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजितायै नमः
३ ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरायै नमः २०
३ कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरायै नमः
३ ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डलायै नमः
३ पद्मरागशिलादर्शपरिभाविकपोलभुवे नमः

३ नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिरदनच्छदायै नमः

३ शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वलायै नमः

३ कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरायै नमः

३ निजसंल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छप्यै नमः

३ मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसायै नमः

३ अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजितायै नमः

३ कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरायै नमः ३०

३ कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै नमः

३ रत्नग्रैवेयचिन्ताकल्लोलमुक्ताफलान्वितायै नमः

३ कामेश्वरप्रेमरत्न–मणिप्रतिपणस्तन्यै नमः

३ नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वय्यै नमः

३ लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमायै नमः

३ स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रयायै नमः

३ अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतट्यै नमः

३ रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषितायै नमः

३ कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्वितायै नमः

३ माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजितायै नमः ४०

३ इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिकायै नमः

३ गूढगुल्फायै नमः

३ कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्वितायै नमः

३ नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणायै नमः

३ पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहायै नमः

३ सिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजायै नमः

३ मरालीमन्दगमनायै नमः

३ महालावण्यशेवधये नमः

३ सर्वारुणायै नमः

३ अनवद्याङ्ग्यै नमः ५०

३ सर्वाभरणभूषितायै नमः

३ शिवकामेश्वराङ्कस्थायै नमः

३ शिवायै नमः
३ स्वाधीनवल्लभायै नमः
३ सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै नमः
३ श्रीमन्नगरनायिकायै नमः
३ चिन्तामणिगृहान्तस्थायै नमः
३ पञ्चब्रह्मासनस्थितायै नमः
३ महापद्माटवीसंस्थायै नमः
३ कदम्बवनवासिन्यै नमः ६०
३ सुधासागरमध्यस्थायै नमः
३ कामाक्ष्यै नमः
३ कामदायिन्यै नमः
३ देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवायै नमः
३ भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्वितायै नमः
३ सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेवितायै नमः
३ अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृतायै नमः
३ चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृतायै नमः
३ गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवितायै नमः ७०
३ किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृतायै नमः
३ ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगायै नमः
३ भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षितायै नमः
३ नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुकायै नमः
३ भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दितायै नमः
३ मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषङ्गवधतोषितायै नमः
३ विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दितायै ममः
३ कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरायै नमः
३ महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षितायै नमः
३ भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिण्यै नमः

३ कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृत्यै नमः ८०

३ महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिकायै नमः
३ कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यकायै नमः
३ ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवायै नमः
३ हरनेत्राग्निसन्दग्धकामसञ्जीवनौषध्यै नमः
३ श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजायै नमः
३ कण्ठाधःकटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिण्यै नमः
३ शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिण्यै नमः

३ मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
३ मूलकूटत्रयकलेवरायै नमः
३ कुलामृतैकरसिकायै नमः ९०
३ कुलसङ्केतपालिन्यै नमः
३ कुलाङ्गनायै नमः
३ कुलान्तस्थायै नमः
३ कौलिन्यै नमः
३ कुलयोगिन्यै नमः
३ अकुलायै नमः
३ समयान्तस्थायै नमः
३ समयाचारतत्परायै नमः
३ मूलाधारैकनिलयायै नमः
३ ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै नमः १००
३ मणिपूरान्तरुदितायै नमः
३ विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै नमः
३ आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै नमः
३ रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै नमः
३ सहस्राराम्बुजारूढायै नमः
३ सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः
३ तडिल्लतासमरुच्यै नमः
३ षट्चक्रोपरिसंस्थितायै नमः

३ महासक्त्यै नमः
३ कुण्डलिन्यै नमः ११०
३ बिसतन्तुतनीयस्यै नमः
३ भवान्यै नमः
३ भावनागम्यायै नमः
३ भवारण्यकुठारिकायै नमः
३ भद्रप्रियायै नमः
३ भद्रमूर्त्यै नमः
३ भक्तसौभाग्यदायिन्यै नमः
३ भक्तिप्रियायै नमः
३ भक्तिगम्यायै नमः
३ भक्तिवश्यायै नमः १२०
३ भयापहायै नमः
३ शाम्भव्यै नमः
३ शारदाराध्यायै नमः
३ शर्वाण्यै नमः
३ शर्मदायिन्यै नमः
३ शाङ्कर्यै नमः
३ श्रीकर्यै नमः
३ साध्व्यै नमः
३ शरच्चन्द्रनिभाननायै नमः

३ शातोदर्यै नमः १३०
३ शान्तिमत्यै नमः
३ निराधारायै नमः
३ निरञ्जनायै नमः
३ निर्लेपायै नमः
३ निर्मलायै नमः
३ नित्यायै नमः
३ निराकारायै नमः
३ निराकुलायै नमः
३ निर्गुणायै नमः
३ निष्कलायै नमः १४०
३ शान्तायै नमः
३ निष्कामायै नमः
३ निरुपप्लवायै नमः
३ नित्यमुक्तायै नमः
३ निर्विकारायै नमः
३ निष्प्रपञ्चायै नमः
३ निराश्रयायै नमः
३ नित्यशुद्धायै नमः
३ नित्यबुद्धायै नमः
३ निरवद्यायै नमः १५०
३ निरन्तरायै नमः
३ निष्कारणायै नमः
३ निष्कलङ्कायै नमः
३ निरुपाधये नमः
३ निरीश्वरायै नमः
३ नीरागायै नमः
३ रागमथन्यै नमः
३ निर्मदायै नमः
३ मदनाशिन्यै नमः

३ निश्चिन्तायै नमः १६०
३ निरहङ्कारायै नमः
३ निर्मोहायै नमः
३ मोहनाशिन्यै नमः
३ निर्ममायै नमः
३ ममताहन्त्र्यै नमः
३ निष्पापायै नमः
३ पापनाशिन्यै नमः
३ निष्क्रोधायै नमः
३ क्रोधशमन्यै नमः
३ निर्लोभायै नमः १७०
३ लोभनाशिन्यै नमः
३ निःसंशयायै नमः
३ संशयघ्न्यै नमः
३ निर्भवायै नमः
३ भवनाशिन्यै नमः
३ निर्विकल्पायै नमः
३ निराबाधायै नमः
३ निर्भेदायै नमः
३ भेदनाशिन्यै नमः
३ निर्नाशायै नमः १८०
३ मृत्युमथन्यै नमः
३ निष्क्रियायै नमः
३ निष्परिग्रहायै नमः
३ निस्तुलायै नमः
३ नीलचिकुरायै नमः
३ निरपायायै नमः
३ निरत्ययायै नमः
३ दुर्लभायै नमः
३ दुर्गमायै नमः

३ दुर्गायै नमः १९०
३ दुःखहन्त्र्यै नमः
३ सुखप्रदायै नमः
३ दुष्टदूरायै नमः
३ दुराचारशमन्यै नमः
३ दोषवर्जितायै नमः
३ सर्वज्ञायै नमः
३ सान्द्रकरुणायै नमः
३ समानाधिकवर्जितायै नमः
३ सर्वशक्तिमय्यै नमः
३ सर्वमङ्गलायै नमः २००
३ सद्गतिप्रदायै नमः
३ सर्वेश्वर्यै नमः
३ सर्वमय्यै नमः
३ सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
३ सर्वयन्त्रात्मिकायै नमः
३ सर्वतन्त्ररूपायै नमः
३ मनोन्मन्यै नमः
३ माहेश्वर्यै नमः
३ महादेव्यै नमः
३ महालक्ष्म्यै नमः २१०
३ मृडप्रियायै नमः
३ महारूपायै नमः
३ महापूज्यायै नमः
३ महापातकनाशिन्यै नमः
३ महामायायै नमः
३ महासत्त्वायै नमः
३ महाशक्त्यै नमः
३ महारत्यै नमः
३ महाभोगायै नमः
३ महैश्वर्यायै नमः २२०
३ महावीर्यायै नमः
३ महाबलायै नमः
३ महाबुद्ध्यै नमः
३ महासिद्ध्यै नमः
३ महायोगीश्वरेश्वर्यै नमः
३ महातन्त्रायै नमः
३ महामन्त्रायै नमः
३ महायन्त्रायै नमः
३ महासनायै नमः
३ महायागक्रमाराध्यायै नमः२३०
३ महाभैरवपूजितायै नमः
३ महेश्वरमहाकल्प-
महाताण्डवसाक्षिण्यै नमः
३ महाकामेशमहिष्यै नमः
३ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
३ चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै नमः
३ चतुःषष्टिकलामय्यै नमः
३ महाचतुःषष्टिकोटियोगिनी-
गणसेवितायै नमः
३ मनुविद्यायै नमः
३ चन्द्रविद्यायै नमः
३ चन्द्रमण्डलमध्यगायै नमः२४०
३ चारुरूपायै नमः
३ चारुहासायै नमः
३ चारुचन्द्रकलाधरायै नमः
३ चराचरजगन्नाथायै नमः
३ चक्रराजनिकेतनायै नमः
३ पार्वत्यै नमः
३ पद्मनयनायै नमः

३ पद्मरागसमप्रभायै नमः
३ पञ्चप्रेतासनासीनायै नमः
३ पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः २५०
३ चिन्मय्यै नमः
३ परमानन्दायै नमः
३ विज्ञानघनरूपिण्यै नमः
३ ध्यानध्यातृध्येयरूपायै नमः
३ धर्माधर्मविवर्जितायै नमः
३ विश्वरूपायै नमः
३ जागरिण्यै नमः
३ स्वपन्त्यै नमः
३ तैजसात्मिकायै नमः
३ सुप्तायै नमः २६०
३ प्राज्ञात्मिकायै नमः
३ तुर्यायै नमः
३ सर्वावस्थाविवर्जितायै नमः
३ सृष्टिकर्त्र्यै नमः
३ ब्रह्मरूपायै नमः
३ गोप्त्र्यै नमः
३ गोविन्दरूपिण्यै नमः
३ संहारिण्यै नमः
३ रुद्ररूपायै नमः
३ तिरोधानकर्यै नमः २७०
३ ईश्वर्यै नमः
३ सदाशिवायै नमः
३ अनुग्रहदायै नमः
३ पञ्चकृत्यपरायणायै नमः
३ भानुमण्डलमध्यस्थायै नमः
३ भैरव्यै नमः
३ भगमालिन्यै नमः

३ पद्मासनायै नमः
३ भगवत्यै नमः
३ पद्मनाभसहोदर्यै नमः २८०
३ उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्न-
भुवनावल्यै नमः
३ सहस्रशीर्षवदनायै नमः
३ सहस्राक्ष्यै नमः
३ सहस्रपदे नमः
३ आब्रह्मकीटजनन्यै नमः
३ वर्णाश्रमविधायिन्यै नमः
३ निजाज्ञारूपनिगमायै नमः
३ पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः
३ श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृत-
पादाब्जधूलिकायै नमः
३ सकलागमसन्दोहशुक्ति-
सम्पुटमौक्तिकायै नमः २९०
३ पुरुषार्थप्रदायै नमः
३ पूर्णायै नमः
३ भोगिन्यै नमः
३ भुवनेश्वर्यै नमः
३ अम्बिकायै नमः
३ अनादिनिधनायै नमः
३ हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै नमः
३ नारायण्यै नमः
३ नादरूपायै नमः
३ नामरूपविवर्जितायै नमः ३००
३ ह्रीङ्कार्यै नमः
३ ह्रीमत्यै नमः
३ हृद्यायै नमः
३ हेयोपादेयवर्जितायै नमः

३ राजराजार्चितायै नमः
३ राज्ञ्यै नमः
३ रम्यायै नमः
३ राजीवलोचनायै नमः
३ रञ्जन्यै नमः
३ रमण्यै नमः ३१०
३ रस्यायै नमः
३ रणत्किङ्किणिमेखलायै नमः
३ रमायै नमः
३ राकेन्दुवदनायै नमः
३ रतिरूपायै नमः
३ रतिप्रियायै नमः
३ रक्षाकर्यै नमः
३ राक्षसघ्न्यै नमः
३ रामायै नमः
३ रमणलम्पटायै नमः ३२०
३ काम्यायै नमः
३ कामकलारूपायै नमः
३ कदम्बकुसुमप्रियायै नमः
३ कल्याण्यै नमः
३ जगतीकन्दायै नमः
३ करुणारससागरायै नमः
३ कलावत्यै नमः
३ कलालापायै नमः
३ कान्तायै नमः
३ कादम्बरीप्रियायै नमः ३३०
३ वरदायै नमः
३ वामनयनायै नमः
३ वारुणीमदविह्वलायै नमः
३ विश्वाधिकायै नमः
३ वेदवेद्यायै नमः
३ विन्ध्याचलनिवासिन्यै नमः
३ विधात्र्यै नमः
३ वेदजनन्यै नमः
३ विष्णुमायायै नमः
३ विलासिन्यै नमः ३४०
३ क्षेत्रस्वरूपायै नमः
३ क्षेत्रेश्यै नमः
३ क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै नमः
३ क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै नमः
३ क्षेत्रपालसमर्चितायै नमः
३ विजयायै नमः
३ विमलायै नमः
३ वन्द्यायै नमः
३ वन्दारुजनवत्सलायै नमः
३ वाग्वादिन्यै नमः ३५०
३ वामकेश्यै नमः
३ वह्निमण्डलवासिन्यै नमः
३ भक्तिमत्कल्पलतिकायै नमः
३ पशुपाशविमोचिन्यै नमः
३ संहृताशेषपाखण्डायै नमः
३ सदाचारप्रवर्तिकायै नमः
३ तापत्रयाग्निसन्तप्तसमाह्लादन-
चन्द्रिकायै नमः
३ तरुण्यै नमः
३ तापसाराध्यायै नमः
३ तनुमध्यायै नमः ३६०
३ तमोपहायै नमः
३ चित्यै नमः
३ तत्पदलक्ष्यार्थायै नमः

३ चिदेकरसरूपिण्यै नमः
३ स्वात्मानन्दलवीभूत-
ब्रह्माद्यानन्दसन्तत्यै नमः
३ परायै नमः
३ प्रत्यक्चितीरूपायै नमः
३ पश्यन्त्यै नमः
३ परदेवतायै नमः
३ मध्यमायै नमः ३७०
३ वैखरीरूपायै नमः
३ भक्तमानसहंसिकायै नमः
३ कामेश्वरप्राणनाड्यै नमः
३ कृतज्ञायै नमः
३ कामपूजितायै नमः
३ शृङ्गाररसपूर्णायै नमः
३ जयायै नमः
३ जालन्धरस्थितायै नमः
३ ओड्याणपीठनिलयायै नमः
३ बिन्दुमण्डलवासिन्यै नमः ३८०
३ रहोयागक्रमाराध्यायै नमः
३ रहस्तर्पणतर्पितायै नमः
३ सद्यःप्रसादिन्यै नमः
३ विश्वसाक्षिण्यै नमः
३ साक्षिवर्जितायै नमः
३ षडङ्गदेवतायुक्तायै नमः
३ षाड्गुण्यपरिपूरितायै नमः
३ नित्यक्लिन्नायै नमः
३ निरुपमायै नमः
३ निर्वाणसुखदायिन्यै नमः ३९०
३ नित्याषोडशिकारूपायै नमः
३ श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै नमः
३ प्रभावत्यै नमः
३ प्रभारूपायै नमः
३ प्रसिद्धायै नमः
३ परमेश्वर्यै नमः
३ मूलप्रकृत्यै नमः
३ अव्यक्तायै नमः
३ व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै नमः
३ व्यापिन्यै नमः ४००
३ विविधाकारायै नमः
३ विद्याविद्यास्वरूपिण्यै नमः
३ महाकामेशनयन-
कुमुदाह्लादकौमुद्यै नमः
३ भक्तहार्दतमोभेद-
भानुमद्भानुसन्तत्यै नमः
३ शिवदूत्यै नमः
३ शिवाराध्यायै नमः
३ शिवमूर्त्यै नमः
३ शिवङ्कर्यै नमः
३ शिवप्रियायै नमः
३ शिवपरायै नमः ४१०
३ शिष्टेष्टायै नमः
३ शिष्टपूजितायै नमः
३ अप्रमेयायै नमः
३ स्वप्रकाशायै नमः
३ मनोवाचामगोचरायै नमः
३ चिच्छक्त्यै नमः
३ चेतनारूपायै नमः
३ जडशक्त्यै नमः
३ जडात्मिकायै नमः
३ गायत्र्यै नमः ४२०

३ व्याहृत्यै नमः
३ सन्ध्यायै नमः
३ द्विजवृन्दनिषेवितायै नमः
३ तत्त्वासनायै नमः
३ तस्मै नमः
३ तुभ्यं नमः
३ अय्यै नमः
३ पञ्चकोशान्तरस्थितायै नमः
३ निःसीममहिम्ने नमः
३ नित्ययौवनायै नमः ४३०
३ मदशालिन्यै नमः
३ मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै नमः
३ मदपाटलगण्डभुवे नमः
३ चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै नमः
३ चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः
३ कुशलायै नमः
३ कोमलाकारायै नमः
३ कुरुकुल्लायै नमः
३ कुलेश्वर्यै नमः
३ कुलकुण्डालयायै नमः ४४०
३ कौलमार्गतत्परसेवितायै नमः
३ कुमारगणनाथाम्बायै नमः
३ तुष्ट्यै नमः
३ पुष्ट्यै नमः
३ मत्यै नमः
३ धृत्यै नमः
३ शान्त्यै नमः
३ स्वस्तिमत्यै नमः
३ कान्त्यै नमः
३ नन्दिन्यै नमः ४५०

३ विघ्ननाशिन्यै नमः
३ तेजोवत्यै नमः
३ त्रिनयनायै नमः
३ लोलाक्षीकामरूपिण्यै नमः
३ मालिन्यै नमः
३ हंसिन्यै नमः
३ मात्रे नमः
३ मलयाचलवासिन्यै नमः
३ सुमुख्यै नमः
३ नलिन्यै नमः ४६०
३ सुभ्रुवे नमः
३ शोभनायै नमः
३ सुरनायिकायै नमः
३ कालकण्ठ्यै नमः
३ कान्तिमत्यै नमः
३ क्षोभिण्यै नमः
३ सूक्ष्मरूपिण्यै नमः
३ वज्रेश्वर्यै नमः
३ वामदेव्यै नमः
३ वयोवस्थाविवर्जितायै नमः ४७०
३ सिद्धेश्वर्यै नमः
३ सिद्धविद्यायै नमः
३ सिद्धमात्रे नमः
३ यशस्विन्यै नमः
३ विशुद्धिचक्रनिलयायै नमः
३ आरक्तवर्णायै नमः
३ त्रिलोचनायै नमः
३ खट्वाङ्गादिप्रहरणायै नमः
३ वदनैकसमन्वितायै नमः
३ पायसान्नप्रियायै नमः ४८०

३ त्वक्स्थायै नमः
३ पशुलोकभयङ्कर्यै नमः
३ अमृतादिमहाशक्ति
संवृतायै नमः
३ डाकिनीश्वर्यै नमः
३ अनाहताब्जनिलयायै नमः
३ श्यामाभायै नमः
३ वदनद्वयायै नमः
३ दंष्ट्रोज्ज्वलायै नमः
३ अक्षमालादिधरायै नमः
३ रुधिरसंस्थितायै नमः ४९०
३ कालरात्र्यादिशक्त्योघ-
वृतायै नमः
३ स्निग्धौदनप्रियायै नमः
३ महावीरेन्द्रवरदायै नमः
३ राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
३ मणिपूराब्जनिलयायै नमः
३ वदनत्रयसंयुतायै नमः
३ वज्रादिकायुधोपेतायै नमः
३ डामर्यादिभिरावृतायै नमः
३ रक्तवर्णायै नमः
३ मांसनिष्ठायै नमः ५००
३ गुडान्नप्रीतमानसायै नमः
३ समस्तभक्तसुखदायै नमः
३ लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
३ स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै नमः
३ चतुर्वक्त्रमनोहरायै नमः
३ शूलाद्यायुधसम्पन्नायै नमः
३ पीतवर्णायै नमः
३ अतिगर्वितायै नमः

३ मेदोनिष्ठायै नमः
३ मधुप्रीतायै नमः ५१०
३ बन्धिन्यादिसमन्वितायै नमः
३ दध्यन्नासक्तहृदयायै नमः
३ काकिनीरूपधारिण्यै नमः
३ मूलाधाराम्बुजारूढायै नमः
३ पञ्चवक्त्रायै नमः
३ अस्थिसंस्थितायै नमः
३ अङ्कुशादिप्रहरणायै नमः
३ वरदादिनिषेवितायै नमः
३ मुद्गौदनासक्तचित्तायै नमः
३ साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
३ आज्ञाचक्राब्जनिलयायै नमः
३ शुक्लवर्णायै नमः
३ षडाननायै नमः
३ मज्जासंस्थायै नमः
३ हंसवतीमुख्यशक्ति-
समन्वितायै नमः
३ हरिद्रान्नैकरसिकायै नमः
३ हाकिनीरूपधारिण्यै नमः
३ सहस्रदलपद्मस्थायै नमः
३ सर्ववर्णोपशोभितायै नमः
३ सर्वायुधधरायै नमः ५३०
३ शुक्लसंस्थितायै नमः
३ सर्वतोमुख्यै नमः
३ सर्वौदनप्रीतचित्तायै नमः
३ याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
३ स्वाहा नमः
३ स्वधा नमः
३ अमत्यै नमः

३ मेधायै नमः
३ श्रुत्यै नमः
३ स्मृत्यै नमः ५४०
३ अनुत्तमायै नमः
३ पुण्यकीर्त्यै नमः
३ पुण्यलभ्यायै नमः
३ पुण्यश्रवणकीर्तनायै नमः
३ पुलोमजार्चितायै नमः
३ बन्धमोचन्यै नमः
३ बर्बरालकायै नमः
३ विमर्शरूपिण्यै नमः
३ विद्यायै नमः
३ वियदादिजगत्प्रसुवे नमः ५५०
३ सर्वव्याधिप्रशमन्यै नमः
३ सर्वमृत्युनिवारिण्यै नमः
३ अग्रगण्यायै नमः
३ अचिन्त्यरूपायै नमः
३ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः
३ कात्यायन्यै नमः
३ कालहन्त्र्यै नमः
३ कमलाक्षनिषेवितायै नमः
३ ताम्बूलपूरितमुख्यै नमः
३ दाडिमीकुसुमप्रभायै नमः ५६०
३ मृगाक्ष्यै नमः
३ मोहिन्यै नमः
३ मुख्यायै नमः
३ मृडान्यै नमः
३ मित्ररूपिण्यै नमः
३ नित्यतृप्तायै नमः
३ भक्तनिधये नमः

३ नियन्त्र्यै नमः
३ निखिलेश्वर्यै नमः
३ मैत्रादिवासनालभ्यायै नमः ५७०
३ महाप्रलयसाक्षिण्यै नमः
३ परस्यै शक्त्यै नमः
३ परायै निष्ठायै नमः
३ प्रज्ञानघनरूपिण्यै नमः
३ माध्वीपानालसायै नमः
३ मत्तायै नमः
३ मातृकावर्णरूपिण्यै नमः
३ महाकैलासनिलयायै नमः
३ मृणालमृदुदोर्लतायै नमः
३ महनीयायै नमः ५८०
३ दयामूर्त्यै नमः
३ महासाम्राज्यशालिन्यै नमः
३ आत्मविद्यायै नमः
३ महाविद्यायै नमः
३ श्रीविद्यायै नमः
३ कामसेवितायै नमः
३ श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै नमः
३ त्रिकूटायै नमः
३ कामकोटिकायै नमः
३ कटाक्षकिङ्करीभूतकमला-
कोटिसेवितायै नमः ५९०
३ शिरःस्थितायै नमः
३ चन्द्रनिभायै नमः
३ भालस्थायै नमः
३ इन्द्रधनुःप्रभायै नमः
३ हृदयस्थायै नमः
३ रविप्रख्यायै नमः

३ त्रिकोणान्तरदीपिकायै नमः
३ दाक्षायण्यै नमः
३ दैत्यहन्त्र्यै नमः
३ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः ६००
३ दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै नमः
३ दरहासोज्ज्वलन्मुख्यै नमः
३ गुरुमूर्त्यै नमः
३ गुणनिधये नमः
३ गोमात्रे नमः
३ गुहजन्मभुवे नमः
३ देवेश्यै नमः
३ दण्डनीतिस्थायै नमः
३ दहराकाशरूपिण्यै नमः
३ प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथि-
मण्डलपूजितायै नमः ६१०
३ कलात्मिकायै नमः
३ कलानाथायै नमः
३ काव्यालापविनोदिन्यै नमः
३ सचामररमावाणीसव्य-
दक्षिणसेवितायै नमः
३ आदिशक्त्यै नमः
३ अमेयायै नमः
३ आत्मने नमः
३ परमायै नमः
३ पावनाकृतये नमः
३ अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै
नमः ६२०
३ दिव्यविग्रहायै नमः
३ क्लीङ्कार्यै नमः
३ केवलायै नमः

३ गुह्यायै नमः
३ कैवल्यपददायिन्यै नमः
३ त्रिपुरायै नमः
३ त्रिजगद्वन्द्यायै नमः
३ त्रिमूर्तये नमः
३ त्रिदशेश्वर्यै नमः
३ त्र्यक्षर्यै नमः ६३०
३ दिव्यगन्धाढ्यायै नमः
३ सिन्दूरतिलकाञ्चितायै नमः
३ उमायै नमः
३ शैलेन्द्रतनयायै नमः
३ गौर्यै नमः
३ गन्धर्वसेवितायै नमः
३ विश्वगर्भायै नमः
३ स्वर्णगर्भायै नमः
३ अवरदायै नमः
३ वागधीश्वर्यै नमः ६४०
३ ध्यानगम्यायै नमः
३ अपरिच्छेद्यायै नमः
३ ज्ञानदायै नमः
३ ज्ञानविग्रहायै नमः
३ सर्ववेदान्तसंवेद्यायै नमः
३ सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः
३ लोपामुद्रार्चितायै नमः
३ लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
३ अदृश्यायै नमः
३ दृश्यरहितायै नमः ६५०
३ विज्ञात्र्यै नमः
३ वेद्यवर्जितायै नमः
३ योगिन्यै नमः

३ योगदायै नमः
३ योग्यायै नमः
३ योगानन्दायै नमः
३ युगन्धरायै नमः
३ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया-
शक्तिस्वरूपिण्यै नमः
३ सर्वाधारायै नमः
३ सुप्रतिष्ठायै नमः ६६०
३ सदसद्रूपधारिण्यै नमः
३ अष्टमूर्त्यै नमः
३ अजाजेत्र्यै नमः
३ लोकयात्राविधायिन्यै नमः
३ एकाकिन्यै नमः
३ भूमरूपायै नमः
३ निर्द्वैतायै नमः
३ द्वैतवर्जितायै नमः
३ अन्नदायै नमः
३ वसुदायै नमः ६७०
३ वृद्धायै नमः
३ ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिण्यै नमः
३ बृहत्यै नमः
३ ब्राह्मण्यै नमः
३ ब्राह्म्यै नमः
३ ब्रह्मानन्दायै नमः
३ बलिप्रियायै नमः
३ भाषारूपायै नमः
३ बृहत्सेनायै नमः
३ भावाभावविवर्जितायै नमः ६८०
३ सुखाराध्यायै नमः
३ शुभकर्यै नमः

३ शोभनायै सुलभायै गत्यै नमः
३ राजराजेश्वर्यै नमः
३ राज्यदायिन्यै नमः
३ राज्यवल्लभायै नमः
३ राजत्कृपायै नमः
३ राजपीठनिवेशितनिजाश्रितायै नमः
३ राज्यलक्ष्म्यै नमः
३ कोशनाथायै नमः ६९०
३ चतुरङ्गबलेश्वर्यै नमः
३ साम्राज्यदायिन्यै नमः
३ सत्यसन्धायै नमः
३ सागरमेखलायै नमः
३ दीक्षितायै नमः
३ दैत्यशमन्यै नमः
३ सर्वलोकवशङ्कर्यै नमः
३ सर्वार्थदात्र्यै नमः
३ सावित्र्यै नमः
३ सच्चिदानन्दरूपिण्यै
नमः ७००
३ देशकालापरिच्छिन्नायै नमः
३ सर्वगायै नमः
३ सर्वमोहिन्यै नमः
३ सरस्वत्यै नमः
३ शास्त्रमय्यै नमः
३ गुहाम्बायै नमः
३ गुह्यरूपिण्यै नमः
३ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै नमः
३ सदाशिवपतिव्रतायै नमः
३ सम्प्रदायेश्वर्यै नमः ७१०
३ साध्व्यै नमः

३ यै नमः
३ गुरुमण्डलरूपिण्यै नमः
३ कुलोत्तीर्णायै नमः
३ भगाराध्यायै नमः
३ मायायै नमः
३ मधुमत्यै नमः
३ मह्यै नमः
३ गणाम्बायै नमः
३ गुह्यकाराध्यायै नमः ७२०
३ कोमलाङ्ग्यै नमः
३ गुरुप्रियायै नमः
३ स्वतन्त्रायै नमः
३ सर्वतन्त्रेश्यै नमः
३ दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै नमः
३ सनकादिसमाराध्यायै नमः
३ शिवज्ञानप्रदायिन्यै नमः
३ चित्कलायै नमः
३ आनन्दकलिकायै नमः
३ प्रेमरूपायै नमः ७३०
३ प्रियङ्कर्यै नमः
३ नामपारायणप्रीतायै नमः
३ नन्दिविद्यायै नमः
३ नटेश्वर्यै नमः
३ मिथ्याजगदधिष्ठानायै नमः
३ मुक्तिदायै नमः
३ मुक्तिरूपिण्यै नमः
३ लास्यप्रियायै नमः
३ लयकर्यै नमः
३ लज्जायै नमः ७४०
३ रम्भादिवन्दितायै नमः

३ भवदावसुधावृष्ट्यै नमः
३ पापारण्यदवानलायै नमः
३ दौर्भाग्यतूलवातूलायै नमः
३ जराध्वान्तरविप्रभायै नमः
३ भाग्याब्धिचन्द्रिकायै नमः
३ भक्तचित्तकेकिघनाघनायै नमः
३ रोगपर्वतदम्भोलये नमः
३ मृत्युदारुकुठारिकायै नमः
३ महेश्वर्यै नमः ७५०
३ महाकाल्यै नमः
३ महाग्रासायै नमः
३ महाशनायै नमः
३ अपर्णायै नमः
३ चण्डिकायै नमः
३ चण्डमुण्डासुरनिषूदिन्यै नमः
३ क्षराक्षरात्मिकायै नमः
३ सर्वलोकेश्यै नमः
३ विश्वधारिण्यै नमः
३ त्रिवर्गदात्र्यै नमः ७६०
३ सुभगायै नमः
३ त्र्यम्बकायै नमः
३ त्रिगुणात्मिकायै नमः
३ स्वर्गापवर्गदायै नमः
३ शुद्धायै नमः
३ जपापुष्पनिभाकृतये नमः
३ ओजोवत्यै नमः
३ द्युतिधरायै नमः
३ यज्ञरूपायै नमः
३ प्रियव्रतायै नमः ७७०
३ दुराराध्यायै नमः

३ दुराधर्षायै नमः
३ पाटलीकुसुमप्रियायै नमः
३ महत्यै नमः
३ मेरुनिलयायै नमः
३ मन्दारकुसुमप्रियायै नमः
३ वीराराध्यायै नमः
३ विराड्रूपायै नमः
३ विरजसे नमः
३ विश्वतोमुख्यै नमः ७८०
३ प्रत्यग्रूपायै नमः
३ पराकाशायै नमः
३ प्राणदायै नमः
३ प्राणरूपिण्यै नमः
३ मार्तण्डभैरवाराध्यायै नमः
३ मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधुरे नमः
३ त्रिपुरेश्यै नमः
३ जयत्सेनायै नमः
३ निस्त्रैगुण्यायै नमः
३ परापरायै नमः ७९०
३ सत्यज्ञानानन्दरूपायै नमः
३ सामरस्यपरायणायै नमः
३ कपर्दिन्यै नमः
३ कलामालायै नमः
३ कामदुहे नमः
३ कामरूपिण्यै नमः
३ कलानिधये नमः
३ काव्यकलायै नमः
३ रसज्ञायै नमः
३ रसशेवधये नमः ८००
३ पुष्टायै नमः

३ पुरातनायै नमः
३ पूज्यायै नमः
३ पुष्करायै नमः
३ पुष्करेक्षणायै नमः
३ परस्मै ज्योतिषे नमः
३ परस्मै धाम्ने नमः
३ परमाणवे नमः
३ परात्परायै नमः
३ पाशहस्तायै नमः ८१०
३ पाशहन्त्र्यै नमः
३ परमन्त्रविभेदिन्यै नमः
३ मूर्तायै नमः
३ अमूर्तायै नमः
३ अनित्यतृप्तायै नमः
३ मुनिमानसहंसिकायै नमः
३ सत्यव्रतायै नमः
३ सत्यरूपायै नमः
३ सर्वान्तर्यामिन्यै नमः
३ सत्यै नमः ८२०
३ ब्रह्माण्यै नमः
३ ब्रह्मणे नमः
३ जनन्यै नमः
३ बहुरूपायै नमः
३ बुधार्चितायै नमः
३ प्रसवित्र्यै नमः
३ प्रचण्डायै नमः
३ आज्ञायै नमः
३ प्रतिष्ठायै नमः
३ प्रकटाकृतये नमः ८३०
३ प्राणेश्वर्यै नमः

३ प्राणदात्र्यै नमः
३ पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै नमः
३ विशृङ्खलायै नमः
३ विविक्तस्थायै नमः
३ वीरमात्रे नमः
३ वियत्प्रसुवे नमः
३ मुकुन्दायै नमः
३ मुक्तिनिलयायै नमः
३ मूलविग्रहरूपिण्यै नमः ८४०
३ भावज्ञायै नमः
३ भवरोगघ्न्यै नमः
३ भवचक्रप्रवर्तिन्यै नमः
३ छन्दःसारायै नमः
३ शास्त्रसारायै नमः
३ मन्त्रसारायै नमः
३ तलोदर्यै नमः
३ उदारकीर्तये नमः
३ उद्दामवैभवायै नमः
३ वर्णरूपिण्यै नमः ८५०
३ जन्ममृत्युजरातप्तजन-
विश्रान्तिदायिन्यै नमः
३ सर्वोपनिषदुद्घुष्टायै नमः
३ शान्त्यतीतकलात्मिकायै नमः
३ गम्भीरायै नमः
३ गगनान्तस्थायै नमः
३ गर्वितायै नमः
३ गानलोलुपायै नमः
३ कल्पनारहितायै नमः
३ काष्ठायै नमः
३ अकान्तायै नमः ८९०

३ कान्तार्धविग्रहायै नमः
३ कार्यकारणनिर्मुक्तायै नमः
३ कामकेलितरङ्गितायै नमः
३ कनत्कनकताटङ्कायै नमः
३ लीलाविग्रहधारिण्यै नमः
३ अजायै नमः
३ क्षयविनिर्मुक्तायै नमः
३ मुग्धायै नमः
३ क्षिप्रप्रसादिन्यै नमः
३ अन्तर्मुखसमाराध्यायै
नमः ८७०
३ बहिर्मुखसुदुर्लभायै नमः
३ त्रय्यै नमः
३ त्रिवर्गनिलयायै नमः
३ त्रिस्थायै नमः
३ त्रिपुरमालिन्यै नमः
३ निरामयायै नमः
३ निरालम्बायै नमः
३ स्वात्मारामायै नमः
३ सुधास्रुत्यै नमः
३ संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरण-
पण्डितायै नमः ८८०
३ यज्ञप्रियायै नमः
३ यज्ञकर्त्र्यै नमः
३ यजमानस्वरूपिण्यै नमः
३ धर्माधारायै नमः
३ धनाध्यक्षायै नमः
३ धनधान्यविवर्धिन्यै नमः
३ विप्रप्रियायै नमः
३ विप्ररूपायै नमः

३ विश्वभ्रमणकारिण्यै नमः
३ विश्वग्रासायै नमः ८९०
३ विद्रुमाभायै नमः
३ वैष्णव्यै नमः
३ विष्णुरूपिण्यै नमः
३ अयोन्यै नमः
३ योनिनिलयायै नमः
३ कूटस्थायै नमः
३ कुलरूपिण्यै नमः
३ वीरगोष्ठीप्रियायै नमः
३ वीरायै नमः
३ नैष्कर्म्यायै नमः ९००
३ नादरूपिण्यै नमः
३ विज्ञानकलनायै नमः
३ कल्यायै नमः
३ विदग्धायै नमः
३ बैन्दवासनायै नमः
३ तत्त्वाधिकायै नमः
३ तत्त्वमय्यै नमः
३ तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै नमः
३ सामगानप्रियायै नमः
३ सौम्यायै नमः ९१०
३ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नमः
३ सव्यापसव्यमार्गस्थायै नमः
३ सर्वापद्विनिवारिण्यै नमः
३ स्वस्थायै नमः
३ स्वभावमधुरायै नमः
३ धीरायै नमः
३ धीरसमर्चितायै नमः
३ चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै नमः

३ चैतन्यकुसुमप्रियायै नमः
३ सदोदितायै नमः ९२०
३ सदातुष्टायै नमः
३ तरुणादित्यपाटलायै नमः
३ दक्षिणादक्षिणाराध्यायै नमः
३ दरस्मेरमुखाम्बुजायै नमः
३ कौलिनीकेवलायै नमः
३ अनर्घ्यकैवल्यपददायिन्यै नमः
३ स्तोत्रप्रियायै नमः
३ स्तुतिमत्यै नमः
३ श्रुतिसंस्तुतवैभवायै नमः
३ मनस्विन्यै नमः ९३०
३ मानवत्यै नमः
३ महेश्यै नमः
३ मङ्गलाकृतये नमः
३ विश्वमात्रे नमः
३ जगद्धात्र्यै नमः
३ विशालाक्ष्यै नमः
३ विरागिण्यै नमः
३ प्रगल्भायै नमः
३ परमोदारायै नमः
३ परमोदायै नमः ९४०
३ मनोमय्यै नमः
३ व्योमकेश्यै नमः
३ विमानस्थायै नमः
३ वज्रिण्यै नमः
३ वामकेश्वर्यै नमः
३ पञ्चयज्ञप्रियायै नमः
३ पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिन्यै नमः
३ पञ्चम्यै नमः

३ पञ्चभूतेश्यै नमः
३ पञ्चसङ्ख्योपचारिण्यै नमः ९५०
३ शाश्वत्यै नमः
३ शाश्वतैश्वर्यायै नमः
३ शर्मदायै नमः
३ शम्भुमोहिन्यै नमः
३ धरायै नमः
३ धरसुतायै नमः
३ धन्यायै नमः
३ धर्मिण्यै नमः
३ धर्मवर्धिन्यै नमः
३ लोकातीतायै नमः ९६०
३ गुणातीतायै नमः
३ सर्वातीतायै नमः
३ शमात्मिकायै नमः
३ बन्धूककुसुमप्रख्यायै नमः
३ बालायै नमः
३ लीलाविनोदिन्यै नमः
३ सुमङ्गल्यै नमः
३ सुखकर्यै नमः
३ सुवेषाढ्यायै नमः
३ सुवासिन्यै नमः ९७०
३ सुवासिन्यर्चनप्रीतायै नमः
३ आशोभनायै नमः
३ शुद्धमानसायै नमः
३ बिन्दुतर्पणसन्तुष्टायै नमः
३ पूर्वजायै नमः
३ त्रिपुराम्बिकायै नमः
३ दशमुद्रासमाराध्यायै नमः
३ त्रिपुराश्रीवशङ्कर्यै नमः
३ ज्ञानमुद्रायै नमः
३ ज्ञानगम्यायै नमः ९८०
३ ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै नमः
३ योनिमुद्रायै नमः
३ त्रिखण्डेश्यै नमः
३ त्रिगुणायै नमः
३ अम्बायै नमः
३ त्रिकोणगायै नमः
३ अनघायै नमः
३ अद्भुतचारित्रायै नमः
३ वाञ्छितार्थप्रदायिन्यै नमः
३ अभ्यासातिशयज्ञातायै नमः ९९०
३ षडध्वातीतरूपिण्यै नमः
३ अव्याजकरुणामूर्तये नमः
३ अज्ञानध्वान्तदीपिकायै नमः
३ आबालगोपविदितायै नमः
३ सर्वानुल्लङ्घ्यशासनायै नमः
३ श्रीचक्रराजनिलयायै नमः
३ श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
३ श्रीशिवायै नमः
३ शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै नमः
३ श्रीललिताम्बिकायै– नमः १०००

पुनरपि पूर्ववत् न्यासध्यानादिकं कुर्यात्।

इति श्रीललितासहस्रनामावलिः सम्पूर्णा।

श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः

ऐं ह्रीं श्रीं

ऐं ह्रीं श्रीं रजताचलशृङ्गाग्रमध्यस्थायै नमः १
ऐं ह्रीं श्रीं हिमाचलमहांवशपावनायै नमः २
ऐं ह्रीं श्रीं शङ्करार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरायै नमः ३
ऐं ह्रीं श्रीं लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै नमः ४
ऐं ह्रीं श्रीं महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै नमः ५
ऐं ह्रीं श्रीं शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै नमः ६
ऐं ह्रीं श्रीं सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै नमः ७
ऐं ह्रीं श्रीं वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै नमः ८
ऐं ह्रीं श्रीं कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटिलायै नमः ९
ऐं ह्रीं श्रीं भस्मरेखाङ्कितलसन्मस्तकायै नमः १०
ऐं ह्रीं श्रीं विकचाम्भोरुहदललोचनायै नमः ११
ऐं ह्रीं श्रीं शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै नमः १२
ऐं ह्रीं श्रीं लसत्काञ्चनताटङ्कयुगलायै नमः १३
ऐं ह्रीं श्रीं मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै नमः १४
ऐं ह्रीं श्रीं ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै नमः १५
ऐं ह्रीं श्रीं सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै नमः १६
ऐं ह्रीं श्रीं कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै नमः १७
ऐं ह्रीं श्रीं स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै नमः १८
ऐं ह्रीं श्रीं गिरीशबद्धमाङ्गल्यमङ्गलायै नमः १९
ऐं ह्रीं श्रीं पद्मपाशाङ्कुशलसत्कराब्जायै नमः २०
ऐं ह्रीं श्रीं पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै नमः २१
ऐं ह्रीं श्रीं सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै नमः २२

ऐं ह्रीं श्रीं रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै नमः २३
ऐं ह्रीं श्रीं कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै नमः २४
ऐं ह्रीं श्रीं बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै नमः २५
ऐं ह्रीं श्रीं बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै नमः २६
ऐं ह्रीं श्रीं सौभाग्यजातशृङ्गारमध्यमायै नमः २७
ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै नमः २८
ऐं ह्रीं श्रीं पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै नमः २९
ऐं ह्रीं श्रीं सुपद्मरागसङ्काशचरणायै नमः ३०
ऐं ह्रीं श्रीं कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै नमः ३१
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै नमः ३२
ऐं ह्रीं श्रीं सचामररमावाणीवीजितायै नमः ३३
ऐं ह्रीं श्रीं भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै नमः ३४
ऐं ह्रीं श्रीं भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्ग्यै नमः ३५
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै नमः ३६
ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै नमः ३७
ऐं ह्रीं श्रीं शचीमुख्यामरवधूसेवितायै नमः ३८
ऐं ह्रीं श्रीं लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै नमः ३९
ऐं ह्रीं श्रीं अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै नमः ४०
ऐं ह्रीं श्रीं एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै नमः ४१
ऐं ह्रीं श्रीं सनकादिसमाराध्यपादुकायै नमः ४२
ऐं ह्रीं श्रीं देवर्षिभिः स्तूयमानवैभवायै नमः ४३
ऐं ह्रीं श्रीं कलशोद्भवदुर्वासःपूजितायै नमः ४४
ऐं ह्रीं श्रीं मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै नमः ४५
ऐं ह्रीं श्रीं चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्तिन्यै नमः ४६
ऐं ह्रीं श्रीं चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै नमः ४७

ऐं ह्लीं श्रीं शशाङ्कखण्डसम्भूतसुदेहायै नमः ४८
ऐं ह्लीं श्रीं मत्तहंसवधूमन्दगमनायै नमः ४९
ऐं ह्लीं श्रीं वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै नमः ५०
ऐं ह्लीं श्रीं अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै नमः ५१
ऐं ह्लीं श्रीं पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै नमः ५२
ऐं ह्लीं श्रीं अव्याजकरुणापूरपूरितायै नमः ५३
ऐं ह्लीं श्रीं नितान्तसच्चिदानन्दसंयुक्तायै नमः ५४
ऐं ह्लीं श्रीं सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै नमः ५५
ऐं ह्लीं श्रीं रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै नमः ५६
ऐं ह्लीं श्रीं हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै नमः ५७
ऐं ह्लीं श्रीं महापद्माटवीमध्यनिवासायै नमः ५८
ऐं ह्लीं श्रीं जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै नमः ५९
ऐं ह्लीं श्रीं महापापौघपापानां विनाशिन्यै नमः ६०
ऐं ह्लीं श्रीं दुष्टभीतिमहाभीतिभञ्जनायै नमः ६१
ऐं ह्लीं श्रीं समस्तदेवदनुजप्रेरिकायै नमः ६२
ऐं ह्लीं श्रीं समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै नमः ६३
ऐं ह्लीं श्रीं अनाहतमहापद्ममन्दिरायै नमः ६४
ऐं ह्लीं श्रीं सहस्रारसरोजातवासितायै नमः ६५
ऐं ह्लीं श्रीं पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै नमः ६६
ऐं ह्लीं श्रीं वाणीवरदगायत्रीसन्नुतायै नमः ६७
ऐं ह्लीं श्रीं रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै नमः ६८
ऐं ह्लीं श्रीं लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै नमः ६९
ऐं ह्लीं श्रीं सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै नमः ७०
ऐं ह्लीं श्रीं भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै नमः ७१
ऐं ह्लीं श्रीं सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै नमः ७२

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीलोचनकृतोल्लासफलदायै नमः ७३

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै नमः ७४

ऐं ह्रीं श्रीं दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै नमः ७५

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै नमः ७६

ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै नमः ७७

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै नमः ७८

ऐं ह्रीं श्रीं नामपारायणाभीष्टफलदायै नमः ७९

ऐं ह्रीं श्रीं सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै नमः ८०

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै नमः ८१

ऐं ह्रीं श्रीं अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै नमः ८२

ऐं ह्रीं श्रीं भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै नमः ८३

ऐं ह्रीं श्रीं मातृमण्डलसंयुक्तललितायै नमः ८४

ऐं ह्रीं श्रीं भण्डदैत्यमहासत्त्वनाशनायै नमः ८५

ऐं ह्रीं श्रीं क्रूरभण्डशिरश्छेदनिपुणायै नमः ८६

ऐं ह्रीं श्रीं धात्रच्युतसुराधीशसुखदायै नमः ८७

ऐं ह्रीं श्रीं चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै नमः ८८

ऐं ह्रीं श्रीं रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै नमः ८९

ऐं ह्रीं श्रीं महिषासुरदोवीर्यनिग्रहायै नमः ९०

ऐं ह्रीं श्रीं अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै नमः ९१

ऐं ह्रीं श्रीं महेशयुक्तनटनतत्परायै नमः ९२

ऐं ह्रीं श्रीं निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै नमः ९३

ऐं ह्रीं श्रीं वृषभध्वजविज्ञानभावनायै नमः ९४

ऐं ह्रीं श्रीं जन्ममृत्युजरारोगभञ्जनायै नमः ९५

ऐं ह्रीं श्रीं विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धिदायै नमः ९६

ऐं ह्रीं श्रीं कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै नमः ९७

ऐं ह्रीं श्रीं राजराजार्चितपदसरोजायै नमः ९८
ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै नमः ९९
ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधानायै नमः १००
ऐं ह्रीं श्रीं अशेषदुष्टदनुजसूदनायै नमः १०१
ऐं ह्रीं श्रीं साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै नमः १०२
ऐं ह्रीं श्रीं हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै नमः १०३
ऐं ह्रीं श्रीं दक्षप्रजापतिसुरवेषाढ्यायै नमः १०४
ऐं ह्रीं श्रीं सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै नमः १०५
ऐं ह्रीं श्रीं नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै नमः १०६
ऐं ह्रीं श्रीं महादेवसमायुक्तशरीरायै नमः १०७
ऐं ह्रीं श्रीं महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै नमः १०८

।। श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा।।

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य हयग्रीवऋषये नमः (शिरसि) अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीललिताम्बादेवतायै नमः (हृदये), ३ क० ५ बीजाय नमः (गुह्ये), ३ स० ४ शक्तये नमः (पादयोः) ३ ह० ६ कीलकाय नमः (नाभौ) श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धये पूजने विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)। कूटत्रयं द्विरावृत्त्या बालया वा षडङ्गद्वयम्।

अथ ध्यानम्

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे।। १।।

(लमिति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य-)

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

ऐं ह्रीं श्रीं

ऐं ह्रीं श्रीं ककाररूपायै नमः
३ कल्याण्यै नमः
३ कल्याणगुणशालिन्यै नमः
३ कल्याणशैलनिलयायै नमः
३ कमनीयायै नमः
३ कलावत्यै नमः
३ कमलाक्ष्यै नमः
३ कल्मषघ्न्यै नमः
३ करुणामृतसागरायै नमः
३ कदम्बकाननावासायै नमः १०
३ कदम्बकुसुमप्रियायै नमः
३ कन्दर्पविद्यायै नमः
३ कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणायै नमः
३ कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित-
ककुप्तटायै नमः
३ कलिदोषहरायै नमः
३ कञ्जलोचनायै नमः
३ कम्रविग्रहायै नमः
३ कर्मादिसाक्षिण्यै नमः
३ कारयित्र्यै नमः
३ कर्मफलप्रदायै नमः २०
३ एकाररूपायै नमः
३ एकाक्षर्यै नमः
३ एकानेकाक्षराकृत्यै नमः
३ एतत्तदित्यनिर्देश्यायै नमः
३ एकानन्दचिदाकृत्यै नमः
३ एवमित्यागमाबोध्यायै नमः
३ एकभक्तिमदर्चितायै नमः
३ एकाग्रचित्तनिर्ध्यातायै नमः
३ एषणारहितादृतायै नमः
३ एलासुगन्धिचिकुरायै नमः ३०
३ एनःकूटविनाशिन्यै नमः
३ एकभोगायै नमः
३ एकरसायै नमः
३ एकैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः
३ एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै नमः
३ एकान्तपूजितायै नमः
३ एधमानप्रभायै नमः
३ एजदनेकजगदीश्वर्यै नमः
३ एकवीरादिसंसेव्यायै नमः
३ एकप्राभवशालिन्यै नमः ४०
३ ईकाररूपायै नमः
३ ईशित्र्यै नमः
३ ईप्सितार्थप्रदायिन्यै नमः
३ ईदृगित्यविनिर्देश्यायै नमः
३ ईश्वरत्वविधायिन्यै नमः
३ ईशानादिब्रह्ममय्यै नमः
३ ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदायै नमः
३ ईक्षित्र्यै नमः
३ ईक्षणसृष्टाण्डकोट्यै नमः
३ ईश्वरवल्लभायै नमः
३ ईडितायै नमः ५०
३ ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै नमः
३ ईशाधिदेवतायै नमः

३ ईश्वरप्रेरणकर्यै नमः
३ ईशताण्डवसाक्षिण्यै नमः
३ ईश्वरोत्सङ्गनिलयायै नमः
३ ईतिबाधाविनाशिन्यै नमः
३ ईहाविरहितायै नमः
३ ईशशक्त्यै नमः
३ ईषत्स्मिताननायै नमः
३ लकाररूपायै नमः ६०
३ ललितायै नमः
३ लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै नमः
३ लाकिन्यै नमः
३ ललनारूपायै नमः
३ लसद्दाडिमपाटलायै नमः
३ ललन्तिकालसत्फालायै नमः
३ ललाटनयनार्चितायै नमः
३ लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्ग्यै नमः
३ लक्षकोट्यण्डनायिकायै नमः ७०
३ लक्ष्यार्थायै नमः
३ लक्षणागम्यायै नमः
३ लब्धकामायै नमः
३ लतातनवे नमः
३ ललामराजदलिकायै नमः
३ लम्बिमुक्तालताञ्चितायै नमः
३ लम्बोदरप्रसुवे नमः
३ लभ्यायै नमः
३ लज्जाढ्यायै नमः
३ लयवर्जितायै नमः ८०
३ ह्रीङ्काररूपायै नमः
३ ह्रीङ्कारनिलयायै नमः

३ ह्रीम्पदप्रियायै नमः
३ ह्रीङ्कारबीजायै नमः
३ ह्रीङ्कारमन्त्रायै नमः
३ ह्रीङ्कारलक्षणायै नमः
३ ह्रीङ्कारजपसुप्रीतायै नमः
३ ह्रीम्मत्यै नमः
३ ह्रींविभूषणायै नमः
३ ह्रींशीलायै नमः ९०
३ ह्रीम्पदाराध्यायै नमः
३ ह्रीङ्गर्भायै नमः
३ ह्रीम्पदाभिधायै नमः
३ ह्रीङ्कारवाच्यायै नमः
३ ह्रीङ्कारपूज्यायै नमः
३ ह्रीङ्कारपीठिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारवेद्यायै नमः
३ ह्रीङ्कारचिन्त्यायै नमः
३ ह्रींरूपायै नमः
३ ह्रींशरीरिण्यै नमः १००
३ हकाररूपायै नमः
३ हलधृक्पूजितायै नमः
३ हरिणेक्षणायै नमः
३ हरिप्रियायै नमः
३ हराराध्यायै नमः
३ हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै नमः
३ हयारूढासेविताङ्घ्र्यै नमः
३ हयमेधसमर्चितायै नमः
३ हर्यक्षवाहनायै नमः
३ हंसवाहनायै नमः ११०
३ हतदानवायै नमः

३ हत्यादिपापशमन्यै नमः
३ हरिदश्वादिसेवितायै नमः
३ हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै नमः
३ हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनायै नमः
३ हरिद्राकुङ्कुमादिग्धायै नमः
३ हर्यश्वाद्यमरार्चितायै नमः
३ हरिकेशसख्यै नमः
३ हादिविद्यायै नमः
३ हालामदालसायै नमः १२०
३ सकाररूपायै नमः
३ सर्वज्ञायै नमः
३ सर्वेश्यै नमः
३ सर्वमङ्गलायै नमः
३ सर्वकर्त्र्यै नमः
३ सर्वभर्त्र्यै नमः
३ सर्वहन्त्र्यै नमः
३ सनातन्यै नमः
३ सर्वानवद्यायै नमः
३ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः १३०
३ सर्वसाक्षिण्यै नमः
३ सर्वात्मिकायै नमः
३ सर्वसौख्यदात्र्यै नमः
३ सर्वविमोहिन्यै नमः
३ सर्वाधारायै नमः
३ सर्वगतायै नमः
३ सर्वावगुणवर्जितायै नमः
३ सर्वारुणायै नमः
३ सर्वमात्रे नमः
३ सर्वभूषणभूषितायै नमः १४०
३ ककारार्थायै नमः
३ कालहन्त्र्यै नमः
३ कामेश्यै नमः
३ कामितार्थदायै नमः
३ कामसञ्जीवन्यै नमः
३ कल्यायै नमः
३ कठिनस्तनमण्डलायै नमः
३ करभोरवे नमः
३ कलानाथमुख्यै नमः
३ कचजिताम्बुदायै नमः १५०
३ कटाक्षस्यन्दिकरुणायै नमः
३ कपालिप्राणनायिकायै नमः
३ कारुण्यविग्रहायै नमः
३ कान्तायै नमः
३ कान्तिधूतजपावल्यै नमः
३ कलालापायै नमः
३ कम्बुकण्ठ्यै नमः
३ करनिर्जितपल्लवायै नमः
३ कल्पवल्लीसमभुजायै नमः
३ कस्तूरीतिलकाञ्चितायै नमः १६०
३ हकारार्थायै नमः
३ हंसगत्यै नमः
३ हाटकाभरणोज्ज्वलायै नमः
३ हारहारिकुचाभोगायै नमः
३ हाकिन्यै नमः
३ हल्यवर्जितायै नमः
३ हरित्पतिसमाराध्यायै नमः
३ हठात्कारहतासुरायै नमः
३ हर्षप्रदायै नमः

३ हविर्भोक्त्र्यै नमः १७०
३ हार्दसन्तमसापहायै नमः
३ हल्लीसलास्यसन्तुष्टायै नमः
३ हंसमन्त्रार्थरूपिण्यै नमः
३ हानोपादाननिर्मुक्तायै नमः
३ हर्षिण्यै नमः
३ हरिसोदर्यै नमः
३ हाहाहूहूमुखस्तुत्यायै नमः
३ हानिवृद्धिविवर्जितायै नमः
३ हय्यङ्गवीनहृदयायै नमः
३ हरिगोपारुणांशुकायै नमः १८०
३ लकाराख्यायै नमः
३ लतापूज्यायै नमः
३ लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै नमः
३ लास्यदर्शनसन्तुष्टायै नमः
३ लाभालाभविवर्जितायै नमः
३ लङ्घ्येतराज्ञायै नमः
३ लावण्यशालिन्यै नमः
३ लघुसिद्धिदायै नमः
३ लाक्षारससवर्णाभायै नमः
३ लक्ष्मणाग्रजपूजितायै नमः १९०
३ लभ्येतरायै नमः
३ लब्धभक्तिसुलभायै नमः
३ लाङ्गलायुधायै नमः
३ लग्नचामरहस्तश्रीशारदा–
परिवीजितायै नमः
३ लज्जापदसमाराध्यायै नमः
३ लम्पटायै नमः
३ लकुलेश्वर्यै नमः

३ लब्धमानायै नमः
३ लब्धरसायै नमः
३ लब्धसम्पत्समुन्नत्यै २००
३ ह्रीङ्कारिण्यै नमः
३ ह्रीङ्काराद्यायै नमः
३ ह्रीम्मध्यायै नमः
३ ह्रींशिखामण्यै नमः
३ ह्रीङ्कारकुण्डाग्निशिखायै नमः
३ ह्रीङ्कारशशिचन्द्रिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारभास्कररुच्यै नमः
३ ह्रीङ्काराम्भोदचञ्चलायै नमः
३ ह्रीङ्कारकन्दाङ्कुरिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारैकपरायणायै नमः २१०
३ ह्रीङ्कारदीर्घिकाहंस्यै नमः
३ ह्रीङ्कारोद्यानकेकिन्यै नमः
३ ह्रीङ्कारारण्यहरिण्यै नमः
३ ह्रीङ्कारावालवल्ल्यै नमः
३ ह्रीङ्कारपञ्जरशुक्यै नमः
३ ह्रीङ्काराङ्गणदीपिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारकन्दरासिंह्यै नमः
३ ह्रीङ्काराम्भोजभृङ्गिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारसुमनोमाधव्यै नमः
३ ह्रीङ्कारतरुमञ्जर्यै नमः २२०
३ सकाराख्यायै नमः
३ समरसायै नमः
३ सकलागमसंस्तुतायै नमः
३ सर्ववेदान्ततात्पर्यभूम्यै नमः
३ सदसदाश्रयायै नमः
३ सकलायै नमः

३ सच्चिदानन्दायै नमः
३ साध्व्यै नमः
३ सद्गतिदायिन्यै नमः
३ सनकादिमुनिध्येयायै २३०
३ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नमः
३ सकलाधिष्ठानरूपायै नमः
३ सत्यरूपायै नमः
३ समाकृत्यै नमः
३ सर्वप्रपञ्चनिर्मात्र्यै नमः
३ समानाधिकवर्जितायै नमः
३ सर्वोत्तुङ्गायै नमः
३ सङ्गहीनायै नमः
३ सगुणायै नमः
३ सकलेष्टदायै नमः २४०
३ ककारिण्यै नमः
३ काव्यलोलायै नमः
३ कामेश्वरमनोहरायै नमः
३ कामेश्वरप्राणनाड्यै नमः
३ कामेशोत्सङ्गवासिन्यै नमः
३ कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै नमः
३ कामेश्वरसुखप्रदायै नमः
३ कामेश्वरप्रणयिन्यै नमः
३ कामेश्वरविलासिन्यै नमः
३ कामेश्वरतपस्सिद्ध्यै नमः २५०
३ कामेश्वरमनःप्रियायै नमः
३ कामेश्वरप्राणनाथायै नमः
३ कामेश्वरविमोहिन्यै नमः
३ कामेश्वरब्रह्मविद्यायै नमः
३ कामेश्वरगृहेश्वर्यै नमः

३ कामेश्वराह्लादकर्यै नमः
३ कामेश्वरमहेश्वर्यै नमः
३ कामेश्वर्यै नमः
३ कामकोटिनिलयायै नमः
३ काङ्क्षितार्थदायै नमः २६०
३ लकारिण्यै नमः
३ लब्धरूपायै नमः
३ लब्धधियै नमः
३ लब्धवाञ्छितायै नमः
३ लब्धपापमनोदूरायै नमः
३ लब्धाहङ्कारदुर्गमायै नमः
३ लब्धशक्त्यै नमः
३ लब्धदेहायै नमः
३ लब्धैश्वर्यसमुन्नत्यै नमः
३ लब्धवृद्ध्यै नमः २७०
३ लब्धलीलायै नमः
३ लब्धयौवनशालिन्यै नमः
३ लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्यायै नमः
३ लब्धविभ्रमायै नमः
३ लब्धरागायै नमः
३ लब्धपत्यै नमः
३ लब्धनानागमस्थित्यै नमः
३ लब्धभोगायै नमः
३ लब्धसुखायै नमः
३ लब्धहर्षाभिपूरितायै नमः २८०
३ ह्रीङ्कारमूर्त्यै नमः
३ ह्रीङ्कारसौधशृङ्गकपोतिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारदुग्धाब्धिसुधायै नमः
३ ह्रीङ्कारकमलेन्दिरायै नमः

३ ह्रीङ्कारमणिदीपार्चिषे नमः
३ ह्रीङ्कारतरुशारिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारपेटकमणये नमः
३ ह्रीङ्कारदर्शबिम्बितायै नमः
३ ह्रीङ्कारकोशासिलतायै नमः
३ ह्रीङ्कारस्थाननर्तक्यै नमः २९०
३ ह्रीङ्कारशुक्तिकामुक्तामणये नमः
३ ह्रीङ्कारबोधितायै नमः
३ ह्रीङ्कारमयसौवर्णस्तम्भ-विद्रुमपुत्रिकायै नमः
३ ह्रीङ्कारवेदोपनिषदे नमः
३ ह्रीङ्काराध्वरदक्षिणायै नमः
३ ह्रीङ्कारनन्दनारामनवकल्पकवल्लर्यै नमः
३ ह्रीङ्कारहिमवद्गङ्गायै नमः
३ ह्रीङ्कारार्णवकौस्तुभायै नमः
३ ह्रीङ्कारमन्त्रसर्वस्वायै नमः
३ ह्रीङ्कारपरसौख्यदायै नमः ३००

पूनरपि पूर्ववत् न्यासध्यानादिकं कुर्यात्।

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य हयग्रीवऋषये नमः (शिरसि) अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीललिताम्बादेवतायै नमः (हृदये), ३ क०५ बीजाय नमः (गुह्ये), ३ स० ४ शक्तये नमः (पादयोः) ३ ह० ६ कीलकाय नमः (नाभौ) श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धये पूजने विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)। कूटत्रयं द्विरावृत्त्या बालया वा षडङ्गद्वयम्।

अथ ध्यानम्

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे॥ १॥

(लमिति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य-)

ऐं, ह्रीं, श्रीं, श्रीमद्राजराजेश्वर्यै नमः

षोडशानन्दश्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे
श्रीललिताम्बात्रिशतनामावलिः सम्पूर्णा।

अथ महायागक्रमः

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

भावनोपनिषत् प्रयोगविधिसमेता

(आत्मानमखण्डमण्डलाकारमावृत्य सकलब्रह्माण्डमण्डलं स्वप्रकाशं ध्यायेत्)

१. श्रीगुरुस्सर्वकारणभूता शक्तिः।।

२. तेन नवरन्ध्ररूपो देहः।।

३. नवचक्ररूपं श्रीचक्रम्।।

४. वाराहीपितृरूपा कुरुकुल्ला बलिदेवता माता।।

५. पुरुषार्थास्सागराः।।

६. देहो नवरत्नद्वीपः।।

७. त्वगादिसप्तधातुरोमसंयुक्तः।।

८. सङ्कल्पाः कल्पतरवः तेजः कल्पकोद्यानम्।।

९. रसनया भाव्यमाना मधुराम्लतिक्तकटुकषायलवणरसाः षड्तवः।।

१०. ज्ञानमर्घ्यं ज्ञेयं हविः ज्ञाता होता ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामभेदभावनं श्रीचक्रपूजनम्।।

११. नियतिशृङ्गारादयो रसा अणिमादिसिद्धयः। कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्य-पुण्यपापमय्यो ब्राह्म्याद्यष्टशक्तयः।।

१२. आधारनवकं मुद्राशक्तयः।।

१३. पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानि मनोविकारः कामाकर्षिण्यादिषोडश शक्तयः।।

१४. वचनादानगमनविसर्गानन्दहानोपादानोपेक्षाख्यबुद्धयोऽनङ्गकुसुमाद्यष्टौ।।

१५. अलम्बुसा कुहूर्विश्वोदरा वारुणी हस्तिजिह्वा यशोवती पयस्विनी गान्धारी पूषा शङ्खिनी सरस्वती इडा पिङ्गला सुषुम्ना चेति चतुर्दश नाड्यः सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तयः।।

१६. प्राणापानव्यानोदानसमाननागकूर्मकृकरदेवदत्तधनञ्जया दशवायवस्सर्व-सिद्धिप्रदादिबहिर्दशारदेवताः।।

१७. एतद्वायुसंसर्गकोपाधिभेदेन रेचकः पाचकश्शोषको दाहकः प्लावक इति प्राणमुख्यत्वेन पञ्चधा जठराग्निर्भवति।।

१८. क्षारक उद्गारकः क्षोभको जृम्भको मोहक इति नागप्राधान्येन पञ्चविधास्ते मनुष्याणां देहगाः भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकपञ्चविधमन्नं पाचयन्ति।।

१९. एता दश वह्निकलास्सर्वज्ञाद्या अन्तर्दशारगा देवताः।।

२०. शीतोष्णसुखदुःखेच्छास्सत्वरजस्तमोगुणाःवशिन्यादिशक्तयोऽष्टौ।।

२१. शब्दादितन्मात्राः पञ्चपुष्पबाणाः।।

२२. मन इक्षुधनुः।।

२३. रागः पाशः।।

२४. द्वेषोऽङ्कुशः।।

२५. अव्यक्तमहदहङ्काराः कामेश्वरीवज्रेश्वरीभगमालिन्योऽन्तस्त्रिकोणगा देवताः।।

२६. निरुपाधिकी संविदेव कामेश्वरः।।

२७. सदानन्दपूर्णा स्वात्मैव परदेवता ललिता।।

२८. लौहित्यमेतस्य सर्वस्य विमर्शः।।

२९. अनन्यचित्तत्वेन च सिद्धिः।।

३०. भावनायाः क्रिया उपचाराः।।

३१. अहं त्वमस्ति नास्ति कर्तव्यमकर्तव्यमुपासितव्यमित्यादि विकल्पानाम् आत्मनि विलापनं होमः।।

३२. भावनाविषयाणामभेदभावना तर्पणम्।।

३३. पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्य परिणामावलोकनम् पञ्चदश नित्याः।।

३४. एवं मुहुर्त्तत्रितयं मुहूर्त्तद्वितयं मुहूर्त्तमात्रं वा भावनापरो जीवन्मुक्तो भवति स एव शिवयोगीति गद्यते।।

३५. कादिमतेनान्तश्चक्रभावनाः प्रतिपादिताः।।

३६. य एवं वेद सोऽथर्वशिरोऽधीते।।

इति भावनोपनिषत्।

प्रयोंगविधिः

अथ भावनोपनिषदा मुक्त्यै या भावनाः कथिताः।
भास्कररायो रचयति तासामेवं प्रयोगविधिम्।।

मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यासत्रयं कृत्वा।
विवेकवृत्त्यवच्छिन्नचिच्छक्तिरूपसुषुम्नात्मने श्रीगुरवे नमः।।

(इति ब्रह्मरन्ध्रं स्पृष्ट्वा)

दक्षश्रोत्ररूपपयस्विन्यात्मने प्रकाशानन्दनाथाय नमः।

वामश्रोत्ररूपशङ्खिन्यात्मने विमर्शानन्दनाथाय नमः।

जिह्वारूपसरस्वत्यात्मने आनन्दानन्दनाथाय नमः।

दक्षनेत्ररूपपूषात्मने ज्ञानानन्दनाथाय नमः।

वामनेत्ररूपगान्धार्यात्मने सत्यानन्दनाथाय नमः।

ध्वजरूपकुह्वात्मने पूर्णानन्दनाथाय नमः।

दक्षनासारूपपिङ्गलात्मने स्वाभावानन्दनाथाय नमः।

वामानासारूपेडात्मने प्रतिभानन्दनाथाय नमः।

पायुरूपालम्बुसात्मने सहजानन्दनाथाय नमः।

(इति तत्तत्स्थानानि संस्पृश्य)

नवचक्ररूपश्रीचक्रात्मने देहाय नमः।

पितृरूपास्थ्याद्यवयवात्मने वाराह्यै नमः

मातृरूपमांसाद्यवयवात्मने बलिदेवतायै कुरुकुल्लायै नमः।

(इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा)

देहपश्चाद्भागरूपधर्मात्मने इक्षुसागराय नमः

देहदक्षिणभागरूपार्थात्मने सुरासागराय नमः

देहप्राग्भागरूपकामात्मने घृतसागराय नमः

देहोदग्भागरूपमोक्षात्मने क्षीरसागराय नमः

देहात्मने नवरत्नद्वीपाय नमः (इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा)

१. मांसात्मने पुष्परागरत्नद्वीपाय नमः
२. रोमात्मने नीलरत्नद्वीपाय नमः
३. त्वगात्मने वैडूर्यरत्नद्वीपाय नमः
४. रुधिरात्मने विद्रुमरत्नद्वीपाय नमः
५. शुक्रात्मने मौक्तिकरत्नद्वीपाय नमः
६. मज्जात्मने मरकतरत्नद्वीपाय नमः
७. अस्थ्यात्मने वज्ररत्नद्वीपाय नमः
८. मेदात्मने गोमेदकरत्नद्वीपाय नमः
९. ओज आत्मने पद्मरागरत्नद्वीपाय नमः

१.मांसाधिदेवतायै कालचक्रेश्वर्यै नमः २.रोमाधिदेवतायै रुद्रचक्रेश्वर्यै नमः
३.त्वगधिदेवतायै मातृचक्रेश्वर्यै नमः ४.रुधिराधिदेवतायै रत्नचक्रेश्वर्यै नमः
५.शुक्राधिदेवतायै दशाचक्रेश्वर्यै नमः ६.मज्जाधिदेवतायै गुरुचक्रेश्वर्यै नमः
७.अस्थ्यधिदेवतायै तत्त्वचक्रेश्वर्यै नमः ८.मेदोऽधिदेवतायै ग्रहचक्रेश्वर्यै नमः
९. ओजोऽधिदेवतायै मूर्तिचक्रेश्वर्यै नमः।

सङ्कल्पात्मभ्यः कल्पतरुभ्यो नमः। तेज आत्मने कल्पकोद्यानाय नमः।
मधुररसात्मने वसन्तर्तवे नमः। अम्लरसात्मने ग्रीष्मर्तवे नमः।
तिक्तरसात्मने वर्षर्तवे नमः। कटुरसात्मने शरदृतवे नमः।
कषायरसात्मने हेमन्तर्तवे नमः। लवणरसात्मने शिशिरर्तवे नमः।
इन्द्रियात्मभ्योऽश्वेभ्यो नमः। इन्द्रियार्थात्मभ्यो गजेभ्यो नमः।
करुणात्मिकायै तोयपरिखायै नमः। ओजःपुञ्जात्मने माणिक्यमण्डपाय नमः।
ज्ञानात्मने विशेषार्घ्याय नमः। ज्ञेयात्मने हविषे नमः।
ज्ञात्रात्मने होत्रे नमः। चिदात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

(इति तत्तदनुसन्धानपूर्वकं मनसा नत्वा ज्ञातृज्ञानज्ञेयानां नामरूपविलापनानुसन्धानेन चिन्मात्ररूपताविभावनेन क्षणं विश्रम्य)

पञ्चदशनित्यायजनम्

पञ्चदश नित्या यजेत्। हृदि हस्तं निधाय

(१.त्रिपुरा २.त्रिपुरेशी ३. त्रिपुरसुन्दरी ४.त्रिपुरवासिनी ५. त्रिपुराश्रीः ६. त्रिपुरमालिनी ७. त्रिपुरासिद्धा ८. त्रिपुराम्बा ९. महात्रिपुरसुन्दरी, इति मतान्तरे चक्रेश्वरीनवकमाम्नातम्)

चत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
प्रतिपत्तिथिरूपकामेश्वरीनित्यायै नमः।

तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
द्वितीयातिथिरूपभगमालिनीनित्यायै नमः।

तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
तृतीयातिथिरूपनित्यक्लिन्नानित्यायै नमः।

तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
चतुर्थीतिथिरूपभेरुण्डानित्यायै नमः।

तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
पञ्चमीतिथिरूपवह्निवासिनीनित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
षष्ठीतिथिरूपमहावज्रेश्वरीनित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
सप्तमीतिथिरूपशिवदूतीनित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
अष्टमीतिथिरूपत्वरितानित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
नवमीतिथिरूपकुलसुन्दरीनित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
दशमीतिथिरूपनित्यानित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
एकादशीतिथिरूपनीलपताकानित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
द्वादशीतिथिरूपविजयानित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
त्रयोदशीतिथिरूपसर्वमङ्गलानित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
चतुर्दशीतिथिरूपज्वालामालिनीनित्यायै नमः।
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
पौर्णमासीतिथिरूपचित्रानित्यायै नमः।

(नित्यामन्त्रानपि तत्तदादौ केचित्पठन्ति इयं नित्याभावना सर्वान्त एव वा कार्या)

चतुस्राद्यरेखायै नमः इति वक्ष्यमाणस्थानेषु व्यापकं न्यस्य।
दक्षांसपृष्ठरूपशान्तरसात्मने अणिमासिद्ध्यै नमः
दक्षपाण्यङ्गुल्यग्ररूपाद्भुतरसात्मने लघिमासिद्ध्यै नमः।

दक्षस्फिग्रूपकरुणरसात्मने महिमासिद्ध्यै नमः।

दक्षपादाङ्गुल्यग्ररूपवीररसात्मने ईशित्वसिद्ध्यै नमः।
वामपादाङ्गुल्यग्ररूपहास्यरसात्मने वशित्वसिद्ध्यै नमः।
वामस्फिग्रूपबीभत्सरसात्मने प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः।
वामपाण्यङ्गुल्यग्ररूपरौद्ररसात्मने भुक्तिसिद्ध्यै नमः।
वामांसपृष्ठरूपभयानकरसात्मने इच्छासिद्ध्यै नमः।
चूलीमूलरूपशृङ्गाररसात्मने प्राप्तिसिद्ध्यै नमः। (कर्णमूले)
चूलीपृष्ठरूपनित्यात्मने सर्वकामसिद्ध्यै नमः।
चतुरस्रमध्यरेखायै नमः इति (तदन्तर्व्यापकं न्यस्य)
पादाङ्गुष्ठद्वयरूपकामात्मने ब्राह्म्यै नमः।
दक्षपार्श्वरूपक्रोधात्मने माहेश्वर्यै नमः।
मूर्धरूपलोभात्मने कौमार्यै नमः।
वामपार्श्वरूपमोहात्मने वैष्णव्यै नमः।
वामजानुरूपमदात्मने वाराह्यै नमः।
दक्षजानुरूपमात्सर्यात्मने इन्द्राण्यै नमः।
दक्षबहिरंसरूपपुण्यात्मने चामुण्डायै नमः।
वामबहिरंसरूपपापात्मने महालक्ष्म्यै नमः।
चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः। (इतितदन्तर्व्यापकं न्यस्य) पादाङ्गुष्ठद्वयरूपाधः
सहस्रदलकमलात्मने सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः।
दक्षपार्श्वरूपमूलाधारात्मने सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै नमः।
मूर्धरूपस्वाधिष्ठानात्मने सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै नमः।
वामपार्श्वरूपमणिपूरात्मने सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै नमः।
वामजानुरूपानाहतात्मने सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै नमः।
दक्षजानुरूपविशुद्ध्यात्मने सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै नमः।
दक्षोरुरूपेन्द्रयोन्यात्मने सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै नमः।
वामोरुरूपाज्ञात्मने सर्वबीजमुद्राशक्त्यै नमः।
द्वादशान्तरूपोर्ध्वसहस्रदलकमलात्मने सर्वयोनिमुद्रायै नमः।
पादाङ्गुष्ठरूपाधारनवकात्मने सर्वत्रिखण्डामुद्रायै नमः।

हृद्रूपत्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः इति तत्तत्स्थानानि स्पृष्ट्वा एतास्सर्वास्वात्माभिन्नत्वेन विभाव्य आत्मनः अपरिच्छिन्नत्वं भावयेत्।

प्रकटयोगिनीरूपस्वात्मने अणिमासिद्ध्यै नमः।।

अपरिच्छिन्नस्वात्मने सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः।।

इति प्रयोगपूर्वकं वा विभावयेत्।।

षोडशदलपद्माय नमः इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य

दक्षश्रोत्रपृष्ठरूपपृथिव्यात्मने कामाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षांसरूपवार्यात्मने बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षकूर्पररूपतेज आत्मने अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षकरपृष्ठरूपवाय्वात्मने शब्दाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षोरुरूपाकाशात्मने स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षजानुरूपश्रोत्रात्मने रूपाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षगुल्फरूपत्वगात्मने रसाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

दक्षपादतलरूपचक्षुरात्मने गन्धाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामपादतलरूपजिह्वात्मने चित्ताकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामगुल्फरूपघ्राणात्मने धैर्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामजानुरूपवागात्मने स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामोरुरूपपाण्यात्मने नामाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामकरपृष्ठरूपपादात्मने बीजाकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामकूर्पररूपपाय्वात्मने आत्माकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामांसरूपोपस्थात्मने अमृताकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

वामश्रोत्रपृष्ठरूपविकृतमनआत्मने शरीराकर्षिणीनित्याकलायै नमः।

हृद्रूपसर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्वर्यै नमः।।

गुप्तयोगिनीरूपस्वात्मने लघिमासिद्ध्यै नमः।।

अपरिच्छन्नरूपस्वात्मने सर्वविद्राविणीमुद्रायै नमः।

अष्टदलपद्माय नमः इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य,

दक्षशङ्खरूपवचनात्मने अनङ्गकुसुमायै नमः। (कपालास्थि)

दक्षजत्रुरूपादानात्मने अनङ्गमेखलायै नमः। (स्कन्धसन्धि)

दक्षोरुरूपगमनात्मने अनङ्गमदनायै नमः।
दक्षगुल्फरूपविसर्गात्मने अनङ्गमदनातुरायै नमः।
वामगुल्फरूपानन्दात्मने अनङ्गरेखायै नमः।
वामोरुरूपहानाख्यबुद्ध्यात्मने अनङ्गवेगायै नमः।
वामजत्रुरूपोपादानाख्यबुद्ध्यात्मने अनङ्गाङ्कुशायै नमः।
वामशङ्खरूपोपेक्षाख्यबुद्ध्यात्मने अनङ्गमालिन्यै नमः।
हृद्रूपसर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
गुप्ततरयोगिनीरूपस्वात्मात्मने महिमासिद्ध्यै नमः
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः।
चतुर्दशारचक्राय नमः (इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य)
ललाटमध्यभागरूपालम्बुसात्मने सर्वसंक्षोभिणीशक्त्यै नमः।
ललाटदक्षभागरूपकुह्वात्मने सर्वविद्राविणीशक्त्यै नमः।
दक्षांसरूपवारुण्यात्मने सर्वाह्लादिनीशक्त्यै नमः।
दक्षपार्श्वरूपहस्तिजिह्वात्मने सर्वसंमोहिनीशक्त्यै नमः।
दक्षोरुरूपयशोवत्यात्मने सर्वस्तम्भिनीशक्त्यै नमः।
दक्षजङ्घारूपपयस्विन्यात्मने सर्वजृम्भिणीशक्त्यै नमः।
वामजङ्घारूपगान्धार्यात्मने सर्ववशङ्करीशक्त्यै नमः।
वामोरुरूपपूषात्मने सर्वरञ्जिनीशक्त्यै नमः।
वामपार्श्वरूपशङ्खिन्यात्मने सर्वोन्मादिनीशक्त्यै नमः।
वामांसरूपसरस्वत्यात्मने सर्वार्थसाधिनीशक्त्यै नमः।
वामगण्डरूपेडात्मने सर्वसंपत्तिपूरणीशक्त्यै नमः।
ललाटवामभागरूपिङ्गलात्मने सर्वमन्त्रमयीशक्त्यै नमः।
ललाटपृष्ठभागरूपसुषुम्नात्मने सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्त्यै नमः।
हृद्रूपसर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः।
सम्प्रदाययोगिनीरूपस्वात्मात्मने ईशित्वसिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्ववशङ्करीमुद्रायै नमः।
बहिर्दशारचक्राय नमः इति व्यापकं न्यस्य।

दक्षाक्षिरूपप्राणात्मने सर्वसिद्धिप्रदादेव्यै नमः।

नासामूलरूपापानात्मने सर्वसम्पत्प्रदादेव्यै नमः।
वामनेत्ररूपव्यानात्मने सर्वप्रियङ्करीदेव्यै नमः।
कुक्षीशकोणरूपोदानात्मने सर्वमङ्गलकारिणीदेव्यै नमः।
कुक्षिवायुकोणरूपसमानात्मने सर्वकामप्रदादेव्यै नमः।
वामजानुरूपनागात्मने सर्वदुःखविमोचिनीदेव्यै नमः।
गुदरूपकूर्मात्मने सर्वमृत्युप्रशमनीदेव्यै नमः।
दक्षजानुरूपकृकरात्मने सर्वविघ्नविनाशिनीदेव्यै नमः।
कुक्षिनिर्ऋतिकोणरूपदेवदत्तात्मने सर्वाङ्गसुन्दरीदेव्यै नमः।
कुक्षिवह्निकोणरूपधनञ्जयात्मने सर्वसौभाग्यदायिनीदेव्यै नमः।
हृद्रूपसर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः।
कुलकौलयोगिनीरूपस्वात्मात्मने वशित्वसिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छिन्नस्वात्मात्मने सर्वोन्मादिनीमुद्रायै नमः।
अन्तर्दशारचक्राय नमः इति (तदन्तर्व्यापकं न्यस्य)।
दक्षनासारूपरेचकाग्न्यात्मने सर्वज्ञादेव्यै नमः।
दक्षसृक्किणीरूपपाचकाग्न्यात्मने सर्वशक्तिदेव्यै नमः। (ओष्ठप्रान्ते)
दक्षस्तनरूपशोषकाग्न्यात्मने सर्वैश्वर्यप्रदादेव्यै नमः।
दक्षवृषणरूपदाहकाग्न्यात्मने सर्वज्ञानमयीदेव्यै नमः।
सीविनीरूपप्लावकाग्न्यात्मने सर्वव्याधिविनाशिनीदेव्यै नमः।
वामवृषणरूपक्षारकाग्न्यात्मने सर्वाधारस्वरूपादेव्यै नमः।
वामस्तनरूपोद्गारकाग्न्यात्मने सर्वपापहरादेव्यै नमः।
वामसृक्किणीरूपक्षोभकाग्न्यात्मने सर्वानन्दमयीदेव्यै नमः।
वामनासारूपजृम्भकाग्न्यात्मने सर्वरक्षास्वरूपिणीदेव्यै नमः।
नासाग्ररूपमोहकाग्न्यात्मने सर्वेप्सितफलप्रदादेव्यै नमः।
हृद्रूपसर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः।
निगर्भयोगिनीरूपस्वात्मात्मने प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वमहाङ्कुशामुद्रायै नमः।
अष्टकोणचक्राय नमः (इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य)।

चिबुकदक्षभागरूपशीतात्मने वशिनीवाग्देवतायै नमः।

कण्ठदक्षभागरूपोष्णात्मने कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः।
हृदयदक्षभागरूपसुखात्मने मोदिनीवाग्देवतायै नमः।
नाभिदक्षभागरूपदुःखात्मने विमलावाग्देवतायै नमः।
नाभिवामभागरूपेच्छात्मने अरुणावाग्देवतायै नमः।
हृदयवामभागरूपसत्त्वगुणात्मने जयिनीवाग्देवतायै नमः।
कण्ठवामभागरूपरजोगुणात्मने सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः।
चिबुकवामभागरूपतमोगुणात्मने कौलिनीवाग्देवतायै नमः।
हृद्रूपसर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः।
रहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने भुक्तिसिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वखेचरीमुद्रायै नमः।
हृदयत्रिकोणाधोभागरूपपञ्चतन्मात्रात्मकेभ्यः सर्वजृम्भणबाणेभ्यो नमः।
तद्दक्षभागरूपमनआत्मकाभ्यां सर्वसंमोहनधनुर्भ्यां नमः।
तदूर्ध्वभागरूपरागात्मकाभ्यां सर्ववशङ्करपाशाभ्यां नमः।
तद्वामभागरूपद्वेषात्मकाभ्यां सर्वस्तम्भकराङ्कुशाभ्यां नमः।
त्रिकोणचक्राय नमः इति व्यापकं न्यस्य,
हृदयत्रिकोणाग्रभागरूपमहत्तत्त्वात्मने कामेश्वर्यै देव्यै नमः।
तद्दक्षकोणरूपाहङ्कारात्मने वज्रेश्वर्यै देव्यै नमः।
तद्वामकोणरूपाव्यक्तात्मने भगमालिनीदेव्यै नमः।
हृद्रूपसर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः।
अतिरहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने इच्छासिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छिन्नस्वस्वात्मात्मने सर्वबीजामुद्रायै नमः।
बिन्दुचक्राय नमः इति (व्यापकं न्यस्य),
हृन्मध्यरूपनिरूपाधिकसंविन्मात्ररूपकामेश्वराङ्कनिलयायै सच्चिदानन्दैक-ब्रह्मात्मिकायै परदेवतायै ललितायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
निरुपाधिकचैतन्यमेव सच्चिदानन्दात्मकमन्तःकरणप्रतिबिम्बितसत्तदहमेवे-त्यनुसन्धानं ललिताया लौहित्यमिति विभाव्य।
अभेदसम्बन्धेन सत्त्वचित्त्वादिविशिष्टसंविदः केवलसंविदश्च तादात्म्य-सम्बन्धरूपं कामेश्वराङ्कयन्त्रणं विशेषणं विभाव्य।

उपाध्यभावरूपशुक्लत्वोपलक्षिता सती शुद्धसंविदेव शुक्लचरणः।
चित्त्वविशिष्टसंवित्प्राथमिकपराहन्तात्मकमृत्युरूपेण
रागेणोपलक्षितासती रक्तचरणः।
अहमाकारवृत्तिनिरूपिता विषयता चरणयोर्मिथो-
विशेष्यविशेषभावरूपैव तदुभयसामरस्यमिति विभाव्य।
हृद्रूपसर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
परापररहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने प्राप्तिसिद्ध्यै नमः।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वयोनिमुद्रायै नमः।
(इति तत्तत्स्थानस्पर्शपूर्वकं सम्यगनुसन्धायोपचारान् समर्पयेत्।)

उपचारसमर्पणम्

तद्यथा एवमपरिच्छन्नतया भाविताया ललितायाः स्वे महिम्न्येव प्रतिष्ठितमानसमनुसन्दधामि।
वियदादिस्थूलप्रपञ्चरूपपादगतनामरूपात्मकमलस्य सच्चिदानन्दैकरूपत्वभावनाजलेन क्षालनं पाद्यं भावयामि।
सूक्ष्मप्रपञ्चरूपहस्तगतस्य तस्य क्षालनमर्घ्यं चिन्तयामि।
भावनारूपाणामपामपि कवलीकाररूपमाचमनं भावयामि।
सत्त्वचित्त्वानन्दत्वाद्यखिलावयवावच्छेदेन भावनाजलसम्पर्करूपं स्नानमनुचिन्तयामि।
तेष्वेवावयवेषु प्रसक्ताया भावनामात्मकवृत्तिविशेष्यतायाः प्रोञ्छनं वृत्त्यविषयत्वभावनेन वस्त्रं कल्पयामि।
निर्विषयत्वनिरञ्जनत्वाशोकत्वामृतत्वाद्यनेकधर्मरूप्याभरणानि धर्म्यभेदभावभावनेन समर्पयामि।
स्वशरीरघटकपार्थिवभागानां जडतापनयेन चिन्मात्रतावशषेरूपं गन्धं प्रयच्छामि।
आकाशभागानां तथा भावनेन पुष्पाणि समर्पयामि।
वायव्यभागानान्तथाभावनया धूपयामि।
तैजसभागानान्तथाकरणेनोद्दीपयामि।

अमृतभागास्तथा विभाव्य निवेदयामि।

षोडशान्तेन्दुमण्डलस्य तथा भावनेन ताम्बूलकल्पमाचरामि।

परापश्यन्त्यादिनिखिलशब्दानां नादद्वारा ब्रह्मण्युपसंहारचिन्तनेन स्तवीमि।

विषयेषु धावमानानां चित्तवृत्तीनां विषयजडतानिरासेन ब्रह्मणि प्रविलापनेन प्रदक्षिणीकरोमि।

तासां विषयेभ्यः परावर्तनेन ब्रह्मैकप्रवणतया प्रणमामि।।

इत्युपचर्य जुहुयात्।

विहिताविहितविषयावृत्तयः उत्पन्नाः अहं त्वं गुरुर्देवतेत्यादयः तास्सर्वाश्चक्रराजस्थानन्तशक्तिकदम्बरूपास्तत्तत्सूक्ष्मरूपा ये ये संस्कारास्तत्सर्वं चिन्मात्रमेवेति विभावनया निर्व्युत्थानं स्वात्मनि जुहोमि।

प्रकृतभावनासु ये गुरुचरणादिशक्तिकदम्बान्ता विषयास्ते सर्वेऽपि चिन्मात्ररूपा न परस्परं भिद्यन्ते इति भावनया तर्पयामि।

तिथिचक्रमुक्तरूपं कालचक्रं देशचक्रं च सर्वमस्ति भाति प्रियं च न तु नामरूपवदतस्सर्वं ब्रह्मैवेति विभावयामि।

अथवा पूर्वलिखितां नित्याभावनामिहैव श्वासप्रविलापनफलिकां कुर्यात्, तेन मनः पवनात्मनामैक्यनिभालनेन त्रीन्मुहुर्तान् द्वावेकं वा मुहूर्तमविच्छिन्नं व्यापयेत्।

तस्य देवतात्मैक्यसिद्धिः चिन्तितकार्याण्यत्नेन सिद्ध्यन्ति।।

ततोऽवतीर्य प्राणायामत्रयमृष्यादिन्यासत्रयञ्च कृत्वा गुरुं स्तुवीतेति सर्वं शिवम्।

अथर्वशिरसि प्रोक्तभावनानां सतां मुदे।
इति भास्कररायेण प्रयोगविधिरीरितः।।

इति भावनोषनिषद् प्रयोगविधिः सम्पूर्णः

श्रीषोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे

भावनोपनिषद् सम्पूर्णा।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीहृदयम्

वन्दे सिन्दूरवर्णाभं वामोरुन्यस्तवल्लभम्।
इक्षुवारिधिमध्यस्थमिभराजमुखं महः।। १।।
गम्भीरलहरीजालगण्डूषितदिगन्तरः।
अव्यान्मामममृताम्भोधिरनर्घमणिसंयुतः।। २।।
मध्ये तस्य मनोहारि मधुपारवमेदुरम्।
प्रसूनविगलन्माध्वीप्रवाहपरिपूरितम्।। ३।।
किन्नरीगानमेदस्वि क्रीडाकन्दरदन्तुरम्।
काञ्चनद्रुमधूलीभिः कल्पितावालवद्द्रुमम्।। ४।।
मुग्धकोकिलनिक्वाणमुखरीकृतदिङ्मुखम्।
मन्दारतरुसन्तानमञ्जरीपुञ्जपिञ्जरम्।। ५।।
नासानाडिन्धमस्मेरनमेरुसुमसौरभम्।
आवृन्तहसिताम्भोजदीव्यद्द्विभ्रमदीर्घिकम्।। ६।।
मन्दरक्तशुकीदष्टमातुलुङ्गफलान्वितम्।
सविधस्यन्दमानाभ्रसरित्कल्लोलवेल्लितम्।। ७।।
प्रसूनपांसुसौरभ्यपश्यतोहरमारुतम्।
वकुलप्रसवाकीर्णं वन्दे नन्दनकाननम्।। ८।।
तन्मध्ये नीपकान्तारं तरणिस्तम्भकारणम्।
मधुपालिविमर्दालिकलक्वाणकरम्बितम्।। ९।।
कोमलश्वशनाधूतकोरकोद्गतधूलिभिः।
सिन्दूरितनभोमार्गं चिन्तितं सिद्धवन्दिभिः।। १०।।
मध्ये तस्य मरुन्मार्गलम्बिमाणिक्यतोरणम्।
शाणोल्लिखितवैदूर्यक्लृप्तसालसमाकुलम्।। ११।।
माणिक्यस्तम्भपटलीमयूखव्याप्तदिक्तटम्।
पञ्चविंशतिसालाढ्यां नमामि नगरोत्तमम्।। १२।।
तत्र चिन्तामणिगृहं तडित्कोटिसमुज्ज्वलम्।
नीलोत्पलसमाकीर्णनिर्यूहशतसङ्कुलम्।। १३।।
सोमकान्तमणिक्लृप्तसोपानोद्भासिवेदिकम्।
चन्द्रशालाचरत्केतुमालीढनभोन्तरम्।। १४।।

गारुत्मतमणीक्लृप्तमण्डपव्यूहमण्डितम्।
नित्यसेवापरामर्त्यनिबिडद्वारशोभितम्।। १५।।
अधिष्ठितं द्वारपालैरसितोमरपाणिभिः।
नमामि नाकनारीणां सान्द्रसङ्गीतमेदुरम्।। १६।।
तन्मध्ये तरुणार्काभं तप्तकाञ्चननिर्मितम्।
शक्रादिमद्द्वारपालैस्सन्ततं परिवेष्टितम्।। १७।।
चतुष्षष्टिमहाविद्याकलाभिरभिसंवृतम्।
रक्षितं योगिनीवृन्दै रत्नसिंहासनं भजे।। १८।।
मध्ये तस्य मरुत्सेव्यं चतुर्द्वारसमुज्ज्वलम्।
चतुरस्रत्रिरेखाढ्यां चारुत्रिवलयान्वितम् ।। १९।।
कलादलसमायुक्तं कनदष्टदलान्वितम्।
चतुर्दशारसहितं दशारद्वितयान्वितम् ।। २०।।
अष्टकोणयुतं दिव्यमग्निकोणविराजितम्।
योगिभिः पूजितं योगियोगिनीगणसेवितम्।। २१।।
सर्वदुःखप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विषज्वरहरं पुण्यं विविधापद्विदारणम्।। २२।।
सर्वदारिद्र्यशमनं सर्वभूपालमोहनम्।
आशाभिपूरकं दिव्यमर्चकानामहर्निशम्।। २३।।
अष्टादशसुमर्माढ्यं चतुर्विंशतिसन्धिनम्।
श्रीमद्बिन्दुगृहोपेतं श्रीचक्रं प्रणमाम्यहम्।। २४।।
तत्रैव बैन्दवस्थाने तरुणादित्यसन्निभम्।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणपरिष्कृतकराम्बुजम्।। २५।।
पूर्णेन्दुबिम्बवदनं फुल्लपङ्कजलोचनम्।
कुसुमायुधशृङ्गारकोदण्डकुटिलभ्रुवम् ।। २६।।
चारुचन्द्रकलोपेतं चन्दनागुरुरूषितम्।
मन्दस्मितमधूकालिकिञ्जल्कितमुखाम्बुजम्।। २७।।
पाटीरतिलकोद्भासिफालस्थलमनोहरम्।
अनेककोटिकन्दर्पलावण्यमरुणाधरम् ।। ३०।।
तपनीयांशुकधरं तारुण्यश्रीनिषेवितम्।
कामेश्वरमहं वन्दे कामितार्थप्रदं नृणाम्।। २९।।
तस्याङ्कमध्यमासीनां तप्तहाटकसन्निभाम्।
माणिक्यमुकुटज्वालापल्लवारुणदिङ्मुखाम्।। ३०।।

कलवेणीकनत्फुल्लकह्लारकुसुमोज्ज्वलाम्।
उडुराजकृतोत्तंसामुत्पलश्यामलालकाम्।। ३१।।
चतुर्थीचन्द्रसच्छात्रफालरेखापरिष्कृताम्।
कस्तूरीतिलकारूढकमनीयललन्तिकाम्।। ३२।।
भ्रूलताश्रीपराभूतपुष्पायुधशरासनाम्।
नालीकदलदायादनयनत्रयशोभिताम् ।। ३३।।
करुणारसम्पूर्णकटाक्षहसितोज्ज्वलाम्।
भव्यमुक्तामणिचारुनासामौक्तिकवेष्टिताम्।। ३४।।
कपोलयुगलीनृत्यकर्णताटङ्कशोभिताम्।
माणिक्यवालीयुगलीमयूखारुणदिङ्मुखाम्।। ३५।।
परिपक्वसुबिम्बाभापाटलाधरपल्लवाम्।
मञ्जुलाधरपर्वस्थमन्दस्मितमनोहराम् ।। ३६।।
द्विखण्डद्विजराजाभगण्डद्वितयमण्डिताम्।
दरफुल्ललसद्गण्डधवलापूरिताननाम् ।। ३७।।
पचेलिमेन्दुसुषमापाटच्चरमुखप्रभाम्।
कन्धंराकान्तिहसितकम्बुबिम्बोकडम्बराम्।। ३८।।
कस्तूरीकर्दमाश्यामकन्धरामूलकन्दराम्।
वामांसशिखरोपान्तव्यालम्बिघनवेणिकाम्।। ३९।।
मृणालकाण्डदायादमृदुबाहुचतुष्टयाम्।
मणिकेयूरयुगलीमयूखारुणविग्रहाम्।। ४०।।
करमूललसद्रत्नकङ्कणक्वाणपेशलाम्।
करकान्तिसमाधूतकल्पानोकहपल्लवाम्।। ४१।।
पद्मरागोर्मिकाश्रेणिभासुराङ्गुलिपालिकाम्।
पुण्ड्रकोदण्डपुष्पास्त्रपाशाङ्कुशलसत्कराम्।। ४२।।
तप्तकाञ्चनकुम्भाभस्तनमण्डलमण्डिताम्।
घनस्तनतटीक्लृप्तकाश्मीरक्षोदपाटलाम्।। ४३।।
कूलङ्कषकुचस्फारतारहारविराजिताम्।
चारुकौसुम्भकूर्पासच्छन्नवक्षोजमण्डलाम्।। ४४।।
नवनीलघनश्यामरोमराजिविराजिताम्।
लावण्यसागरावर्तनिभनाभिविभूषिताम्।। ४५।।
डिम्भमुष्टितलग्राह्यमध्ययष्टिमनोहराम्।

नितम्बमण्डलाभोगनिक्वणन्मणिमेखलाम्।। ४६।।

सन्ध्यारुणक्षौमपटीसञ्छन्नजघनस्थलाम्।
घनोरुकान्तिहसितकदलीकाण्डविभ्रमाम्।। ४७।।
जानुसम्पुटकद्वन्द्वजितमाणिक्यदर्पणाम्।
जङ्घायुगलसौन्दर्यविजितानङ्गकाहलाम्।। ४८।।
प्रपदच्छायसन्तानजितप्राचीनकच्छपाम्।
नीरजासनकोटीरनिघृष्टचरणाम्बुजाम्।। ४९।।
पादशोभापराभूतपाकारितरुपल्लवाम्।
चरणाम्भोजशिञ्जानमणिमञ्जीरमञ्जुलाम्।। ५०।।
विबुधेन्द्रवधूत्सङ्गविन्यस्तपदपल्लवाम्।
पार्श्वस्थभारतीलक्ष्मीपाणिचामरवीजिताम्।। ५१।।
पुरतो नाकनारीणां पश्यन्तीं नृत्तमद्भुतम्।
भ्रूलताञ्चलसम्भूतपुष्पायुधपरम्पराम्।। ५२।।
प्रत्यग्रयौवनोन्मत्तपरिफुल्लविलोचनाम्।
ताम्रोष्ठीं तरलापाङ्गीं सुनासां सुन्दरस्मिताम्।। ५३।।
चतुरर्धध्रुवोदारां चाम्पेयोद्गन्धिकुन्तलाम्।
मधुस्नपितमृद्वीकमधुरालापपेशलाम्।। ५४।।
शिवां षोडशवार्षीकां शिवाङ्कतलवासिनीम्।
चिन्मयीं हृदयम्भोजे चिन्तयेज्जापकोत्तमः।। ५५।।

फलश्रुतिः

इति त्रिपुरसुन्दर्या हृदयं सर्वकामदम्।
सर्वदारिद्र्यशमनं सर्वसम्पत्प्रदं नृणाम्।। ५६।।
तापज्वरार्तिशमनं तरुणीजनमोहनम्।
महाविषहरं पुण्यं माङ्गल्यकरमद्भुतम्।। ५७।।
अपमृत्युहरं दिव्यमायुष्यश्रीकरं परम्।
अपवर्गैकनिलयमवनीपालवश्यदम्।। ५८।।
पठति ध्यानरत्नं यः प्रातस्सायमतन्द्रितः।
न विषादैस्स च पुमान् प्राप्नोति भुवनत्रयम्।। ५९।।

इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीहृदयं सम्पूर्णम्
षोडशानन्दनाथश्रीकरपात्रस्वामिविरचितः
श्रीविद्यारत्नाकरः सम्पूर्णः।।
श्रीपराम्बा सुप्रसन्ना वरदाऽस्तु।।

श्रीललिताचतुष्षष्ट्युपचारमानसपूजा

हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते।
चतुष्षष्ट्युपचारांस्ते भक्त्या मातः समर्पये।। १।।
कामेशोत्सङ्गनिलये पाद्यं गृह्णीष्व सादरम्।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये।। २।।
स्नानशालां प्रविश्याऽथ तत्रत्यमणिपीठके।
उपविश्य सुखेन त्वं देहोद्वर्त्तनमाचर।। ३।।
उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः।
अभिषिञ्चामि पश्चात् त्वां सौवर्णकलशोदकैः।। ४।।
धौतवस्त्रप्रोच्छनं चारक्तक्षौमाम्बरं तथा।
कुचोत्तरीयमरुणमर्पयामि महेश्वरि।। ५।।
ततः प्रविश्य चालेपमण्डपं श्रीमहेश्वरि।
उपविश्य च सौवर्णपीठे गन्धान् विलेपय।। ६।।
कालागरुजधूपैश्च धूपये केशपाशकम्।
अर्पयामि च माल्यादिसर्वर्तुकुसुमस्रजः।। ७।।
भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दयया स्थापयाऽम्बिके।। ८।।
शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम्।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलङ्कुरु दयानिधे।। ९।।
भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं शिवे।
वालीयुगलमप्यम्ब भक्त्या ते विनिवेदये।। १०।।
मणिकुण्डलमप्यम्ब नासाभरणमेव च।
ताटङ्कयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये।। ११।।
आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपदकानि च।

महापदकमुक्तावल्येकावल्यादिभूषणम् ।। १२।।

छन्नवीरं गृहाणाऽम्ब केयूरयुगलं तथा।
वलयावलिमङ्गुल्याभरणं ललिताम्बिके।। १३।।

ओड्याणमथ कट्यां ते कटिसूत्रञ्च सुन्दरि।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम्।। १४।।

अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चाङ्गुलीयकम्।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथाङ्कुशम्।। १५।।

अन्यस्मिन् वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम्।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि।। १६।।

अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे।
आरोहावृत्तिदेवीभिश्चक्रं परशिवे मुदा।। १७।।

समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि।
तत्र कामेशवामाङ्कपर्यङ्कोपनिवेशिनीम् ।। १८।।

अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे।
शुद्धेन गाङ्गतोयेन पुनराचमनं कुरु ।। १९।।

कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपङ्कजाम्।। २०।।

भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् कदा।
मङ्गलारात्रिकं छत्रं चामरं दर्पणं तथा ।। २१।।

तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्च तेऽर्पये।
श्रीकामेश्वरि! तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं,
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम्।।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रार्पितं
माषापूपकपूरिकादिसहितं नैवेद्यमम्बाऽर्पये।। २२।।

साग्रविंशतिपद्योक्त – चतुष्षष्ट्युपचारतः।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु।। २३।।

इति महायागक्रमोक्तं मानसपूजनम्।

श्रीललितानीराजनम्

जय जय जय ललिते

जय जगदीश्वरि मातः श्रीसुन्दरि ललिते,
त्वं माम् पालय नित्यं विश्वेश्वरि वरदे।
मञ्जुल-मङ्गलदायिनि परमानन्दप्रदे,
सकलमनोरथपूरिणि मातः श्रीललिते।। १।।

जय जय जय ललिते

जय श्रीचक्रनिवासिनि कामेश्वरि त्रिपुरे,
दीनं मामवलोकय कृपया श्रीललिते।
शिववामाङ्क-विहारिणि मोहितभूतपते,
कलित-कलाधरमुकुटे नेत्र-त्रय-शोभे।। २।।

जय जय जय ललिते

धनुरङ्कुशशरपाशैः शोभित-कर-कमले,
शिशुं स्वकीयं पालय मातः श्रीललिते।
अरुण-विभा-भव-भासित-भुवनेश्वरि विद्ये,
भव-भयभञ्जनकारिणि भवनाटकनिपुणे।। ३।।

जय जय जय ललिते

विधिहरिसुरपतिमुकुटैः वन्दितपदपद्मे,
नीराजनमवलोकय भगवति चितिरूपे।
संवित्तत्त्वस्वरूपिणि निगमागमगीते,
संतत-चिन्तित-सच्चित्-स्वानन्दे ललिते।। ४।।

जय जय जय ललिते

बिन्दुनाद–भवभासिनि शिवशक्तिप्रथिते
स्पन्दसुधारस–वर्षिणि शाम्भवि शक्ति शिवे।
नीराजनमिदममलम् आरर्त्रिक–समये,
भक्त्या गायति सकलं भद्रं सञ्चिनुते।। ५।।
जय जय जय ललिते

नृत्यति गायति कलयति मुदितमना मनुते,
रूपं पश्यति ललितं तव ललितं ललिते।
निरुपाधिक–कामेश्वर कामेश्वरि ललिते,
अरुणिम–तरुणिम–मण्डल–मण्डितश्रीसदने।। ६।।
जय जय जय ललिते

निष्कल–तत्त्व प्रकाशिनि परमेश्वरि ललिते,
दत्तात्रेयानन्दं नाथय श्रीललिते।
चरणसरोजे नमितं लोकय श्रीललिते,
शरणागत–प्रतिपालिनि पालय श्रीललिते।। ७।।
जय जय जय ललिते

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं
श्रीललितानीराजनं सम्पूर्णम्

प्रणति–पञ्चकम्

भुवन–केलिकला–रसिके शिवे,
झटिति झञ्झण-झङ्कृत–नूपुरे,
ध्वनिमयं भव–बीजमनश्वरम्,
जगदिदं तव शब्दमयं वपुः।। १।।

विविध–चित्र–विचित्रितमद्भुतं,
सदसदात्मकमस्ति चिदात्मकम्,
भवति बोधमयं भजतां हृदि,
शिव शिवेति शिवेति वचोऽनिशम्।। २।।

जननि मञ्जुल–मङ्गल–मन्दिरं,
जगदिदं जगदम्ब तवेप्सितम्,
शिव–शिवात्मक–तत्त्वमिदं परं,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ३।।

स्तुतिमहो किल किं तव कुर्महे,
सुरगुरोरपि वाक्पटुता कुतः,
इति विचार्य परे परमेश्वरि,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ४।।

चिति चमत्कृतिचिन्तनमस्तु मे,
निजपरं भवभेद–निकृन्तनम्,
प्रतिपलं शिवशक्तिमयं शिवे,
ह्यहमहो नु नतोऽस्मि नतोऽस्म्यहम्।। ५।।

इति श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथविरचितं प्रणतिपञ्चकं सम्पूर्णम्।

॥ श्रीः॥

कुण्डली–जागरणम्

जागो जगदाधार मैया । जागो जगदाधार ॥
साधो मन के तार मैया । साधो मन के तार ॥
जप तप जोग कछु नहीं जानूँ । सुषुम्ना सूक्ष्म विचार ॥
कुल कुण्डलिनी कुण्डली शिवके । सार्ध त्रिवलयाकार ॥
विद्युल्लेखा विसतन्तु सम । सुप्त भुजङ्गी प्रकार ॥
दिव्य त्रिकोणे कोटि तड़ित् शशि । आभा भानु हज़ार ॥
मूल मही वं शं षं सं मां । गणपति मूलाधार ॥
बं भं मं यं रं लं ब्रह्मा । स्वाधिष्ठान विचार ॥
रं मणिपूरे विष्णु माया । अग्नि स्वरूपाकार ॥
डं ढं णं तं थं दं धं नं । पं फं दल विस्तार ॥
कं खं गं घं ङं छं जं । झं ञं टं ठं स्फार ॥
द्वादस दल शिव शक्ति विराजे । अनहत नाद अपार ॥
चित्त गगन में चिति शक्ति का । स्पन्दन बारम्बार ॥
हंसः सोऽहं मन्त्र स्वरूपी । विद्या मय झङ्कार ॥
अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं । षोडश पत्राकार ॥
लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः । व्योम विशुद्धि विचार ॥
हं क्षं हसौः सकलं तूँ साधे । विविध सिद्धि के द्वार ॥
मन्त्र यन्त्र सब तन्त्र तुम्ही हो । आगम निगम विचार॥
अर्धमात्र रही अन्तर आत्मा । सकल तत्त्व संसार ॥
शुभ ज्योतिर्मय हंस युगल रत । पङ्कज पत्र हजार ॥
गुप्ताक्षर मञ्जुल मणिमण्डप । श्रीगुरु श्वेत शृङ्गार ॥

परमात्मा गुरुनाथ परम शिव । अभयं वरद सन्धार ।।
रक्त शुक्ल प्रभासित सुषमा । महिमा अपरम्पार ।।
शिव वामाङ्गे शक्ति विराजे । रक्त बिन्दु बौछार ।।
शिव शक्ति पद पङ्कज वरषे । स्नेह सुधा की धार ।।
अभिषेके षट् चक्र विकासे । शिवमय जय जय कार।।
अन्तर्मुख आनन्द अश्रुभर । पुलकित करुण पुकार।।
दत्तात्रेया - नन्दनाथ का । नमो नमो शत बार ।।
जागो जगदाधार मैया । साधो मन के तार ।।

श्यामे संगीतमातः परशिवनिलये मुख्यसाचिव्यभारो-
द्वाहे दक्षे दयापूरितनिजहृदये मामकीं दैन्यवृत्तिम्।
श्रीमत्सिंहासनेश्यां भववनपतितान्दावदग्धान्नमस्ते
त्रातुं पीयूषवर्षैः कथय परिकरं बद्धवत्यां विविक्ते।।
यत्राऽस्ति भोगो न च तत्र मोक्षः यत्राऽस्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरीसाधकपुङ्गवानां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।
पातय वा पाताले स्थापय वा सकललोकसाम्राज्ये।
मातस्तवाङ्घ्रियुगलं नाहं मुञ्चामि नैव मुञ्चामि।।
यश्शिवो नामरूपाभ्यां या देवी सर्वमङ्गला।
तयोः संस्मरणात्पुंसा सर्वतो जयमङ्गलम्।।
दुर्गे शिवेऽभये माये नारायणि सनातनि।
जये मे मङ्गलं देहि नमस्ते सर्वमङ्गले।।

इति श्रीशिवम्।।

मासाः
आ ॠ ऐ
अ ऊ ए अः
उ ऌ अं
ई ॡ औ
इ ऋ ओ

मासाः
इं ऋ औ
आ ॠ ऐ
अ ऊ ए अः
उ ॡ अं
इ ॡ ओ

मासाः
ई ऌ औ
इ ऋ ओ
आ ॠ ऐ
अ ऊ ए अः
उ ॡ अं

मासाः
उ ऌ अं
ई ॡ औ
इ ऋ ओ
आ ॠ ऐ
अ ऊ ए अः

मासाः
अ ऊ ए अः
उ ऌ अं
ई ऌ औ
इ ऋ ओ
आ ॠ ऐ

वर्षाणि							
अ	ङ	ञ	ण	न	म	श	क्ष
क	च	ट	त	प	य	ष	
ख	छ	ठ	थ	फ	र	स	
ग	ज	ड	द	ब	ल	ह	
घ	झ	ढ	ध	भ	व	ळ	

		ऋतवः
अ आ	मासयोः	आं श्रीकरी
इ ई	,,	इं मोहिनी
उ ऊ	,,	ऊँ कामिनी
ऋ ॠ	,,	ऋं विमला
ॡ ॡ	,,	ऌं हारिणी
ए ऐ	,,	ऐं भ्रामिणी
ओ औ	,,	औं गौरी
अं अः	,,	अः लक्ष्मीकुमारिका

मासारम्भवासराः

मासारम्भ	र०	सो०	मं०	बुध	बृ०	शुक्र	शनि
र०	अ ऋ अं	आ ऌ अः	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ॠ औ
सो०	ॠ औ	अ ऋ अं	आ ऌ अः	इ ऌ	ल ए	उ ऐ	ऊ ओ
मं०	ऊ ओ	ॠ औ	आ ऌ अः	आ ॡ अ	इ ॡ	ई ऐ	उ ऐ
बु०	उ ऐ	ऊ ओ	ॠ औ	ऋ अं	आ ऌ अः	इ ऌ	ई ·ए
बृ०	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ॠ औ	अ ऋ अं	आ ऌ अः	इ ॡ
शु०	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ॠ औ	अ ऌ अं	आ ऌ अः
श०	आ ऌ अः	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	उ ऐ	ऊ ओ	अ ऋ अं

वर्षारम्भवासराः

वासराः	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
वर्षाणि	ग	अ	घ	क	ङ	ख	च
	ञ	छ	ट	ज	ठ	झ	ड
	थ	ढ	द	ण	ध	त	न
	भ	प	म	फ	य	ब	र
	ष	ळक्ष	स	व	ह	श	ल

पर्वाणि

१	पुष्पिणी	वर्ष–मासाक्षरयोर्योगात्
२	मोहिनी	वर्ष–दिनाक्षरयोर्योगात्
३	जयिनी	वर्ष–उदययोर्योगात्
४	कुमारी	मास–दिनयोर्योगात्
५	विमला	मासोदययोर्योगात्
६	श्रीकरी	दिनोदययोर्योगात्
७	सूर्यग्रहणं	वर्ष–मास-दिन-वारोदययोगात्
८	चन्द्रग्रहणं	मास-वार-नित्योदययोगात्
९	श्रीरात्रिः	वार-दिन-नित्योदययोगात्
१०	नित्यानेत्रम्	तिथि-नित्या-दिननित्ययोर्योगात्
११	वारोदयः	वारोदययोगात्

संख्या	तत्त्व दिनम्	नक्षत्रम्	योगाः	करणम्	वासरः	दिन नित्याः	पक्षः	घटिकोदयः	नित्याः	पक्षः	घटिकोदयः
१	अं शिव	ऌ	अ	ऋ	अं प्रकाशा	अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती	शुक्ल	ए
२	कं शक्ति	ॡ	आ	ॠ	ॡं विमर्शा	आं भगमालिनी		ए	ॠं त्वरिता		च
३	खं सदाशिव	ए	इ	ऌ	कं आनन्दा	इं नित्यक्लिन्ना		च	ऌं कुलसुन्दरी		त
४	गं ईश्वर	ऐ	ई	ॡ	चं ज्ञाना	ईं भेरुण्डा		त	ॡं नित्या		य
५	घं शुद्धविद्या	ओ	उ	ए	टं सत्या	उं वह्निवासिनी		य	एं नीलपताका		अ
६	ङं माया	औ	ऊ	ऐ	तं पूर्णा	ऊं महावज्रेश्वरी		अ	ऐं विजया		ए
७	चं कला	अं	ऋ	ओ	पं स्वभावा	ऋं शिवदूती		ए	ओं सर्वमङ्गला		च
८	छं अविद्या	अः	ॠ	औ	यं प्रतिभा	ॠं त्वरिता		च	औं ज्वालामालिनी		त
९	जं राग	क	ऌ	अं	षं सुभगा	ऌं कुलसुन्दरी		त	अं चित्रा		य
१०	झं काल	ख	ॡ	अः	अं प्रकाशा	ॡं नित्या		य	अं चित्रा	कृष्ण	अ
११	ञं नियति	ग	ए	क	ॡं विमर्शा	एं नीलपताका		अ	औं ज्वालामालिनी		ए
१२	टं पुरुष	घ	ऐ	ख	कं आनन्दा	ऐं विजया		ए	ओं सर्वमङ्गला		च
१३	ठं प्रकृति	ङ	ओ	ऋ	चं ज्ञाना	ओं सर्वमङ्गला		च	ऐं विजया		त
१४	डं अहंकार	च	औ	ॠ	टं सत्या	औं ज्वालामालिनी		त	एं नीलपताका		य
१५	ढं बुद्धि	छ	अं	ऌ	तं पूर्णा	अं चित्रा		य	ॡं नित्या		अ
१६	णं मनस्	ज	अः	ॡ	पं स्वभावा	अं चित्रा	कृष्ण	अ	ऌं कुलसुन्दरी		ए
१७	तं श्रोत्र	झ	क	ए	यं प्रतिभा	औं ज्वालामालिनी		ए	ॠं त्वरित		च
१८	थं त्वक्	ञ	ख	ऐ	षं सुभगा	ओं सर्वमङ्गला		च	ऋं शिवदूती		त
१९	दं चक्षु	ट	घ	ओ	अं प्रकाशा	ऐं विजया		त	ऊं महावज्रेश्वरी		य
२०	धं जिह्वा	ठ	ग	औ	ॡं विमर्शा	एं नीलपताका		य	उं वह्निवासिनी		अ
२१	नं घ्राण	ड	ङ	अं	कं आनन्दा	ॡं नित्या		अ	ईं भेरुण्डा		ए
२२	पं वाक्	ढ	च	अः	चं ज्ञाना	ऌं कुलसुन्दरी		ए	इं नित्यक्लिन्ना		च
२३	फं पाणि	ण	छ	क	टं सत्या	ॠं त्वरिता		च	आं भगमालिनी		त
२४	बं पाद	त	ज	ख	तं पूर्णा	ऋं शिवदूती		त	अं कामेश्वरी		य
२५	भं पायु	थ	झ	ऋ	पं स्वभावा	ऊं महावज्रेश्वरी		य	अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ
२६	मं उपस्थ	द	ञ	ॠ	यं प्रतिभा	उं वह्निवासिनी		अ	आं भगमालिनी		ए
२७	यं शब्द	ध	ट	ऌ	षं सुभगा	ईं भेरुण्डा		ए	इं नित्यक्लिन्ना		च
२८	रं स्पर्श	न	ठ	ॡ	अं प्रकाशा	इं नित्यक्लिन्ना		च	ईं भेरुण्डां		त
२९	लं रूप	प	ड	ए	ॡं विमर्शा	आं भगमालिनी		त	उं वह्निवासिनी		य
३०	वं रस	फ	ढ	ऐ	कं आनन्दा	अं कामेश्वरी		य	ऊं महावज्रेश्वरी		अ
३१	शं गन्ध	ब	ण	ओ	चं ज्ञाना	अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती		ए
३२	षं आकाश	भ	त	औ	टं सत्या	आं भगमालिनी		ए	ॠं त्वरिता		च
३३	सं वायु	म	थ	अं	तं पूर्णा	इं नित्यक्लिन्ना		च	ऌं कुलसुन्दरी		त
३४	हं वह्नि	य	द	अः	पं स्वभावा	ईं भेरुण्डा		त	ॡं नित्या		य
३५	ळं सलिल	र	ध	क	यं प्रतिभा	उं वह्निवासिनी		य	एं नीलपताका		अ
३६	क्षं भूमि	ल	न	ख	षं सुभगा	ऊं महावज्रेश्वरी		अ	ऐं विजया		ए

नित्याः	पक्षः	घटिकोदयः
ओं सर्वमङ्गला	शुक्ल	च
औं ज्वालामालिनी		त
अं चित्रा		य
अं चित्रा	कृष्ण	अ
औं ज्वालामालिनी		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
ऐं विजया		त
एं नीलपताका		य
लॄं नित्या		अ
लृं कुलसुन्दरी		ए
ॠं त्वरिता		च
ऋं शिवदूती		त
ऊं महावज्रेश्वरी		य
उं वह्निवासिनी		अ
ईं भेरुण्डा		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
आं भगमालिनी		त
अं कामेश्वरी		य
अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं भगमालिनी		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
ईं भेरुण्डा		त
उं वह्निवासिनी		य
ऊं महावज्रेश्वरी		अ
ऋं शिवदूती		ए
ॠं त्वरिता		च
लृं कुलसुन्दरी		त
लॄं नित्या		य
एं नीलपताका		अ
ऐं विजया		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
औं ज्वालामालिनी		त
अं चित्रा		य
अं चित्रा	कृष्ण	अ
औं ज्वालामालिनी		ए
ओं सर्वमङ्गला		च

नित्याः	पक्षः	घटिकोदयः
ऐं विजया	कृष्ण	त
एं नीलपताका		य
लॄं नित्या		अ
लृं कुलसुन्दरी		ए
ॠं त्वरिता		च
ऋं शिवदूती		त
ऊं महावज्रेश्वरी		य
उं वह्निवासिनी		अ
ईं भेरुण्डा		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
आं भगमालिनी		त
अं कामेश्वरी		य
अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं भगमालिनी		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
ईं भेरुण्डा		त
उं वह्निवासिनी		य
ऊं महावज्रेश्वरी		अ
ऋं शिवदूती		ए
ॠं त्वरिता		च
लृं कुलसुन्दरी		त
लॄं नित्या		य
एं नीलपताका		अ
ऐं विजया		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
औं ज्वालामालिनी		त
अं चित्रा		य
अं चित्रा	कृष्ण	अ
औं ज्वालामालिनी		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
ऐं विजया		त
एं नीलपताका		य
लॄं नित्या		अ
लृं कुलसुन्दरी		ए
ॠं त्वरिता		च
ऋं शिवदूती		त

नित्याः	पक्षः	घटिकोदयः
ऊं महावज्रेश्वरी	कृष्ण	य
उं वह्निवासिनी		अ
ईं भेरुण्डा		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
आं भगमालिनी		त
अं कामेश्वरी		य
अं कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं भगमालिनी		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
ईं भेरुण्डा		त
उं वह्निवासिनी		य
ऊं महावज्रेश्वरी		अ
ऋं शिवदूती		ए
ॠं त्वरिता		च
लृं कुलसुन्दरी		त
लॄं नित्या		य
एं नीलपताका		अ
ऐं विजया		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
औं ज्वालामालिनी		त
अं चित्रा		य
अं चित्रा	कृष्ण	अ
औं ज्वालामालिनी		ए
ओं सर्वमङ्गला		च
ऐं विजया		त
एं नीलपताका		य
लॄं नित्या		अ
लृं कुलसुन्दरी		ए
ॠं त्वरिता		च
ऋं शिवदूती		त
ऊं महावज्रेश्वरी		य
उं वह्निवासिनी		अ
ईं भेरुण्डा		ए
इं नित्यक्लिन्ना		च
आं भगमालिनी		त
अं कामेश्वरी		य

रवौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

सोमे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१०	११	१२	१३
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
३५	३६					

भौमे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
३४	३५	३६				

बुधे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं०	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	१	२	३	४
५	६	७	८	९	१०	११
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३३	३४	३५	३६			

गुरौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
३२	३३	३४	३५	३६	०	०

शुक्रे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं०	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	१	२
३	४	५	६	७	८	९
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	

शनौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	१
२	३	४	५	६	७	८
९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

मास नामानि

अं अमृता
आं मानदा
इं पूषा
ईं तुष्टि
उं पुष्टि
ऊं रति
ऋं धृति
ॠं शशिनी
लृं चन्द्रिका
ॡं कान्ति
एं ज्योत्स्ना
ऐं श्री
ओं प्रीति
औं अङ्गदा
अं पूर्णा
अः पूर्णामृता
प्रतिवर्षं
१६ मासा

श्रीविद्यारत्नाकरस्य अष्टमसंस्करणस्य प्रकाशनवर्षः विक्रमसंवत् 2069 आषाढ-मासः शुक्लपक्षः पूर्णिमातिथिः भौमवासरः (03 जुलाई 2012 ख्रिष्टाब्दः)। देवी-मानेन खं सदाशिवतत्त्वयुगः, दं चक्षुस्तत्त्वपरिवृत्तिः खं सदाशिवतत्त्ववर्षः, ॠं विमलाऋतुः, ॠं शशिनीकलामासः खं सदा-शिवतत्त्वदिवसः कं आनन्दानाथवासरः कृष्णभेरुण्डादिननित्या एकारघटिका, शुक्लचित्रातिथिनित्या।

द्वारा विरचित ग्रन्थ

विचार पीयूष
मार्क्सवाद और रामराज्य
श्री भगवत्तत्त्व
वेदस्वरूप और प्रामाण्य (प्रथम, द्वितीय)
भक्तिसुधा
अहमर्थ और परमार्थसार
पूँजीवाद, समाजवाद और रामराज्य
संघर्ष और शान्ति वर्णाश्रममर्यादा
संकीर्तनमीमांसा
क्या सम्भोग से समाधि?
शाङ्कर भाष्य पर आक्षेप और समाधान
राहुलजी की भ्रान्ति
श्रीविद्यारत्नाकरः
श्रीविद्यावरिवस्या
वेदस्वरूपविमर्शः
भक्तिरसार्णवः
चातुर्वर्ण्यसंस्कृतिविमर्शः (प्रथम)
चातुर्वर्ण्यसंस्कृतिविमर्शः (द्वितीय)
कुम्भनिर्णयः
धर्मराजनीति
आधुनिक राजनीति और रामराज्य परिषद्
राजनीतिक दल
रामराज्य परिषद् और अन्य दल
राजनीति में भी ईमानदारी
वेदार्थपारिजात
भागवत सुधा

भ्रमरगीत

श्रीः



चितिः स्वतन्त्रा विश्वसिद्धि-हेतुः

दत्तात्रेयानन्दनाथ द्वारा सम्पादित-विरचित ग्रन्थ

श्रीविद्यारत्नाकरः	४००.००
श्रीविद्यावरिवस्या (पूजा विधि सहित)	२००.००
श्रीभुवनेश्वरी वरिवस्या	५०.००
श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्	२०.००
श्रीमहागणपति वरिवस्या	७..००
उपचार मीमांसा	५०.००
श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् भाग-1 एवं 2	१८००.००
श्रीविद्या एवं श्रीयंत्र एक परिचय	१०.००
मंत्र महायोग	१०.००
तांत्रिक अष्टाङ्ग	

श्रीविद्या साधना पीठ के मुख्य उद्देश्य

श्रीविद्या से सम्बन्धित दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन।
श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन।
श्रीयन्त्रार्चन पद्धति का प्रशिक्षण।
तन्त्रशास्त्र विषयक अनुसन्धान।

विशेष

दीक्षित अधिकारी साधकों का निःस्वार्थ रूप में प्रशिक्षणादि होता है। पीठ द्वारा किसी प्रकार का शुल्कादि नहीं लिया जाता है।

प्रकाशक

श्रीविद्या साधना पीठ

वाराणसी -उ.प्र.

मूल्य- ४००/-